## आधुनिक

# इँगलैण्ड का इतिहास

( पहला वा दूसरा भाग )

लेखक–

[illegible] कपूर एम.ए., एल.टी., एम.आर.ए.एस.

| | | |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

# THE HIGH SCHOOL HISTORY

# OF

# MODERN ENGLAND.

## Part 1.

( *Hindi Edition* )

BY

SHIVA CHANDRA KAPOOR M. A., M. R. A. S.

WITH A FOREWORD BY

Dr. BENI PRASAD M. A., PH. D.

---

Published by
NAND KISHORE & BROS.
Booksellers, Chowk, Benares City.
&
RAMA CHANDRA VARMA
Sahitya Ratna Mala Office, Benares City.

---

First Edition
2100 Copies

1927

Price as 14/-

Printed by G. K. Gurjar, at
Shri Lakshmi Narayan Press, Benares City.

आधुनिक

# इँगलैण्ड का इतिहास

[ हाई स्कूलों के लिए ]

प्रथम भाग



लेखक

शिवचंद्र कपूर

एम० ए०, एम० आर० ए० एस०



[ डाक्टर वेणीप्रसाद जी एम० ए० पी एच० डी० (लण्डन) लिखित प्रस्तावना सहित ]

पहला संस्करण
२१०० प्रतियाँ

जून १९२७.

मूल्य ।।।=)

प्रकाशक

**रामचन्द्र वर्मा**

**साहित्य-रत्न माला कार्यालय,**

**बनारस सिटी**



**और**



**नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स**

**बुकसेलर्स, चौक,**

**बनारस सिटी।**

# प्रस्तावना

इतिहास में जिन जातियों ने प्रसिद्धि पाई है, उनके जीवनक्रम में कोई न कोई विशेषता अवश्य रही है। इँगलिस्तान के इतिहास की विशेष बात यह है कि वहाँ वैध और प्रजा-सत्तात्मक शासन का विकास अन्य पाश्चात्य देशों की अपेक्षा जल्दी हुआ है। वहाँ प्रतिनिधि शासन पद्धति ने जो रूप धारण किया, उसका प्रभाव सारे युरोप और अमेरिका पर ही नहीं किन्तु एशिया पर भी पड़ रहा है। इस दृष्टि से विद्यार्थियों के लिए अँग्रेज़ी इतिहास पढ़ना बहुत आवश्यक और लाभदायक है। हर्ष की बात है कि स्कूलों में ही बहुत से विद्यार्थियों को इस विषय की जानकारी प्राप्त करने का अवसर है। उनके लिए हिन्दी और उर्दू में सुपाठ्य पुस्तकों की रचना अत्यन्त आवश्यक है। महाशय शिवचन्द्र कपूर ने एक ऐसी ही पुस्तक लिखने का प्रयत्न किया है। उन्होंने उपयुक्त अध्ययन के बाद सरल, स्पष्ट भाषा में यह रचना की है। नक़शे और चित्र दे कर इसका महत्व उन्होंने और भी बढ़ा दिया है। आशा है कि तिथि क्रम और प्रश्नावलियाँ भी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हिन्दी में अँग्रेजी इतिहास पर अभी बहुत कम लिखा गया है। कपूर महाशय ने इतिहास की कहानी को ऐसा मनोरंजक बनाया है कि इससे विद्यार्थियों के सिवा साधारण जनता का काम भी निकल सकता है। जो लोग अँग्रेजी इतिहास का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, वे इस पुस्तक से निराश न होंगे।

इलाहाबाद
३–६–२७.

वेणीप्रसाद।

# भूमिका

यह पुस्तक विशेषतया संयुक्त प्रान्त की हाई स्कूल परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। इस परीक्षा के कई विषयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी और उर्दू हो जाना हमारे प्रान्त के लिए बड़े महत्व की बात है। इस से विद्यार्थियों को अवश्य सुबिधा होगी। कालेज में पहुँचने से पहले विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी भाषा का प्रायः यथेष्ट ज्ञान नहीं होता; इस कारण उन्हें अब तक अँग्रेज़ी में इतिहास आदि पढ़ने में बड़ी कठिनाई होती थी। यह कठिनाई अब दूर हो गई है।

यह पुस्तक हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में लिखी गई है। जितने अँग्रेज़ी नाम आये हैं, वे सब कोष्ठक में अँग्रेज़ी भाषा में भी लिख दिये गए हैं, जिसमें विद्यार्थियों को उनका शुद्ध उच्चारण मालूम हो जाय। प्रत्येक खंड के अन्त में प्रश्नावलियाँ हैं जिनसे परीक्षा के लिए तैयारी करनेवाले विद्यार्थी प्रश्नपत्रों का ढंग समझ सकें। ये प्रश्नावलियाँ अँग्रेज़ी भाषा में दी गई हैं, क्योंकि अभी तक हाई स्कूल परीक्षा के प्रश्नपत्र अँग्रेज़ी ही में आते हैं। बहुत अच्छा हो यदि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो जाने के साथ ही इस परीक्षा के प्रश्नपत्र भी हिन्दी और उर्दू में दिये जाने लगें।

पुस्तक को परिच्छेदों में बाँटते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि प्रत्येक विषय से संबंध रखनेवाली बातों का उल्लेख, जहाँ तक हो सके, एक ही स्थान पर कर दिया जाय। इतिहास की पुस्तकों में घटनाओं का उल्लेख प्रायः तिथि क्रम के अनुसार किया जाता है; परन्तु अपने आठ नौ वर्षों के अध्यापकीय अनुभव से मेरा यह विचार है कि विद्यार्थियों को घटनाओं का परस्पर संबंध और उनका ऐतिहासिक कारण समझाने के

लिए भिन्न भिन्न काल के साहित्य, व्यापार, धर्म आदि की उन्नति का एक ही स्थान पर उल्लेख कर देना ठीक रहता है। इस पुस्तक में ऐतिहासिक घटनाओं का विषय-क्रम के अनुसार वर्णन है; परन्तु फिर भी तिथिक्रम का भी बहुत ही कम उल्लंघन किया गया है।

परीक्षा के लिए पढ़नेवाले विद्यार्थियों के अतिरिक्त साधारण पाठक भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। भारतवर्ष का इँगलैण्ड से आज कल इतना घनिष्ट संबंध है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शासक जाति का इतिहास जानने के लिए अवश्य उत्सुक होना चाहिए।

प्रयाग विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध प्रोफ़ेसर वेणीप्रसाद जी ने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिख कर मुझे अनुगृहीत किया है। उर्दू संस्करण के तैयार करने में मुझे अपने मित्र मौलवी अब्दुल माजिद सिद्दीक़ी से बहुत सहायता मिली है। अतः इन दोनों सज्जनों को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

पुस्तक का यह संस्करण बड़ी शीघ्रता में छपने के कारण इसमें अवश्य कुछ त्रुटियाँ रह गई होंगी। अगले संस्करण में ये सब त्रुटियाँ दूर कर दी जायँगी।

बनारस,
१५ जून १९२७

शिवचन्द्र कपूर।

# विषय-सूची

## पहला खंड

## ट्यूडर काल से पूर्व के इतिहास का सारांश

### पहला परिच्छेद



### दूसरा परिच्छेद

## तीसरा परिच्छेद



## चौथा परिच्छेद



## पाँचवाँ परिच्छेद

## दूसरा खण्ड

### ट्यूडर शासन तथा "धर्म-सुधार" का काल

#### पहला परिच्छेद



#### दूसरा परिच्छेद



#### तीसरा परिच्छेद

## चौथा परिच्छेद



## पाँचवाँ परिच्छेद



## छठा परिच्छेद

## सातवाँ परिच्छेद



---

रानी मेरी ७३; स्पेनिश विवाह तथा वॉट का विद्रोह ७३; कैथोलिक मत का पुनः प्रचार ७५; प्रोटेस्टेएटों का जीवित जलाया जाना ७५; कैले का पतन और मेरी की मृत्यु ७६।

## आठवाँ परिच्छेद



---

रानी एलिज़ेबेथ ७८; आंग्ल चर्च का प्रबन्ध ७९; एलिज़ेबेथ की धार्मिक नीति ८०; प्योरिटन दल ८१; कैथोलिक मत की लहर ८२।

## नवाँ परिच्छेद



---

हेनरी अष्टम और स्कॉटलैएड ८३; मेरी स्टुअर्ट का आरम्भिक जीवन ८४; स्कॉटिश धर्म-सुधार में एलिज़ेबेथ की सहायता ८६; रानी मेरी स्टुअर्ट तथा लार्ड डार्नले ८६; मेरी का राज्य-च्युत होना ८७; मेरी का भाग कर इँगलैएड पहुँचना ८७; एलिज़ेबेथ के विरुद्ध षड़यंत्र और मेरी को प्राण-दण्ड ८९।

## दसवाँ परिच्छेद



## ग्यारहवाँ परिच्छेद



---

# तीसरा खण्ड

## स्टुअर्ट शासन तथा राजनीतिक आन्दोलन का काल

### पहला परिच्छेद

## दूसरा परिच्छेद



---

### ( १ ) पहली तीन पार्लिमेण्टों से झगड़ा



### ( २ ) ग्यारह वर्षों का निरंकुश शासन



### ( ३ ) "प्रलंब पार्लिमेण्ट" का अधिवेशन



### ( ४ ) राजा और पार्लिमेण्ट का संघर्ष

## तीसरा परिच्छेद

### इँगलैण्ड में प्रजा-तन्त्र तथा संरक्षित राज्य···पृष्ठ १५७–१७०

## चौथा परिच्छेद



---



## पाँचवाँ परिच्छेद



---

## छठा परिच्छेद



---

### ( १ ) अन्तर-राष्ट्रीय स्थिति



## सातवाँ परिच्छेद



---

### ( २ ) गृह स्थिति

## आठवाँ परिच्छेद



---

### (१) राजनीतिक उन्नति



### (२) धार्मिक दल



### (३) उपनिवेश तथा व्यापार



### (४) सामाजिक दशा



---

# चित्र-सूची

| चित्र | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| (२२) चार्ल्स प्रथम के समय के पहनावे | ... | १४८ |
| (२३) ओलिवर क्रॉम्वेल | ... ... ... | १६० |
| (२४) चार्ल्स द्वितीय | ... ... ... | १७२ |
| (२५) क्रिस्टोफर रेन | ... ... ... | १७९ |
| (२६) जेम्स द्वितीय | ... ... ... | १८८ |
| (२७) चौदहवाँ लूइस | ... ... ... | २०१ |
| (२८) विलियम तृतीय | ... ... ... | २०२ |
| (२९) रानी मेरी द्वितीय | ... ... ... | २०३ |
| (३०) ड्यूक आफ मार्लबरो | ... ... | २०७ |
| (३१) रानी एनी | ... ... ... | २२१ |
| (३२) मिल्टन ( बाल्यावस्था ) | ... ... | २३९ |

---

## मानचित्र ( नकशे )



## वंशावलियाँ

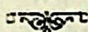
आधुनिक

# इँगलैण्ड का इतिहास

[ पहला भाग ]

## पहला खण्ड

## पहला परिच्छेद

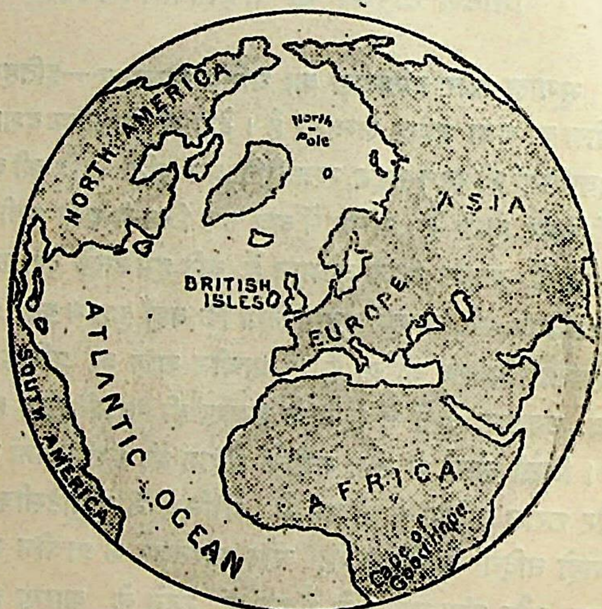


## ब्रिटिश टापुओं की प्राकृतिक विशेषताएँ

**भूगोल और इतिहास का घनिष्ट सम्बन्ध**—इतिहास और भूगोल का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। देश की प्राकृतिक दशा पर ही देशवासियों की रहन-सहन, राजनीति, बल-बुद्धि आदि की बहुत सी बातें निर्भर होती हैं। संसार में अब तक जितनी बड़ी बड़ी जातियाँ हो गई हैं, या इस समय वर्तमान हैं, यदि हम उनके देश के भूगोल का अध्ययन करें, तो हमें पता चलेगा कि वहाँ कुछ न कुछ प्राकृतिक विशेषताएँ अवश्य थीं या हैं। प्राचीन काल की प्रसिद्ध जातियाँ प्रायः उपजाऊ देशों में रहने के कारण ही उन्नतिशील हो सकी थीं। मिस्री लोगों ने नील नदी के मैदान में, एसीरियनों ने दजला और फ़रात नदियों के मैदान में, चीनियों ने यांग्टिसीकांग और हांगहो नदियों के मैदान में, और भारतवर्ष के प्राचीन आर्य्यों ने सिन्धु और गंगा-यमुना के मैदान में रहने के कारण ही इतनी उन्नति की थी। इसलिये ब्रिटिश जाति का इतिहास पढ़ने से पहले यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि उसके देश की

क्या क्या प्राकृतिक विशेषताएँ हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण एक इतने छोटे टापू के रहनेवाले, जो इतना बड़ा भी नहीं है जितना बड़ा कि पंजाब का सूबा है, आज समस्त भूमण्डल के लगभग ¼ भाग को अपने अधीन किये हुए हैं।

**स्थल गोलार्द्ध का केन्द्र**—स्थल गोलार्द्ध का चित्र देखने




ग्रेट ब्रिटेन—स्थल गोलार्द्ध का केन्द्र

से पता चलता है कि ब्रिटिश टापू इस गोले का बिलकुल केन्द्र है। यहाँ से लोग संसार के समस्त भागों में बहुत सहज में पहुँच सकते हैं। इसी कारण संसार के व्यापारिक मार्गों का भी यह टापू केन्द्र है; और इसी लिये यहाँ के निवासी समस्त भूमण्डल के साथ

बहुत सुभीते से व्यापार कर सकते हैं। ब्रिटिश टापुओं के पूर्व में यूरोप का महाद्वीप है, जो आजकल की सभ्यता का उद्गम माना जाता है। पश्चिम में अमेरिका का धनी महाद्वीप है; उत्तर में बाल्टिक सागर है जो उत्तर-पश्चिमी युरोप के व्यापार का केन्द्र है; और दक्षिण में रूम सागर का प्रसिद्ध फाटक जिब्राल्टर है, जहाँ से पूर्वीय देशों को रास्ता गया है। सोलहवीं शताब्दी से पहले इस द्वीपवालों के लिये उन्नति करने का अवसर न था; परन्तु नये देशों का ज्ञान प्राप्त होने और नये समुद्री मार्गों के खुलने से इस द्वीप में बसनेवाली जाति का भाग्य उदय हो गया। प्राचीन तथा माध्यमिक काल में स्थल मार्गों तथा छोटे छोटे समुद्रों द्वारा ही व्यापार होता था। रूम सागर तथा बाल्टिक सागर के तटवाली जातियाँ ही युरोप में सब से अधिक मालदार थीं। परन्तु वर्तमान काल में जब एटलान्टिक तथा पैसिफिक महासागर संसार के व्यापार के मुख्य मार्ग बने हुए हैं, युरोप में ब्रिटिश टापू और एशिया में जापान उन्नतिशील हो रहे हैं।

द्वीप-देश—ब्रिटिश जाति की उन्नति का एक मुख्य कारण यह भी है कि उसका देश एक द्वीप है। अन्य देशों के इतिहास में यह प्रायः देखा जाता है कि देश की सीमा के प्रश्न पर पड़ोसी देशों से अनेक बार युद्ध होते हैं। परन्तु एक द्वीप देश में प्राकृतिक समुद्री सीमा होने के कारण इस प्रकार के बखेड़े नहीं होते। द्वीप देश को विदेशी जातियों के आक्रमण का भी अधिक भय नहीं रहता। इतिहास बतलाता है कि युरोप में बेल्जियम, पोलैण्ड आदि देशों के निवासी विदेशी आक्रमणों के कारण कभी सुख और शान्ति से न रह सके। परन्तु ब्रिटिश द्वीप के निवा-





ग्रेट ब्रिटन और आयरलैण्ड का प्राकृतिक मानचित्र

क्षियों को इस बात का गर्व है कि हमारे देश पर वैरियों का कभी आक्रमण न हो सका। द्वीप-निवासिनी होने के कारण ब्रिटिश जाति को अपनी समुद्री शक्ति बढ़ाने का भी अच्छा अवसर मिला; और वर्तमान काल में ब्रिटिश साम्राज्य का मुख्य आधार इस जाति का बढ़ा चढ़ा समुद्री बल ही माना जाता है। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि विदेशी जातियों से युद्ध होने के समय ब्रिटेन की समुद्री शक्ति ने ही उसकी रक्षा की। कई बार फ्रान्स तथा स्पेनवालों ने इस द्वीप पर आक्रमण करने की चेष्टा की; परन्तु इस प्रकार के प्रयत्न कभी सफल न हो सके।

वर्तमान काल में छोटे छोटे समुद्री भागों पर अधिकार जमाने के लिये राष्ट्रों में भयंकर युद्ध होते हैं। जिस देश में समुद्र तट नहीं होता, वहाँवालों को उन्नति करने का बहुत कम अवसर मिलता है। इस युग में तो व्यापार ही जातियों की उन्नति का एक मात्र साधन है; और बिना अपना समुद्र तट हुए विदेश से व्यापार करने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ब्रिटेन द्वीप का कोई भाग समुद्र तट से सत्तर मील से अधिक दूरी पर नहीं है। इसी से समझ लेना चाहिए कि ब्रिटिश जाति के लिये समुद्री व्यापार में उन्नति करने के कितने साधन प्रस्तुत हैं।

युरोपीय महाद्वीप और ब्रिटिश टापुओं के बीच में केवल डोवर का छोटा सा जलडमरूमध्य (Strait of Dover) है। यदि ये टापू युरोपीय महाद्वीप से इतने निकट न होते, तो युरोप में जो कुछ जाग्रति हुई, उसका इन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ सकता। परन्तु प्रकृति की ऐसी कृपा है कि द्वीप होने का लाभ उठाते हुए भी इन टापुओंवाले युरोप की सभ्यता के प्रकाश से वंचित न रहे।

**सुरक्षित बन्दरगाह**—ब्रिटिश टापुओं का तट या बाह्य रेखा (Coast Line) टेढ़ी तिरछी है और वहाँ समुद्र की शाखाएँ स्थल में घुसती चली गई हैं। इसी कारण वहाँ बहुत से सुरक्षित बन्दरगाह बन सके। भारतवर्ष की भाँति समुद्र-तट सपाट होने से बंदरगाह बनाने में बड़ी कठिनता होती है। सपाट तट के बन्दरगाहों पर तूफान आदि का पूरे वेग से प्रभाव पड़ता है; परन्तु स्थल में घुसी हुई समुद्र की शाखाओं पर इन आपत्तियों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता; और इसी कारण जिन देशों की बाह्य रेखा टेढ़ी तिरछी होती है, वहाँ के बन्दरगाहों में तूफ़ान आदि के समय भी जहाज़ सुरक्षित रह सकते हैं। भारतवर्ष के प्रसिद्ध बन्दरगाह बम्बई में यही विशेषता है कि उसके निकट समुद्र का तट कुछ कुछ थोड़ा सा स्थल की ओर घुसा हुआ है। ब्रिटिश टापुओं में ऐसे बहुत से सुरक्षित बन्दरगाह हैं, जिनसे ब्रिटिश जाति के व्यापार में बहुत सुभीता होता है।

**आब-हवा**—ब्रिटिश टापुओं की आब-हवा ठंढी है और इस कारण वहाँ के निवासी फुरतीले तथा उद्यमी होते हैं। गर्म देशों के निवासी प्रायः आलसी हो जाते हैं; परन्तु ठंढे देशों में रहनेवाले इस दोष से बचे रहते हैं। परन्तु साथ ही यह बात भी है कि वहाँ रूस या साइबेरिया की भाँति इतनी अधिक ठंढक भी नहीं पड़ती कि साल में छः महीने समस्त देश बर्फ से ढका रहे और उस काल में सारे कारबार स्थगित करने पड़ें। अमेरिका में मैक्सिको की खाड़ी से शुरू होकर एटलान्टिक महासागर में गर्म पानी की एक धारा ( Gulf Stream ) बहती है; और पश्चिमी हवाएँ इस धारा को ब्रिटिश-तट तक बहा लाती हैं। इसी गर्म धारा

की कृपा से इँगलैण्ड में सरदी कभी इतनी नहीं बढ़ने पाती कि असह्य हो जाय। सारे बन्दरगाह साल के बारह महीने खुले रहते हैं; और देश का कारबार साल भर तक सब ऋतुओं में बिना किसी रुकावट के जारी रह सकता है।

ब्रिटिश टापुओं में मौसिम सदा सुहाना रहता है। साल के हर महीने में आकाश में बादल रहते हैं। भारतवर्ष की तरह वहाँ वर्षा की कोई विशेष ऋतु नहीं है। वहाँ हर महीने में कुछ दिन वर्षा होती रहती है, जिससे बारहों महीने बराबर वहाँ के पूर्वीय भाग के खेतों को पानी मिलता रहता है।

**खनिज और कृषि पदार्थ**—ब्रिटिश टापुओं की धरती उपजाऊ है; परन्तु आबादी बहुत घनी होने के कारण वहाँ के लोगों का अपने देश की खेती से पूरा नहीं पड़ता; और उन्हें भारतवर्ष, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया से अन्न मँगाना पड़ता है। इन टापुओं की प्रधान सम्पत्ति खनिज पदार्थ हैं। इँगलैण्ड के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में पत्थर के कोयले की बहुत सी खानें हैं; और सब से बड़ी उपयोगी बात यह है कि उन्हीं के आस पास लोहा भी मिलता है। वर्तमान युग में मशीनों आदि के लिये इन्हीं दोनों वस्तुओं की विशेष आवश्यकता होती है। लोहे से मशीनें बनती हैं जो पत्थर के कोयले से चलाई जाती हैं। ब्रिटिश टापुओं में इतने कारखाने इसी कारण बन सके कि वहाँ लोहा और कोयला खूब मिलता है। आजकल जिस देश में ये दोनों वस्तुएँ नहीं होतीं, वहाँ के निवासियों को कारखाने आदि खोलने में बड़ी कठिनाइयाँ होती हैं। पिछले युरोपीय महायुद्ध के समय जरमनी और फ्रान्स में एलसेस और लोरेन के लिये बहुत झगड़ा हुआ

था; क्योंकि इन प्रान्तों में कोयले की खानें हैं। और आज कल यही कोयला, जो दो सौ वर्ष पहले बेकार समझा जाता था, बहुत ही उपयोगी हो रहा है।

**रूई, ऊन तथा लोहे के कारख़ाने**—ब्रिटिश टापुओं में सैंकड़ों बड़े बड़े पुतलीघर हैं। उत्तर-पश्चिमी भाग विशेषतया सूती कपड़े के कारखानों के लिये प्रसिद्ध हैं। देश में कपास नहीं होती और इसलिये भारतवर्ष, मिस्र तथा अमेरिका से मँगाई जाती है। लैंकाशायर ( Lancashire ) प्रान्त में हर साल लाखों करोड़ों रुपयों का सूती कपड़ा बनता है और विदेश को भेजा जाता है। सूत कातने के लिये वहाँ एक प्राकृतिक सुभीता यह है कि आब हवा नम है और इसलिये तार अच्छा निकलता है। भारतवर्ष के बम्बई तथा अहमदाबाद आदि नगर भी इसी सुभीते के कारण सूती कपड़ों के कारखानों के केन्द्र बन सके हैं। लैंकाशायर प्रान्त आज कल ब्रिटिश टापुओं का सब से धनी भाग है; और सूती कपड़ों के कारखानों की कृपा से वहाँ आये दिन सैंकड़ों करोड़पति होते हैं। हमारे देश में जो बढ़िया सूती कपड़े आते हैं, वे अधिकतर लैंकाशायर के पुतलीघरों के ही बने होते हैं। इस प्रान्त का मुख्य नगर मैंचेस्टर ( Manchester ) और मुख्य बन्दरगाह लिवरपूल ( Liverpool ) है। अँगरेज़ी में एक कहावत है—"जो विचार आज लैंकाशायर प्रान्त में उत्पन्न होते हैं, उन्हें कल समस्त इँगलैंण्डवाले मानने लगते हैं।" इसका अभिप्राय यही है कि वहाँ के निवासियों का देश के विचारों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

ऊनी कपड़े के सब से बड़े कारखाने लीड्स (Leeds) में हैं।

ब्रिटिश द्वीप सदा से ऊन के लिये प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में देश की स्त्रियाँ ही चर्खों पर ऊन कात लेती थीं और उसी से कपड़ा बनता था। प्राचीन तथा माध्यमिक काल में, जब उस देश में पुतलीघर आदि कुछ नहीं थे, वहाँ का बहुत सा ऊन फ्रान्स के फ्लैंडर्स ( Flanders ) प्रान्त को भेज दिया जाता था, जो उस काल में भी ऊनी कपड़ों के लिये प्रसिद्ध था। पर आजकल देश में ही ऊनी कपड़ों के कारखाने इतने बढ़ गये हैं कि ब्रिटेन की भेड़ों के ऊन से पूरा नहीं पड़ता, और आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण अफ्रिका से कच्चा ऊन मँगाना पड़ता है जिस के सुन्दर ऊनी वस्त्र बना कर देशान्तर को भेजे जाते हैं।

लोहे के भी बहुत से कारखाने हैं। इँगलैंड का मध्य भाग लोहे के कारखानों के धूएँ के कारण ही "काला देश" ( Black Country ) कहलाता है। इस प्रान्त का मुख्य नगर बरमिंघम ( Birmingham ) है, जहाँ लोहे का सब प्रकार का सामान तैयार होता है। कुछ दूर पर शेफील्ड (Sheffield) है जो तलवार, चाकू, कैंची, उस्तरे आदि के लिये प्रसिद्ध है।

**व्यापार**—देश में सहस्रों पुतलीघरों का होना इस बात का सूचक है कि इँगलैण्ड का व्यापार आज कल बहुत बढ़ा चढ़ा है। व्यापार की ही कृपा से उस देशवाले इतने धनी हुए; और इसी की कृपा से इस ज़ाति ने समस्त भूमण्डल में फैल कर इतना बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। नेपोलियन अँग्रेजों को "दूकानदारों की जाति" (Nation of Shopkeepers) कहा करता था। यह वाक्य कटु अवश्य है; परन्तु यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो वास्तव में ब्रिटिश जाति की उन्नति का प्रधान आधार उन का

व्यापार ही है। यदि अपने व्यापार पर कभी किसी प्रकार का आघात होता है, तो उस आघात को ब्रिटिश जाति वैसा ही समझती है, जैसे कोई उस के देश पर आक्रमण करता हो। आगे चल कर हम बतलावेंगे कि अन्य राज्यों से सन्धि करते समय इन लोगों को सब से बड़ी चिन्ता इसी बात की रहती है कि हम व्यापार के लिये विशेष सुभीते प्राप्त कर लें या व्यापार के कुछ अच्छे केन्द्र हमारे अधीन हो जायँ।

**आबादी**—जब से देश का व्यापार बढ़ा, तब से वहाँ की आबादी भी बराबर बढ़ती गई। प्राचीन काल में देश के पूर्वीय तथा दक्षिणी भाग ही अच्छे समझे जाते थे; परन्तु वर्तमान काल में देश की सब से घनी आबादी उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में कोयले की खानों के आस पास है। देश में ग्रामों की अपेक्षा नगर अधिक हैं, क्योंकि अब कृषि वहाँ का प्रधान उद्यम नहीं है। नगरों के पूर्वीय भाग में प्राय: नीची श्रेणी के लोग बसते हैं, क्योंकि वहाँ दक्षिण-पश्चिमी हवाएँ सदा चला करती हैं जिन से पुतलीघरों का धूआँ पूरब की ओर ही पहुँचता है। नगर के पश्चिमी भाग में धूआँ बहुत कम पहुँचता है; और इसलिये धनिक लोग प्राय: पश्चिमी भाग में ही रहना पसन्द करते हैं।

**स्कॉटलैण्ड**—स्कॉटलैण्ड और इँगलैण्ड के बीच में पहाड़ियाँ हैं, जो शीवियट हिल्स (Cheviot Hills) कहलाती हैं। इन्हीं पहाड़ियों के कारण ये दोनों देश बहुत काल तक एक दूसरे से अलग रहे। माध्यमिक काल में दोनों में परस्पर युद्ध भी खूब हुए; और ट्यूडर काल तक, जहाँ से इस पुस्तक का प्रारम्भ होता है, दोनों देशों की जातियों में वैर भाव चलता रहा। परन्तु जैसा कि

आगे चल कर बतलाया जायगा, जेम्स प्रथम के समय में दोनों देशों के राज-सिंहासन मिल कर एक हो गये; और एक शताब्दी बाद दोनों देश एक संयुक्त राज्य में परिणत हो गये। स्कॉटलैण्ड के बहुत से भाग पहाड़ी हैं; और उन पहाड़ी भागों में भेड़ें पालने का काम खूब होता है। पहाड़ी प्रान्तों के निवासी हाईलैण्डर ( Highlanders ) कहलाते हैं; और वे बहुत परिश्रमी तथा साहसी होते हैं। अँग्रेजी सेना के गोरे अधिकतर स्कॉटलैण्ड के हाईलैण्डर ही होते हैं। स्कॉटलैण्ड के मुख्य नगर एडिन्बरा ( Edinburgh ) और ग्लास्गो ( Glasgow ) हैं, जहाँ इँगलैण्ड के नगरों की तरह बहुत से पुतलीघर हैं।

आयरलैण्ड—आयरलैण्ड द्वीप आइरिश सागर (Irish sea) के द्वारा ब्रिटेन द्वीप से पृथक् होता है। आयरलैण्ड में पहाड़ियाँ समुद्र तट के आस पास हैं; और इसलिये देश का पानी बह कर समुद्र में नहीं जा सकता। इस कारण वहाँ दलदलें बहुत हैं, जिन से देश का बहुत सा भाग बेकार हो गया है। समुद्र-तट की पहाड़ियाँ पानी बरसानेवाली हवाओं को अन्दर नहीं आने देतीं; और इसलिये वहाँ वर्षा भी सन्तोषजनक नहीं होती। ये प्राकृतिक कठिनाइयाँ और त्रुटियाँ आयरलैण्ड की उन्नति के मार्ग में बहुत बाधा डालती हैं।

आयरलैण्ड के निवासी पक्के कैथोलिक हैं; और इसी कारण धर्म-सुधार के पश्चात् उनकी इँगलैण्डवालों से कभी न बनी। इँगलैण्ड के शत्रुओं ने इस से लाभ उठाया; और कई बार उन्हों ने आयरिश-जनता को उत्तेजित कर के देश में विद्रोह करा दिया। सन् १८०१ में आयरलैण्ड भी इँगलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के

संयुक्त राज्यों में मिला लिया गया; परन्तु इँगलैण्ड की प्रोटेस्टेन्ट सरकार के प्रति आयरलैण्डवालों की सहानुभूति कभी न हो सकी। आयरलैण्डवाले अपना बिलकुल स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते हैं; और अभी कुछ ही वर्ष हुए कि देश के कुछ भाग में "आयरिश स्वतन्त्र राज्य" ( Irish Free States ) स्थापित हो गया है। परन्तु फिर भी अभी तक वहाँ ब्रिटिश सरकार का ही आधिपत्य है।

---

## दूसरा परिच्छेद



### सन् १४८५ से पूर्व का संक्षिप्त इतिहास

**प्राचीन ब्रिटेन**—प्राचीन काल में ब्रिटेन द्वीप और आयरलैंड की दशा आज कल की दशा से बहुत भिन्न थी। ब्रिटेन द्वीप के उत्तर में पिक्ट (Picts) और दक्षिण में ब्रिटेन (Britons) नाम की जातियाँ बसी हुई थीं। आयरलैण्ड द्वीप में जो जाति रहती थी, वह स्कॉट (Scots) कहलाती थी। ये तीनों ही जातियाँ बिलकुल असभ्य थीं और प्रायः पशुओं की खाल ओढ़ कर निर्वाह करती थीं। ईसा से ५५ वर्ष पूर्व ब्रिटेन द्वीप रोमन (Romans) जाति के अधीन हो गया। उन्हीं रोमनों ने वहाँ कुछ सड़कें आदि बनवाई थीं; तथा इसी प्रकार के कुछ और कार्य्य किए थे, जिनसे सभ्यता के थोड़े बहुत चिह्न वहाँ देख पड़ने लगे।

**आंग्लों का आगमन**—सन् ४१० में रोमन जाति ने इस द्वीप से अपना सम्बन्ध बिलकुल हटा लिया। अब यहाँ की ब्रिटेन जाति को एक बहुत बड़ी आपत्ति का सामना करना पड़ा। उत्तर से उन पर पिक्ट जाति के आक्रमण होने लगे जिनसे बचने के लिये सन् ४४९ में उन्होंने ज़रमन की राइन (Rhine) नदी के मुहाने पर बसनेवाली जूट (Jute) जाति के कुछ लोगों को अपनी सहायता के लिये अपने देश में बुलाया। देश में पहुँचते ही जूट लोगों

ने ब्रिटेनों को वहाँ से भगाना शुरू किया और वे स्वयं वहाँ बसने लगे। जूट जाति की यह सफलता देख कर उनकी पड़ोसी सैक्सन (Saxons) और आंग्ल (Angles) जातियाँ भी आकर इस द्वीप में बस गईं। इन नई आनेवाली जातियों में आंग्लों की संख्या बहुत थी और उन्हीं के नाम से द्वीप के दक्षिणी भाग का नाम इँगलैण्ड पड़ा। ब्रिटेन लोग वहाँ से निकाल बाहर किये गये और उन्होंने द्वीप के पश्चिमी भाग में शरण ली। इस भाग का नाम (Wales) वेल्ज़ पड़ा; क्योंकि ब्रिटेनों को आंग्ल लोग "वेल्श" (Welsh) कहा करते थे। उसी समय में आयरलैण्डवाली स्कॉट जाति द्वीप के उत्तर में आकर बस गई और इसलिये उस भाग का नाम स्कॉटलैण्ड (Scotland) पड़ा।

**आंग्ल साम्राज्य**—अब इँगलैण्ड में राज्यों की स्थापना आरम्भ हुई। कुछ दिनों तक देश सात राज्यों में विभक्त रहा। इन राज्यों में प्राय: झगड़े हुआ करते थे; परन्तु कुछ दिनों बाद वैसेक्ज (Wessex) के आंगल राजा को अन्य राज्यों ने भी अपना साम्राट् मान लिया; और इस प्रकार सन् ८२९ में समस्त इँगलैण्ड एक आंग्ल साम्राज्य के रूप में परिणत हो गया।

**डेन जाति का आक्रमण**—उन दिनों डेन्मार्क, नार्वे और स्वीडन में एक जाति बसी हुई थी जिसे वाइकिंग्ज (Vikings) कहते हैं। ये लोग ईसाई मत के बड़े विरोधी थे। इन्होंने ईसाई देशों में पहुँच कर लूट मार करने की ठानी। जैसा कि हम अगले परिच्छेद में बतलावेंगे, इँगलैण्ड उस समय तक ईसाई मत ग्रहण कर चुका था; और इस कारण इस देश पर भी वाइकिंग्ज के आक्रमण आरम्भ हुए। आंग्ल राजा एलफ्रेड

( Alfred ) ने इनका बड़ी वीरता से सामना किया; परन्तु अन्त में उसने इन लोगों से बँटवारा करके संधि कर लेना ही उचित समझा। सन् ८७८ में वैडमोर (Wedmore) की सन्धि के अनुसार इँगलैण्ड का उत्तरी भाग वाइकिंग्ज़ को ( जिन्हें डेन Danes भी कहते हैं) दे दिया गया; और दक्षिणी भाग में आंग्ल लोग शान्तिपूर्वक राज्य करने लगे। डेन लोग इँगलैण्ड में बसने भी लगे। धीरे धीरे उनकी शक्ति इतनी अधिक बढ़ गई कि उनके राजा कैन्यूट ( Canute ) ने सारे देश में अपना राज्य स्थापित कर लिया। कैन्यूट के पुत्र बड़े अत्याचारी हुए; और उनकी मृत्यु के उपरान्त देश में फिर वैसेक्ज की आंग्ल जाति का राज्य स्थापित हो गया। धीरे धीरे उत्तरी भाग भी डेन लोगों से छिन गया और देश में उनकी शक्ति बहुत कम हो गई।

**नार्मन वंश का राज्य**—उस समय फ्रांस के उत्तर में नार्मन (Normans) नाम की जाति बसी हुई थी। इस जाति के राजा विलियम ने सन् १०४२ में इँगलैण्ड पर आक्रमण किया और आंग्ल राजा पर भारी विजय प्राप्त की। इँगलैण्ड के लोगों ने देखा कि विलियम इस देश को सहज में न छोड़ेगा; इसलिये उन्होंने स्वयं उसे अपना राजा स्वीकृत कर लिया। इस प्रकार इँगलैण्ड में नार्मन वंश का राज्य आरम्भ हुआ। नार्मन राजाओं के द्वारा इँगलैण्ड का युरोपीय राजनीति में भी प्रवेश हो गया। धीरे धीरे नार्मन लोग देश में बसने भी लगे और उन्होंने देशवासियों से विवाह-सम्बन्ध भी आरम्भ किया। इस प्रकार आंग्ल और नार्मन जातियों में परस्पर प्रेम बढ़ता गया; और आंग्ल लोग यह बात भूल से गये कि हम एक विदेशी जाति के अधीन हैं।

**ऐंजविन वंश का राज्य**—नार्मन राजा हेनरी प्रथम ने स्वयं एक आंग्ल राजकन्या से विवाह किया था, जो एल्फ्रेड के वंश की थी। इन दोनों की पुत्री मैटिल्डा ( Matilda ) का पालन पोषण बिलकुल आंग्ल ढंग से हुआ और उसका विवाह ऐन्जू ( Anjou ) के शासक के साथ किया गया। इस प्रकार मैटिल्डा के पुत्र हेनरी द्वितीय के राज-सिंहासन पर बैठने से ऐंजविन वंश ( Angevins ) का राज्य आरम्भ हुआ। नार्मन और ऐंजविन राजा इँगलैएड के अतिरिक्त स्वयं अपने देश फ्रांस के भी बहुत से भागों के शासक होते थे। परन्तु जॉन (John) के राजत्व काल में फ्रांस का बहुत कुछ भाग उनके हाथ से निकल गया। इससे इँगलैएड का लाभ ही हुआ; क्योंकि अब ऐंजविन राजा इँगलैएड की ओर पूर्णतया ध्यान देने लगे। इसी जॉन के समय में जनता को "महास्वतंत्रता-पत्र" या मैगना कारटा ( Magna Charta) प्राप्त हुआ, जिसके विषय में विशेष बातें तीसरे परिच्छेद में बतलाई जायँगी।

**फ्रान्स से शतवार्षिक युद्ध**—एडवर्ड तृतीय के समय में इँग-लैंड और फ्रांस में एक बहुत बड़ा युद्ध आरम्भ हुआ जो लगभग एक शताब्दी तक बराबर कुछ न कुछ चलता रहा। इँगलैंड से बहुत सा ऊन फ्लैएडर्स देश को भेजा जाता था, जो उस समय ऊनी कपड़ों के लिये बहुत प्रसिद्ध था। फ्रांस का राजा फ्लैएडर्स पर आक्रमण करना चाहता था; और इस वास्ते अपने ऊन के व्यापार की रक्षा के लिये इँगलैएड के लिये फ्रांस से युद्ध करना आवश्यक हो गया। जब उसी समय फ्रांस की राजगद्दी का प्रश्न उपस्थित हुआ, तब एडवर्ड तृतीय ने भी अपना अधिकार जतलाना आरम्भ

किया। उसकी माता फ्रांस के भूतपूर्व राजा की पुत्री थी; अतः उसने कहा कि नाती होने के कारण, पुत्र की अनुपस्थिति में, फ्रांस का सिंहासन मुझे मिलना चाहिए। पर फ्रांस के नियमानुसार कन्या की सन्तान का कोई अधिकार न पहुँचता था; और इसलिये फ्रांस के भूतपूर्व राजा के भतीजे को गद्दी दी गई। इस पर एडवर्ड ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध ठान दिया।

इस शतवार्षिक युद्ध ( Hundred Years' War ) में दो बार इँगलैण्ड की बहुत बड़ी विजय और दो बार बहुत बड़ी पराजय हुई। एडवर्ड तृतीय ने फ्रांस के राजा को क्रेसी ( Crecy. 1346. ) और पोयटियर्स ( Poitiers. 1356. ) के प्रसिद्ध युद्धों में परास्त करके बहुत सा धन प्राप्त किया; और ब्रेटिग्नी ( Bretigny ) की सन्धि के अनुसार फ्रान्स का बहुत सा भाग इँगलैण्ड को मिला। परन्तु कुछ दिनों बाद वह सब भाग इँगलैण्ड के हाथ से छिन गया।

हेनरी पंचम के समय में आंग्लों ने एगिनकोर्ट (Agincourt, 1415) के युद्ध में भारी विजय प्राप्त की और फिर कुछ भाग जीत कर अपने अधीन कर लिया। परन्तु हेनरी षष्ठ के समय में वह भाग फिर उनके हाथ से निकल गया। इस दूसरी बार फ्रान्स के पुनरुद्धार के कार्य में एक कृषक की पुत्री जॉन आफ़ आर्क ( Joan of Arc ) ने बड़ा काम किया था। उसने फ्रान्सीसी सैनिकों को उत्साह दिलाया और यह प्रसिद्ध किया कि मुझे स्वयं देवताओं ने फ्रान्स का पुनरुद्धार करने की प्रेरणा की है। उसने फ्रान्स के राजा को उसके वैरियों की जीती हुई भूमि में ले जाकर उसका राज्याभिषेक कराया। परन्तु कुछ ही दिनों बाद वह आंग्लों के

द्वारा पकड़ी गई और उसे जादूगरनी ठहरा कर जीवित ही जला दिया गया। अन्त में आंग्लों के अधीन केवल कैले (Calais) का गढ़ रह गया और फ्रान्स का जीता हुआ शेष सारा भाग उनके हाथ से निकल गया।

**लैंकास्टर और यॉर्क वंश**—एडवर्ड तृतीय की मृत्यु होने पर बड़े राजकुमार का पुत्र रिचर्ड द्वितीय के नाम से इँगलैण्ड के राज-सिंहासन पर बैठा। अत्याचारी होने के कारण कुछ दिनों बाद वह गद्दी से हटा दिया गया और पार्लिमेण्ट ने लैंकास्टर वंश के राजकुमार हेनरी को हेनरी चतुर्थ के नाम से इँगलैण्ड का राजा बनाया। कुछ दिनों तक इस वंश का राज्य चलने के पश्चात् यॉर्क वंशवालों ने, जो एडवर्ड तृतीय के चौथे पुत्र की संतान थे, लैंकास्टर राज्य के विरुद्ध उपद्रव मचाना आरम्भ किया। यॉर्क और लैंकास्टर वंशों में परस्पर बहुत दिनों तक युद्ध चलता रहा। इन वंशों के सैनिक चिह्न लाल और सफेद गुलाब के फूल होते थे; इस कारण इन युद्धों को Wars of the Roses (गुलाबों का युद्ध) कहते हैं। दूसरे अध्याय में हम यह बतलावेंगे कि इस घोर युद्ध का किस प्रकार अन्त हुआ और इसके पश्चात् किस प्रकार ट्यूडर वंश के राज्य का प्रारम्भ हुआ।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

ईसा पू० ५५ से सन् ४१० तक—इँगलैण्ड पर रोमन जाति का अधिकार।

सन् ४४९—आंग्लों का आगमन।

" ८२९—समस्त इँगलैण्ड में एक साम्राज्य की स्थापना।

" ८७८—वैडमोर की संधि।

" १०६६—११५४—नार्मन राज्य।

" ११५४—१३९९—ऐंजविन राज्य।

" १३९९—१४६७—लैंकास्टर राज्य।

" १४६७—१४८५—यॉर्क राज्य।

" १३४६—क्रेसी का युद्ध।

" १३५६—पोयटियर्स का युद्ध।

" १४१५—एगिनकोर्ट का युद्ध।

" १४३०—जोन आफ आर्क का जीवित जलाया जाना।

---

२

# तीसरा परिच्छेद

## धर्म-प्रचार

**आंग्लों का प्राचीन धर्म**—प्राचीन आंग्ल लोग ईसाई मत के अनुयायी नहीं थे। प्रचीन आर्य्यों की भाँति वे भी सूर्य, चन्द्रमा, कुछ वृक्षों और इसी प्रकार के अन्य प्राकृतिक पदार्थों की पूजा और उपासना करते थे। आज कल अँगरेजी भाषा में सप्ताह के दिनों के जो नाम हैं, वे उन्हीं के प्राचीन देवताओं के नामों पर रखे गये हैं। ब्रिटन लोगों में, जो इस द्वीप के प्राचीन निवासी थे, रोमन शासन के समय ईसाई मत का प्रचार हो चुका था; परन्तु ब्रिटनों से आंग्ल लोग घृणा करते थे।

**ईसाई मत का प्रचार**—युरोप के ईसाइयों में रोम के बिशप का बड़ा आदर था। उसे वे पोप (Pope) अर्थात् पूज्य पिता के नाम से पुकारते थे। रोम के पोप ग्रीगरी (Gregory) ने एक बार कुछ आंग्ल बालकों को रोम के बाजार में बिकते हुए देखा। उनके सुन्दर मुखों का ग्रीगरी पर बड़ा प्रभाव पड़ा; और सन् ५९७ में उसने ऑगस्टाइन (Augustine) को इँगलैण्ड में ईसाई मत का प्रचार करने के लिये भेजा। उस समय इँगलैण्ड कई राज्यों में विभक्त था। केन्ट के आंग्ल राजा ने ईसाई मत बहुत पसन्द किया और उस की प्रजा का अधिकांश ईसाई हो गया। केन्ट के इस राजा की एक कन्या का विवाह उत्तरीय इँगलैण्ड के राजा

के साथ हुआ; और इस प्रकार उस भाग में भी ईसाई मत का प्रचार हुआ। फिर धीरे धीरे समस्त इँगलैण्ड ईसाई मत का अनुयायी हो गया।

**आंग्ल चर्च की स्थापना**—इसी समय में स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड के कुछ पादरियों ने भी इँगलैण्ड में ईसाई मत के प्रचार का कार्य किया। इन प्रचारियों की उपासना की विधियाँ रोमन चर्च की विधियों से कुछ भिन्न थीं; और इस कारण इँग-लैण्ड में जितने ईसाई हुए, वे सब एक ही ढंग की उपासना करने-वाले नहीं थे। अंत में सन् ६६४ में व्हाइटबी ( Whitby ) की धर्म-मण्डली में यह निश्चित हुआ कि इँगलैण्ड के सारे ईसाई रोमन उपासना प्रणाली ग्रहण करें। यह निर्णय देश के लिये बहुत लाभदायक हुआ; क्योंकि इस से इँगलैण्ड का सम्बन्ध रोम से हो गया, जो उस समय सभ्यता का केन्द्र था।

**चर्च और राज्य का घनिष्ठ सम्बन्ध**—अब इँगलैण्ड में मठों की स्थापना आरम्भ हुई। जिस प्रकार बौद्ध धर्म में भिक्षु और भिक्षुणियाँ होती थीं, उसी प्रकार ईसाई मत में भी कुछ पुरुष और स्त्रियाँ यह प्रण करती थीं कि हम विवाह इत्यादि की झंझट में न पड़ कर अपना समस्त जीवन धर्म-प्रचार में ही व्यतीत करेंगी। ये ईसाई साधु (Monks) और साध्वियाँ (Nuns) मठों (Monasteries) में रहती थीं। उस प्राचीन काल में देश में केवल यही साधु लोग पढ़े लिखे होते थे। दसवीं शताब्दी तक राज्य के प्रधान कर्मचारी तथा राजनीतिज्ञ भी प्रायः यही साधु होते थे; और उस काल में राज्य तथा धर्म में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। राज-सभाओं में अन्य सदस्यों के साथ साधु भी सम्मलित होते

थे; और उन सभाओं में धार्मिक तथा राजनीतिक दोनों ही प्रकार के विषयों पर विचार किया जाता था।

**चर्च का राज्य से पृथक् होना**—ग्यारहवीं शताब्दी में समस्त युरोप में यह लहर उठी कि चर्च और राज्य से कोई सम्बन्ध न रहना चाहिए और चर्च की एक पृथक् संस्था होनी चाहिए। इस काल में पादरियों ने अपने न्यायालय भी अलग स्थापित किये और उनके लिये अपने अलग नियम भी बनाये। पादरियों को चर्च के ही न्यायालय में दंड दिया जा सकता था; और वे पोप के अतिरिक्त अन्य किसी को अपना स्वामी नहीं मानते थे।

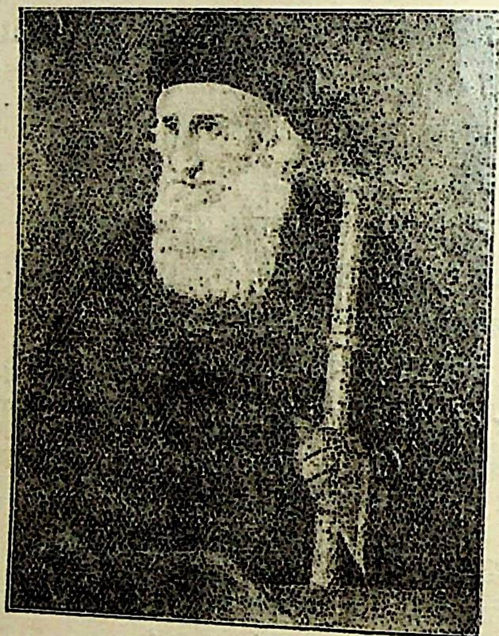
**चर्च और राज्य से झगड़ा**—बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी का इतिहास चर्च और राज्य के पारस्परिक झगड़ों से भरा हुआ है। चर्च के राज्य से पृथक् हो जाने का केवल यही परिणाम हो सकता था। हेनरी द्वितीय और बिशप बेकेट (Becket) में इस विषय पर बहुत झगड़ा चला। बेकेट चाहता था कि राजकीय न्यायालयों के हाथ में पादरियों को दंड देने का अधिकार न रहे; और उनके लिये चर्च के अलग न्यायालय हों। अन्त में बेकेट का बध हुआ; परन्तु इस से उस की तथा उस के विचारों की प्रतिष्ठा और भी अधिक बढ़ गई; और चर्च तथा राज्य का झगड़ा धर्म-सुधार (Reformatiou) के समय तक बराबर चलता रहा।

**चौदहवीं शताब्दी में चर्च के दोष**—चौदहवीं शताब्दी तक पहुँचते पहुँचते चर्च का प्राचीन महत्व बहुत कुछ घट गया और उसमें बहुत से दोष आने लगे। पादरियों ने, पहले जिन के जीवन का प्रधान लक्ष्य स्वार्थत्याग होता था, अब सांसारिक भोग विलास

की सामग्री एकत्र करना आरम्भ किया। इससे उनकी प्रतिष्ठा बहुत कम हो गई। स्वयं पोप का जीवन इतना सांसारिक हो गया कि उसमें और इटली के राजकुमारों में कोई अन्तर ही न प्रतीत होता था। पोप के कोष के लिये समस्त ईसाई देशों से धर्मकर (Tithes) के रूप में रुपया भेजा जाता था; और अपने कोष की वृद्धि के लिये पोप लोग, बिलकुल एक स्वार्थी राजा की भाँति, ईसाइयों से बहुत बुरी तरह से रुपये वसूल करते थे। पोप कुछ दिनों तक रोम छोड़कर फ्रान्स के एविगनन नगर में रहे। यह इँगलैण्ड और फ्रान्स के शतवार्षिक युद्ध का समय था; और इस कारण पोप के प्रति इँगलैण्ड-निवासियों के विचार कुछ बदलने लगे।

**रोमन चर्च की संस्था का प्रथम विरोधी ( The Morning Star of the Reformation)** ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के जॉन विकलिफ (John Wycliff) नामक एक अध्यापक ने रोमन चर्च की संस्था के विरुद्ध पहले पहल अपना मत प्रकट किया। वह हर एक विषय में केवल बाइबिल को ही प्रमाण मानता था; और जिन रीतियों का उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता था, उन्हें वह ईसाई मत का अंग मानने के लिये तैयार न था। पोप के कोष के लिये राज्यों द्वारा रुपया भेजे जाने का वह बहुत बड़ा विरोधी था। उसने बाइबिल का अँग्रेजी में अनुवाद किया और धार्मिक विषयों पर अँग्रेजी में ही बहुत सी पुस्तिकाएँ लिखीं। अँग्रेजी भाषा का व्यवहार करने का आशय यही था कि साधारण जनता भी उससे लाभ उठा सके। विकलिफ के अनुयायी लॉलर्ड्स (Lollards) कहे जाते थे, जिसका अर्थ "व्यर्थ बकवादी" है। सरकार ने लॉलर्ड्स को दबाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया

और उनके एक दो नेता जीवित जलाये तक गये। परिणाम यह हुआ कि उनकी संख्या दिन पर दिन कम होने लगी और विक-



लिफ का उद्योग विफल रहा। उस समय तक देश में विद्या का अच्छी तरह प्रचार नहीं हुआ था; और इस कारण अंधविश्वासों का हटना अभी असम्भव था।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् ५९७—ऑगस्टाइन का इँगलैण्ड में आगमन।
,, ६६४—व्हाइटबी की धर्म-मंडली।
,, १३८४—जॉन विकलिफ की मृत्यु।

# चौथा परिच्छेद



## पार्लिमेण्ट

**प्राचीन काल की सभाएँ**—इँगलैण्ड में सदा से किसी न किसी प्रकार की जातीय सभाएँ रहती आई हैं। प्राचीन काल में वहाँ प्रत्येक छोटे राज्य में वर्ष में दो बार सब नागरिक एक स्थान पर एकत्र होते थे; और ऐसी सभाओं को जन-सभा (Folk-moot) कहते थे। उन सभाओं में जातीय नेता चुने जाते थे और सब प्रकार के जातीय प्रश्नों का निर्णय होता था। जब छोटे छोटे राज्यों के मिल जाने से समस्त इँगलैण्ड एक ही राजा के अधीन हो गया, तब देश भर के समस्त नागरिकों का एक स्थान पर एकत्र होकर सभा करना असम्भव हो गया; इसलिये अब एक विशेष प्रकार की सभा स्थापित की गई, जिस में केवल प्रतिष्ठित नागरिक ही सम्मलित होते थे। इस सभा को आंग्ल लोग विटान (Witan) कहा करते थे।

**नार्मन काल की राज-सभा**—नार्मन राज्य के स्थापित होने पर एक दूसरे ही ढंग की राज-सभा या राजकीय परिषद् (Royal Council) का प्रारम्भ हुआ। उस समय यह प्रथा प्रचलित थो कि समस्त राज्य की भूमि कुछ भागों में विभक्त कर दी जाती थी। प्रत्येक विभाग का स्वामी एक भूमिपति (Feudal Baron) होता था; और उस भूमिपति पर राजा की सहायता

के लिये कुछ सेना सदैव तैयार रखने का भार होता था। नार्मन काल में बड़े बड़े भूमिपति ही राजसभा में सम्मलित होने के लिये निमन्त्रित किये जाते थे; और साधारण जनता का राज-कार्यों में कोई प्रवेश न होता था।

**पार्लिमेण्ट का उत्थान—तेरहवीं शताब्दी**—भूमिपति बराबर यह प्रयत्न करते रहते थे कि राजा की शक्ति अधिक न बढ़ने पावे। योग्य राजाओं के समय में तो उनकी कुछ न चलती थी; परन्तु जब राजा शासन कार्य्य के अयोग्य होता था, तब उनको बहुत अच्छा अवसर मिल जाता था। तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ का राजा जॉन ( John ) बड़ा अत्याचारी था। उस समय भूमिपतियों ने कैन्टर्बरी के बड़े पादरी स्टेफन लैंगटन ( Stephen Langton ) को अपना नेता बनाया और जॉन के अत्याचारों का विरोध किया। अन्त में जॉन को एक आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य किया गया, जो इतिहास में "महा-स्वतंत्रतापत्र" ( Magna Charta ) के नाम से प्रसिद्ध है; क्योंकि उससे इँगलैण्ड के नियमबद्ध या वैध शासन ( Constitutional Government) का प्रारम्भ होता है। उस स्वतंत्रतापत्र के अनुसार यह निश्चित हुआ था कि राजसभा की स्वीकृति के बिना जनता पर कोई कर नहीं लग सकेगा; और न्यायालय में नियमानुसार निर्णय हुए बिना किसी को कारावास का दण्ड नहीं दिया जा सकेगा।

धीरे धीरे राजसभा का नाम पार्लिमेण्ट पड़ गया। हेनरी तृतीय के समय में नियमबद्ध या वैध शासन का फिर उल्लंघन होने लगा। इस बार भूमिपतियों ने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये

साइमन ( Simon de Montford )को अपना नेता बनाया। सन् १२६५ में साइमन ने हेनरी को परास्त करके पार्लिमेण्ट की एक बैठक की। उस सभा में भूमिपतियों के अतिरिक्त प्रत्येक मंडल ( Shire ) और नगर ( Borough ) से दो दो प्रतिनिधि बुलाये गये थे; और इस प्रकार जनता के प्रतिनिधियों का पार्लिमेण्ट में प्रवेश हुआ।

धीरे धीरे पार्लिमेण्ट देश की शासन-प्रणाली का एक प्रधान अंग हो गई। सन् १२९५ में एडवर्ड प्रथम ने पार्लिमेण्ट की जो बैठक की, उसमें भूमिपति ( Barons ), पादरी ( Clergy ) और साधारण जनता ( Commons ) तीनों के प्रतिनिधि बुलाये गये। इसका नाम "आदर्श पार्लिमेण्ट" (Model Parliament) पड़ा। तब से कुछ समय तक पार्लिमेण्ट की बैठकों में इसी प्रकार तीनों श्रेणियों के प्रतिनिधि बुलाये जाने लगे।

उस काल में देशवासी पार्लिमेण्ट में अपने प्रतिनिधि भेजना पसन्द न करते थे; क्योंकि उनके आने जाने के व्यय का भार उनके निर्वाचन स्थान ( Constituency ) पर ही पड़ता था। इसी कारण निम्न कोटि के पादरियों ने धीरे धीरे अपने प्रतिनिधि भेजना बन्द कर दिया। कुछ समय बीतने पर बड़े पादरी और भूमिपति अपनी बैठक साधारण जनता के प्रतिनिधियों से अलग करने लगे; और इस प्रकार पार्लिमेण्ट लार्ड सभा ( House of Lords ) और लोक सभा ( House of Commons ) नाम के दो भागों में विभक्त हो गई।

**चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी**—लैंकास्टर वंश के प्रथम राजा हेनरी चतुर्थ को पार्लिमेण्ट ने ही गद्दी पर बैठाया था और

इस कारण लैंकास्टर काल में राजा लोग पार्लिमेण्ट की बात बहुत मानते थे। इस काल में पार्लिमेण्ट की शक्ति धीरे धीरे बढ़ने लगी; और कोई राजकर बिना उसकी स्वीकृति के न लगाया जाता था। परन्तु तब तक पार्लिमेण्ट को वर्तमान काल की भाँति अधिकार प्राप्त नहीं थे। राज-नियम बनाने के लिये पार्लिमेण्ट अपने प्रस्ताव राजा के सम्मुख प्रार्थनापत्र ( Petition ) के रूप में उपस्थित करती थी; और उसे स्वीकृत करना या न करना पूर्णतया राजा की इच्छा पर निर्भर होता था। राज्य के कर्मचारियों पर भी पार्लिमेण्ट का अधिक दबाव न होता था। केवल कभी कभी अभियोग ( Impeachment ) उपस्थित करके पार्लिमेण्ट अपनी शक्ति जतला दिया करती थी।

आगे चल कर हम बतलावेंगे कि ट्यूडर काल में पार्लिमेण्ट फिर किस प्रकार शक्तिहीन होने लगी और ट्यूडर राजा किस प्रकार मनमाना और निरंकुश शासन करने लगे।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १२१५—"महास्वतंत्रतापत्र"।
" १२६५—देश के प्रतिनिधियों का पार्लिमेण्ट में प्रवेश।
" १२९५—"आदर्श पार्लिमेण्ट" की बैठक।

---

## पाँचवाँ परिच्छेद



### सभ्यता

**प्राचीन काल में देश की दशा**—प्राचीन काल में इँगलैण्ड बिलकुल असभ्य देश था। वहाँ जंगल और दलदलें बहुत थीं और रोमन काल की बनी हुई थोड़ी बहुत सड़कों से ही काम चलता था। उस समय समस्त इँगलैण्ड में कोई बीस लाख से अधिक निवासी न थे। कृषि ही से अधिकांश देश-वासियों का काम चलता था और इसलिये लोग प्रायः ग्रामों में ही रहते थे। व्यापार तो बस नाम मात्र का ही था; और दो चार इने गिने स्थान ही नगर कहे जा सकते थे। उस समय के मकान बड़े भोंडे और लकड़ी के बने हुए होते थे, जिन की छतों में धूआँ निकलने के लिये एक छेद कर दिया जाता था। शीशेदार किवाड़ों की खिड़कियाँ उस समय नहीं होती थीं। हाँ, हवा आने के लिये दीवारों में कहीं कहीं छेद छोड़ दिये जाते थे। वस्त्र भी मोटे झोटे ही होते थे; और घरों में स्त्रियाँ, कपड़ा बनाने के लिये, स्वयं ही चरखे पर सूत या ऊन कात लिया करती थीं।

**मध्य-कालीन सभ्यता ( ग्यारहवा से तेरहवीं शताब्दी तक )**—नार्मन राज्य स्थापित होने पर देश में सभ्यता के चिह्न दिखाई देने लगे। नार्मन काल में भूमि ही सब से बड़ी सम्पत्ति समझी जाती थी; और बड़े बड़े भूमिपति (Feudal Barons)

ही सब कार्यों में जाति के नेता होते थे। किसानों से लगान नगद नहीं लिया जाता था। उन्हें अपने खेतों की भूमि के बदले में भूमिपतियों की कई प्रकार से सेवाएँ करनी पड़ती थीं। प्रत्येक भूमिपति की एक निज की कचहरी होती थी, जिस में उसकी भूमि के सब असामियों या किसानों का न्याय होता था। किसानों पर इस कचहरी का यहाँ तक दबाव होता था कि बिना उसकी आज्ञा प्राप्त किये कोई किसान अपने पुत्री या पुत्र का विवाह तक न कर सकता था।

इस काल में नाइट ( Knight ) का एक बहुत प्रतिष्ठित पद हुआ करता था। प्रायः भूमिपति ही यह पद प्राप्त करते थे। प्रत्येक नाइट का अस्त्र शस्त्र धारण करने का नियमपूर्वक संस्कार होता था; और स्वयं राजा तक के लिये नाइट होना गौरव और अभिमान का कारण माना जाता था। नाइट घोड़े पर सवार, कवच पहने, हाथ में भाला लिये बिलकुल वीरता के स्वरूप मालूम होते थे; और उस समय के टूर्नामेण्ट ( Tournament ) में उन्हें अपने बल का परिचय देने का अच्छा अवसर मिलता था।

साधारण मनुष्यों के मकानों में तब तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। नगरों तक में गलियों की सफाई का कोई ठीक प्रबन्ध न था। परन्तु धीरे धीरे देश में भूमिपतियों के अच्छे गढ़ ( Castles ) और कुछ सुन्दर गिरजाघर दिखाई देने लगे। नार्मन लोग दाढ़ी मूछें मुँडाए रहते थे; और स्त्री तथा पुरुष दोनों ही रंग बिरंगे वस्त्र पहनते थे।

व्यापार में भी कुछ उन्नति हुई; और पेशेवालों ने एक दूसरे की सहायता करने के उद्देश्य से अपने अपने संघ ( Guilds )

स्थापित किये। कुछ बड़े बड़े नगर भी बसने लगे और इँगलैण्ड में लन्दन व्यापार का अच्छा केन्द्र हो गया। कुछ नगरों ने स्वतंत्रतापत्र ( Charter ) भी प्राप्त कर लिये; और नगर के प्रबन्ध के लिये नागरिक सभाओं का प्रारम्भ हुआ।

इस काल में देश में केवल पादरी और उच्च कोटि के लोग ही शिक्षित होते थे। साधारण मनुष्य लिखना पढ़ना बिलकुल न जानते थे। शिक्षा का कार्य्य अधिकतर पादरियों के ही हाथ में था; और शिक्षा का माध्यम ( Medium of instruction ) लैटिन ( Latin ) भाषा होती थी। राज-कार्य्य में फ्रांसीसी भाषा (French) का प्रयोग होता था और अँग्रेजी प्रायः किसानों की भाषा समझी जाती थी।

चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी—सन् १३४९ में इँगलैण्ड में महामारी ( Black Death ) फैली जिस में गाँव के गाँव उजाड़ हो गये। खेती बारी के लिये मजदूर आदि मिलने में बहुत कठिनता होने लगी और मजदूरी बहुत अधिक बढ़ गई। बहुत से भूमिपतियों ने खेती के स्थान पर भेड़ें पालने का काम ही अधिक लाभदायक समझा; क्योंकि उस में थोड़े आदमियों से ही काम चल जाता था। इँगलैण्ड के ऊन की माँग फ्लैंडर्स देश में बहुत थी, जहाँ ऊन के बहुत बढ़िया कपड़े बनाये जाते थे; इसलिये अब इँगलैण्ड में भेड़ों से ऊन प्राप्त करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। अब यही देश का मुख्य व्यापार हो चला और खेती का काम बहुत कुछ मन्दा पड़ गया।

इस परिवर्तन से किसानों को बहुत हानि पहुँची। ऊन के धन्धे में बहुत ही थोड़े लोग खप सकते थे। शेष बेकार फिरने लगे

और उनकी जीविका का कोई सहारा न रहा। उन्होंने दल बाँध कर विद्रोह आरम्भ कर दिया। इसे किसानों का विद्रोह ( Peasant Revolt ) कहते हैं। ऐसी स्थिति में भूमिपतियों को किसानों के साथ कुछ रिआयतें करनी पड़ीं। इस का परिणाम यह हुआ कि देश में किसानों की स्थिति बहुत कुछ सुधर गई।

तेरहवीं शताब्दी में ईसाइयों को अपने धर्म-स्थानों की रक्षा के लिये एशिया माइनर ( Asia Minor ) में तुर्कों से धर्म-युद्ध ( Crusades ) करने जाना पड़ा था। इन युद्धों में इँगलैण्ड भी सम्मिलित हुआ; और इस प्रकार आंग्लों को पूर्वीय सभ्यता देखने का अवसर मिला। इसका इँगलैण्ड के निवासियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और देश की सभ्यता में बहुत उन्नति हुई। चौदहवीं शताब्दी में नगरों की दशा भी बहुत कुछ सुधर गई और लकड़ी के स्थान पर ईंटों के सुन्दर मकान बनाये जाने लगे। फ्रान्स से शतवर्षीय युद्ध होने के कारण आंग्लों को फ्रान्सीसी भाषा से कुछ घृणा सी होने लगी और धीरे धीरे देश के समस्त कार्यों में अँग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होने लगा। इस प्रकार अँग्रेजी भाषा का प्रचार बढ़ने लगा। उसी अवसर पर महाकवि चॉसर (Chaucer) ने अँग्रेजी भाषा में एक बहुत ही सुन्दर काव्य लिखा, जिसका अब तक बहुत अधिक आदर होता है।

पन्द्रहवीं शताब्दी गुलाबों के युद्ध का काल था। परन्तु इससे देश की उन्नति में कोई बाधा नहीं हुई। इस युद्ध में बड़े बड़े राज-वंशों के लोग ही सम्मिलित हुए और साधारण देश-वासियों के जीवन पर इस का अधिक प्रभाव न पड़ा। अगले अध्याय में हम बतलावेंगे कि किस प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में देश

की यहाँ तक उन्नति हुई कि इस काल से "आधुनिक इँगलैण्ड" का आरम्भ माना जाता है।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १३४८—इँगलैण्ड में महामारी।
,, १३६२—राजकीय न्यायालयों में फ्रांसीसी भाषा के स्थान पर अँग्रेजी का प्रचार।
,, १३८१—किसानों का विद्रोह।

---

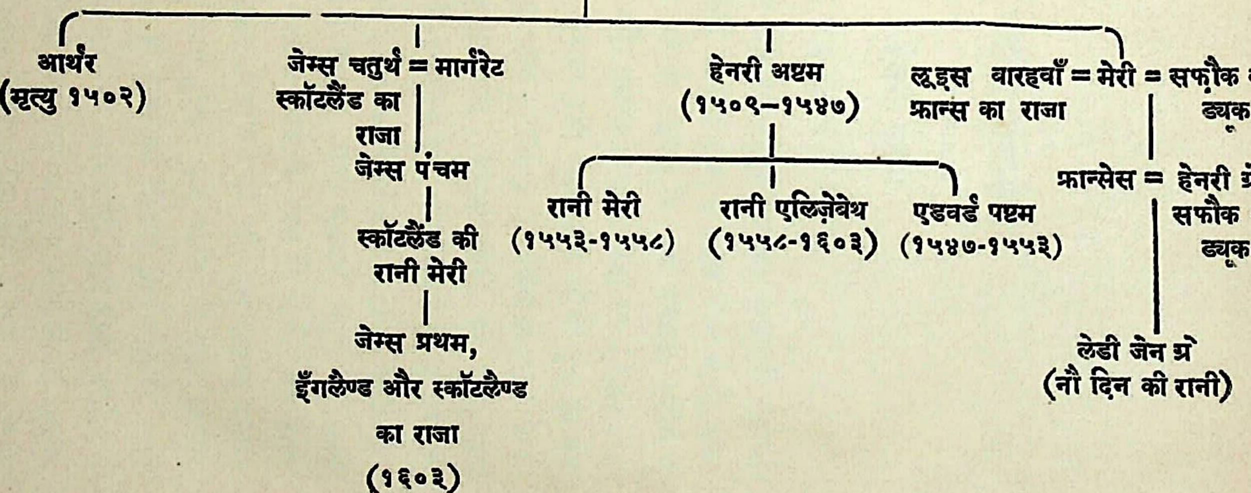


# दूसरा खण्ड

## ट्यूडर शासन-काल



# ट्यूडर राजाओं की वंशावली





## पहला परिच्छेद

### हेनरी सप्तम

( सन् १४८५-१५०९ )

ट्यूडर राज्य का आरम्भ—इँगलैण्ड का पन्द्रहवीं शताब्दी का इतिहास झगड़े-बखेड़ों से भरा हुआ है। इस काल में दो राज-वंश गद्दी के लिये लड़ रहे थे। इनमें से एक एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र का वंश था और उसका सम्बन्ध लैंकास्टर (Lancaster) प्रान्त से था। दूसरा उसी सम्राट् के चौथे पुत्र का वंश था और उसका सम्बन्ध यॉर्क ( York ) प्रान्त से था। यॉर्क-वालों का चिह्न सफेद गुलाब और लैंकास्टरवालों का चिह्न लाल गुलाब का फूल था; और इसलिये इन दोनों वंशों के पारस्परिक युद्धों को गुलाबों के युद्ध (Wars of the Roses) कहते हैं।

सन् १४८३ में यॉर्क वंश के राजा एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु हुई। उसका ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड पंचम के नाम से गद्दी पर बैठा; परन्तु उसकी अवस्था केवल तेरह वर्ष की थी; इस कारण उसका चाचा उसका संरक्षक नियत हुआ। इस चाचा ने यह प्रसिद्ध कराया कि एडवर्ड पंचम की माता का विवाह नियमानुसार नहीं हुआ था; इस कारण वह गद्दी का अधिकारी नहीं होना चाहिए। इस प्रकार जनता को धोखा देकर यह संरक्षक स्वयं रिचर्ड तृतीय ( Richard III ) के नाम से राजा बन बैठा। कुछ ही दिनों

बाद रिचर्ड ने एडवर्ड पंचम और उसके छोटे भाई को गुप्त रीति से मरवा डाला। गद्दी पर बैठने से पहले ही रिचर्ड बहुत से अत्याचारों के कारण बदनाम हो चुका था; और जब यह बात फैली कि उसने अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिये अपने दोनों भतीजों की जान ले ली, तब जनता उसके विरुद्ध हो गई।

इसी समय में हेनरी ट्यूडर ( Henry Tudor ) नामक एक वेल्ज निवासी ने कुछ सेना लेकर देश पर आक्रमण कर दिया। हेनरी की माता लैंकास्टर वंश की थी; और इसलिये लैंकास्टर दल के अनुयायियों से उसे पूर्ण सहायता मिली। हेनरी ने यॉर्क वंश की उत्तराधिकारिणी महिला एलिज़बेथ ( Elizabeth ) से विवाह करने का वचन दिया था; और इस कारण यॉर्क दलवालों ने भी उसका साथ दिया। हेनरी ने जनता की सहायता से रिचर्ड पर बास्वर्थ फील्ड ( Bosworth Field ) के युद्ध में भारी विजय प्राप्त की। इस युद्ध में रिचर्ड मारा गया और हेनरी "हेनरी सप्तम" के नाम से इँगलैण्ड के राजसिंहासन पर बैठा। इस प्रकार सन् १४८५ में गुलाबों के युद्ध समाप्त हुए और ट्यूडर वंश के राज्य का प्रारम्भ हुआ।

**हेनरी सप्तम**—हेनरी अपने आप को सारी जाति का नेता बनाना चाहता था; और अपने राज-चिह्न में उसने लाल और सफेद दोनों गुलाबों को मिला लिया। गद्दी पर बैठते ही उसने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार एलिज़बेथ से विवाह किया। एलिज़बेथ एडवर्ड चतुर्थ की कन्या थी; और अपने दोनों सहोदर भ्राताओं की मृत्यु होने पर वही यॉर्क वंश की उत्तराधिकारिणी होती थी। इसमें बाधा डालनेवाला केवल एडवर्ड का भतीजा अर्ल

आफ वार्विक ( Earl of Warwick ) ही हो सकता था; और इसी लिये हेनरी ने उसे बन्दीगृह में रख छोड़ा था। वंशगत दृष्टि से हेनरी का राज्याधिकार अधिक पुष्ट न था। उसे बास्वथ फील्ड के युद्ध में विजयी होने के कारण ही गद्दी मिली थी। इसके बाद अपना राज्याधिकार पुष्ट करने के लिये हेनरी ने पार्लि-मेण्ट से अपना राजा होना स्वीकृत करा लिया।

प्रारम्भिक उपद्रव—हेनरी का एलिजेबेथ से विवाह हो जाने पर भी यॉर्क दल के कुछ सहायकों ने हेनरी के विरुद्ध कई षड़-यन्त्र रचे। पहले उन्हों ने लैम्बर्ट सिम्नल ( Lambert Simnel ) नामक एक द्वादशवर्षीय बालक के विषय में यह प्रसिद्ध किया कि यही एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल आफ वार्विक है, जो बन्दीगृह से भाग आया है। आयरलैण्ड ले जाकर उसका राज्या-भिषेक भी कर डाला गया और उसको इँगलैण्ड का राजा



हेनरी सप्तम

उद्घोषित किया गया। परन्तु तुरन्त ही हेनरी ने वास्तविक अर्ल आफ वार्विक को बन्दीगृह से निकाल कर प्रजा को दिखला दिया; और सब लोग जान गये कि आयरलैंएडवाला बालक नकली है और धोखा दे रहा है। हेनरी ने बड़ी सुगमता से इस बालक के सहायकों को पराजित किया और उसे कैद करके अपने राजप्रासाद में रसोईदार बना कर रखा।

इसके बाद यार्क दल वालों ने पर्किन वार्बेक ( Perkin Warbeck ) नामक एक बधक-पुत्र के विषय में यह प्रसिद्ध किया कि यह एडवर्ड चतुर्थ का कनिष्ठ पुत्र रिचर्ड ड्यूक आफ यार्क ( Richard, Duke of York ) है। सब लोग जानते थे कि एडवर्ड चतुर्थ के दोनों पुत्रों को रिचर्ड तृतीय ने बन्दीगृह में मरवा डाला था; परन्तु पर्किन ने ऐसी सफ़ाई से जनता को धोखा दिया कि बहुत दिनों तक कुछ लोग उसको सचमुच राजकुमार ही समझते रहे। फ्रान्स और स्कॉटलैंएड के राजाओं ने भी उसकी सहायता की। स्कॉटलैंएड के राजा जेम्स चतुर्थ ने तो अपनी भतीजी का विवाह भी उस के साथ कर दिया। पर्किन ने आकर हेनरी के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। परन्तु शीघ्र ही हेनरी की सेना ने उसे पराजित किया और वह बन्दीगृह में भेज दिया गया। वहाँ भी अर्ल आफ वार्विक से मिल कर उसने उपद्रव मचाना चाहा; और इस कारण हेनरी ने दोनों को प्राण-दण्ड दिया। अब यार्क दल के सहायकों को सफलता की कोई आशा न रह गई; और इस के पश्चात् हेनरी को इस प्रकार की और किसी आपत्ति का सामना न करना पड़ा।

**हेनरी का बड़े जमींदारों को वश में करना**—हेनरी ने

अच्छी तरह समझ लिया था कि देश में शान्ति रखने के लिये यह परम आवश्यक है कि बड़े जमींदारों की शक्ति कम की जाय। प्रत्येक जमींदार के यहाँ निज के सैनिक रहते थे; और विशेषतया उन्हीं सैनिकों की सहायता से सारे विद्रोह होते थे। हेनरी ने एक राज-नियम ( Statute of Livery ) द्वारा ऐसे सैनिकों के रखे जाने की मनाही कर दी। अब जमींदार अपने सेवकों को फ़ौजी वर्दी नहीं दे सकते थे। इस नियम का पूर्णतया पालन किया गया। एक बार जब हेनरी के परम मित्र ऑक्सफ़ोर्ड के सरदार ने वर्दी पहने हुए सैनिकों सहित उस का स्वागत किया, तब हेनरी ने उस को भी बिना दण्ड दिये न छोड़ा।

अब तक यह प्रथा थी कि जब किसी बड़े जमींदार को किसी अपराध के कारण न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होना पड़ता था, तब उनके निज के सैनिक तथा सेवक न्यायालय में पहुँच कर न्यायाधीश आदि को धमकी देते थे; और इस प्रकार भय दिखलाकर अपने स्वामी के विरुद्ध न्याय न होने देते थे। हेनरी ने एक और राज-नियम (Statute of Maintenance ) द्वारा यह प्रथा भी बिलकुल बन्द कर दी।

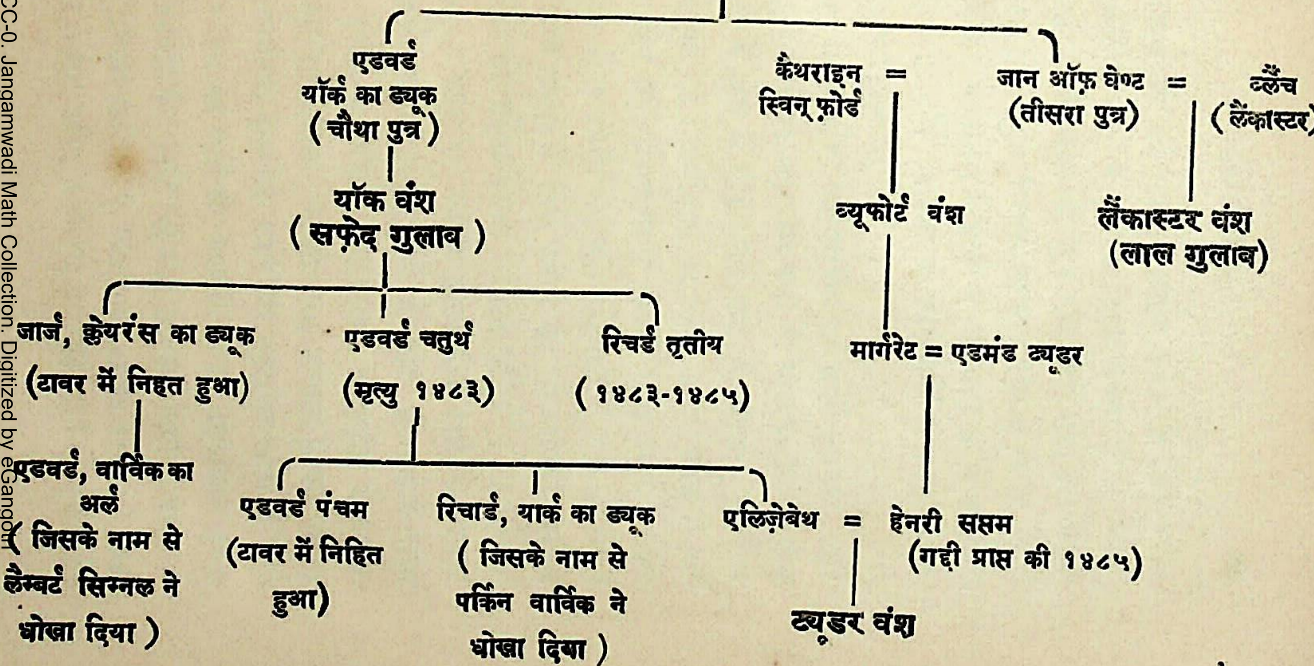
बड़े जमींदारों को पूर्णतया शासन विधान में बाँधने के लिये हेनरी ने एक विशेष प्रकार का न्यायालय स्थापित किया। जिस गृह में इस न्यायालय का कार्य्य होता था, उस की छत में सितारों की सी सजावट थी; और इस कारण उस का नाम नक्षत्र भवन ( Court of Star Chamber ) पड़ गया। इस में उच्च श्रेणी के सात न्यायाधीश बैठते थे और उन्हें पूरे पूरे अधिकार प्राप्त थे। यहाँ बड़े जमींदार अपनी प्रतिष्ठा या बल आदि के कारण

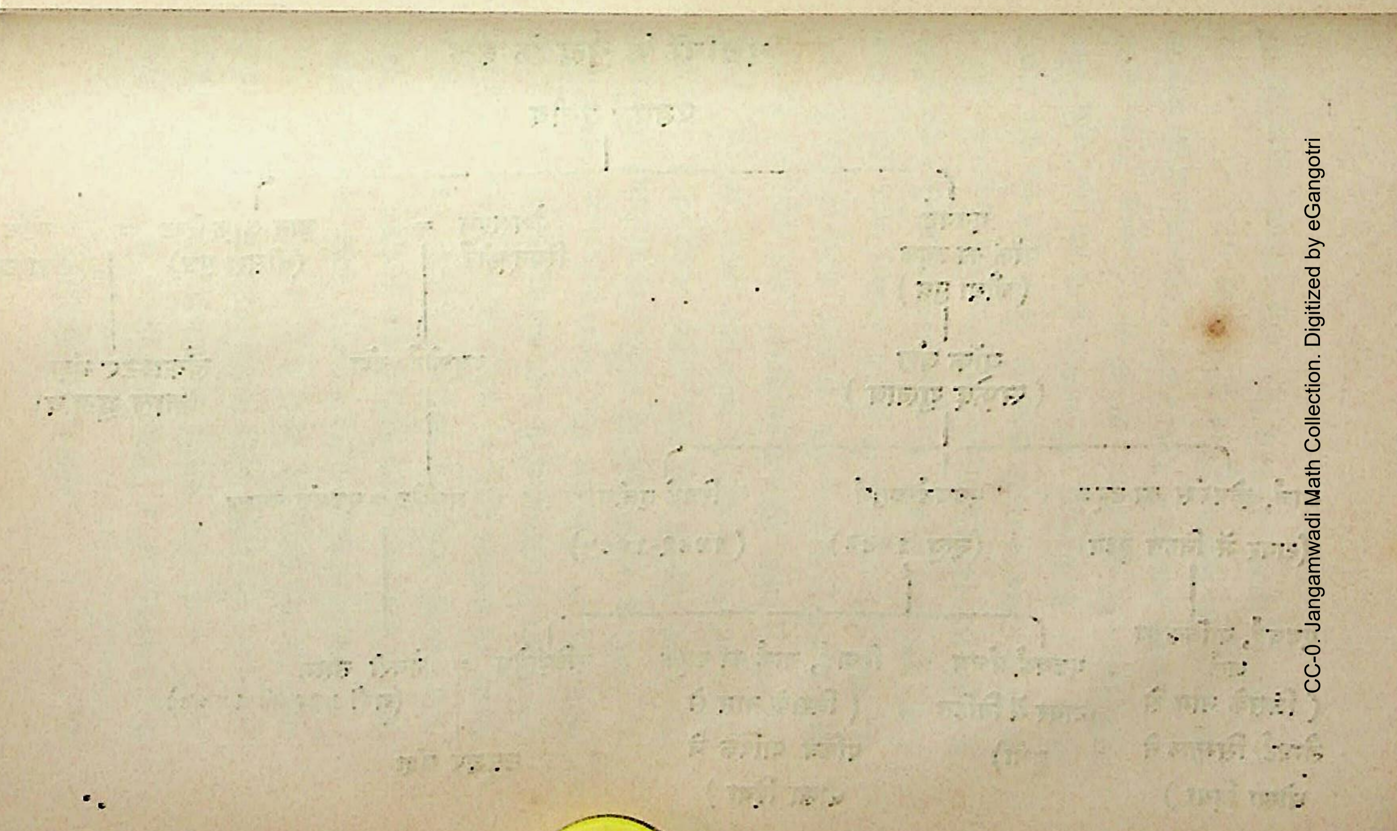
कोई अनुचित लाभ न उठा सकते थे। यह न्यायालय प्रिवी काउन्सिल की एक कमेटी के रूप में था। इसमें विद्रोह, जालसाजी और षड्यंत्र आदि के अभियोगों का विचार होता था और बहुत कड़े दण्ड दिये जाते थे।

**कोष की उन्नति**—हेनरी ने अपनी शक्ति और भी अधिक बढ़ाने के लिये धन संचित करने के बहुत से उपाय निकाले। बिना पार्लिमेण्ट की स्वीकृति के कोई नया राजकर नहीं लगाया जा सकता था; इसलिये हेनरी ने धनिक लोगों से राजकोष के लिये दान के रूप में सहायता माँगी। पर यह दान दबाव डाल कर प्राप्त किया जाता था। ऐसे दान को ( Benevolence ) कहते हैं।

हेनरी का मन्त्री कार्डिनल मॉर्टन (Cardinal Morton) बड़ी अपूर्व रीति से यह धन एकत्र करता था। जो लोग अधिक ठाठ बाट से रहते थे, उनसे कहा जाता था कि तुम्हारे रंग ढंग से प्रतीत होता है कि तुम्हारे पास बहुत धन है; तुम राजा के लिये दान दो। और जो लोग साधारण ढंग से रहते थे, उनसे कहा जाता था कि तुम ने अवश्य बहुत धन बचाया होगा; तुम्हें राजा के कोष की सहायता करनी होगी। इस माँगने की रीति का नाम Cardinal Morton's Fork पड़ गया। इस प्रकार मॉर्टन ने अपने स्वामी के लिये बहुत सा धन एकत्र किया था। राजद्रोहियों की सम्पत्ति छीन ली जाती थी; और अपराधियों को अधिकतर जुरमाने का ही दण्ड दिया जाता था। जुरमाना अपराध के अनुसार नहीं, बल्कि अपराधी की आर्थिक दशा के अनुसार कम या अधिक हुआ करता था।

हेनरी ने अपनी सन्तान के लिये इतना अधिक धन छोड़ा था


गुलाबों के युद्ध के दल
एडवर्ड तृतीय
एडवर्ड यॉर्क का ड्यूक (चौथा पुत्र)
यॉर्क वंश (सफ़ेद गुलाब)
कैथराइन स्विन्‌फ़ोर्ड = जान ऑफ़ घेण्ट (तीसरा पुत्र) = ब्लैंच (लैंकास्टर)
ब्यूफोर्ट वंश
लैंकास्टर वंश (लाल गुलाब)
जार्ज, क्लेयरंस का ड्यूक (टावर में निहत हुआ)
एडवर्ड चतुर्थ (मृत्यु १४८३)
रिचर्ड तृतीय (१४८३-१४८५)
मार्गरेट = एडमंड ट्यूडर
एडवर्ड, वार्विक का अर्ल (जिसके नाम से लैम्बर्ट सिम्नल ने धोखा दिया)
एडवर्ड पंचम (टावर में निहित हुआ)
रिचार्ड, यार्क का ड्यूक (जिसके नाम से पर्किन वार्विक ने धोखा दिया)
एलिज़ेबेथ = हेनरी सप्तम (गद्दी प्राप्त की १४८५)
ट्यूडर वंश



कि ट्यूडर राजाओं को नये राजकर स्वीकृत कराने के लिये पार्लिमेण्ट के अधिवेशन करने की विशेष आवश्यकता ही न पड़ती थी। इस काल में पार्लिमेण्ट की बहुत कम बैठकें हुईं। इस प्रकार पार्लिमेण्ट का दबाव ट्यूडर राजाओं पर नाम मात्र का ही रह गया। अपने चौबीस वर्षों के शासन में हेनरी ने पार्लिमेण्ट के केवल सात अधिवेशन किये थे। और एक बार तो तेरह वर्षों में उसका केवल एक ही अधिवेशन हुआ था।

**हेनरी की नीति और व्यापारिक सन्धियाँ**—हेनरी बहुत चतुर और दूरदर्शी शासक था। यह उसी की योग्यता का परिणाम था कि गुलाबों के युद्ध के घोर अनर्थ काल के पश्चात् इँगलैण्ड में शान्ति स्थापित हुई। जमींदारों को उसने अच्छी तरह से वश में कर लिया और धन संचित करके अपनी शक्ति बढ़ाई। उसने व्यापार की भी बहुत उन्नति की; और फ्लैण्डर्स (Flanders) देश से, जो ऊनी कपड़ों के लिये प्रसिद्ध है, एक व्यापारिक सन्धि की। इस सन्धि को फ्लैण्डर्सवाले "उत्कृष्ट सन्धि" (Magnus Intercursus) कहते थे, क्योंकि इससे दोनों देशों के व्यापार का बहुत उत्कर्ष हुआ था। कुछ वर्षों के बाद फ्लैण्डर्स के राजा ने एक भारी तूफान के कारण एक आंग्ल बन्दरगाह में आकर शरण ली। हेनरी ने उसका अच्छी तरह सम्मान किया; परन्तु उसे व्यापार सम्बन्धी कुछ नई शर्तों पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य किया। इन नई शर्तों से आंग्लों को तो बहुत लाभ हुआ; परन्तु फ्लैण्डर्सवालों को हानि पहुँची। फ्लैण्डर्स निवासी इस नई सन्धि को "निकृष्ट सन्धि" (Malus Intercursus) कहा करते थे; और आंग्ल इतिहास में भी यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

हेनरी ने नये उपनिवेश स्थापित करने का भी प्रयत्न किया; और जॉन कैबट ( John Cabot ) को इस आशय का एक आज्ञापत्र प्रदान किया कि जिन नये देशों में तुम पहुँचो, वहाँ अँगरेज़ी झण्डा गाड़कर इँगलैण्ड के राजा के नाम से अधिकार जमा लो। कैबट के जहाज़ उत्तरी अमेरिका के उत्तरी तट पर पहुँचे; और इस प्रकार लैब्रेडर ( Labrador ) और न्यूफाउण्ड-लैण्ड ( Newfoundland ) आदि का पता लगा।

**पर-राष्ट्र नीति और अन्तरदेशीय राज-विवाह**—हेनरी को इस बात की बहुत चिन्ता थी कि आस पास के सब राजा मेरा राज्याधिकार स्वीकृत कर लें। पर्किन वार्बेक को स्कॉटलैण्ड और फ्रान्स से जो सहायता मिली थी, उससे हेनरी की आँखें खुल गई। उसने भली भाँति समझ लिया कि अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिये अन्य देशों से मेल रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हेनरी ने अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह देशान्तर के राजवंशों में किये।

फ्रान्स से हेनरी को सर्वदा भय लगा रहता था; इसलिये फ्रान्स के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से हेनरी ने स्पेन से मित्रता की; और अपने बड़े पुत्र आर्थर का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथराइन से किया। कुछ दिनों बाद आर्थर का देहान्त हो गया; और हेनरी ने यह सोच कर कि स्पेन से सम्बन्ध बना रहना चाहिए, कैथराइन का विवाह अपने दूसरे पुत्र ( भावी हेनरी अष्टम ) से कर दिया। यद्यपि इस प्रकार का विवाह ईसाई मत के नियमों के विरुद्ध था, परन्तु इसके लिये हेनरी ने अपने

धर्मगुरु रोम के पोप की विशेष आज्ञा ( Dispensation ) प्राप्त कर ली थी।

हेनरी स्कॉटलैण्डसे भी मेल करना चाहता था। स्कॉटलैण्ड अब तक प्रायः फ्रान्स का साथ देता आया था और इँगलैण्ड को अपना वैरी समझता था। हेनरी ने अपनी पुत्री मार्गरेट का विवाह स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ से किया; और इस प्रकार दोनों देशों में पारस्परिक प्रेम का अंकुर लगाया। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि इसी विवाह से उत्पन्न सन्तान के द्वारा इँगलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के राजसिंहासन एक हुए।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १४८५—हेनरी सप्तम का राज्याभिषेक।
,, १४९७—कैबट उत्तरी अमेरिका पहुँचा।
,, १४९९—पर्किन वार्बेक और एडवर्ड अर्ल आफ वार्विक को प्राण-दण्ड।
,, १५०२—आर्थर की मृत्यु।
,, १५०९—हेनरी सप्तम की मृत्यु।

---

# दूसरा परिच्छेद



## "आधुनिक इँगलैण्ड" का आरम्भ

"आधुनिक इँगलैण्ड" का आरम्भ पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से माना जाता है। ट्यूडर राज्य की स्थापना के समय से इँगलैण्ड की दशा में इतने बड़े बड़े परिवर्तन होने लगे कि देश का जीवन एक बिलकुल ही नये ढंग का हो गया। इस समय बहुत सी नई नई वस्तुओं, नये नये देशों और नई नई बातों का आविष्कार हुआ; और देश में नये ढंग की उन्नति दिखाई पड़ने लगी। इस काल की मुख्य मुख्य विशेषताओं का उल्लेख नीचे किया जाता है।

**युरोपीय राजनीति में प्रवेश**—अब तक इँगलैण्ड की गणना युरोप के बड़े राष्ट्रों में नहीं होती थी। फ्रान्स से तो प्रायः युद्ध चला करता था; परन्तु युरोप के और दूसरे देशों से इँगलैण्ड का अधिक सम्बन्ध न था। ट्यूडर काल में इँगलैण्ड का युरोपीय राजनीति में प्रवेश हुआ था। इस अध्याय में हम बतलावेंगे कि किस प्रकार ट्यूडर राजाओं ने इँगलैण्ड की राष्ट्रीय स्थिति में उन्नति की।

**नये देशों की खोज और व्यापारिक उन्नति**—कुतुबनुमा ( Mariner's Compass ) बन जाने से लोगों को समुद्र-यात्रा में बहुत सुभीता हो गया। सन् १४९२ में कोलम्बस

( Colombus ) ने एटलांटिक महासागर पार करके अमेरिका का पता लगाया; और सन् १४९८ में वास्को डी गामा (Vasco de Gama ) ने केप आफ गुडहोप (Cape of Good Hope) होकर भारतवर्ष के लिये समुद्री राह मालूम की। इन स्थानों और मार्गों का पता लग जाने से दुनिया के व्यापार में बहुत उन्नति हुई। अब तक भूमध्य सागर ( Mediterranean Sea ) ही व्यापार का बड़ा केन्द्र था जो इँगलैण्ड से बहुत दूर पड़ता है। परन्तु नवीन देशों और मार्गों का पता लगने पर एटलांटिक महासागर व्यापार के लिये अधिक प्रसिद्ध हो गया; और इस परिवर्तन से इँगलैण्ड को नई व्यापारिक उन्नति में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

**युद्ध-कला में परिवर्तन**—गोले बारूद का आविष्कार होने से युद्ध कला में भारी परिवर्तन हो गया। तोपखाने के सामने भूमिपतियों के दुर्ग ( Baronial Castles ) भला क्या ठहर सकते थे! और अच्छी बन्दूकों के प्रचलित हो जाने से तलवारों और तीरों से युद्ध करने का काल भी समाप्त हो गया। मध्यकालीन नाइटों ( Knights ) की युद्ध कला अब पुरानी और निरर्थक सी हो गई। इस परिवर्तन से राजकीय शक्ति भी अधिक बढ़ गई; क्योंकि राजा के अतिरिक्त और कोई तोपख़ाना न रख सकता था।

**छापे की कल**—अब तक हस्त-लिखित पुस्तकों से ही काम चलता था। उनका मूल्य बहुत अधिक होता था और केवल धनाढ्य पुरुष ही उन से लाभ उठा सकते थे। इसी अवसर पर जरमनी में पहले पहल छापे की कल का आविष्कार हुआ। कैक्सटन ( Caxton ) ने जरमनी जाकर छापेख़ाने का काम सीखा; और

# दूसरा परिच्छेद



## "आधुनिक इँगलैण्ड" का आरम्भ

"आधुनिक इँगलैण्ड" का आरम्भ पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से माना जाता है। ट्यूडर राज्य की स्थापना के समय से इँगलैण्ड की दशा में इतने बड़े बड़े परिवर्तन होने लगे कि देश का जीवन एक बिलकुल ही नये ढंग का हो गया। इस समय बहुत सी नई नई वस्तुओं, नये नये देशों और नई नई बातों का आविष्कार हुआ; और देश में नये ढंग की उन्नति दिखाई पड़ने लगी। इस काल की मुख्य मुख्य विशेषताओं का उल्लेख नीचे किया जाता है।

**युरोपीय राजनीति में प्रवेश**—अब तक इँगलैण्ड की गणना युरोप के बड़े राष्ट्रों में नहीं होती थी। फ्रान्स से तो प्रायः युद्ध चला करता था; परन्तु युरोप के और दूसरे देशों से इँगलैण्ड का अधिक सम्बन्ध न था। ट्यूडर काल में इँगलैण्ड का युरोपीय राजनीति में प्रवेश हुआ था। इस अध्याय में हम बतलावेंगे कि किस प्रकार ट्यूडर राजाओं ने इँगलैण्ड की राष्ट्रीय स्थिति में उन्नति की।

**नये देशों की खोज और व्यापारिक उन्नति**—कुतुबनुमा ( Mariner's Compass ) बन जाने से लोगों को समुद्र-यात्रा में बहुत सुभीता हो गया। सन् १४९२ में कोलम्बस

( Colombus ) ने एटलांटिक महासागर पार करके अमेरिका का पता लगाया; और सन् १४९८ में वास्को डी गामा (Vasco de Gama ) ने केप आफ गुडहोप (Cape of Good Hope) होकर भारतवर्ष के लिये समुद्री राह मालूम की। इन स्थानों और मार्गों का पता लग जाने से दुनिया के व्यापार में बहुत उन्नति हुई। अब तक भूमध्य सागर ( Mediterranean Sea ) ही व्यापार का बड़ा केन्द्र था जो इँगलैण्ड से बहुत दूर पड़ता है। परन्तु नवीन देशों और मार्गों का पता लगने पर एटलांटिक महासागर व्यापार के लिये अधिक प्रसिद्ध हो गया; और इस परिवर्तन से इँगलैण्ड को नई व्यापारिक उन्नति में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

**युद्ध-कला में परिवर्तन**—गोले बारूद का आविष्कार होने से युद्ध कला में भारी परिवर्तन हो गया। तोपखाने के सामने भूमिपतियों के दुर्ग ( Baronial Castles ) भला क्या ठहर सकते थे! और अच्छी बन्दूकों के प्रचलित हो जाने से तलवारों और तीरों से युद्ध करने का काल भी समाप्त हो गया। मध्यकालीन नाइटों ( Knights ) की युद्ध कला अब पुरानी और निरर्थक सी हो गई। इस परिवर्तन से राजकीय शक्ति भी अधिक बढ़ गई; क्योंकि राजा के अतिरिक्त और कोई तोपखाना न रख सकता था।

**छापे की कल**—अब तक हस्त-लिखित पुस्तकों से ही काम चलता था। उनका मूल्य बहुत अधिक होता था और केवल धनाढ्य पुरुष ही उन से लाभ उठा सकते थे। इसी अवसर पर जरमनी में पहले पहल छापे की कल का आविष्कार हुआ। कैक्सटन ( Caxton ) ने जरमनी जाकर छापेखाने का काम सीखा; और

वहाँ से लौट कर सन् १४७४ में उसने इँगलैण्ड में भी एक बड़ी छापे की कल खोल दी। उस समय यह इतनी अद्भुत वस्तु समझी जाती थी कि स्वयं राजा और रानी इस कल को देखने के लिये गये थे। अब किताबें अधिक संख्या में छपने लगीं और उनका मूल्य भी कम हो गया। इस प्रकार साधारण जनता को भी विद्योपार्जन का अवसर प्राप्त हुआ।

**विद्या का प्रचार**—मध्य युग में युरोप भर में विद्या की दशा सन्तोषजनक न थी। केवल कुस्तुन्तुनिया या कांसटेण्टिनोपू (Constantinople) ही एक ऐसा स्थान रह गया था, जहाँ यूनानी सभ्यता के चिह्न अभी तक देख पड़ते थे। सन् १४५३ में तुर्कों ने कान्स्टेन्टिनोपू पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लिया। यूनानी विद्वानों ने वहाँ से भाग कर इटली में शरण ली, जहाँ उनका अच्छी तरह स्वागत किया गया। इन्हीं विद्वानों के द्वारा इटली में यूनानी कला कौशल का प्रचार हुआ। अब इटली-वालों का ध्यान अपने प्राचीन रोमन साहित्य की ओर भी आकृष्ट होने लगा। थोड़े ही दिनों में इटली का प्रसिद्ध नगर फ़्लोरेन्स (Florence) कला कौशल और साहित्य का केन्द्र हो गया; और वहाँ के विद्वानों के द्वारा समस्त युरोप में विद्या का प्रचार होने लगा। इस प्रकार युरोप में विद्या का पुनर्जन्म (Renaissance) हुआ; और पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से सभी युरोपीय देशों में विद्योन्नति का प्रारम्भ हुआ।

**ऑक्सफोर्ड के विद्वान्**—विद्योन्नति की लहर शीघ्र ही इँगलैण्ड तक भी पहुँच गई और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में बड़े बड़े विद्वान् दिखाई पड़ने लगे। इन विद्वानों में तीन मुख्य

थे। कॉलेट (Colet) ने एक नये स्कूल की स्थापना की। उसमें मध्यकालीन स्कूलों की भाँति विद्यार्थियों को कड़े दण्ड नहीं दिये जाते थे। अब यह विचार ज़ोर पकड़ने लगा कि जो विद्या प्रेम से पढ़ाई जाती है, उसी का ठीक ठीक प्रभाव होता है। टॉमस मोर ( Thomas More ) ने देश के आर्थिक और राजनीतिक दोषों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक युटोपिया (Utopia) में एक कल्पित स्थान का उदाहरण देकर समझाया कि इन दोषों का किस प्रकार सुधार हो सकता है। इरास्मस (Erasmus ) ने धार्मिक सुधार का कार्य किया। उसने बाइबिल का लैटिन भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया और पाद-टिप्पणियों में बहुत से धार्मिक विषयों पर स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट किये। इन सब बातों से ज्ञात होता है कि उस समय युरोपीय जनता की आँखें दिन पर दिन खुलती जाती थीं और भ्रामक विश्वासों का अन्त अब दूर न था।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १४५३—कान्सटेन्टिनोप्ल पर तुर्कों का अधिकार।
,, १४७४—कैक्सटन ने छापे की कल खोली।
,, १४९२—कोलम्बस ने अमेरिका का पता लगाया।
,, १४९८—वास्को डी गामा ने भारतवर्ष के समुद्री मार्ग का पता लगाया।

---

## तीसरा परिच्छेद

### हेनरी अष्टम तथा वूल्जे

**हेनरी अष्टम**—सन् १५०९ में हेनरी सप्तम की मृत्यु हुई। उसके ज्येष्ठ पुत्र आर्थर का पहले ही देहान्त हो चुका था; अतः अब उसका कनिष्ठ पुत्र "हेनरी अष्टम" के नाम से गद्दी पर बैठा। नये सम्राट् की अवस्था कुल १८ वर्ष की थी। वह बहुत ही सुन्दर था और खेल कूद तथा शिकार का बड़ा शौकीन था। उसने धार्मिक पुस्तकों का अच्छी तरह से अध्ययन किया था; और उसे अपने धार्मिक विषयों के ज्ञान का बड़ा अभिमान था। हास्यप्रिय तथा प्रसन्नचित्त होने के



हेनरी अष्टम

कारण वह शीघ्र ही समस्त प्रजा का प्रेमपात्र हो गया। विलासी होने के कारण उसके दरबार का व्यय बहुत बढ़ गया। वह बड़ा कृतघ्न भी था। गद्दी पर बैठते ही उसने अपने पिता के भूतपूर्व मन्त्री एम्पसन ( Empson ) और डडले (Dudley) को, जिन्होंने राजकोष के लिये बहुत सा धन एकत्र किया था, मरवा डाला। केवल जनता को प्रसन्न करने के लिये, जो उन दोनों को देश से रुपया चूसने के कारण नहीं चाहती थी, हेनरी ने उन की जान ली थी।

**वूल्ज़े (Wolsey)**—हेनरी ने वूल्जे नामक एक पादरी को अपना मन्त्री बनाया। वूल्जे इप्सविच (Ipswich) के एक व्यापारी का पुत्र था; और बहुत ही थोड़ी अवस्था में उसने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की थी। तत्पश्चात् उसने दरबार में प्रवेश करना चाहा। हेनरी सप्तम ने उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे अपने राज-प्रासाद के गिरजा का अध्यक्ष नियत किया। हेनरी अष्टम के समय में वह पहले



वूल्ज़े

यॉर्क का बड़ा बिशप (Archbishop) और फिर प्रधान मन्त्री हो गया। रोम के पोप ने उसे इँगलैण्ड के लिये अपना प्रतिनिधि (Papal Legate) नियत किया; और इस प्रकार देश में उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। अब उसे धार्मिक तथा राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गये और वह बड़े ठाठ से जीवन व्यतीत करने लगा।

**परराष्ट्र नीति तथा युरोपीय शक्ति-सन्तुलन**—युरोप में उस समय फ्रान्स और स्पेन की शक्ति अधिक बढ़ी चढ़ी थी। तब तक इँगलैण्ड की गणना युरोप के प्रधान राष्ट्रों में नहीं होती थी। हेनरी अष्टम को वूल्जे ने यह सम्मति दी कि ऐसी परिस्थिति में इँगलैण्ड के लिये यही ठीक होगा कि वह कभी स्पेन और कभी फ्रान्स को सहायता दे। इस प्रकार इन दोनों राज्यों में से किसी की शक्ति अधिक न बढ़ने पावेगी; और साथ ही युरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में इँगलैण्ड की प्रतिष्ठा भी अधिक हो जायगी।

हेनरी सब से पहले पोप और स्पेन तथा आस्ट्रिया के सम्राटों के साथ "पवित्र संघटन" (Holy League) में सम्मिलित हुआ। इस संघटन का उद्देश्य फ्रान्स की शक्ति को रोकना था। हेनरी ने बहुत बड़ी सेना लेकर फ्रान्स पर आक्रमण किया। युद्ध में फ्रांसीसी परास्त हुए और रणक्षेत्र से घोड़ों को एड़ लगा कर ऐसे वेग से भागे कि यह युद्ध एड़ों का युद्ध (Battle of Spurs) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। थोड़े ही दिनों में हेनरी को विदित हुआ कि युद्ध का सारा भार तो मेरे सिर पर रहता है, और उससे विशेष लाभ मेरे मित्र उठाते हैं। इसलिये वह संघटन से अलग हो बैठा और उसने फ्रान्स से सन्धि कर ली। उसी समय

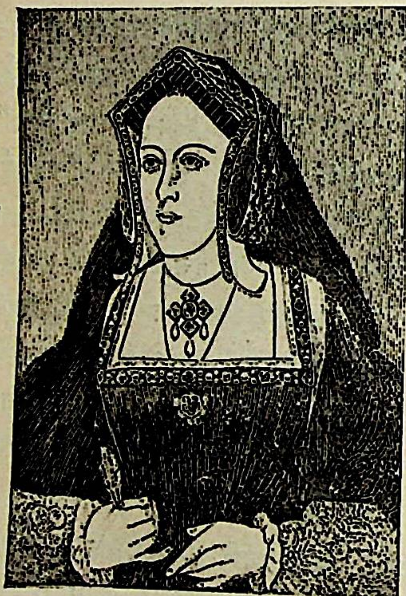
हेनरी ने अपनी छोटी बहिन का विवाह फ्रान्स के बुड्ढे बादशाह बारहवें लूई से कर दिया।

फ्रान्स और स्पेन दोनों अपनी अपनी शक्ति बढ़ाने के इच्छुक थे। उस समय इँगलैण्ड की स्थिति ऐसी थी कि जिस ओर वह सहायता करता, उसी ओर का पल्ला भारी हो सकता था। फ्रान्स और स्पेन दोनों राज्यों ने इँगलैण्ड से मित्रता करना चाहा। फ्रान्स का राजा स्वयं हेनरी से भेंट करने आया। हेनरी ने ऐसे ठाठ बाट से उसका स्वागत किया कि जिस स्थान पर दोनों की भेंट हुई, वह स्थान अपनी चमक दमक के कारण "स्वर्ण-वस्त्रीय क्षेत्र" ( Field of the Cloth of Gold ) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी बीच में स्पेन के सम्राट् ने वूल्ज़े को अपनी ओर मिला लिया था। वूल्ज़े की सम्मति के अनुसार हेनरी ने स्पेन का ही साथ दिया और फ्रांस से फिर युद्ध ठान दिया। इस युद्ध में बहुत अधिक धन व्यय हुआ; और वूल्ज़े को राजकोष की पूर्ति के लिये जनता से ऋण ( Amicable Loan ) लेना पड़ा। यह ऋण दबाव डाल कर लिया जाता था; इस कारण वूल्ज़े देश में बहुत बदनाम हो गया। अन्त में हेनरी ने देखा कि इन युद्धों में इँगलैण्ड का बहुत धन व्यय होता है और कोई अधिक लाभ नहीं होता; इसलिये वह युरोपीय राजनीतिक झगड़ों से अलग हो गया; और फ्रांस से, जिसके विरुद्ध वह अब तक युद्ध कर रहा था, गुप्त रीति से सन्धि कर ली।

**वूल्ज़े की पर-राष्ट्रनीति का परिणाम**—वूल्ज़ पहला आंग्ल राजनीतिज्ञ था जिसने युरोपीय शक्ति-सन्तुलन के विचार का प्रचार किया। उसकी पर-राष्ट्रनीति का परिणाम यह हुआ कि

स्पेन और फ्रांस दोनों ही इँगलैण्ड की सहायता के इच्छुक रहने लगे; और इस प्रकार इँगलैण्ड का युरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में भली भाँति प्रवेश हो गया।

**कैथराइन का परित्याग**—हेनरी को अपनी रानी कैथराइन (Catherine) बहुत पसन्द न थी। कारण यह था कि वह अवस्था में उससे पाँच वर्ष बड़ी थी; और फिर उसके अब तक कोई पुत्र भी न हुआ था। कुछ दिनों बाद हेनरी अपने दरबार की ऐनी बोलीन (Anne Boylen) नामक एक बहुत ही सुन्दरी युवती पर मोहित हो गया; और उस से विवाह करने के लिये उसने कैथराइन का परित्याग करना चाहा।



कैथराइन

हम पहले कह आये हैं कि कैथराइन का विवाह उसके पूर्व पति आर्थर की मृत्यु होने पर हेनरी के साथ हुआ था। बड़े भाई की विधवा से विवाह करना ईसाई मत के विरुद्ध था; इस कारण इस विवाह के लिये ईसाइयों के धर्मगुरु रोम के पोप की विशेष

आज्ञा ( Dispensation ) प्राप्त करनी पड़ी थी। ऐसी अवस्था में पोप से दूसरी आज्ञा प्राप्त किये बिना कैथराइन का परित्याग नहीं किया जा सकता था। हेनरी ने पोप से पत्नी-परित्याग के लिये आज्ञा प्रदान करने की प्रार्थना की। परन्तु पोप उसकी प्रार्थना स्वीकृत करने से हिचका; क्योंकि इस कार्य्य से फ्रांस और स्पेन जैसे दो शक्तिशाली राज्यों के रुष्ट होने का भय था। फ्रांस के बड़े राजकुमार के साथ कैथराइन की पुत्री का विवाह निश्चित हुआ था; और स्पेन का सम्राट् कैथराइन का भान्जा होता था।

पोप ने इस कार्य्य में टाल मटोल की। पहले उसने इस विषय में जाँच करने की इच्छा प्रकट की। इसके लिये उसने उच्च कोटि के एक पादरी को रोम से नियत करके भेजा। उस पादरी ने इँगलैण्ड में आकर वूल्जे के साथ जाँच का कार्य्य आरम्भ किया। कुछ ही दिनों बाद पोप ने यह जाँच बंद करने की आज्ञा दी और कहा कि इस विषय पर रोम में ही विचार हो सकता है।

**वूल्ज़े का पतन**—हेनरी को आशा थी कि वूल्जे की सहायता से शीघ्र ही यह निर्णय मेरे पक्ष में हो जायगा। परन्तु जब उसने देखा कि मेरे लिये पत्नी-परित्याग की आज्ञा प्राप्त करने में वूल्जे सफल नहीं हुआ, तब उसके क्रोध की सीमा न रही। उसने वूल्जे को सब पदों से हटा दिया और अब वह केवल यॉर्क का बिशप रह गया। यॉर्क में भी हेनरी ने उसे चैन से न बैठने दिया; और राजद्रोह का अपराध लगाकर उसे लन्दन के न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी। उस समय वूल्जे का स्वास्थ्य ठीक न था। लन्दन जाते समय रास्ते में लीसेस्टर के गिरजाघर में उसका देहान्त हो गया। उसके अन्तिम शब्द ये

थे—"जिस प्रकार मैंने हृदय से राजा की सेवा की थी, उसी प्रकार यदि मैंने परमात्मा की सेवा की होती, तो इस वृद्धावस्था में वह मेरे साथ ऐसा अत्याचारपूर्ण व्याहार न करता।"

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५०९—हेनरी अष्टम का राज्याभिषेक।
" १५१३—"एड़ों का युद्ध।"
" १५२०—"स्वर्ण-वस्त्रीय क्षेत्र।"
" १५२९—वूल्जे का पतन।

---

# चौथा परिच्छेद

## युरोप में धर्म-सुधार

चर्च के दोष—चौदहवीं शताब्दी में रोमन चर्च के विरुद्ध विक्लिफ ने जो आन्दोलन किया था, वह सफल नहीं हुआ था। परन्तु चर्च के दोष दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे थे। पादरियों का जीवन बिलकुल सांसारिक हो गया था और उनकी प्रतिष्ठा बहुत कम होती जाती थी। ग़रीबों में धर्म-प्रचार करने के लिये फ्रायर्ज़ ( Friars ) की संस्था स्थापित हुई थी। इन लोगों को यह प्रण करना पड़ता था कि हम अपने लिये कोई सम्पत्ति अर्जित न करेंगे और अपना समस्त जीवन धर्म-प्रचार तथा निस्सहायों की सहायता में व्यतीत करेंगे। पर धीरे धीरे ये लोग भी सांसारिक मायाजाल में फँस गये और इन्होंने अपनी संस्था का लक्ष्य बिलकुल भुला दिया।

पोप के प्रति ईसाइयों में बहुत श्रद्धा थी और वह इस पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि माना जाता था। यह अन्ध विश्वास यहाँ तक बढ़ गया था कि पोप के दरबार के आज्ञापत्र ( Papal Bulls ) स्वयं ईश्वर की वाणी माने जाने लगे थे; और उनके द्वारा बड़े बड़े अपराधों के दण्ड से भी छुटकारा मिल जाता था। कुछ रुपये लेकर पोप इस प्रकार का भी आज्ञा-पत्र दे दिया करते थे जिससे स्वर्ग के द्वार तक पहुँच हो सकती थी! पोप ने लोगों

की इस अन्ध श्रद्धा से बहुत लाभ उठाया और ईसाई देशों से खूब रुपया चूसा।

**विद्योन्नति का प्रभाव**—हम कह आये हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में समस्त युरोप में विद्योन्नति की लहर उठी थी। भला विद्या के प्रचार के सन्मुख अंध विश्वास और भ्रामक सिद्धान्त कहाँ तक ठहर सकते थे! परिणाम यह हुआ कि सांसारिक पोपों के प्रति शिक्षित समाज की श्रद्धा घटने लगी; और लोग समझ गये कि पोप के कोष के लिये कई रूपों में जो धन भेजा जाता है, वह सब व्यर्थ जाता है। उससे कोई धार्मिक लाभ नहीं होता और वह केवल पोप के भोग विलास में व्यय होता है। धीरे धीरे लोगों में यह विचार भी फैलने लगा कि चर्च में कुछ संशोधन करना अत्यन्त आवश्यक है।

**मार्टिन लूथर**—चर्च के संशोधन का आन्दोलन मार्टिन लूथर (Martin Luther) ने आरम्भ किया। यह जर्मनी का निवासी था और इसकी शिक्षा एक ईसाई मठ की पाठशाला में हुई थी। इसने पर्य्यटन भी बहुत किया था और स्वयं रोम जाकर चर्च के सब दोष देखे थे। जब पोप के प्रतिनिधि रोम में एक बड़ा गिरिजा घर बनाने के लिये सैक्सनी में यह कह कर चंदा ले रहे थे कि यह दान देने से दाता अपने जीवन भर के अपराधों से मुक्त हो जाता है, तब लूथर ने ऐसे भ्रामक सिद्धान्तों के विरुद्ध कुछ लेख प्रकाशित किये। इन लेखों का समाचार पाकर पोप आग बबूला हो गया और उसने कहा कि लूथर के विचार ईसाई धर्म के बिलकुल विरुद्ध हैं।

**धर्म-सुधार की लहर**—(The Reformation) लूथर

ईसाई मत का शत्रु नहीं था। उसका अभिप्राय केवल यही था कि ईसाइयों में धर्म के नाम पर जो अंध श्रद्धा और हानिकारक रीतियाँ फैली हुई हैं, उनका सुधार किया जाय। अब तक धार्मिक विषयों की चर्चा लैटिन भाषा में ही होती थी। लूथर ने जर्मनी के निवासियों पर जर्मन भाषा में ही अपना विचार प्रकट करना आरम्भ किया, जिससे साधारण जनता भी उसकी बात समझने लगी। उसने बतलाया कि प्रत्येक व्यक्ति को बाइबिल का अपना स्वतंत्र अर्थ लगाने का अधिकार है; और पोपों तथा पादरियों की सहायता ही ईश्वर-प्राप्ति का एक मात्र साधन नहीं है। धीरे धीरे लूथर के विचार समस्त युरोप में फैलने लगे और उसके अनुयायी प्रोटेस्टेन्ट (Protestant) ❀ नाम से प्रसिद्ध हुए।

**कैल्विन और नॉक्स**—लूथर की ही तरह अन्य देशों में भी कई और धर्मसुधारक इसी काल में हुए। इनमें जॉन कैल्विन ( John Calvin ) मुख्य है जिसने जनेवा (Geneva) में प्रचार का कार्य आरम्भ किया था। फ्रान्स के ह्यूगनॉट्स (Hugenots) उसी के अनुयायी थे। कैल्विन के एक शिष्य जॉन नॉक्स ( John Knox) ने स्कॉटलैंड में धर्म-सुधार का आन्दोलन आरम्भ किया था। कैल्विन के सिद्धान्त लूथर से कुछ भिन्न थे; परन्तु मुख्य विषय में दोनों एकमत थे। दोनों ही कहते थे कि पोप को ईसा मसीह का प्रतिनिधि मानना केवल भ्रम है। स्कॉटलैण्ड के प्रेस्बिटेरियन चर्च ( Presbyterian

❀ यह शब्द अँगरेजी के Protest शब्द से निकला है, जिसका अर्थ "विरोध करना" है। जो लोग रोमन चर्च का विरोध करते थे, वे प्रोटेस्टेण्ट कहलाने लगे थे।

Church ) वाले और इँगलैण्ड के प्यूरिटन (Puritans ) दल के लोग, जिनके विषय में आगे लिखा जायगा, कैल्विन के ही सिद्धान्त मानते थे ।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५१७—मार्टिन लूथर के धर्म-सुधार का प्रारम्भ ।
,, १५५०—नॉक्स का स्कॉटलैण्ड में धर्म-प्रचार ।

---

## पाँचवाँ परिच्छेद



## हेनरी अष्टम और धर्म-सुधार

रोम के पोप से झगड़ा—हम पहले बतला आये हैं कि किस प्रकार हेनरी अष्टम ने कैथराइन का परित्याग करने की आज्ञा प्रदान करने के लिये पोप से प्रार्थना की थी और किस प्रकार पोप ने वह प्रार्थना अस्वीकृत कर दी थी। एनी बोलीन से विवाह करने के लिये हेनरी इतना मत्त हो रहा था कि वह कैथराइन का परित्याग किये बिना न रह सकता था। पोप को धमकी देने के आशय से हेनरी ने पार्लिमेण्ट से यह राजनियम ( Act of Annates ) स्वीकृत कराया कि पोप के कोष के लिये इँगलैण्ड से किसी प्रकार का धर्मकर न भेजा जाय। जब इस पर भी पोप अपनी बात पर डटा ही रहा, तब हेनरी ने एक दूसरे राज-नियम ( Act of Appeals ) द्वारा यह यह निश्चित किया कि इँगलैण्ड की कोई अपील देश से बाहर फैसला होने के लिये न भेजी जाय। जिस तरह साधारण विवादों का निर्णय राज्य के न्यायालयों में होता है, उसी तरह धार्मिक विषयों का भी निर्णय देश के बड़े पादरियों द्वारा इँगलैण्ड में ही हुआ करेगा। इसी नियम से लाभ उठाकर हेनरी ने कैण्टर्बरी के बड़े पादरी क्रैन्मर ( Cranmer ) से कैथराइन के परित्याग के लिये व्यवस्था प्राप्त कर ली और झटपट एनी बोलीन से विवाह कर लिया।

**पोप से सम्बन्ध-त्याग**—पोप भला क्रैन्मर को ऐसी व्यवस्था प्रदान करने का अधिकारी कब मान सकता था ! उसने तुरन्त व्यवस्था दे दी कि एनी बोलीन का विवाह विधि-विहित नहीं है। अब हेनरी भली भाँति समझ गया कि जब तक पोप से सम्बन्ध रहेगा, तब तक मुझे अपनी इच्छाओं की पूर्ति में आये दिन बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। इसलिये उसने "सर्व-प्रधानता का राजनियम" ( Act of Supremacy ) के द्वारा यह निर्धारित कर दिया कि अब से इँगलैण्ड के राजा तथा रानी ही आंग्ल चर्च के मुख्य अधिष्ठाता और सर्व प्रधान आचार्य हुआ करेंगे। इस नियम को न मानना राजद्रोह ठहराया गया; और राज्य के बड़े बड़े कर्मचारियों को शपथ खानी पड़ी कि हम इँगलैण्ड के राजा को ही चर्च का मुख्य अधिष्ठाता मानते हैं; इसलिये उस के नियत किये हुए कैण्टर्बरी के बड़े पादरी का कैथराइनके विषय में निर्णय बिलकुल विधि-विहित है। सुप्रसिद्ध विद्वान् सर टामस मोर ( Sir Thomas More ) ने यह शपथ खाना स्वीकृत न किया; और इसलिये उस पर राज-द्रोह का अपराध लगा कर हेनरी ने उसे प्राण-दंड दिया। ऐसे प्रसिद्ध विद्वान् का वध यह सूचित करता है कि हेनरी अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी प्रकार का प्रतिरोध सहन नहीं कर सकता था।

**मठों का ध्वंस**—अब हेनरी ने मठों ( Monasteries ) की दशा की जाँच कराना आरम्भ किया। प्रत्येक मठ में धनिक लोगों की धर्मार्थ दान की हुई बहुत सी जायदादें होती थीं। उन मठों में बहुत से साधु तथा त्यागी पुरुष और स्त्रियाँ ( Monks and Nuns) रहती थीं, जिनका यह प्रण होता था कि हम विवाह

के बखेड़े में न पड़ कर अपना समस्त जीवन धर्म-प्रचार में व्यतीत करेंगे। पहले कुछ दिनों तक तो इन मठों ने बड़ा अच्छा काम किया था; परन्तु अब ये व्यभिचार के अड्डे बन रहे थे। हेनरी ने पहले छोटे मठों को और फिर बड़े मठों को तोड़ा और उन की सब जायदादें बेच दी गईं। जिन्होंने मठों की जायदादें खरीदी थीं, वे कभी यह नहीं पसन्द कर सकते थे कि पोप फिर आंग्ल चर्च का अधिष्ठाता हो जाय; क्योंकि उस दशा में मठों की फिर से स्थापना होती और उनकी जायदादें उन्हें फिर वापस दिलाई जातीं। इस प्रकार देश में ऐसे लोगों की बहुत अधिक संख्या हो गई जो सर्वदा धर्म-सुधार के पक्षपाती रहे। मठों की सम्पत्ति मिल जाने से राजा की शक्ति भी बहुत बढ़ गई। अब तक बहुत से मठों के अधिष्ठाता पार्लिमेण्ट के हाउस आफ़ लार्ड्स ( House of Lords ) के सदस्य होते थे। उनके स्थान पर हेनरी ने अपने पक्षपातियों को कुछ जायदादें दे कर लार्ड सभा का सदस्य बना दिया; और इस प्रकार पार्लिमेण्ट का एक प्रधान अंश राजा की मुट्ठी में आ गया।

**धार्मिक विद्रोह**—देश में कुछ लोग ऐसे भी थे जो धर्म में कुछ भी परिवर्तन नहीं चाहते थे। ये लोग आंग्ल चर्च के पोप से अलग हो जाने के कारण बहुत असन्तुष्ट थे। अब मठों के टूटने पर ये लोग और भी घबराये। इन लोगों ने विद्रोह ठान दिया। इनका कहना था कि हम ईसा के नाम पर "धार्मिक आन्दोलन" (Pilgrimage of Grace) कर रहे हैं। यह विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया और विद्रोहियों के मुख्य मुख्य नेताओं को प्राण-दण्ड मिला।

टॉमस क्रॉम्वेल—वूल्ज़े के पतन पर हेनरी ने विद्वान् मो को प्राण-दण्ड देने के पश्चात् टॉमस क्रॉम्वेल ( Thomas Cromwell ) को अपना प्रधान मंत्री बनाया था। क्रॉम्वेल धर्म-सुधार ( Reformation ) का बड़ा पक्षपाती था; और उसी ने हेनरी को पोप से सम्बन्ध-त्याग करने और मठों के तोड़ने की



हेनरी अष्टम के समय का पहनावा

सम्मति दी थी। हेनरी उसे बहुत चाहता था; क्योंकि उसने राज्य की शक्ति बढ़ाने में बहुत अधिक सहायता दी थी। परन्तु एक मामले में हेनरी उससे रुष्ट हो गया। एनी बोलीन को, जिसके साथ इतने प्रयत्नों के पश्चात् हेनरी ने विवाह किया था, व्यभिचार का दोष लगा कर प्राण-दण्ड दिया गया। अगली रानी जेन साइमर ( Jane Seymour ) का प्रसूतागार में ही देहान्त हो

गया था। अब क्रॉमवेल ने हेनरी के विवाह के लिये एनी आफ़ क्लीव्ज़ (Anne of Cleves) को ढूँढ़ा। पर वह सुन्दर नहीं थी, इस कारण हेनरी को पसन्द न आई। और ऐसी कुरूपा स्त्री ढूँढ़ने के कारण राजा क्रॉमवेल से रुष्ट हो गया। थोड़े ही दिनों में हेनरी ने क्रॉमवेल पर राजद्रोह का अपराध लगा कर उसको प्राण-दण्ड दिलाया; और तुरन्त एनी का परित्याग करके एक दूसरा विवाह कर डाला।

हेनरी अष्टम के समय में आंग्ल चर्च की स्थिति—हेनरी पहले धर्म-सुधार का बड़ा विरोधी था। उसने लूथर के प्रचार के प्रतिवाद में एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें रोमन चर्च की संस्था का भली भाँति समर्थन किया। इससे प्रसन्न हो कर पोप ने उसे 'धर्मरक्षक' ( Defender of the Faith ) की उपाधि दी, जिसका प्रयोग अब तक इँगलैण्ड के राजा सिक्कों और घोषणाओं में करते हैं। कैथराइन के परित्याग के विषय में पोप से झगड़ा हो जाने के कारण हेनरी ने इँगलैण्ड के चर्च का सम्बन्ध पोप से हटा लिया और वह स्वयं आंग्ल चर्च का अधिष्ठाता बन बैठा। जनता ने भी इसे पसन्द किया; क्योंकि उस समय जातीयता की लहर फैलती जा रही थी और धार्मिक विषयों में भी लोग एक विदेशी पोप के अधीन रहना नहीं चाहते थे। हेनरी ने बाइबिल का अनुवाद अँग्रेज़ी में करा कर उसकी प्रतिलिपियाँ प्रत्येक गिरजाघर के खम्भों से बँधवा दीं, जिसमें लोग स्वयं देख लें कि ईसाइयों की धर्मपुस्तक में पोप के अधीन रहने के विषय में कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

परन्तु इतना सब कुछ करने पर भी हेनरी प्राचीन धर्म के

सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहता था। उसने एक राजनियम स्वीकृत कराया जिसमें प्राचीन कैथोलिक मत की मुख्य मुख्य छः धाराएँ ( Statute of Six Articles ) सम्मिलित थीं। इसमें हेनरी का यही उद्देश्य था कि पोप से सम्बन्ध-त्याग होने पर भी लोग अपने धर्म को सनातन की भाँति ही मानते रहें और उसमें लेश मात्र भी परिवर्तन न होने पावे। सारांश यह कि हेनरी आंग्ल चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेन्ट बनाने के पक्ष में न था। वह हृदय से कैथोलिक सिद्धातों का ही अनुयायी था; और यदि पोप से उसका झगड़ा न हुआ होता, तो सम्भवतः वह पोप से आंग्ल चर्च का सम्बन्ध विच्छेद भी न करता।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५३५—Henry VIII's Act of Supremacy
( पोप के स्थान पर हेनरी अष्टम का स्वयं आंग्ल चर्च का अधिष्ठाता होना। )

„ १५३६–१५३९—मठों का ध्वंस।

„ १५३९—Statute of Six Articles
( छः धाराओं का नियम )

„ १५४७—हेनरी अष्टम की मृत्यु।

---

# छठा परिच्छेद

## एडवर्ड षष्ठ और धार्मिक सिद्धान्तों में संशोधन

( सन् १५४७—१५५३ )

**एडवर्ड षष्ठ तथा संरक्षक समसेंट**—हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उस का इकलौता लड़का, जो जेन साइमर के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, एडवर्ड षष्ठ के नाम से गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के समय उसकी अवस्था केवल दस वर्ष की थी; इसलिये उसका पिता मरते समय एक संरक्षक-सभा नियत कर गया था, जिस में धर्म-सुधार के पक्ष और विपक्षवाले दोनों प्रकार के सदस्य थे। परन्तु एडवर्ड का मामा एडवर्ड साइमर अपनी निपुणता से उस सभा का मुखिया बन बैठा; और अब वह ड्यूक आफ़ समसेंट ( Duke of Somerset ) हो गया। उसने एडवर्ड का विवाह स्कॉटलैण्ड की राजकुमारी मेरी से कराना चाहा, परन्तु इसमें उसे सफलता न हुई। एक अँगरेजी फ़ौज ने जाकर स्कॉटलैण्ड में पिनकी ( Pinkie ) नामक स्थान में विजय भी प्राप्त की, जिस से स्कॉटलैण्डवाले और भी चिढ़ गये। उन्होंने मेरी को फ्रांस भेज दिया और वहाँ फ्रान्स के राजकुमार से उस का विवाह भी नियत हो गया।

५

**धार्मिक सिद्धान्तों में संशोधन**—समर्सेट धर्म-सुधार का हार्दिक समर्थक था। उसने आंग्ल चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेन्ट बनाने का प्रयत्न किया। पोप से तो सम्बन्ध-त्याग हो ही चुका था। समर्सेट ने अब धार्मिक सिद्धान्तों में भी संशोधन आरम्भ किया। हेनरी अष्टम का छः धाराओं-वाला राज-नियम (Statute of Six Articels), जिसका आशय यह था कि सिद्धान्त सनातन ही रहें, हटा दिया गया और पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ दी गईं और खिड़कियों तक के वे शीशे, जिन पर महात्माओं के रंगीन चित्र बने हुए थे, तोड़ डाले गये। मूर्तियों और चित्रों का रहना प्राचीन अन्ध विश्वास का चिह्न समझा गया। अब तक प्रार्थना लैटिन भाषा में होती चली आई थी, परन्तु समर्सेट ने एक नवीन प्रार्थना पुस्तक (New Prayer Book) अँग्रेजी भाषा में प्रकाशित की; और सब पादरियों को



एडवर्ड षष्ठ

उसी का व्यवहार करने के लिये बाध्य किया गया। उसका अभिप्राय यही था कि लैटिन भाषा में प्रार्थना करना, जिसे बहुत ही थोड़े से लोग समझते थे, बिलकुल व्यर्थ है। यह "नवीन प्रार्थना पुस्तक" धर्म-सुधार के सिद्धान्तों के अनुसार ही बनी थी।

सन् १५४९ के विद्रोह तथा सर्मसेट का पतन—धर्म में इतने बड़े बड़े परिवर्तन मानने के लिये जनता तैयार न थी। पोप से सम्बन्ध-त्याग को तो जनता पसन्द करती थी, परन्तु सैंकड़ों वर्षों के प्रचलित सिद्धान्तों में संशोधन करना उसे पसन्द न था। इसलिये कैथोलिक मत के अनुयायियों ने डेवन प्रान्त ( Devonshire ) में विद्रोह आरम्भ किया; परन्तु वह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया।

थोड़े ही दिनों बाद नॉर्फोक ( Norfolk ) प्रान्तवालों ने एक और विद्रोह खड़ा किया। इस विद्रोह का एक मुख्य कारण था। ऊन का व्यापार अधिक लाभदायक था; इस कारण देश में भेड़ें पालने का काम बहुत जोरों से चल पड़ा था*; और कृषि की ओर लोग बहुत कम ध्यान देने लगे थे। ऊन तैयार करने में थोड़े से ही आदमियों की आवश्यकता होती है; इस कारण बहुत से मजदूर अब बेकार फिरने लगे। इन्हीं बेकारों ने यह विद्रोह खड़ा किया था। उसका मुखिया रॉबर्ट केट ( Robbert Ket ) नामक एक रंगसाज़ था। समर्सेट यह विद्रोह शान्त न कर सका; और इसलिये वह संरक्षक पद से हटा दिया गया। थोड़े ही दिनों बाद राजद्रोह का अपराध लगा कर उसे प्राण-दंड दिया गया।

*इसी सम्बन्ध में विद्वान् मोर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "युटोपिया" (Utopia) में लिखा है—"भेड़ों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि वह मकानों और मनुष्यों को खाये डालती हैं।"

समर्सेट हृदय का सच्चा था, परन्तु उसके सुधारों के लिये देश अभी तैयार न था।

**नार्थम्बरलैण्ड तथा धर्म्म-संशोधन का प्रचार**—समर्सेट के हटने पर वार्विक का अर्ल जॉन डडले (John Dudley, Earl of Warwick) संरक्षक हुआ। वह शीघ्र ही ड्यूक आफ नॉर्थम्बरलैण्ड (Duke of Northumberland) बना दिया गया। वह धर्म-सुधार में अधिक विश्वास न रखता था; परन्तु यह सोच कर कि इस बहाने से गिरजों और मठों की सम्पत्ति हमारे और हमारे मित्रों के हाथ लगेगी, उसने धर्म-सुधार का खूब प्रचार किया। एक दूसरी प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की गई, जिसमें पहली प्रति की अपेक्षा भी अधिक प्रोटेस्टेण्ट विचार भरे हुए थे। बयालीस धाराओंवाला एक नया राज नियम (Statute of Forty-two Articles) स्वीकृत किया गया, जिसमें लूथर के चलाये हुए प्रोटेस्टेण्ट मत के प्रायः सभी सिद्धान्त सम्मिलित थे। इस प्रकार आंग्ल चर्च सिद्धान्तों तथा रीतियों में सब प्रकार से पूर्णतया प्रोटेस्टेण्ट हो गया; परन्तु जनता की सहानुभूति इन सब बातों के प्रति न थी। देश यही समझता था कि पोप से सम्बन्ध-त्याग तो ठीक है, परन्तु धार्मिक सिद्धान्त सनातन और ज्यों के त्यों ही बने रहें।

**लेडी जेन ग्रे**—एडवर्ड षष्ठ क्षय रोग से ग्रस्त था; इसलिये उसके अधिक दिनों तक जीने की आशा नहीं थी। संरक्षक नॉर्थम्बरलैण्ड ने अपने वंशजों और कुल की प्रतिष्ठा स्थायी बनाने के हेतु एक सुन्दर उपाय निकाला। एडवर्ड के पश्चात् सिंहासन की उत्तराधिकारिणी उस की बड़ी बहिन मेरी होती थी, जो

पक्की कैथोलिक थी। नॉर्थम्बरलैण्ड ने एडवर्ड को सुझाया कि मेरी के राजसिंहासन पर आरूढ़ होने से धर्म-सुधार के कार्य में बड़ी बाधा पड़ेगी। उसकी सम्मति से एडवर्ड ने यह वसीयत की कि मेरे पश्चात् गद्दी की मालिक लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) होगी। जेन ग्रे, हेनरी अष्टम की सब से छोटी बहिन की दौहित्री थी। वह प्रोटेस्टेण्ट मत को मानती थी, और उसका विवाह नॉर्थम्बरलैन्ड के पुत्र से हो चुका था।

एडवर्ड का सोलह वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया; और नॉर्थम्बरलैन्ड ने तुरन्त जेन ग्रे को रानी घोषित कर दिया। परन्तु कोई यह नहीं चाहता था कि असली उत्तराधिकारिणी मेरी के रहते जेन ग्रे रानी हो। जेन ग्रे कुल नौ दिन* राज्य कर पाई थी कि वह गद्दी से हटा दी गई; और मेरी के सहायकों ने मेरी को रानी बनाया। अपने प्रयत्न में विफलता देख कर नॉर्थम्बरलैन्ड स्वयं भी मेरी का सहायक हो गया; परन्तु मेरी ने उसे बिना प्राण-दण्ड दिये न छोड़ा। कुछ दिनों बाद लेडी जेन ग्रे का भी, उसके समस्त परिवार सहित, मेरी ने वध करा डाला, जिससे कोई काँटा उसके मार्ग में न रहने पावे।

---

* Lady Jane Grey, the "Nine Days' Queen."

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५४७—पिनकी का युद्ध।
" १५४९—एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल की प्रथम प्रार्थना पुस्तक।
" १५४९—समर्सेट का पतन।
" १५५२—एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल की द्वितीय प्रार्थना पुस्तक।
" १५५३—एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु।

---

## सातवाँ परिच्छेद

—•—

### रानी मेरी और कैथोलिक मत का पुनः प्रचार

( सन् १५५३—१५५८ )

**रानी मेरी**—मेरी का अधिकतर जीवन दुःख और निराशा में ही बीता था। उस की माता कैथराइन के परित्याग के विषय में सब बातें हम पहले ही बतला चुके हैं। अपनी माता का अपमान मेरी भूल न सकती थी। वह बड़ी होकर पक्की कैथोलिक हुई; और राजसिंहासन पर आते ही उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि आंग्लचर्च को फिर सनातन की भाँति पूर्णतया कैथोलिक बनाऊँगी और धर्म-सुधार की बढ़ती हुई लहर को रोकने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगी।

**स्पेनिश विवाह तथा वॉट का विद्रोह**—मेरी ने स्पेन के सम्राट् फ़िलिप द्वितीय से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। इँगलैण्ड निवासी इस बात को कभी पसन्द न कर सकते थे; क्योंकि इससे यह भय था कि यदि मेरी के कोई पुत्र हुआ, तो वह स्पेन का राजकुमार कहलावेगा और किसी दिन इँगलैण्ड तथा स्पेन दोनों देशों का स्वामी हो जायगा। इस प्रकार इँगलैण्ड की स्थिति स्पेनिश साम्राज्य के एक प्रान्त के समान हो जायगी, जिससे आंग्ल जाति के मान की बड़ी हानि होगी। परन्तु मेरी अपने विचार पर दृढ़ थी; इस कारण देश

में विद्रोह भी हुआ, जिसका नेता वॉट ( Wyatt ) था। विद्रोहियों ने मेरी की छोटी बहिन एलिजेबेथ को रानी बनाना चाहा। परन्तु यह विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया; और अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिये मेरी ने एलिजेबेथ को टावर में क़ैद कर दिया।



रानी मेरी ट्यूडर

अन्त में पार्लिमेएट को फिलिप के साथ विवाह करने की स्वीकृति देनी पड़ी; लेकिन यह निश्चय करा लिया गया कि स्वयं मेरी ही इँगलैण्ड का राज्यप्रबन्ध करेगी; और इँगलैण्ड तथा स्पेन के राजसिंहासन कभी मिलाकर एक किये न जायँगे।

**कैथोलिक मत का पुनः प्रचार**—मेरी ने एडवर्ड षष्ठ के समय के धर्म सम्बन्धी राजनियम बिलकुल रद्द कर दिये; और हेनरी अष्टम के समय का छः धाराओंवाला राजनियम (Statute of Six Articles) फिर पास करा के कैथोलिक सिद्धान्तों का पुनः प्रचार किया। परन्तु इतने ही से मेरी सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी। उसका उद्देश्य तो यह था कि आंग्लचर्च को फिर से पूर्णतया कैथोलिक बनाया जाय। उसने पोप के प्रतिनिधि कार्डिनल पोल (Cardinal Pole) को इँगलैण्ड में बुलाया। पार्लिमेण्ट के सब सदस्यों ने उसके सम्मुख आदरपूर्वक झुक कर, पोप का अपमान करने के लिये, क्षमा माँगी। अब आंग्लचर्च फिर पोप के अधीन हो गया और गिरजों में सनातन की भाँति फिर पूजा-पाठ होने लगा। सब प्रोटेस्टेण्ट पादरी निकाल बाहर किये गये और उनके स्थानों पर कैथोलिक पादरी नियत हुए। परन्तु मेरी मठों की सम्पत्ति वापस न दिला सकी; क्योंकि ऐसा करने से राजकोष से भी बहुत सा धन देना पड़ता। इस कारण धर्म-सुधार का वृक्ष बिलकुल जड़ से न उखाड़ा जा सका। उसका कुछ अंकुर रह गया जो अवसर पाकर फिर हरा भरा हो गया।

**प्रोटेस्टेण्टों का जीवित जलाया जाना**—मेरी ने अब प्राटेस्टेण्टों को अपना मत छोड़ने पर बाध्य करना आरम्भ किया। जिन्होंने कैथोलिक मत स्वीकार न किया, उन्हें कड़े कड़े दंड दिये गये। लगभग तीन सौ प्रोटेस्टेण्ट अपना धर्म न छोड़ने के कारण जीवित जलवाये गये! इन शहीदों की वीरता के विषय में बहुत सी कथाएँ प्रचलित हैं। रोलैण्ड टेलर (Rowland Taylor) को जब सिपाही बन्दीगृह की ओर ले जा रहे थे, तब रास्ते में

जनता ने उस पर फूलों की वर्षा की। लैटिमर ( Latimer ) और रिडले ( Ridley ) एक साथ ऑक्सफोर्ड में जलाये गये। आग की लपटों में से लैटिमर ने चिल्लाकर कहा—"मास्टर रिडले! धर्म के लिये वीरता से प्राण निछावर करो। हम लोग आज उस ज्वाला का प्रकाश कर रहे हैं, जिसको इँगलैण्ड में कोई न बुझा सकेगा"। हुआ भी ऐसा ही। धर्म के नाम पर ऐसे अत्याचार होते देखकर जनता को मेरी से घृणा हो गई; और प्रोटेस्टेण्ट लोग अपने धार्म्मिक विश्वासों में और भी कट्टर हो गये।

क्रेन्मर ( Cranmer ) को मेरी अपना पुराना शत्रु समझती थी; क्योंकि उसी ने उसकी माता कैथराइन के परित्याग की व्यवस्था दी थी। क्रेन्मर को भी प्रोटेस्टेण्ट मत न छोड़ने के अपराध में जीवित जलाये जाने की आज्ञा दी गई। क्रेन्मर कुछ दुबल हृदय का था, इस कारण उसने अपने प्राण बचाने के लिये क्षमा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसकी आत्मा ने इसका प्रतिरोध किया और उसने शीघ्र ही अपना क्षमापत्र लौटा लिया। अतः उसे जीवित जलाने की फिर से आज्ञा दी गई। जब क्रेन्मर जलाया जा रहा था, तब उसने बड़ी वीरता से अपना दाहिना हाथ अग्नि में बढ़ाकर कहा—"इस हाथ ने क्षमापत्र पर हस्ताक्षर करने का अपराध किया है; और इसलिये सब से पहले यही भस्म होना चाहिए।"

**कैले का पतन और मेरी की मृत्यु**—मेरी के अन्तिम दिन बड़ी निराशा और कष्ट में बीते। शहीदों की वीरता देखकर प्रोटेस्टेण्ट मत के प्रति जनता की सहानुभूति और भी अधिक हो गई। मेरी के पति फिलिप ने उसे, सुन्दर न होने के

कारण, त्याग दिया। मेरी ने उसको प्रसन्न करने के लिये फ्रान्स के विरुद्ध उसका साथ दिया। युद्ध में अवसर पाकर फ्रान्सीसियों ने कैले के दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार फ्रान्स पर प्राचीन काल की आंग्लों की विजय की अन्तिम निशानी भी इँगलैण्ड के हाथ से निकल गई। मेरी का स्वास्थ्य पहले से ही ठीक न था। कैले के छिन जाने से उसके हृदय पर बड़ी चोट लगी और कुछ ही दिनों बाद वह इस संसार से चल बसी। उसकी मृत्यु के दो ही दिन बाद कार्डिनल पोल भी परलोक सिधारा।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५५४—आंग्ल चर्च का फिर पोप के अधीन होना।
,, १५५८—कैले का इँगलैण्ड के हाथ से निकलना।
,, १५५८—मेरी की मृत्यु।

---

## आठवाँ परिच्छेद

## रानी एलिजेबेथ तथा आंग्ल चर्च

रानी एलिजेबेथ—मेरी की मृत्यु होने पर एलिजेबेथ टावर से मुक्त हुई और राज-सिंहासन पर बैठी। अपनी माता एनी



रानी एलिजेबेथ

वोइलिन की भाँति उसे भी सजधज का बहुत शौक़ था; और यह शौक़ वृद्धावस्था तक बराबर बना रहा। उसे गान विद्या से भी अधिक प्रेम था; और वह नाचने में भी बहुत निपुण थी। अपने पिता हेनरी अष्टम की भाँति वह दूर्दर्शी, उत्साही और धीर भी थी। घमंड भी उसमें कूट कूट कर भरा हुआ था; और वह केवल इसलिये आजन्म

अविवाहित रही जिसमें उसे किसी स्वामी के अधीन न होना पड़े। वह कई भाषाएँ जानती थी और विद्वानों का बड़ा आदर करती थी। देश के शासन में उसे कितनी ही बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु अपने धैर्य और राज-नीतिज्ञता के कारण उसे कभी विफलता न हुई। भाग्यवश उसे मंत्री भी बहुत अच्छे मिल गये। एक का नाम विलियम सेसिल (William Cecil) था, जिसे उसने लार्ड वर्गले (Lord Burgley) बना दिया; और दूसरा वालशिंघम (Walsin-gham) था, जो गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष था।

**आंग्ल चर्च का प्रबन्ध**—इस समय सब से आवश्यक कार्य यह था कि आंग्ल चर्च का उचित प्रबन्ध किया जाय। प्रोटेस्टेण्टों और कैथालिकों के झगड़े से देश शक्तिहीन हो रहा था। स्वयं एलिजेबेथ की धार्मिक विषयों में कुछ भी रुचि न थी, और उसने चर्च का प्रबन्ध एक राजनीतिज्ञ की भाँति किया। वह जानती थी कि देश पोप के अधीन रहना कभी पसन्द न करेगा; और इसलिये उसने अपने पिता की भाँति "मुख्यता का राजनियम" (Act of Supremacy) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार वह स्वयं आंग्ल चर्च की मुखिया तथा संरक्षक बनी। एडवर्ड षष्ठ के राजत्वकाल की द्वितीय प्रार्थना पुस्तक फिर प्रचलित की गई; परन्तु उसमें से ऐसे शब्द निकाल दिये गये जिनसे पुराने धर्मावलम्बियों के हृदय को कष्ट पहुँचने की सम्भावना थी। "एकरूपता का राजनि-यम" (Act of Uniofrmity) के द्वारा किसी और प्रार्थना पुस्तक का सार्वजनिक गिरजाघरों में प्रयोग करने की मनाही कर दी गई। एडवर्ड षष्ठ का ४२ धाराओंवाला राजनियम (The

42 Articles of Religion ) फिर स्वीकृत किया गया; परन्तु उसकी तीन धाराएँ, जिन पर सनातन प्रथा के अनुयायी आक्षेप करते थे, हटा दी गईं। एलिज़बेथ का प्रबन्ध स्थायी हुआ; और वर्तमान आंग्ल चर्च का प्रबन्ध बहुत कुछ उसी ढंग का है।

**एलिज़ेबेथ की धार्मिक नीति**—एलिज़ेबेथ ने चर्च के प्रबन्ध में मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया। उसकी इच्छा थी कि आंग्ल चर्च समस्त जाति का चर्च हो जाय, जिसमें सब विचारों के मनुष्य मिल सकें। वह चाहती थी कि मेरे राज्य में जहाँ तक हो सके, किसी को धार्मिक विश्वास के लिये दण्ड न दिया जाय। केवल पदाधिकारियों को ही उसका "मुख्यता का राज्यनियम" मानने की शपथ खानी पड़ती थी। यदि वे शपथ न खाते थे, तो उनको पद न दिया जाता था; परन्तु इसके अतिरिक्त उन पर और कोई अत्याचार नहीं किया जाता था। सार्वजनिक गिरजों में तो सब को नियत की हुई प्रार्थना पुस्तक का ही व्यवहार करना पड़ता था; परन्तु अपने अपने घरों में सब को स्वतंत्रता थी कि जिस प्रकार चाहें, प्रार्थना किया करें। राज्य की ओर से केवल इतनी सख्ती थी कि जो लोग सार्वजनिक गिरजा घरों में उपस्थित न होते थे, उन्हें कुछ थोड़ा सा जुर्माना देना पड़ता था। जब तक अन्य धर्मा-वलम्बी शान्तिपूर्वक रहते, तब तक एलिज़ेबेथ उनसे कुछ न बोलती। पर वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसके चर्च प्रबन्ध के विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दोलन हो। उसने एक "धार्मिक न्यायालय" (High Commission Court) बनाया जिसमें ऐसे मनुष्यों को दंड दिया जाता था जो आंग्ल चर्च के विरुद्ध प्रचार

करते थे। यदि हम रानी मेरी के शहीदों का ध्यान करें, तो हम समझ सकेंगे कि एलिज़ेबेथ की धार्मिक नीति कितनी उदार थी।

प्योरिटन दल ( Puritans )—इँगलैण्ड में कुछ लोग जनेवा के धर्म-सुधारक महात्मा कैल्विन के भी अनुयायी थे। उन के विचार बड़े स्वतन्त्र थे। वे लोग उपासना में बहुत सी रीतियों और विधियों के बखेड़े पसन्द नहीं करते थे। उनका मत था कि उपासना बिलकुल सीधे सादे ढंग से होनी चाहिए और उसमें बहुत से आडम्बरों की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी नियत प्रार्थना पुस्तक को भी वे आवश्यक नहीं समझते थे और पादरियों के विशेष प्रकार के वस्त्र पहनने के भी पक्ष में न थे। आचार की ओर उनका बहुत ध्यान था और साधारण मनोविनोद ताश, शतरंज, बाजे आदि को भी वे लोग अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे। उनका कहना था कि हमारा उद्देश्य चर्च को पवित्र बनाना है। और इसी लिये वे लोग प्योरिटन (Puritans) अर्थात् "पवित्रता-प्रचारक" के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको प्रोटेस्टेण्ट दल की ही एक शाखा समझना चाहिए; परन्तु स्मरण रहे कि इनके और मार्टिन लूथर के सिद्धान्तों में बहुत कुछ भेद है।

इँगलैण्ड के प्योरिटन एलिज़ेबेथ के चर्च सम्बन्धी प्रबन्ध से सन्तुष्ट न थे और वे धर्म-सुधार की लहर को और आगे बढ़ा ले जाना चाहते थे। परन्तु एलिज़ेबेथ उनके विचारों से सहमत न थी। वह प्योरिटन दल को आंग्ल चर्च का उतना ही शत्रु समझती थी जितना कि रोमन कैथोलिक दल को। सब पादरियों को उपासना के समय विशेष प्रकार के वस्त्र पहनने पड़ते थे। प्योरिटन पादरी ऐसा करना आवश्यक नहीं समझते थे; और इसलिये

एलिजेबेथ ने उन्हें निकाल बाहर किया था। प्योरिटन दलवाले आंग्लचर्च से पृथक् हो गये; और यही लोग आगे चलकर नान-कन्फर्मिस्ट्स (Non Conformists) और डिसेन्टर्स (Dissenters) अर्थात् "देश के स्थापित चर्च के विरोधी" कहलाये।

**कैथोलिक मत के पुनरुद्धार की लहर—(The Counter-Reformation)** प्रोटेस्टेण्ट मत के प्रचार से रोमन चर्च की संस्था के दोष युरोप भर के लोगों पर प्रकट हो गये। अब पोप को अपनी स्थिति सँभालने की फ़िक्र पड़ी। रोमन चर्च के दोषों में कुछ सुधार किया गया; और कैथोलिक-मत के पुनः प्रचार के लिये एक जेसुइट संघ (Order of the Jesuits) की स्थापना की गई। इस प्रकार युरोप में कैथोलिक मत के पुनरुद्धार की लहर चल पड़ी।

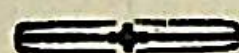
ईसाइयों के सनातन के धर्म गुरु (Spiritual Head) को न मानने के अपराध में पोप ने एलिजेबेथ को ईसाई मत से पतित घोषित कर दिया और इँगलैण्ड के कैथोलिकों से कह दिया कि एलिजेबेथ के विरुद्ध विद्रोह करने में कोई पाप नहीं है। थोड़े ही दिनों बाद जेसुइट दल इँगलैण्ड में आ पहुँचा। उसके प्रचार का यह परिणाम हुआ कि रानी के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये जनता में उत्तेजना फैलने लगी। ऐसी अवस्था में एलिजेबेथ को कड़े नियमों का प्रयोग करना पड़ा और जेसुइट दल बुरी तरह इँगलैण्ड से निकाला गया। एलिजेबेथ के राजत्व काल में केवल यही एक समय ऐसा है जब कि रानी को अपने सिंहासन तथा जीवन की रक्षा के लिये कड़े दंड देने के लिये बाध्य होना पड़ा था।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५५८—एलिज़ेबेथ का राज्याभिषेक।
,, १५५९—एलिज़ेबेथ का "मुख्यता का राज-नियम", तथा "एकरूपता का राज-नियम।" ( Elizabeth's "Acts of Supremacy and Uniformity" )
,, १५८०—जेसुइट दल का इँगलैण्ड में आना।

---

# नवाँ परिच्छेद



## एलिज़ेबेथ तथा स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी

**हेनरी अष्टम और स्कॉटलैण्ड**—हम पहले कह आये हैं कि हेनरी सप्तम ने अपनी पुत्री मार्गरेट का विवाह स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ के साथ किया था। इस से यह आशा की जाती थी कि इँगलैण्ड और स्कॉटलैण्ड में परस्पर मेल हो जायगा। परन्तु ऐसा न हुआ और स्कॉटलैण्ड बराबर फ्रांस का ही साथ देता रहा। जब हेनरी अष्टम का फ्रांस के साथ युद्ध ठना हुआ था, तब जेम्स चतुर्थ ने इँगलैण्ड पर आक्रमण किया; परन्तु फ्लॉडन क्षेत्र ( Flodden Field ) के युद्ध में वह मारा गया। जेम्स पंचम भी फ्रान्स को ही मित्र समझता था; अतः उसने भी इँगलैण्ड पर आक्रमण किया। परन्तु वह भी सॉलवे मॉस (Solway Moss) के युद्ध में परास्त हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी भी मृत्यु हो गई।

**मेरी स्टुअर्ट का आरम्भिक जीवन**—जेम्स पंचम की मृत्यु होने पर उसकी पुत्री मेरी स्टुअर्ट ( Mary Stuart ) स्कॉट-लैण्ड की रानी हुई। मेरी उस समय दूध-पीती बालिका थी। ऐसी अवस्था में उसकी माता उसकी संरक्षक होकर राज्य का प्रबन्ध करने लगी। हम पहले बतला चुके हैं कि समर्सेट ने एडवर्ड षष्ठ का विवाह मेरी स्टुअर्ट से कराना चाहा था; परन्तु स्कॉटलैण्ड-

वालों ने इसे पसन्द न किया। मेरी फ्रांस भेज दी गई और वहाँ के राजकुमार के साथ उसका विवाह निश्चित हो गया। मेरी का पालन पोषण फ्रान्स में ही हुआ और वहाँ रह कर वह पक्की कैथोलिक हो गई।

**स्कॉटिश धर्म-सुधार में एलिज़ेबेथ की सहायता**—स्कॉटलैण्ड में धर्मसुधार का प्रचार कैल्विन के शिष्य जॉन नॉक्स (John Konx) के द्वारा हुआ। मेरी की माता ने धर्म सुधार का लहर को बहुत रोकना चाहा। नये धर्म के कई अनुयायी जलाये भी गये; परन्तु देश में बराबर उसकी उन्नति होती गई। बहुत से लार्डों ने नॉक्स का साथ दिया और स्कॉटलैण्ड में नये मत केलार्डों का एक समूह (Lords of the Congregation) तैयार हो गया। अब मेरी का पति फ्रांस का राजा हो गया था; और उसने स्कॉटलैण्ड में धर्म-सुधार को दबाने के लिये फ्रांसीसी सेना भेजी। इस आपत्ति के समय में नये मत के स्कॉटिश लार्डों ने एलिज़ेबेथ से सहायता माँगी। एलिज़ेबेथ ने पहले स्कॉटलैण्ड-वालों को उनकी सरकार के विरुद्ध सहायता देने में कुछ आगा पीछा किया; परन्तु अन्त में कुछ सोच समझ कर उसने एक अँग्रेजी सेना को स्कॉटिश लार्डों की सहायता के लिये भेज दिया। फ्रांसीसी सेना लीथ (Leith) नामक स्थान में परास्त हुई और सन् १५६० में एडिन्बरा (Edinburgh) की सन्धि के अनुसार फ्रांसीसियों को स्कॉटलैण्ड से लौट जाना पड़ा। इसी समय मेरी की माता की, जो अब तक संरक्षक होकर स्कॉटलैण्ड का राज्य-प्रबन्ध कर रही थी, मृत्यु हो गई। ऐसी अवस्था में स्काटिश लार्डों की एक मंडली को देश का शासन सपुर्द करके

अँग्रेजी सेना भी स्कॉटलैण्ड से लौट आई। स्कॉटिश लार्डों ने फौरन कैल्विन के सिद्धान्तों के अनुसार स्काटिश चर्च का नये ढंग से प्रबन्ध किया। इस नये चर्च में नियत किये हुए पादरियों के स्थान पर एक चुना हुआ मन्त्री मण्डल कार्य्य करता था; और इस प्रकार स्कॉटिश चर्च प्रेसबिटेरियन ( Presbyterian ) अर्थात् "मंत्रियों द्वारा संचालित" हो गया।

एलिज़ेबेथ की स्कॉटिश नीति पूर्णतया सफल रही। अब स्कॉटिश राज्य में फ्रान्स का बिलकुल हस्तक्षेप न हो सकता था। स्कॉटलैण्ड की शासक मंडली से एलिज़ेबेथ का बराबर मेल बना रहा। चर्च सुधार में सहायता देने के कारण स्कॉटिश जनता भी सदा एलिज़ेबेथ की उपकृत रही। अब इँगलैण्ड को स्कॉटलैण्ड की ओर से भय न रहा और दोनों देशों की पुरानी शत्रुता का इस प्रकार अन्त हो गया।

**रानी मेरी स्टुअर्ट तथा लार्ड डार्नले**—मेरी स्टुअर्ट के पति फ्रान्स के राजा फ्रान्सिस द्वितीय का सन् १५६१ में देहान्त हो गया। मेरी के कोई सन्तान न थी, इसलिये अब उसे स्कॉटलैण्ड लौट आना पड़ा। मेरी पक्की कैथोलिक थी; और उधर स्कॉटलैण्ड में प्रेसबिटेरियन चर्च स्थापित हो गया था। इस कारण प्रजा की मेरी के प्रति हार्दिक सहानुभूति कभी न हो सकती थी। धर्म-सुधार के साधारण प्रचारक भी रानी के लिये अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने में अपना गौरव समझते थे। अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिये मेरी ने अब अपने चचेरे भाई लार्ड डार्नले ( Lord Darnley ) से विवाह किया। कुछ दिनों तक दोनों का विवाहित जीवन सुख से व्यतीत हुआ; परन्तु धीरे धीरे

मेरी को अपने नये पति के दुर्गुण दिखाई देने लगे। इधर डार्न्‌ले को भी अपनी पत्नी के सदाचार के विषय में कुछ सन्देह होने लगा और दोनों का एक साथ रहना असम्भव हो गया। इस समय मेरी अर्ल आफ़ बॉथ्‌वेल ( Earl of Bothwell ) पर मोहित हो गई और डार्न्‌ले से छुटकारा पाने के उपाय सोचे जाने लगे। थोड़े ही दिनों में एडिन्‌बरा से कुछ दूर कर्कोफ़ील्ड (Kirk-o-field ) नामक स्थान में डार्न्‌ले का मकान बारूद से उड़ा दिया गया और उसकी लाश लोगों को बाहर के बाग़ में पड़ी हुई मिली।

**मेरी का राज्यच्युत होना**—साधारण जनता का यही अनुमान हुआ कि यह सब षड़यंत्र बॉथ्‌वेल का रचा हुआ है और इसमें रानी की भी कुछ सहायता रही होगी। जब मेरी ने बॉथ्‌वेल से विवाह कर लिया, तब तो लोगों को यह निश्चय ही हो गया कि अवश्य इन दोनों ने ही मिल कर डार्न्‌ले के प्राण लिये हैं। जब देश में यह ख़बर फैली, तब सारा स्कॉटलैण्ड इस पापी रानी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और एक बहुत बड़ा विद्रोह आरम्भ हुआ। परिणाम यह हुआ कि मेरी राज्यच्युत की गई और उसका पुत्र जेम्स षष्ठ के नाम से राजसिंहासन पर बैठाया गया। जेम्स का जन्म उसके पिता डार्न्‌ले की हत्या से थोड़े ही दिन पहले हुआ था और इस समय वह बिलकुल बच्चा था। ऐसी अवस्था में मेरी के सौतेले भाई अर्ल आफ़ मरे ( Earl of Murray ) को संरक्षक नियत करके राज्य प्रबंध उसको सौंपा गया।

**मेरी का भाग कर इँगलैण्ड पहुँचना**—एक वर्ष तक मेरी लाकूलेवन दुर्ग ( Lochleven Castle ) में क़ैद रही। वहाँ उसने

जेलर को मिला लिया। दुर्ग की तालियाँ चुराई गईं और मेरी बन्दी-गृह से निकल भागी। अब उसने स्कॉटलैएड में उपद्रव मचाना चाहा;



मेरी क्वीन ऑफ स्कॉट्स

परन्तु इसमें उसे सफलता नहीं हुई। अन्त में वह निराश हो गई और भाग कर इँगलैएड आई। यहाँ उसे एलिज़बेथ की शरण लेनी पड़ी। एलिज़बेथ उसे बिलकुल सहायता नहीं देना चाहती थी; इसलिये उसने यह बहाना किया कि पहले मेरी अपने निर्दोष होने का प्रमाण दे। इसकी जाँच के लिये एक कमीशन बैठाया

गया; परन्तु वह कमीशन कुछ निर्णय न कर सका और मेरी को बराबर इँगलैण्ड के एक दुर्ग में क़ैद रहना पड़ा।

**एलिज़बेथ के विरुद्ध षड़यंत्र और मेरी को प्राण-दण्ड**—मेरी के इँगलैण्ड में रहने से आंग्ल कैथोलिकों का साहस कुछ बढ़ गया। हेनरी अष्टम और एनी बोइलिन का विवाह पोप की आज्ञा के विरुद्ध होने के कारण कैथोलिक उसे विधि-विहित नहीं समझते थे; और इसलिये एनी बोइलिन की पुत्री एलिज़बेथ को भी वे राज-सिंहासन की उत्तराधिकारिणी नहीं मानते थे। मेरी हेनरी अष्टम की बड़ी बहिन मार्गरेट की पोती थी; और इसलिये एलिज़बेथ को छोड़कर वही ट्यूडर सिंहासन की अधिकारिणी होती थी। आंग्ल कैथोलिकों की अब यह इच्छा हुई कि एलिज़बेथ को मार कर मेरी को इँगलैण्ड की रानी बनाना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये बहुत से षड़यंत्र रचे गये। परन्तु एलिज़बेथ का गुप्तचर विभाग ऐसी निपुणता से कार्य्य करता था कि कैथोलिकों का कोई उपाय सफल न हो सकता था। यह वही समय था जब कि पोप ने एलिज़बेथ को ईसाई मत से पतित घोषित कर दिया था और जेसुइट दलवाले देश भर में यह कहते फिरते थे कि एलिज़बेथ के विरुद्ध विद्रोह करना धार्मिक कर्तव्य है। एलिज़बेथ की स्थिति बहुत अधिक अस्थिर और डाँवाँडोल थी। परन्तु आंग्ल जनता ने उस का साथ दिया; और सब ने इस आशय के एक प्रतिज्ञापत्र ( Bond of Association ) पर हस्ताक्षर किये कि हम लोग तन, मन, धन से रानी की रक्षा करेंगे। अन्त में एलिज़बेथ के विरुद्ध एक ऐसे षड्यंत्र का पता लगा, जिसमें स्वयं मेरी स्टुअर्ट भी बहुत कुछ सम्मिलित थी। यह

सुनकर एलिज़ेबेथ के क्रोध की सीमा न रही। मेरी स्टुअर्ट पर अभियोग चलाया गया और वह फ़ौथरिंगे (Fotheringay) दुर्ग में अपराधी के रूप में न्यायालय के सम्मुख लाई गई। इस न्यायालय ने मेरी को प्राणदंड दिया और सन् १५८७ में स्कॉटलैंएड की सुन्दर रानी निहत होकर परलोक सिधारी। मेरी के प्राणदंड के पश्चात् अब राजसिंहान के लिये झगड़ा करनेवाला कोई न रह गया और एलिज़ेबेथ को षड़यंत्रों के भय से छुटकारा मिल गया।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५१३—फ़्लॉडन क्षेत्र का युद्ध।
,, १५४२—सॉलवे मॉस का युद्ध।
,, १५६०—लीथ का युद्ध तथा एडिन्बरा की सन्धि।
,, १५६१—मेरी का फ्रान्स से लौट कर स्कॉटलैंएड आना।
,, १५६५—मेरी का डार्न्‌ले से विवाह।
,, १५६८—मेरी का भाग कर इँगलैंएड आना।
,, १५८७—मेरी को प्राण-दण्ड।

---

# दसवाँ परिच्छेद

# ऐलिज़ेबेथ तथा आंग्ल नौ-शक्ति की नींव

**एलिज़ेबेथ के समय में समुद्र-यात्रा**—अब तक युरोप में स्पेन और पुर्तगालवाले ही बड़ी बड़ी समुद्र-यात्राएँ किया करते थे। कोलम्बस को, जिसने अमेरिका का पता लगाया था, स्पेन के राजा ने ही खर्च दिया था; और वास्को डी गामा, जिसने भारतवर्ष का समुद्री मार्ग ढूँढ़ निकाला था, पुर्तगाल का निवासी था। पोप ने यह निर्णय कर दिया था कि जितने नये उपनिवेश स्थापित किये जायँ, उनमें से पूर्वीय उपनिवेश पुर्तगाल के अधीन और पश्चिमीय उपनिवेश स्पेन के अधीन हों। धर्मसुधार के आन्दोलन के पश्चात् इँगलैण्ड निवासी भला पोप की आज्ञा की क्या परवाह करते थे! पुर्तगाल और स्पेन को नये देशों के व्यापार से धनी होते देखकर आंग्ल लोग भी समुद्र-यात्रा में अग्रसर हुए। जॉन कैबट (John Cabot) ने बहुत दिन पहले ही लैब्रेडर और न्यूफाउंडलैण्ड का पता लगा लिया था। आर्टिक महासागर से होकर चीन का मार्ग ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न सफल नहीं हुआ; परन्तु इस सिलसिले में रिचर्ड चांसलर ( Richard Chancellor ) को श्वेत सागर (White Sea) का पता लग गया और इस मार्ग से उत्तरी रूस से व्यापार होने लगा। हॉकिन्स (Hawkins) अफ्रिका के हबशी पकड़कर अमेरिका ले जाकर बेचने लगा। अमेरिका के उपनिवेशों में

मजदूरों की बहुत आवश्यकता थी; इस कारण स्पेनवाले हब्शियों को खरीद लेते थे। वाल्टर रेले (Walter Raleigh) ने अमेरिका से आलू और तम्बाकू लाकर युरोप में उनका प्रचार किया।



वाल्टर रेले

ये दोनों युरोप के लिये बिलकुल नई वस्तुएँ थीं और वहीं से फिर समस्त भूमण्डल में फैलीं। रेले ने अमेरिका में प्रथम आंग्ल उपनिवेश की स्थापना की और उस का नाम "वर्जीनिया (Virginia) अर्थात् "कुमारी रानी एलिजेबेथ की भूमि" रखा।

हॉकिन्स का सम्बन्धी ड्रेक (Drake) इन सब से बढ़ कर रहा। वह पहला आंग्ल था जिसने पैसफ़िक या प्रशान्त महासागर पार किया। तीन वर्ष की कठिन समुद्र-यात्रा करके उसने दुनिया के



सर फ्रान्सिस ड्रेक

चारों ओर चक्कर लगाया और बहुत सा धन लेकर कुशलपूर्वक इँगलैण्ड लौट आया। एलिज़बेथ ने उसकी भूमण्डल की समुद्र यात्रा की सफलता का समाचार सुन कर उसे नाइट की उपाधि दी थी।

ARCTIC OCEAN

ARCTIC OCEAN

NORTH AMERICA

Labrador

Newfoundland

Virginia

R. Mississippi

MEXICO

Bahamas

West Indies

Spanish Main

Isthmus of Panama

Nombre de Dios

Quito

R. Amazon

SOUTH AMERICA

Brazil

Lima

Santiago

Straits of Magellan

C. Horn

PACIFIC OCEAN

ATLANTIC OCEAN

British Isles

PORTUGAL

Lisbon

White Sea

Archangel

RUSSIA

Moscow

EUROPE

Mediterranean Sea

R. Nile

ARABIA

AFRICA

Guinea

R. Congo

Natal

C. of Good Hope

ASIA

R. Ob

R. Yenisei

R. Lena

R. Amur

R. Indus

INDIA

Bombay

CHINA

East Indies

Moluccas

New Guinea

AUSTRALIA

INDIAN OCEAN

PACIFIC OCEAN

Drake's Voyage round the World 1577-80

Frobisher: North-West Passage 1576

Chancellor: North-East Passage 1553

**स्पेन और इँगलैंड में युद्ध का प्रारम्भ**—सन् १५८० में स्पेन और पुर्तगाल के राजसिंहासन मिल जाने के कारण स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय की शक्ति बहुत बढ़ गई; क्योंकि अब पूर्वीय और पश्चिमीय व्यापार दोनों उसके हाथ में आ गये। फ़िलिप इँगलैंड के साथ झगड़ा करने से हिचकता था। उसे भय था कि कहीं इँगलैंड और फ्रान्स मिलकर स्पेन पर आक्रमण न कर दें। परन्तु अपनी शक्ति बढ़ जाने से उसका भय कम हो गया और उसने इँगलैंड के कैथोलिकों को एलिजेबेथ के विरुद्ध उत्तेजित करना आरम्भ किया। एलिजेबेथ ने भी इसका उचित बदला लिया; और फ़िलिप के विरुद्ध नीदरलैंड के प्रोटेस्टेंटों को पूरी सहायता पहुँचाई। नीदरलैंड अब तक स्पेन के अधीन था; परन्तु वहाँ के निवासी कैथोलिक राजा फ़िलिप के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे और उन्होंने अपने देश में एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था। एलिजेबेथ ने अपने प्रेम-पात्र रॉबर्ट डडले अर्ल आफ लीसेस्टर ( Robert Dudley, Earl of Liecester ) को नीदरलैंड भेजा। डडले योग्य पुरुष न था, इसलिये उसको अधिक सफलता न हुई। परन्तु आंग्ल सहायता से नीदरलैंड के निवासियों का साहस बहुत बढ़ गया। डडले का भतीजा सर फ़िलिप सिडनी ( Sir Philip Sydney ), जो बहुत अच्छा कवि भी था, नीदरलैंड में मारा गया।

अब एलिजेबेथ ने आंग्ल समुद्र-यात्रियों को भड़काया और उनसे कहा कि तुम लोग जहाँ अवसर पाओ, स्पेन के जहाजों को लूट लो। ड्रेक आदि बड़े साहसी समुद्र-यात्री थे। उन्होंने स्पेन-वालों का नाक में दम कर दिया। जब स्पेन के जहाज अमेरिका

से धन लेकर लौटते थे, तब रास्ते में ये लोग उनको लूट लेते थे। बहुत से आंग्ल मल्लाहों ने स्पेन के जहाजों को लूटना ही अपना पेशा बना लिया। इस प्रकार उन्हें धन भी खूब मिल जाता था; और साथ ही प्रोटेस्टेन्ट आंग्ल धार्मिक दृष्टि से कैथोलिक स्पेनियों को लूटना मारना अपना कर्तव्य भी समझते थे। स्पेनवाले इन आंग्ल समुद्री डाकुओं ( Sea-dogs ) से बहुत तंग आ गये और बदला लेने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

**आर्मेडा ( The Armada )**—ऐसी अवस्था में स्पेन का राजा फिलिप द्वितीय एक भारी जहाजी बेड़ा लेकर इँगलैण्ड पर आक्रमण करने की तरकीब सोचने लगा। स्पेनिश भाषा में भारी जहाजी बेड़े को आर्मेडा (Armada) कहते हैं। कैडिज के बन्दरगाह में इसके लिये तैयारी हो ही रही थी कि ड्रेक को इसकी खबर लग गई। उसने वहाँ पहुँच कर बहुत से स्पेनिश जहाजों में आग लगा दी और इस प्रकार आर्मेडा की तैयारी कुछ दिनों के लिये स्थगित हो गई। परन्तु स्पेनवाले बड़े साहसी थे। दूसरे साल फिर पूरी तैयारी करके आर्मेडा इँगलैण्ड पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुआ। उसमें १३० जहाज और १९०० योद्धा थे; और उनका अफसर मैडिवा सिडोनिया ( Medieva Sidonia ) था। फ़िलिप ने घोषणा की थी कि हमारे आक्रमण का उद्देश्य कैथोलिक मत की रक्षा करना है; और इसलिये उसे आशा थी कि आर्मेडा के इँगलैण्ड के तट पर पहुँचते ही आंग्ल कैथोलिक स्पेनियों से आ मिलेंगे। ऐसी विकट परिस्थिति में एलिजेबेथ ने बड़े धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लिया। उसने लॉर्ड हॉवर्ड ( Lord Howard ) नामक एक कैथोलिक अफसर को अँग्रेजी

बेड़े का कप्तान नियत किया, जिसमें आंग्ल जनता पर यह प्रभाव पड़े कि यह कैथोलिकों और प्रोटेस्टेण्टों का धार्मिक युद्ध नहीं है। अब इसका रूप आंग्लों और स्पेनियों के जातीय युद्ध का हो गया। समस्त आंग्लों ने धार्मिक विश्वास का विचार छोड़ कर अपनी रानी का साथ दिया।

**आर्मेडा की पराजय**---अँग्रेजी बेड़े में हॉवर्ड के अतिरिक्त इँगलैण्ड के विख्यात समुद्र-यात्री ड्रेक, हॉकिंस और रेले भी थे। जब आर्मेडा दिखाई पड़ा, तब आंग्ल कप्तान बैठे हुए खेल से दिल बहला रहे थे। स्पेनिश बेड़े को देखकर वे जरा भी न डरे। ड्रेक बोला---"जल्दी क्या है! अपना खेल समाप्त करके भी हम स्पेनियों को परास्त कर लेंगे।" आंग्लों ने आर्मेडा को आगे बढ़ जाने दिया और तब पीछे से उस पर आक्रमण किया। उस समय उत्तरी हवा चल रही थी; इस कारण स्पेनिश जहाज आंग्ल चैनेल (English Channel) में न ठहर सकें। अवसर पाकर आंग्लों ने दुशमन के कुछ जहाजों में आग लगा दी। अब सफलता की आशा छोड़ कर स्पेनवाले भाग चले। उन्हें स्कॉटलैण्ड का चक्कर लगा कर लौटना पड़ा। रास्ते में उनके बहुत से जहाज़ तबाह हो गये। बहुत ही थोड़े से जहाज स्पेन वापस पहुँच सके। वहाँ फ़िलिप ने यह कह कर अपने कप्तानों को ढारस दिलाया---"मैंने तुम्हें मनुष्यों से युद्ध करने के लिये भेजा था, समुद्री तूफ़ान से नहीं"। एलिज़ेबेथ का भी यही विचार था कि स्पेनियों की पराजय हवा का रुख उनके विरुद्ध हो जाने के कारण हुई; और इसी लिये उसने अपनी विजय के स्मारक चिह्न में यह लिखाया---"ईश्वर ने हवा चलाई और दुशमनों को भागना पड़ा।" परन्तु यदि

हवा विरुद्ध न भी होती, तो भी स्पेनियों का सफल मनोरथ होना कठिन ही थी। आर्मेडा की पराजय का मुख्य कारण यह था कि उसके जहाज बहुत बड़े थे और इसलिये वे शीघ्र चल नहीं सकते थे। इसके सिवा उनमें मल्लाह भी थोड़े थे। स्पेनिश कमान मैडिवा सिडोनिया को केवल स्थल-युद्ध का ही अनुभव था; और वह अपने जहाजों में अधिकांश ऐसे सिपाही ही भरकर लाया था जो केवल स्थल-युद्ध कर सकते थे। उन्हें वह इँगलैण्ड में उतार कर स्थल युद्ध में आंग्लों को परास्त करना चाहता था। ड्रेक ऐसे दक्ष समुद्र-यात्रियों के होते हुए स्पेनियों का इँगलैण्ड में उतरना बहुत कठिन था; और इसलिये फ़िलिप का इँगलैण्ड पर आक्रमण करने का प्रयत्न पूर्णतया विफल रहा।

**आर्मेडा की पराजय का परिणाम**—अब तक युरोप भर में स्पेन की ही समुद्री शक्ति सब से बढ़ी चढ़ी मानी जाती थी; परन्तु आर्मेडा की पराजय ने स्पेन का मान भंग कर दिया। अब स्पेनियों को एलिज़ेबेथ के विरुद्ध षड्यंत्र रचने का साहस न हो सकता था। कैथोलिक मत को भी इससे बड़ा धक्का पहुँचा और अब इँगलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट चर्च को किसी ओर से भी भय न रह गया। आर्मेडा पर विजय प्राप्त करने से आंग्लों की हिम्मत भी खूब बढ़ गई और अब उन्होंने बेधड़क होकर समुद्र द्वारा व्यापार करना आरम्भ किया। वर्तमान काल में ब्रिटेन की समुद्री शक्ति ही आंग्ल जाति के उत्थान का प्रधान कारण मानी जाती है। आर्मेडा पर विजय प्राप्त करने से ही इस समुद्री शक्ति की उन्नति का प्रारम्भ समझना चाहिए।

**आयरलैण्ड का ट्यूडर राजाओं के अधीन होना**—आंग्ल

राजा हेनरी द्वितीय को आयरलैण्ड के सरदारों ने आयरलैण्ड का स्वामी ( Lord of Ireland) मान लिया था। परन्तु आंग्लों का प्रभाव देश के केवल थोड़े से भाग में ही था, जो आंग्ल प्रान्त (English Pale) कहलाता था। प्रथम ट्यूडर राजा हेनरी सप्तम एडवर्ड पॉयनिंग्ज़ (Edward Poynings) को अपना प्रतिनिधि बना कर आयरलैण्ड भेजा। उसने वहाँ जाकर आइरिश पार्लिमेण्ट से दो कानून पास कराये। एक का यह आशय था कि आंग्ल पार्लिमेण्ट के समस्त नियम आयरलैण्ड में भी माने जायँगे। दूसरे का, जो बहुत दिनों तक "पॉयनिंग्ज़ राजनियम" (Poynings' Law) कहलाता रहा, यह आशय था कि बिना आंग्ल पार्लिमेण्ट की स्वीकृति के आइरिश पार्लिमेण्ट कोई राजनियम पास न कर सकेगी।

आयरलैण्ड निवासी पक्के कैथोलिक थे। इँगलैण्ड में धर्म-सुधार का प्रचर हो जाने के कारण वे आंग्लों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे। हेनरी अष्टम के समय में आयरलैण्ड के सरदारों ने विद्रोह ठान दिया; परन्तु वह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया और आइरिश पार्लिमेण्ट को हेनरी अष्टम को "आयरलैण्ड का राजा" स्वीकृत करना पड़ा।

अब आंग्लों ने आयरलैण्ड निवासियों की भूमि छीनना और वहाँ आंग्ल उपनिवेश (The English Plantations) स्थापित करना आरम्भ किया। रानी मेरी तक की, कैथोलिक होने पर भी, आइरिश जनता के प्रति बस नाम मात्र की ही सहानुभूति थी। उसने भी आयरलैण्ड में किंग और कीन काउन्टी (King's and Queen's Counties) नामक आंग्ल उपनिवेश स्थापित किये; और

वहाँ आंग्लों के लिये फ़िलिप टाउन और मेरी टाउन नामक दो नगर भी बसा दिये गये। इन आंग्ल उपनिवेशों से आयरलैण्ड निवासियों की बड़ी हानि होती थी। इस प्रकार उनकी बहुत सी भूमि उन से छीन ली जाती थी; इसलिये उनका असन्तोष बढ़ता गया। जब पोप ने आंग्ल रानी एलिज़ेबेथ को ईसाई मत से पतित घोषित कर रखा था, तब आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता ने अपने देश से आंग्लों का अधिकार हटाना अपना धार्मिक कर्तव्य समझा। एलिज़ेबेथ के शत्रुओं ने आयरलैण्डवालों को और भी भड़काया। इसका परिणाम यह हुआ कि ओनोल वंश के अर्ल ने, जो अब तक आंग्ल सम्बन्ध के पक्ष में था, विद्रोह खड़ा कर दिया।

एलिज़ेबेथ ने अर्ल आफ़ एसेक्स (Earl of Essex) को आयरलैण्ड में शान्ति स्थापित करने के लिये भेजा। एसेक्स को अपनी अयोग्यता के कारण अपने प्रयत्न में सफलता न हुई; और रानी की आज्ञा के बिना ही वह आयरलैण्ड को उसी दशा में छोड़ कर इँगलैण्ड लौट आया। उसे आशा थी कि रानी के कृपापात्र होने के कारण मुझे कुछ दण्ड न मिलेगा; और इसलिये वह रास्ते के गन्दे वस्त्र पहने ही रानी से मिलने पहुँच गया। एलिज़ेबेथ को उसकी इस धृष्टता पर बड़ा क्रोध आया और वह दरबार से निकाल दिया गया। एसेक्स ने विद्रोह करने की चेष्टा की, पर वह कैद कर लिया गया और उसे प्राण-दण्ड दिया गया।

अब एलिज़ेबेथ ने लार्ड माउंटज्वाय (Lord Mountjoy) को आयरलैण्ड भेजा। उसने आइरिश विद्रोह शान्त किया; परन्तु ऐसा करने में उसे देशवासियों के साथ बहुत कठोरता का

व्यवहार करना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि आयरलैंड एलिजेबेथ के अधीन तो अवश्य हो गया, परन्तु आंग्लों के प्रति आइरिश जनता की घृणा और भी बढ़ गई। आगे चल कर हम बतलावेंगे कि आयरलैंड में बहुत दिनों तक बराबर अशान्ति और असन्तोष बना रहा।

**एलिज़ेबेथ के राज्यकाल का गौरव**—एलिज़ेबेथ की गणना इँगलैण्ड के प्रसिद्ध शासकों में है। अपने ४६ वर्ष के शासन में एलिज़ेबेथ को बड़ी बड़ी आपत्तियों का सामना करना पड़ा; परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता और धैर्य के कारण उसको सब कार्य्यों में सफलता हुई। एलिज़ेबेथ के विरुद्ध जितने षड़यन्त्र रचे गये, वे विफल रहे; और धीरे धीरे देश में सुख और शान्ति की स्थापना हुई। आंग्ल चर्च का उचित प्रबन्ध किया गया, जो अब तक बराबर चला आता है। स्कॉटलैण्ड से प्रीति का व्यवहार प्रारम्भ हुआ और आयरलैण्ड पूर्णतया आंग्लों के अधीन हो गया। रानी की परराष्ट्र नीति भी सफल रही; और फ्रान्स तथा स्पेन जैसे बैरियों के रहते हुए भी इँगलैण्ड तीस वर्ष तक विदेशी युद्ध से बचा रहा। अन्त में जब स्पेनवालों ने आक्रमण किया भी, तब आर्मेडा की पराजय से इँगलैण्ड की प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ गई।

एलिज़ेबेथ के समय में देश के धन, व्यापार, साहित्य आदि की भी बड़ी उन्नति हुई; और इस कारण एलिज़ेबेथ का राज्य काल आंग्ल इतिहास में बड़े गौरव का माना जाता है। इस काल की विशेषताओं का उल्लेख अगले परिच्छेद में किया जायगा।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १५७८—ड्रेक का प्रशान्त महासागर पार करना।
„ १५८४—वर्जीनिया उपनिवेश की स्थापना।
„ १५८८—आर्मेडा का पराजय।
„ १४९४—"पॉयनिंग्ज राज-नियम" (Poynings' Law)
„ १५४१—हेनरी अष्टम आयरलैण्ड का राजा।
„ १५९९—एसेक्स का आयरलैण्ड जाना।
„ १६०३—मोउंटज्वाय का आयरलैण्ड को जीतना।
„ १६०३—रानी एलिज़ेबेथ की मृत्यु।

---

## ग्यारहवाँ परिच्छेद



## ट्यूडर काल में इँगलैण्ड की दशा

### ( १ ) ट्यूडर निरंकुश शासन

### ( Tudor Despotism )

**ट्यूडर राजाओं का पार्लिमेण्ट को वश में करना**—हम कह आये हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी तक आते आते पार्लिमेण्ट ने यथेष्ट शक्ति प्राप्त कर ली थी। सोलहवीं शताब्दी पार्लिमेण्ट के शक्ति-हीन होने का काल है। ट्यूडर राजा बराबर स्वेच्छाचारी बनने का प्रयत्न करते रहे; और उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से पार्लिमेण्ट को अपनी मुट्ठी में किया। लार्ड सभा ( House of Lords ) के सदस्यों में मठों के अध्यक्षों की यथेष्ट संख्या होती थी; इसलिये मठों के टूट जाने पर बहुत सी जगहें खाली हो गईं। ट्यूडर राजाओं ने इन जगहों पर नये जमींदारों को, जो मठों की भूमि मोल लेने से मालदार हो गये थे, भर दिया। ये नये सदस्य सदा राजा के पक्ष में रहते थे; और इस प्रकार लार्ड सभा में राजा के समर्थकों की यथेष्ट संख्या हो गई।

लोक सभा ( House of Commons ) भी इसी तरह वश में की गई। छोटे छोटे ग्रामों को भी लोक सभा के लिये प्रति-निधि भेजने का अधिकार दे दिया गया। ऐसे छोटे स्थानों के

प्रतिनिधि प्रायः अनपढ़ होते थे; और सब अवसरों पर वे राजा के ही पक्ष में अपना मत देते थे। सभा के प्रधान ( Speaker ) को भी राजा ही नियुक्त करता था; और उन दिनों इस प्रधान को वर्तमान काल के प्रधानों से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त थे। वह जिस प्रस्ताव को चाहता, उसे रोक सकता था; और सभा के कार्यों की सारी बागडोर उसी के हाथ में होती थी। सोलहवीं शताब्दी की पार्लिमेएट के वाद विवाद के विवरणों से पता चलता है कि उस काल में लोक सभा के प्रधान के द्वारा ट्यूडर राजाओं को बहुत अधिक सहायता मिलती थी।

पार्लिमेएट का सब से बड़ा काम नये राजकरों के लिये स्वीकृति देना था। ट्यूडर राजाओं ने चर्चों आदि की सम्पत्ति लेकर राजकोष में इतना अधिक धन इकट्ठा कर लिया था कि उन्हें नये राजकर लगाने की बहुत ही कम आवश्यकता पड़ती थी। इसलिये पार्लिमेएट का अधिवेशन भी जल्दी जल्दी करने की कोई आवश्यकता न होती थी। ट्यूडर काल में पार्लिमेएट के अधिवेशन बहुत कम होते थे; और इस कारण उसके सदस्यों को आपस में मिलने तथा अपनी शक्ति बढ़ाने का बहुत कम अवसर मिलता था।

**ट्यूडर निरंकुश शासन**—पार्लिमेएट के प्रति ट्यूडर राजाओं का व्यवहार बड़ी बुद्धिमानी का होता था। राज्य की सारी बागडोर वे स्वयं अपने हाथ में रखते थे; परन्तु साथ ही यह कभी प्रतीत न होने देते थे कि पार्लिमेएट के अधिकारों में कोई हस्तक्षेप किया जा रहा है। पार्लिमेएट की दोनों सभाओं में उनके समर्थकों की यथेष्ट संख्या थी ही; इस कारण वे जो चाहते थे, पार्लिमेण्ट

के द्वारा वहीं करा सकते थे। ट्यूडर काल के सब राजनियम पार्लिमेण्ट ने ही पास किये थे। परन्तु जब कभी आवश्यकता होती थी, तब ट्यूडर राजा राजकीय घोषणा (Royal Proclamation) द्वारा किसी विषय के निर्णय करने के अधिकार का उपयोग कर लेते थे। सब राजकर पार्लिमेण्ट की ही स्वीकृति से लगाये जाते थे; परन्तु ट्यूडर राजाओं ने ऋण ( Loan ) और दान ( Benevolence ) के रूप में राजकोष के लिये धन लेने का अच्छा ढंग निकाल रखा था। न्याय यद्यपि देश के कानून के अनुसार ही होता था, परन्तु फिर भी विशेष प्रकार के अपराधियों को दण्ड देने के लिये 'नक्षत्र भवन' ( Star Chamber )और 'धार्मिक न्यायालय' (High Commission Court) स्थापित कर दिये गये थे।

**ट्यूडर राजाओं के स्वेच्छाचारी होने में सुविधाएँ**—ट्यूडर काल में जनता बहुत सन्तुष्ट थी और ट्यूडर राजा स्वेच्छाचारी होने पर भी सर्वप्रिय थे। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्होंने देश में सुख और शान्ति की स्थापना की थी। देशवासी अभी गुलाबों के युद्ध की दुर्घटनाओं को न भूले थे; और इसलिये ऐसे राजवंश के प्रति, जिसके द्वारा एक घोर अनर्थ के काल के पश्चात् शान्ति स्थापित हुई, जनता की हार्दिक सहानुभूति होना स्वाभाविक ही था। उस समय देश में योग्य स्वेच्छाचारी राजाओं की आवश्यकता भी थी। बिना प्रबल शासन के पन्द्रहवीं शताब्दी की बिगड़ी हुई सामाजिक दशा में सुधार होना सर्वथा असम्भव था।

मध्य काल में राजशक्ति कम करने का कार्य बड़े जमींदारों के ही द्वारा हुआ था; परन्तु गुलाबों के युद्ध में बहुत से जमींदार

वंश बरबाद हो गये थे; और इस कारण राजाओं की शक्ति को रोकने का अब कोई उपाय न रह गया था। नये जमींदार वंश, जो मठों की भूमि प्राप्त कर के धनिक हुए थे, प्रायः राजा के ही बनाये और बढ़ाये हुए थे; और इसलिये वे अधिकतर राजशक्ति के ही समर्थक होते थे।

राजा की शक्ति पर जमींदारों के अतिरिक्त चर्च का भी कुछ दबाव रहता था। परन्तु धर्म-सुधार की लहर फैलने के कारण चर्च की स्थिति में भारी परिवर्तन हो गया। आंग्ल राजा स्वयं इँगलैण्ड के चर्च का प्रधानाध्यक्ष हो गया और अब वही चर्च के पदाधिकारियों की नियुक्ति भी करने लगा। इस प्रकार राजा पर चर्च का भी कुछ दबाव न रह गया।

आगे चल कर हम बतलावेंगे कि सत्रहवीं शताब्दी में पार्लिमेण्ट के अधिकार बढ़ाने के सम्बन्ध में मध्य श्रेणी की जनता के द्वारा ही विशेष उद्योग और आन्दोलन हुआ; परन्तु ट्यूडर काल में इस श्रेणी की उन्नति का प्रारम्भ मात्र ही था। सोलहवीं शताब्दी की व्यापारिक उन्नति के द्वारा इस श्रेणी का उत्थान हुआ; परन्तु उसकी शक्ति की वास्तविक वृद्धि सत्रहवीं शताब्दी में ही जाकर हुई।

**ट्यूडर निरंकुश शासन का प्रभाव**—ट्यूडर राज्य में शान्ति होने के कारण देश को उन्नति करने का अच्छा अवसर मिला। मेरियट (Marriot) महोदय लिखते हैं—"देश की बिगड़ी हुई सामाजिक तथा आर्थिक दशा के सुधार का ट्यूडर निरंकुश शासन ही एक मात्र साधन था"। पार्लिमेण्ट की स्थिति पर भी इसका अच्छा ही प्रभाव पड़ा। ट्यूडर राजाओं जैसे योग्य शासकों के

राज्यकाल में पार्लिमेण्ट को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। सोलहवीं शताब्दी भर तो पार्लिमेण्ट अवश्य शक्तिहीन रही; परन्तु धीरे धीरे उसकी वास्तविक शक्ति की वृद्धि के साधन प्रस्तुत होते जा रहे थे। इसके लक्षण रानी एलिज़ेबेथ के राज्य-काल के अन्तिम वर्षों में दिखाई पड़ने लगे थे। रानी अपने कृपापात्रों को पुरस्कार के रूप में किसी वस्तु के व्यापार का एकाधिकार (Monopoly) दे दिया करती थीं। पार्लिमेण्ट ने इस प्रथा का विरोध किया और रानी को सब एकाधिकार हटाने पड़े। परवर्त्ती राजवंश के शासन काल में तो पार्लिमेण्ट की शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी; और सत्रहवीं शताब्दी में स्टुअर्ट राजाओं से लड़ झगड़ कर पार्लिमेण्ट ने बहुत से अधिकार प्राप्त किये।

## (२) व्यापारिक तथा साहित्यिक उन्नति

**समुद्र-यात्राएँ और व्यापार**—ट्यूडर काल में बहुत से नये नये देशों का ज्ञान प्राप्त हुआ। कोलम्बस (Columbus) ने अमेरिका और वास्कोडीगामा (Vasco de Gama) ने केप आफ गुड़ होप होकर भारतवर्ष के समुद्री मार्ग का पता लगाया। लैब्रेडर का पता लगानेवाले जॉन कैबट (John Cabot), शुभ्र सागर तक पहुँचने-वाले रिचर्ड चान्सलर (Richard Chancellor), अफ्रिका से दास-व्यापार स्थापित करनेवाले हॉकिन्स (Hawkins), अमेरिका में प्रथम आंग्ल उपनिवेश स्थापित करनेवाले वाल्टर रेले (Walter Raleigh) और भूमण्डल की पहले पहल परिक्रमा करनेवाले ड्रेक (Drake) का उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं (देखो पृ० ९१)। इन बड़ी बड़ी समुद्रयात्राओं से, विशेष कर आर्मेडा की

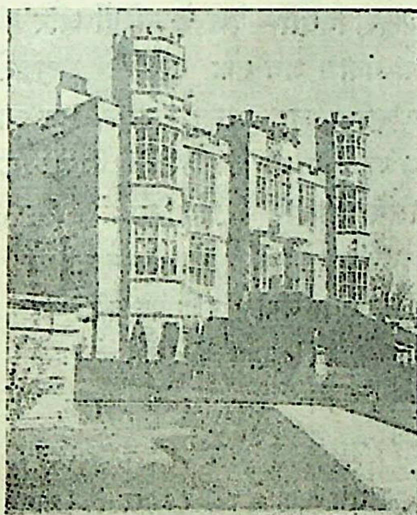
पराजय के पश्चात्, इँगलैण्ड के व्यापार में बहुत अधिक उन्नति हुई। अब आंग्ल लोग विदेश जाकर व्यापार करने लगे; और बहुत सी कम्पनियों की स्थापना हुई। सब से मुख्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Company) थी, जिसने भारतवर्ष में आंग्ल राज्य की स्थापना की। अब तक युरोप में एण्टवर्प (Antwerp) व्यापार का बड़ा केन्द्र माना जाता था; परन्तु नीदरलैण्ड में स्पेनियों का अत्याचार होने के कारण इस नगर को बहुत हानि



एलिजेबेथ के समय का नागरिकों का पहनावा

पहुँची। एन्टवर्प के नष्ट होने से लन्दन (London) की उन्नति का मार्ग खुला और धीरे धीरे यह नगर केवल युरोप के ही नहीं, वरन् समस्त भूमण्डल के व्यापार का केन्द्र हो गया। एलिजबेथ के समय में लन्दन में रॉयल एक्सचेंज (Royal Exchange) की स्थापना हुई, जिस में बड़े बड़े व्यापारी मिल कर आपस के हिसाब किताब चुकाते थे।

भोग विलास की वृद्धि—व्यापार की उन्नति के द्वारा देश धनी भी हो गया और पहले की अपेक्षा उसकी जन-संख्या भी अधिक बढ़ गई। धन के बढ़ने से अब लोगों की रहन-सहन में भी उन्नति होने लगी। एलिज़बेथ के राज्यकाल में बहुत सी बढ़िया-बढ़िया इमारतें तैयार हुईं, जिनसे देश की रौनक़ खूब बढ़ गई।



एलिज़ेबेथ के समय की वास्तु-विद्या

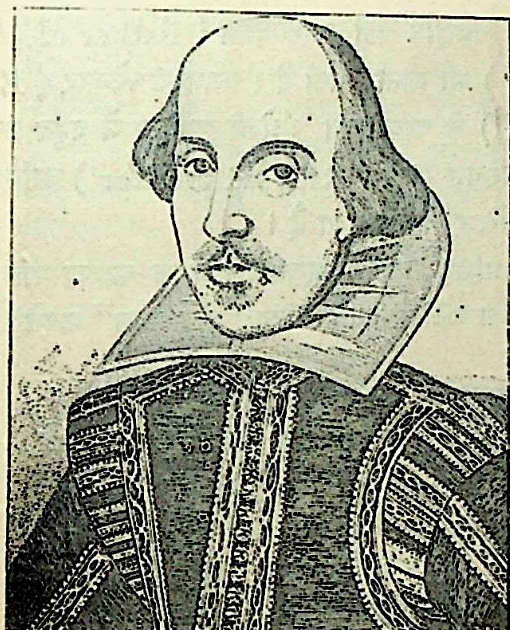
साधारण मनुष्यों के मकानों में भी उन्नति दिखाई देने लगी। पहले केवल अमीरों के यहाँ खिड़कियों में शीशे लगाये जाते थे; परन्तु अब शीशेदार खिड़कियाँ लगाना एक साधारण बात हो गई। पहले पाल बिछा कर और लकड़ी के टुकड़े का तकिया लगा कर ही लोग रात काट देते थे; परन्तु अब कम्बल, दरियाँ

और मुलायम तकिये घर घर दिखाई देने लगे। बाज़ारों में बाग़ लगाये गये, जिनमें ख़ूब भड़कीले वस्त्र पहन कर लोग टहलने जाते थे। देश में नये नये खेल तमाशे होने लगे और जानवरों की लड़ाइयाँ देखने के लिये सहस्रों मनुष्य पहुँचने लगे। बग्घियाँ भी काम में आने लगीं, परन्तु वे भारी होती थीं; और फिर सड़कों में अभी बहुत कम उन्नति हुई थी।

**दरिद्र-संरक्षण नियम**—देश के दरिद्रों और कंगालों के लिये भी प्रबन्ध किया गया। अब तक मठों के सदाव्रतों से ही ऐसे लोगों का काम चलता था; परन्तु मठों के टूट जाने पर उनका कोई अवलम्ब न रह गया था। एलिज़ेबेथ के राज्यकाल में दरिद्रों की रक्षा के लिये "दरिद्र-संरक्षणनियम" (Poor Laws) बनाये गये। इन नियमों के अनुसार सड़कों पर भीख माँगते फिरना अपराध ठहराया गया। जिनकी जीविका का कोई सहारा न था, उनके लिये दरिद्रालय (Poor House or Workhouse) स्थापित किये गये। उनमें अपाहिजों को मुफ्त खाना कपड़ा मिलता था। परन्तु जो लोग काम करने योग्य होते थे, उनसे भरपूर काम लेकर तब उन्हें पेट भर अन्न दिया जाता था। इसका अभिप्राय यह था कि जिन्हें कहीं ठिकाना न हो, केवल वही दरिद्रालयों की शरण लें। प्रत्येक महल्ले में राज्य की ओर से निरीक्षक नियत थे जो लोगों से थोड़ा सा कर (Poor Rate) वसूल करके उससे दरिद्रालयों का ख़र्च चलाते थे। उन्नीसवीं शताब्दी तक इँगलैण्ड के कंगालों की इन्हीं नियमों द्वारा रक्षा होती रही।

**एलिज़ेबेथ काल का साहित्य**—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त

में विद्या का जो पुनरुद्धार (Renlassance) हुआ था, उस विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। एलिज़ेबेथ के राज्यकाल तक पहुँचते पहुँचते हम विद्या में बहुत कुछ उन्नति पाते हैं। देश में सुख और शान्ति होने के कारण विद्या और साहित्य की भी



शेक्सपियर

खूब उन्नति हुई। बड़ी बड़ी समुद्रयात्राओं और विदेशी व्यापारों के कारण लोग अन्य देशों को तथा स्वयं अपने देश का इतिहास भी अध्ययन करने लगे। वाल्टर रेले ने तुर्कों का इतिहास और समस्त भूमण्डल का एक संक्षिप्त इतिहास लिखा।

एलिजेबेथ का राज्यकाल साहित्य के लिये महत्व का माना जाता है। इँगलैण्ड का सब से प्रसिद्ध कवि और नाटककार शेक्सपियर ( Shakespeare ) इसी काल में हुआ था। इस के अतिरिक्त इस काल में और भी कई प्रसिद्ध लेखक तथा विद्वान हुए। फ्रान्सिस बेकन बड़ा प्रसिद्ध निबन्ध-लेखक था और वह आधुनिक विज्ञान का जन्मदाता ( Father of Modern Science ) भी माना जाता है। एडमण्ड स्पेन्सर ( Edmund Spenser ) के काव्यों का अँग्रेजी साहित्य में बहुत उच्च स्थान है; और रिचर्ड हुकर ( Richard Hooker ) धार्मिक विषयों का बड़ा प्रसिद्ध लेखक हुआ है।

इन्हीं प्रसिद्ध कवियों तथा लेखकों के कारण एलिजेबेथ के राज्यकाल को अँग्रेजी साहित्य का "स्वर्ण काल" कहते हैं।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६०१—दरिद्र-संरक्षण-नियम ।( Poor Laws )
,, १६०१—एकाधिकारों का अन्त ।
,, १५६६—रॉयल एक्सचेंज ( Royal Exchange ) की स्थापना।
,, १५८७—शेक्सपियर का लन्दन में आगमन ।
,, १५९०—स्पेन्सर की "Fairie Queen" का प्रकाशन।
,, १५९४—हुकर की "Ecclesiastical Polity" का प्रकाशन ।
,, १५९७—बेकन के "Essays" का प्रकाशन ।

# Model Questions.

## ( Tudor Period )

1. Briefly narrate how the Tudor rule began in England. What claims had Henry VII to the English throne.

2. Indicate the difficulties with which Henry VII was confronted, the measures he took to overcome them and the extent to which he was successful.

(Hint—Pay special attention to Henry VII's measures to control the barons and to gather money.)

3. What was the object of Henry VII's dynastic marriages ? Point out the importance of the marriages of (i) Arthur and Catherine & (ii) Margaret and James IV.

4. Why is the year 1485 regarded as the commencing point of Modern England ?

( Hint—Point out the new features which were introduced into England about this time.)

5. Explain the term "Reformation" and point out the causes which led to it.

( Hint—Pay special attention to the evils of Church and the effect of the Renlassance.)

6. " Henry VIII's breach with the Papacy was caused by purely personal motives, but it led to results of vast national importance". Elucidate.

( Hint—Explain how a purely personal quarrel began between Henry VIII and the Pope over the question of Catherine's divorce and how it led to the separation of the English Church from the Papacy. )

7. Give a brief sketch of the career of Cardinal Wolsey, and estimate the effect of his foriegn policy.

( Hint–Pay special attention to his influence over Henry VIII, his foriegn policy and its effect, and his fall brought about by his failure to secure Catherine's divorce. )

8. Write a short account of the reign of EdwardVI.

9. What were the aims of Queen Mary Tudor ? Show that with such aims the struggles of her reign were inevitable.

( Hint—She tried to force Catholicism upon England against the wishes of the people. )

10. Give an estimate of the home and foriegn policy of Elibazeth, dwelling mainly on ( i ) her relations with Parliament, ( ii ) her

dealings with the Puritans and the Catholics & (iii) her attitude towards Spain and the Papacy.

11. Give a brief sketch of the career of Mary Queen of Scotts.

12. Give an account of Armada's invasion of England. Point out the effect of its destruction upon the position of England.

(Hint–England's career as a maritime nation begins from her victory over the Armada.)

13. Why is Elizabeth's reign regarded as the golden period of English History ?

( Hint–Give an account of the commercial, literary and social activities of her reign.)

14. Explain the term "Despotism". What factors enabled the Tudors to rule successfully as despots ?

15. Give an account of the important voyages of discovery during the Tudor Period. How did they affect the commerce of England ?

16. Give an account of England's relations with Spain during the Tudor Period.

( Hint—Good relations during the reign of Henry VII, as a consequence of Prince Arthur's marriage with Catherine—relations ruffled during the reign of Henry VII, as a consequence of Catherine's divorce—good relations again, as a consequence of Queen Mary's mar

riage with Philip II of Spain—relations again ruffled during Elizabeth's reign—Spain's plan for the invasion of England and its failure; the Armada ).

18. Trace the various steps by which the Church of England was separated from the Church of Rome.

19. What various turns did the "Reformation" take during the Tudor Period.

( *Hint*—(i) *Henry VIII's reign*—Separation of the English Church from the Church of Rome but no change in the religious doctrines.

(ii) *Edward VI's reign*—A premature attempt to reform the religious doctrines also.

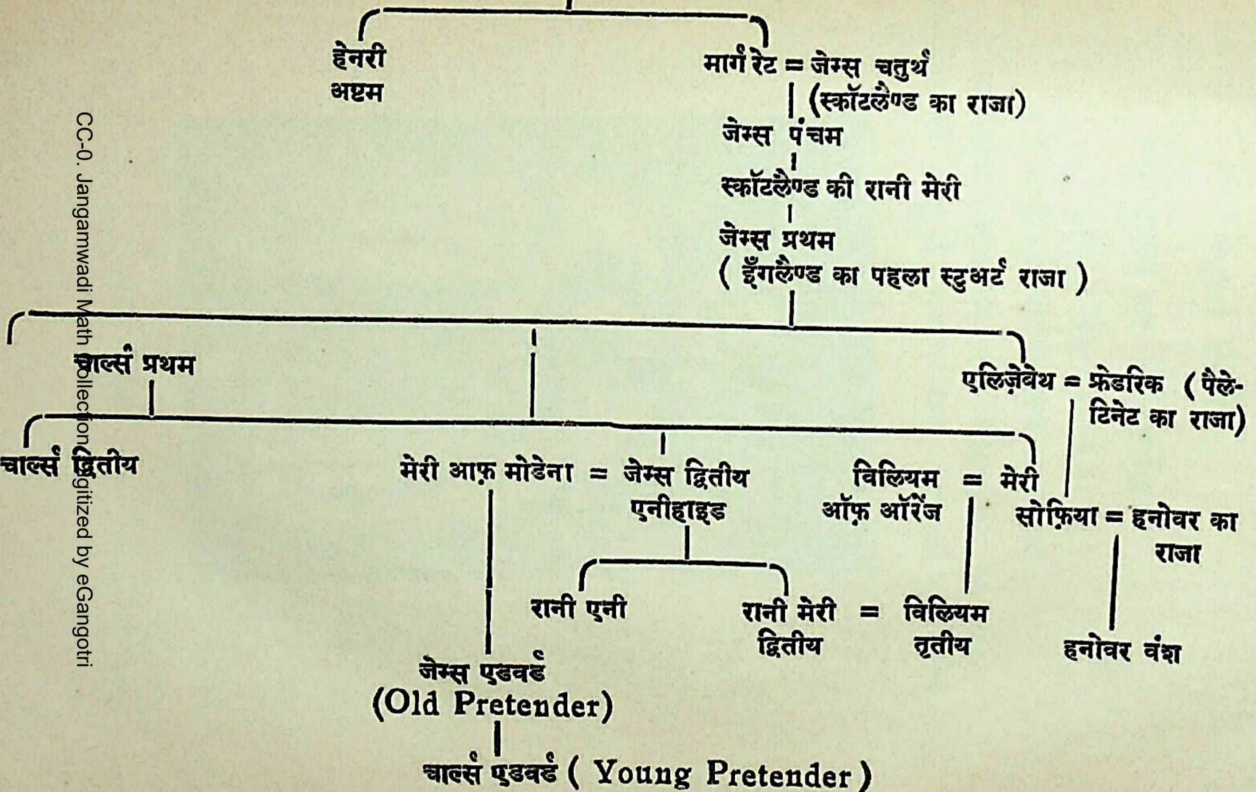
(iii) *Queen Mary's reign*—Reaction, at first to Henry VII's system and then to Roman Catholicism in its complete form.

(iY) *Queen Elizabeth's reign*—Settlement of the English Church on a national basis—beginning of the present Church of England.

20. Write short notes on the followings:—Star Chamber Court, Cardinal Morton's Fork, Anne Boylen, Martin Luther, dissolution of the monasteries, Protector Somerset, Cardi nal Pole, Cranmer, Raleigh, Hawkins, Drake, John Knox, Elizabethan Literature, Sir Thomas More, High Commission Court, Monopolies, Poor Laws.

# तीसरा खण्ड

## स्टुअर्ट शासन-काल


हेनरी सप्तम
हेनरी अष्टम
मार्गरेट = जेम्स चतुर्थ (स्कॉटलैण्ड का राजा)
जेम्स पंचम
स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी
जेम्स प्रथम
( इँगलैण्ड का पहला स्टुअर्ट राजा )
चार्ल्स प्रथम
एलिज़ेबेथ = फ्रेडरिक (पैले-टिनेट का राजा)
चार्ल्स द्वितीय
मेरी आफ़ मोडेना = जेम्स द्वितीय
एनीहाइड
विलियम ऑफ़ ऑरेंज = मेरी
सोफ़िया = हनोवर का राजा
रानी एनी
रानी मेरी द्वितीय = विलियम तृतीय
हनोवर वंश
जेम्स एडवर्ड
(Old Pretender)
चार्ल्स एडवर्ड ( Young Pretender )



## पहला परिच्छेद

## जेम्स प्रथम तथा दैवी अधिकार

( सन् १६०३—१६२५ )

### ( १ ) स्टुअर्ट वंश के राज्य का प्रारम्भ

**जेम्स प्रथम, ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड का राजा—** एलिजेबेथ की मृत्यु के पश्चात् हेनरी अष्टम की बड़ी बहिन



जेम्स प्रथम

मार्गरेट का पड़पोता स्कॉटलैण्ड का स्टुअर्ट राजा जेम्स षष्ठ इँगलैण्ड के सिंहासन पर बैठा। वह इँगलैण्ड का प्रथम स्टुअर्ट राजा था और आंग्ल इतिहास में "जेम्स प्रथम" के नाम से प्रसिद्ध है। अब इँगलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के राजसिंहासन सम्मिलित हो गये; दोनों देशों के झण्डे भी मिला दिये गये; और इस सम्मलित झण्डे का नाम "यूनियन जैक" ( Union Jack ) पड़ा। परन्तु दोनों देशों के चर्च, पार्लिमेण्ट और कानून अभी तक अलग ही रहे। एलिजेबेथ के समय में आयरलैण्ड आंग्लों के अधीन हो ही चुका था; इसलिये जेम्स आयरलैण्ड का भी राजा हुआ। आइरिश जनता आंग्लों के अधीन रहने की सदा विरोधी रही और अल्स्टर ( Ulster ) प्रान्त के कुछ सरदारों ने विद्रोह भी किया। जेम्स ने विद्रोहियों की जायदादें छीन लीं और उनके स्थान पर अल्स्टर में आंग्लों और स्कॉट लोगों को बसा दिया।

## ( २ ) तीस वर्षीय युद्ध ( १६१८—१६४८ )

**तीस वर्षीय युद्ध का प्रारम्भ**—सत्रहवीं शताब्दी में जर्मनी और मध्य युरोप में लगभग तीन सौ छोटी छोटी रियासतें थीं। ये सब मिलकर "पवित्र रोमन साम्राज्य" ( Holy Roman Empire ) के नाम से प्रसिद्ध थीं; और इस साम्राज्य का अधिष्ठाता प्रायः आस्ट्रिया का राजा हुआ करता था, जो सम्राट् कहलाता था। सम्राट् फर्डिनेण्ड ( Emperor Ferdinand ) के समय, उसके प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बियों को सताने के कारण, सब प्रोटेस्टेण्ट रियासतें उसके विरुद्ध हो गईं। बोहीमिया (Bohemia) वालों ने एक दूसरा राजा भी चुन लिया। परन्तु वे इँगलैण्ड की

सहायता चाहते थे; इसलिये उन्होंने पैलेटिनेट ( Palatinate ) के राजा फ्रेडरिक को, जो जेम्स का दामाद था, बोहीमिया के राजसिंहासन पर बैठाया। अन्य प्रोटेस्टेण्ट राज्यों ने बोहीमिया का साथ दिया और यह देख कर सब कैथोलिक राज्य आस्ट्रिया की सहायता करने लगे। इस प्रकार मध्य युरोप के कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट राज्यों में एक भयंकर युद्ध छिड़ गया, जो निरन्तर तीस वर्षों तक चलता रहा।

बोहीमिया के नये राजा फ्रेडरिक को आस्ट्रिया की सेना ने बुरी तरह परास्त किया। उसी समय एक स्पेनिश सेना ने नीदरलैण्ड से आकर पैलेटिनेट पर अपना अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार बेचारा फ्रेडरिक अब कहीं का न रहा।

**जेम्स प्रथम की परराष्ट्र नीति**—इँगलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट जनता में फ्रेडरिक को सहायता देने के लिये बहुत जोश फैला और आंग्ल पार्लिमेण्ट ने उस के पक्ष में बहुत से प्रस्ताव पास किये। परन्तु जेम्स ने अपने दामाद के लिये कुछ भी न किया। वह इस युद्ध में किसी दल का पक्ष लेना पसन्द न करता था। उस का उद्देश्य यह था कि कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट दोनों मतों के राज्यों से मित्रता कर के युरोप में शान्ति स्थापित की जाय। इसी लिये उसने अपनी पुत्री का विवाह प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बी फ्रेडरिक से किया था; और अपने उक्त उद्देश्य को पूर्णतया सफल करने के लिये उसने अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की कैथोलिक मतावलम्बी राजकन्या इन्फैण्टा ( Infanta ) से करना चाहा। उसे आशा थी कि स्पेन से मित्रता हो जाने पर सम्भव है कि फ्रेडरिक का भी उद्धार हो जाय और स्पेन का राजा उसे

पैलेटिनेट लौटा दे। आंग्ल जनता ने स्पेनिश विवाह के प्रस्ताव का बहुत विरोध किया; परन्तु ज़ेम्स ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया।

**स्पेनिश विवाह**—स्पेनवाले इन्फैण्टा का विवाह एक प्रोटेस्टेन्ट आंग्ल राजकुमार से नहीं करना चाहते थे। उन्होंने टाल मटोल की; और इसलिये जेम्स ने यही अच्छा समझा कि विवाह के लिये चार्ल्स को स्वयं स्पेन भेज दिया जाय। राजमन्त्री बकिंग्घम ( Buckingham ) और राजकुमार चार्ल्स रास्ते में भेस बदल कर स्पेन की राजधानी मैड्रिड में जा पहुँचे। विवाह के लिये जो शर्तें लगाई गईं, उन सब को भी चार्ल्स ने स्वीकृत कर लिया। परन्तु वास्तव में स्पेन के राजा की विवाह करने की बिलकुल इच्छा न थी। अंत में उसने साफ जवाब दे दिया और चार्ल्स तथा बकिंग्घम को निराश होकर इँगलैण्ड लौटना पड़ा। कुछ ही दिनों बाद इन्फैण्टा का विवाह जर्मनी के एक कैथोलिक राजकुमार से हो गया। जब जेम्स को यह समाचार मिला, तब उसने अपनी शान्तिप्रिय नीति छोड़कर फ्रेडरिक की सहायता के लिये सेना भेजी; परन्तु उस सेना के किये कुछ भी न हुआ; और इसी बीच में जेम्स की मृत्यु भी हो गई।

**चार्ल्स प्रथम का युद्ध में सम्मिलित होना**—अब चार्ल्स इँगलैण्ड के सिंहासन पर बैठा। वह अपने पिता की परराष्ट्र नीति की विफलता देख ही चुका था। वह जर्मनी की प्रोटेस्टेण्ट रियासतों का पक्ष लेकर युद्ध में सम्मिलित हुआ; और उन की सहायता के लिये इँगलैण्डसे कुछ धन भी भेजा गया। स्पेनियों का फ्रेडरिक को पैलेटिनेट लौटाने के लिये बाध्य करने के उद्देश्य

से स्पेनिश बन्दरगाह कैडिज़ ( Cadiz ) पर आक्रमण करना निश्चित हुआ; और इसके लिये बकिंग्घम को एक आंग्ल सेना देकर भेजा गया। परन्तु इस प्रयत्न में सफलता नहीं हुई। अन्त में चार्ल्स समझ गया कि फ्रेडरिक का उद्धार करना बहुत कठिन है; और इसलिये वह इस युरोपीय युद्ध से बिलकुल अलग हो बैठा।

**युद्ध का अन्त**—कुछ दिनों बाद स्वीडन का राजा प्रोटेस्टेण्ट राज्यों का सहायक बनकर खड़ा हुआ। थोड़ी सी ही विजय प्राप्त करने के पश्चात् वह युद्ध में काम आया। फ्रान्स ने भी आस्ट्रिया की शक्ति कम करने के आशय से प्रोटेस्टेण्ट राज्यों का साथ दिया। अन्त में इस तीस वर्षीय युद्ध का परिणाम यह हुआ कि जर्मनी का बहुत सा भाग स्वीडन और फ्रान्स को मिल गया; और "पवित्र रोमन साम्राज्य" में अब पहले से भी अधिक फूट के चिह्न दिखाई देने लगे।

**आंग्ल नीति की विफलता के कारण**—इँगलैण्ड की नीति इस युद्ध में बिलकुल विफल रही। न तो फ्रेडरिक का ही उद्धार हो सका और न इँगलैण्ड को और ही कोई लाभ हुआ। इसका मुख्य कारण यही था कि जेम्स और चार्ल्स दोनों बेढंगी तरह से युद्ध में सम्मिलित हुए थे। जेम्स ने बहुत सा समय स्पेन की मित्रता सम्पादित करने में नष्ट किया; परन्तु उसमें उसे सफलता न हुई। इससे जेम्स के प्रति आंग्ल प्रोटेस्टेण्टों की भी सहानुभूति कम हो गई। चार्ल्स की युरोप भेजी हुई सेनाओं ने कुछ भी करके न दिखलाया; और कैडिज़ का आक्रमण तो सर्वथ विफल ही रहा। पार्लिमेण्ट इन दोनों स्टुअर्ट राजाओं तथा इनके

मंत्रियों पर विश्वास नहीं करती थी; और इसलिये इँगलैण्ड में फ्रेडरिक के पक्ष में बहुत जोश होने पर भी पार्लियामेंट कभी युद्ध के लिये यथेष्ट धन की स्वीकृति न देती थी।

## ( ३ ) धार्मिक सम्प्रदाय

**धार्मिक दल**—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैण्ड में तीन मुख्य धार्मिक दल थे। एक तो रोमन कैथोलिक दल ( Roman ChurchParty) था, जो अब तक रोम के पोप को ही अपना धर्मगुरु मानता था। दूसरा आंग्ल चर्च दल (English Church Party) था, जो धर्मसुधार का पक्षपाती था और स्थापित आंग्ल चर्च का अनुयायी था। तीसरा दल प्योरिटन ( Puritans) लोगों का था, जो आंग्ल चर्च के संशोधन को यथेष्ट नहीं समझता था और जो धर्म सुधार की लहर को और आगे बढ़ा ले जाना चाहता था। ये तीनों ही दल जेम्स से सहायता प्राप्त करने की आशा करते थे। कैथोलिकों को इसलिये आशा थी कि जेम्स की माता स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी पक्की कैथोलिक थी। आंग्ल चर्च दल को इसलिये आशा थी कि जेम्स इँगलैण्ड का राजा होने के कारण आंग्ल चर्च का अधिष्ठाता होगा; और इससे उसके प्रति उसकी सहानुभूति अवश्य हो जायगी। और प्योरिटन दल को इसलिये आशा थी कि जेम्स स्कॉटलैण्ड से आया था, जहाँ के चर्च का संशोधन बहुत कुछ प्योरिटन सिद्धान्तों के अनुसार हुआ था।

**"पादरी नहीं तो राजा भी नहीं" (No Bishop, No King)** इन तीनों दलों में जेम्स की सहानुभूति आंग्ल चर्च दल के प्रति

हुई। कैथोलिक मतावलम्बी अपनी भ्रमपूर्ण प्रथाओं के कारण देश में बदनाम थे; और प्योरिटन दल के सिद्धान्तों से जेम्स को बड़ी चिढ़ थी। जेम्स का विचार था कि यदि प्योरिटन सिद्धान्तों के अनुसार चर्च के पदाधिकारी जनता चुनेगी, तो चर्च पर राजा का बिलकुल दबाव न रह जायगा। वह समझता था कि यदि चर्च में राजा के नियत किये हुए पादरियों के स्थान पर चुनाव की प्रथा चल गई, तो कुछ ही दिनों में लोग एकतन्त्री शासन के स्थान पर प्रजा-तन्त्र स्थापित करने का उद्योग करने लगेंगे। इसी लिये जेम्स का कहना था-"पादरी नहीं, तो राजा भी नहीं।"

**जेम्स और प्योरिटन दल**—जेम्स के समय प्योरिटन दल-वालों ने एक "सहस्र हस्ताक्षर युक्त प्रार्थना-पत्र" (Millenary Petition) उपस्थित किया, जिसमें चर्च के पूजा पाठ बन्द करने और प्रार्थना पुस्तक में कुछ संशोधन करने के लिये अनुरोध किया गया था। उनका कहना था कि यदि ये सब बातें मान ली जायँ, तो हम लोग आंग्ल चर्च में सम्मिलित होने के लिये तैयार हैं। इस पर जेम्स ने हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) में एक सभा की जिसमें प्योरिटन दल के नेता और बड़े बड़े पादरी बुलाये गये। परन्तु उस सभा में कोई विशेष निर्णय न हो सका; केवल इतना ही हुआ कि बाइबिल का एक नये ढंग से अनुवाद करने की आज्ञा दी गई; और वह अनुवाद राज्य की ओर से प्रकाशित किया गया। अब प्योरिटन दलवालों के आंग्ल चर्च में मिल जाने की कोई आशा न रह गई; और वे सदा के लिये उससे पृथक् हो गये। तभी से वे (Dissenters) या (Non-conformists) अर्थात् "देश के स्थापित चर्च के विरोधी" कहलाने लगे।

**जेम्स और कैथोलिक दल ( बारूद का षड्यन्त्र )**—एलिज़ेबेथ के समय में कैथोलिकों के विरुद्ध कुछ नियम बनाये गये थे; और आंग्ल चर्च की प्रार्थनाओं में सम्मिलित न होने के कारण उन्हें कुछ जुर्माना देना होता था। जेम्स के समय में सन् १६०४ में पहले के नियम फिर से प्रचलित करके और भी कठोर कर दिये गये। इससे कैथोलिक लोग इतना विगड़े कि उन्होंने एक भीषण षड़यन्त्र रचा। पार्लिमेएट भवन के नीचे गुप्त रीति से बारूद भर दी गई; और यह प्रवन्ध किया गया कि ५ नवम्बर सन् १६०५ को जब पार्लिमेएट की पहली बैठक हो, तब बारूद में आग लगा दी जाय। इस प्रकार राजा, पार्लिमेएट के समस्त सदस्यों और दरबारियों का नाश हो जायगा। परन्तु उन्हीं षड़यन्त्रकारियों में से एक ने अपने एक सम्बन्धी को, जो पार्लिमेएट का सदस्य था, उसकी रक्षा करने के उद्देश्य से पत्र द्वारा इसकी सूचना दे दी। उसने वह पत्र राजा को दिखला दिया; और इस प्रकार इस षड़यन्त्र का पता चल गया। षड़यन्त्रकारियों का सारा प्रयत्न विफल हुआ और उनके बहुत से नेता पकड़ कर मरवा डाले गये। इसके बाद कैथोलिकों के विरुद्ध और भी कठोर नियम बना दिये गये।

**वाल्टर रेले को प्राण दंड**—इसके अतिरिक्त जेम्स के राज्यकाल में और भी कई षड़यंत्र रचे गये, जो अन्त में विफल ही हुए। उनमें से एक षड़यन्त्र के साथ सर वाल्टर रेले का भी सम्बन्ध पाया गया; और इसलिये उसे प्राण दंड की आज्ञा हुई। परन्तु वह रानी एलिज़ेबेथ के समय का बड़ा प्रसिद्ध समुद्र-यात्री, विद्वान और कवि था; इसलिये उसे प्राण दंड के स्थान पर जीवन

भर के लिये बन्दीगृह में भेज दिया गया। बन्दीगृह ही में रेले ने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ "भूमण्डल का इतिहास" लिखा। कुछ दिनों बाद रेले ने जेम्स से यह प्रस्ताव किया कि यदि मुझे छोड़ दिया जाय, तो मैं दक्षिण अमेरिका जाकर सोने की खानों का पता लगाऊँ, जिन के विषय में मैंने अपनी यात्राओं में बहुत कुछ सुना है। जेम्स ने यह प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया; परन्तु यह शर्त कर ली कि रेले दक्षिण अमेरिका की स्पेनिश भूमि में कोई हस्त-क्षेप न करेगा। रेले दक्षिण अमेरिका पहुँचा; परन्तु उसे सोने की खानें ढूँढने के प्रयत्न में सफलता नहीं हुई। वहाँ उस का स्पे-नियों से झगड़ा भी हो गया जिस में कुछ स्पेनिश ग्रामों की हानि हुई। इस प्रकार रेले की शर्त भी टूट गई और वह खानों का पता भी न लगा सका। इँगलैण्ड लौटने पर जेम्स ने पुरानी दण्डाज्ञा के अनुसार उसे फाँसी दिलवाई। उस समय जेम्स स्पेन के साथ, उसकी मित्रता सम्पादित करने के लिये, पत्रव्यवहार कर रहा था; और वास्तव में उसने स्पेनवालों को प्रसन्न करने के लिये ही अपने देश के ऐसे सम्मानित और प्रसिद्ध विद्वान् के प्राण लिये थे।

## (४) राजा और पार्लिमेण्ट

"दैवी अधिकार" "The Divine Right"—जेम्स यद्यपि विद्वान् था, पर फिर भी उसमें कई दोष थे। वह अभिमानी था और अपने आपको सब से बड़ा राजनीतिज्ञ और कुशल शासक समझता था। उसका मत था कि राजा पृथवी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है; और इसलिये राजा को देश के शासन के लिये दैवी

अधिकार प्राप्त है। उस का कहना था कि जिस प्रकार ईश्वर के सर्व शक्तिमान् होने में शंका करना अधर्म है, उसी प्रकार राजा के सम्बन्ध में भी यह कहना अधर्म है कि राजा अमुक कार्य कर सकता है और अमुक कार्य नहीं कर सकता। ऐसी दशा में यदि प्रारम्भ से ही जेम्स की पार्लिमेण्ट से न पटी, तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

**राजा और पार्लिमेण्ट में झगड़े के कारण**—जेम्स तथा अन्य स्टुअर्ट राजाओं ने ट्यूडर राजाओं की भाँति स्वेच्छाचारी होकर राज्य करना चाहा। परन्तु इस समय तक देश की स्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था। सोलहवीं शताब्दी में ट्यूडर राजाओं को स्वेच्छाचारी बनने में जो सुविधाएँ थीं, वे अब सत्रहवीं शताब्दी तक आते आते ग़ायब हो चुकी थीं। ट्यूडर काल में देश को बहुत सी विदेश सम्बन्धी आपत्तियों का सामना करना पड़ा था; और इसलिये ट्यूडर राजाओं के स्वेच्छाचारी होने पर भी देशवासियों को हर बात में उनका साथ देना पड़ता था। स्टुअर्ट काल में देश को किसी विदेशी आपत्ति का भय न था; और इसलिये जनता निःशंक होकर देश की राजनीतिक दशा के सुधार की ओर ध्यान दे सकती थी।

सोलहवीं शताब्दी में विद्या के पुनरुद्धार, धर्म-सुधार की लहर और एलिज़ेबेथन साहित्य की उन्नति आदि के कारण जनता में यथेष्ट जाग्रति हो गई। समुद्र-यात्राओं और व्यापार की उन्नति के कारण देशवासी धनी भी होने लगे। इन सब बातों का बहुत कुछ प्रभाव अगली शताब्दी में जाकर अच्छी तरह देखने में आया। इस कारण सत्रहवीं शताब्दी की जनता कभी

सुगमता से स्वेच्छाचारी राजाओं के अनुचित कृत्य सहन नहीं कर सकती थी ।

ट्यूडर राजाओं ने राजकोष के लिये बहुत अधिक सम्पत्ति एकत्र कर ली थी । वे काम भी किफायत से चलाते थे; इसलिये उन्हें नये राजकरों की स्वीकृति लेने के लिये पार्लिमेण्ट के अधिवेशन करने की बहुत कम आवश्यकता होती थी । स्टुअर्ट राजाओं को, किफायत से काम न चलाने के कारण, बार बार पार्लिमेण्ट से धन माँगना पड़ता था; और धन के बदले में पार्लिमेण्ट को अधिकार देने पड़ते थे ।

ट्यूडर राजाओं की राजनीति प्रायः जनता की इच्छा के अनुकूल ही होती थी; और इसी लियें वे सर्वप्रिय हो सके थे । परन्तु स्टुअर्ट राजा जनता की इच्छा की कुछ भी परवाह न करते थे । जेम्स बराबर स्पेन से मित्रता करने का पक्षपाती रहा; और देशवासी तथा पार्लिमेण्ट के सदस्य स्पेनियों को इँगलैण्ड के पुराने और जानी दुशमन समझते थे ।

इन सब कारणों से स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेण्ट में झगड़ा अनिवार्य सा हो गया । जेम्स विद्वान् तथा ईमानदार था; परन्तु उसके हठी होने के कारण शीघ्र ही झगड़ा शुरू हो गया जो बराबर बढ़ता गया । पार्लिमेण्ट के सदस्यों के साथ जेम्स का बरताव अच्छा न था और वह हर समय अपना "दैवी अधिकार" जतलाना चाहता था । इस कारण अब पार्लिमेण्ट भी देशवासियों की स्वतन्त्रता की रक्षा के लियें पूर्ण रूप से दृढ़ हो गई ।

**"अनुचित राजकर" ( Impositions )**—इँगलैण्ड में शराब पर प्रति टन के हिसाब से महसूल लगाया जाता था, जो

साधारण बोलचाल में "टनेज" ( Tonnage ) कहलाता था। व्यापार की अन्यान्य वस्तुओं पर प्रति पाउंड के हिसाब से महसूल लगता था जिसे पाउंडेज ( Poundage ) कहते थे। इन्हीं दोनों महसूलों की आय से राजा का निजी व्यय चलता था। यह व्यवस्था एडवर्ड तृतीय के समय से चली आ रही थी। परन्तु इन मदों से उसे जो आय होती थी, वह साधारणतः राज-परिवार के निर्वाह के लिये यथेष्ट नहीं होती थी। जेम्स का काम भी इतने में किसी प्रकार नहीं चलता था; और इसलिये उसने कुछ वस्तुओं पर साधारण से अधिक महसूल लगाना आरम्भ किया। इस नये महसूल के लिये पार्लिमेण्ट की स्वीकृति प्राप्त नहीं की गई थी; और इसलिये यह "अनुचित राजकर" (Impositions) के नाम से प्रसिद्ध है। व्यापारियों तथा पार्लिमेण्ट के सदस्यों ने इसका विरोध किया; परन्तु जेम्स ने न्यायाधीशों से यह निर्णय करा लिया कि आवश्यकता पड़ने पर राजा स्वयं अपने अधिकार से राजकर लगा सकता है।

इसके अतिरिक्त उसने अपनी आय बढ़ाने के और भी कई उपाय निकाल लिये। वह लोगों से बलपूर्वक ऋण लेता था; और धन लेकर व्यापारियों को कुछ विशिष्ट पदार्थों के क्रय-विक्रय का एकाधिकार तथा धनवानों को उपाधियाँ भी प्रदान करता था। सन् १६११ में बैरन की नई उपाधि उसने अपनी आय बढ़ाने के लिये ही निकाली थी।

**राजमन्त्री**—कर लगाने के प्रश्न के अतिरिक्त राजा और पार्लिमेण्ट में और कई प्रश्नों पर झगड़ा हुआ। जेम्स के दरबार में चापलूसों की खूब चलती थी और वे बड़े बड़े पदों पर नियुक्त

कर दिये जाते थे। इस कारण राज्य के कर्मचारी तथा राजमन्त्री अपने कार्य्य के लिये प्रायः अयोग्य होते थे। इस समय जेम्स का प्रधान मन्त्री ड्यूक आफ बकिंघम (Duke of Buckingham) था, जिसे स्पेन की मित्रता का पक्षपाती होने के कारण जनता नहीं चाहती थी। पार्लिमेण्ट राजमन्त्रियों पर अपना दबाव रखना और उन्हें जनता के प्रतिनिधियों के इच्छानुसार चलाना चाहती थी। परन्तु जेम्स इसे सहन न कर सका। उस का मत था कि राजमन्त्री राजा के अतिरिक्त और किसी के अधीन नहीं हैं और पार्लिमेण्ट को उनके कार्य्यों में कोई हस्तक्षेप न करना चाहिए।

**बेकन पर अभियोग**—एलिज़ेबेथ के राज्य काल का प्रसिद्ध निबन्ध-लेखक तथा आधुनिक विज्ञान का जन्मदाता फ्रान्सिस बेकन (Francis Bacon) उस समय प्रधान न्यायाधीश के पद पर था। जेम्स ने अपने मित्रों को कई वस्तुओं के व्यापार का जो एकाधिकार (Monopoly) दिया था, बेकन ने उसके पक्ष में निर्णय किया था, इस कारण जनता उससे अप्रसन्न थी। पार्लिमेण्ट ने राज्य के प्रधान कर्मचारियों पर अपना अधिकार जतलाने का यह अच्छा अवसर समझा। बेकन पर रिशवत लेने का अपराध लगाकर पार्लिमेण्ट ने अभियोग चलाया। पर वास्तव में बेकन का अधिक दोष न था। उसने उस काल की प्रचलित प्रथा के अनुसार कुछ भेंट आदि अवश्य ली थी; परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं था कि उसने भेंट लेकर अन्याय किया है। बेकन प्रधान न्यायाधीश के पद से हटा दिया गया, उस पर चार हज़ार पाउण्ड जुरमाना किया गया और वह बन्दीगृह में भेज दिया

गया। जेम्स ने उसका जुरमाना माफ़ कर दिया और उसे बन्दी-गृह से भी मुक्त कर दिया। यह सब कुछ हो गया, परन्तु पार्लिमेण्ट ने यह दिखला दिया कि राज्य के कर्मचारी अपने कार्यों के लिये देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हैं।

**लोक-सभा के अधिकार (Privileges of the Commons)** पार्लिमेण्ट के अधिकारों की रक्षा के लिये जितने झगड़े हुए, वे वास्तव में लोक-सभा ( House of Commons ) ने किये थे। जिस समय जेम्स अपने पुत्र और उत्तराधिकारी चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी इन्फैण्टा से करने के लिये पत्र व्यवहार कर रहा था, उस समय लोक सभा ने राजा के समक्ष इस आशय का एक प्रार्थनापत्र उपस्थित किया कि राजकुमार का विवाह किसी प्रोटेस्टेण्ट कन्या से ही होना चाहिए। इस पर जेम्स बहुत बिगड़ा और उसने साफ़ कह दिया कि लोक सभा को राज्य के गम्भीर प्रश्नों में कुछ भी हस्तक्षेप न करना चाहिए। इस पर लोक सभा ने यह प्रस्ताव पास किया कि देश के प्रतिनिधियों को राज्य सम्बन्धी समस्त विषयों पर अपना मत प्रकाशित करने की पूर्ण स्वतन्त्रता और अधिकार प्राप्त है। अब जेम्स के क्रोध की सीमा न रही; और उसने स्वयं जाकर लोक सभा के कार्य क्रम की पुस्तक में से उन पृष्ठों को फाड़ डाला जिनमें यह प्रस्ताव लिखा हुआ था। लोक सभा के पुस्तकालय में सन् १६२१ के कार्य विवरण की वह पुस्तक अब तक मौजूद है; और उसे देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसके बीच के कुछ पृष्ठ फाड़ डाले गये हैं।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६०३—जेम्स प्रथम का राज्याभिषेक।
,, १६०४—हैम्पटन कोर्ट की सभा की बैठक।
,, १६०५—बारूद का षड़यंत्र।
,, १६१८—रेले को प्राण-दंड।
,, १६१९—तीस वर्षीय युद्ध का आरम्भ।
,, १६२१—बेकन का पतन।
,, १६२३—चार्ल्स की मैडूरिड यात्रा।
,, १६२५—जेम्स प्रथम की मृत्यु।

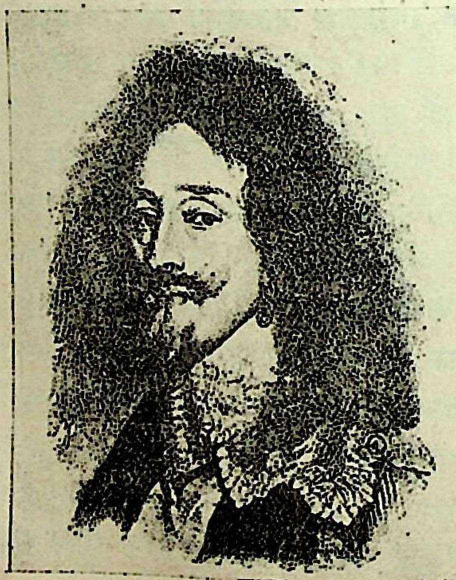
---

## दूसरा परिच्छेद

### चार्ल्स प्रथम (१६२५-१६४६)

#### (१) पहली तीन पार्लिमेण्टों से झगड़ा
#### (सन् १६२५-१६२६)

**चार्ल्स प्रथम**—जेम्स प्रथम की मृत्यु होने पर उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम के नाम से गद्दी पर बैठा। चार्ल्स सुन्दर, विद्या-



चार्ल्स प्रथम

प्रेमी तथा परिश्रमी था, परन्तु उसमें हठ की मात्रा बहुत

अधिक थी। वह न तो स्वयं ही किसी दूसरे की बात ठीक तरह से समझता था और न अपनी ही बात किसी दूसरे को भली भाँति समझा सकता था। हम पहले कह आये हैं कि उसके पिता ने पहले उसका विवाह स्पेन की राजकुमारी से करना चाहा था; परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता नहीं हुई थी। अब चार्ल्स का



चार्ल्स प्रथम की पत्नी

विवाह फ्रान्स के राजा की बहन हेनरीटा मेरिया (Henrietta Maria) से हुआ। नई रानी पक्की कैथोलिक थी; और उसने अपना इतना प्रभाव जमा लिया था कि चार्ल्स की भी बहुत कुछ सहानुभूति कैथोलिक मतावलम्बियों के साथ हो गई थी। इस

कारण यह राजा कभी इँगलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट जनता में सर्वप्रिय न हो सका।

"बलात् ऋण" ( Forced loan )—इस समय तीस वर्षीय युद्ध चल रहा था। चार्ल्स ने स्पेन पर आक्रमण करने के लिये पार्लिमेण्ट से जून सन् १६२५ में धन माँगा। उसको आशा थी कि एक कैथोलिक के विरुद्ध युद्ध करने के लिये इँगलैण्ड निवासी अवश्य प्रसन्नतापूर्वक आर्थिक सहायता देंगे। परन्तु जब पार्लिमेण्ट ने धन नहीं दिया, तब उसने पार्लिमेण्ट भंग कर दी। फिर कुछ दिनों बाद उसे धन की आवश्यकता हुई और उसने दोबारा पार्लिमेण्ट बुलाई। परन्तु चार्ल्स के प्रधान मन्त्री बकिंघम पर नई पार्लिमेण्ट बिलकुल विश्वास न करती थी; और इस कारण उस नई पार्लिमेण्ट ने यह कहा कि जब तक बकिंघम अपने पद से न हटाया जायगा, तब तक पार्लिमेण्ट धन की स्वीकृति कदापि न देगी। अपने पिता जेम्स की भाँति चार्ल्स भी यह सहन न कर सकता था कि राजमन्त्रियों पर पार्लिमेण्ट का अधिकार हो; और इसलिये वह यह शर्त नहीं मान सकता था। पार्लिमेण्ट ने बकिंघम पर अभियोग चलाना चाहा। इस पर राजा ने क्रोध में आकर उस दूसरी पार्लिमेण्ट के भी विसर्जन की आज्ञा दे दी।

अब चार्ल्स ने केवल अपने ही अधिकार से युद्ध के लिये धन एकत्र करना आरम्भ किया। देश के धनिक लोगों को राजकार्य्य के लिये ऋण देने पर बाध्य किया गया। जो लोग यह ऋण देने में आनाकानी करते थे, उन्हें बन्दीगृह में भेजवा दिया जाता था। सेना के लिये भी लोग दबाव डालकर बलपूर्वक भरती किये जाने लगे। सैनिकों की रसद आदि का कोई निश्चित प्रबन्ध न

होने के कारण उन्हें गृहस्थों के यहाँ ठहरा दिया जाता था। इससे गृहस्थों और सैनिकों में प्राय: झगड़े भी हो जाते थे। इन झगड़ों का निर्णय एक विशेष प्रकार के सैनिक न्यायालय ( Court Martial ) में होता था; और इस प्रथा से साधारण देशवासियों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। यह सब करने पर भी चार्ल्स को युद्ध में सफलता नहीं हुई; और जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं, तीस वर्षीय युद्ध में आंग्ल नीति निष्फल ही रही।

**फ्रान्स से युद्ध**—फ्रान्स के राजा की बहिन से विवाह करने के समय चार्ल्स को यह वादा करना पड़ा था कि इँगलैण्ड के कैथोलिकों के लिये कुछ सुभीते कर दिये जायँगे। इँगलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट जनता के विरोध के कारण चार्ल्स वह वादा पूरा न कर सका; और इस कारण फ्रान्स से उसका झगड़ा हो गया। उस समय बकिंघम एक आंग्ल सेना लेकर ला रोशल ( La Rochelle ) में फ्रान्स के प्रोटेस्टेण्ट विद्रोहियों को उनके राजा के विरुद्ध सहायता देने के लिये पहुँचा। परन्तु बकिंघम को इस प्रय में सफलता नहीं हुई और इसलिये देश में उसकी बदनामी और भी अधिक बढ़ गई।

**"अधिकार-याचना" ( Petition of Right )**—धन की आवश्यकता के कारण चार्ल्स को फिर तीसरी पार्लिमेण्ट बुलानी पड़ी। इस पार्लिमेण्ट के सदस्यों में आरम्भ से ही देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये बड़ा जोश फैला हुआ था। ईलियट ( Elliot ) के नेतृत्व में पार्लिमेण्ट ने एक बड़े महत्व का प्रस्ताव पास किया जो "अधिकार-याचना" ( Petition of Right ) के नाम से प्रसिद्ध है। इस की मुख्य मुख्य धाराएँ

इस प्रकार थीं—( १ ) बिना पार्लिमेण्ट की स्वीकृति के देश पर किसी प्रकार का कर न लगाया जाय; और ऋण, भेंट आदि देने के लिये किसी को बाध्य न किया जाय। ( २ ) अपराध का बिना नियमानुसार निर्णय हुए किसी को बन्दीगृह में न भेजा जाय। ( ३ ) गृहस्थों के यहाँ उन की इच्छा के विरुद्ध सैनिकों को न ठहराया जाय। और (४) शान्ति के समय किसी नागरिक पर सैनिक न्यायालय ( Court Martial ) के सम्मुख अभियोग न चलाया जाय। पहले तो चार्ल्स ने टाल मटोल की; परन्तु अन्त में उसे पार्लिमेण्ट के इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने पड़े; और इस प्रकार इस "अधिकार-याचना" की सब बातें स्वीकृत होकर राजनियम के रूप में हो गईं। अब पार्लिमेण्ट के अधिकारों और नागरिकों की स्वतन्त्रता का निश्चित रूप से निर्णय हो गया; और यह भी तै हो गया कि राजा इस राजनियम की धाराओं का उल्लंघन न करेगा। अब देश में भली भाँति नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government) की स्थापना हो गई। यह "अधिकार-याचना" आंग्लों का दूसरा बड़ा स्वतन्त्रता-पत्र ( Second Great Charter of English Liberty ) माना जाता है। पहला राजा जॉन के समय का "महास्वतन्त्रता-पत्र" ( Magna Charta ) था, जिसके अनुसार पार्लिमेण्ट के उत्थान का प्रारम्भ हुआ था।

**बकिंघम की हत्या**—बकिंघम की बदनामी दिन पर दिन बढ़ती जाती थी। जेम्स और चार्ल्स दोनों उस पर पूर्ण विश्वास रखते थे; परन्तु देशवासी उस की नीति का सदा विरोध करते रहे। बकिंघम वास्तव में फ्रान्स और स्पेन से मित्रता करने का

पक्षपाती था; और इस कारण देशवासी उस से घृणा करते थे। जिस समय पार्लिमेण्ट में उस पर अभियोग चलाने का विचार हो रहा था, उस समय ईलियट ने उस के विषय में लार्ड सभा के सम्मुख कहा था—"महाशयो! उस के कार्य्यों पर ध्यान दीजिये। उस के विचार और स्वभाव के विषय में आप लोग जानते ही हैं। मैं उस के दोषों का निर्णय इस सभा पर छोड़ता हूँ। परन्तु लोक-सभा के हम सदस्यों का तो यही मत है कि उसी के कारण देश को कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा; जनता के दुःख का वही मुख्य कारण है; और उसी को दण्ड देने से देश का कल्याण हो सकता है।"

जब बकिंघम दूसरी बार फ्रान्स से युद्ध करने के लिये सेना ले कर जा रहा था, तब रास्ते में फेल्टन (Felton) नामक एक सैनिक ने उसे मार डाला। फ़ेल्टन उस से चिढ़ा हुआ था; क्योंकि उसने फेल्टन का हक होने पर भी किसी दूसरे को सेना के कप्तान का पद दे दिया था। इस हत्या के लिये फेल्टन को दण्ड दिया गया; परन्तु बकिंघम उस समय तक इतना बदनाम हो चुका था कि उसे मारनेवाले की देश में बहुत प्रशंसा हुई।

**ईलियट की मृत्यु**—इस समय पार्लिमेण्ट की लोक-सभा का नेता ईलियट था। उसी के नेतृत्व में "अधिकार-याचना" स्वीकृत हुई थी; और बकिंघम पर अभियोग चलाने का प्रयत्न किया गया था। वह देश की स्वतन्त्रता का हार्दिक पक्षपाती था और उसका मत था कि राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधना अत्यन्त आवश्यक है। इन विचारों के कारण चार्ल्स उससे शुरू से ही चिढ़ा हुआ था। कई बार ईलियट को बन्दीगृह भी

भेजा गया; परन्तु उसके देशहित के विचारों में कोई परिवर्तन न हुआ। अन्तिम बार जब उसे बन्दीगृह भेजा गया, तब वहीं क्षय रोग के कारण स्वतन्त्रता का यह सिपाही परलोक सिधारा।

## (२) ग्यारह वर्षों का निरंकुश शासन
## (सन् १६२६—१६४०)

**टॉमस वेन्ट्वर्थ (स्ट्रेफोर्ड का अर्ल)**—ग्यारह वर्ष तक चार्ल्स ने पार्लिमेएट का कोई अधिवेशन न किया; और इस काल में उसने पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारपूर्ण और निरंकुश शासन किया। इस कार्य्य में सहायता देनेवाला टॉमस वेन्ट्वर्थ (Thomas Wentworth) था। वेन्ट्वर्थ पहले राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधने के पक्ष में था; और "अधिकार-याचना" के स्वीकृत कराने में भी उसने बहुत कुछ प्रयत्न किया था। परन्तु अब उसमें आकाश पाताल का अन्तर हो गया और वह स्पष्ट रूप से राजा के स्वेच्छाचार का समर्थक बन गया। चार्ल्स ने उसे आयरलैंएड का शासक बना कर भेजा। आयरलैंएड में वेन्ट्वर्थ ने बड़ी दृढ़ता से शासन किया। जो लोग राज्याधिकार का ज़रा भी विरोध करते थे, उन्हें वह पूरी तरह से दबाया करता था। शासन का ढंग कठोर अवश्य था; परन्तु देश के व्यापार तथा कृषि की उन्नति का भी उसने यथेष्ट प्रयत्न किया था। उसके आयरलैंड से लौटने पर चार्ल्स ने प्रसन्न होकर उसे स्ट्रेफ़ोर्ड का अर्ल (Earl of Strafford) बना दिया।

**लॉड तथा प्योरिटन दल पर अत्याचार**—इस समय धार्मिक विषयों में चार्ल्स को सम्मति देनेवाला लॉड (Laud)

था जिसको राजा ने कैन्टर्बरी का प्रधान पादरी (Archbishop of Canterbury) बना दिया था। लॉड हृदय से चर्च का सुधार करना चाहता था। उसका विचार था कि पोप की चलाई हुई कुछ प्रथाएँ अवश्य अन्ध विश्वासों पर निर्भर हैं; परन्तु प्योरिटन दलवालों की भाँति सब रीति रस्मों को छोड़कर मनमाने ढंग से प्रार्थना करने लगना भी ठीक नहीं



लॉड

है। वह चाहता था कि चर्च में एकता रहे और देश में भिन्न भिन्न प्रकार के धार्मिक सम्प्रदाय स्थापित न होने पावें। उसका मत था कि धार्मिक रीति रस्मों में जितना संशोधन आंग्ल चर्च में हो गया है, वह बहुत काफी है; और उससे अधिक धर्म-सुधार की अब कोई आवश्यकता नहीं है। पर प्योरिटन दलवाले आंग्ल चर्च के सुधारों को यथेष्ट न समझते थे और इसी लिये वे उससे पृथक्

हो बैठे थे। इस मतभेद के कारण लॉड प्योरिटन दलवालों से बहुत चिढ़ता था और उसने उनके साथ बहुत कठोरता का व्यवहार किया। स्थापित चर्च की विधियों तथा प्रार्थना पुस्तक को न मानने के अपराध में उनको धार्मिक न्यायालय ( High Commission Court ) से दण्ड दिलाया गया। यद्यपि धार्मिक न्यायालय एलिज़ेबेथ के समय में स्थापित हुआ था, परन्तु इस से पहले इतने कड़े कड़े दण्ड उसमें नहीं दिये जाते थे। लॉड के प्रार्थना की विधियों पर ज़ोर देने के कारण प्योरिटन दल ने यह कह कर उसे बदनाम करना शुरू किया कि वह प्रोटेस्टेण्ट मत की आड़ में कैथोलिक मत का प्रचार कर रहा है। अन्त में लॉड के अत्याचारों से प्योरिटन दलवाले इतने तंग आ गये कि उनमें से बहुत से इँगलैएड छोड़ कर अमेरिका में जा बसे। अमेरिका में आंग्ल उपनिवेशों के स्थापित होने का वर्णन आगे चल कर किया जायगा।

"जहाजी कर"—इस ग्यारह वर्ष के काल में चार्ल्स ने कई प्रकार से नियमानुमोदित शासन के नियमों का उल्लंघन किया। "अधिकार-याचना" के स्वीकृत हो जाने पर निश्चित रूप से निर्णय हो चुका था कि राजा बिना पार्लिमेएट की स्वीकृति के देश पर किसी प्रकार का नया कर नहीं लगा सकता। फिर भी चार्ल्स ने केवल अपने ही अधिकार से एक विशेष प्रकार का कर लगाना शुरू किया जो "जहाज़ी कर" ( Ship Money) के नाम से प्रसिद्ध है। उसका कहना था कि प्राचीन काल में भी आंग्ल राजा देश की रक्षा के लिये जहाज़ी बेड़े को ठीक दशा में रखने के उद्देश्य से समुद्र तट के निवासियों पर यह कर लगाते थे। परन्तु इस

बार यह कर देश के भीतरी भागों में रहनेवालों पर भी लगाया गया। यह कर इस दृष्टि से विशेष अनुचित था कि उस समय देश को किसी विदेशी आक्रमण का भय न था। पार्लिमेण्ट के हैम्प्डन ( Hampden ) नामक एक सदस्य ने इस कर को राजनियम के विरुद्ध समझ कर देने से इन्कार किया। राजा की ओर से हैम्प्डन पर मुकद्दमा चलाया गया और न्यायाधीशों ने डर के मारे राजा के पक्ष में निर्णय दे दिया। अब क्या था! चार्ल्स बेधड़क होकर यह कर वसूल करने लगा; और जो लोग कर देने में टाल मटोल करते थे, उन्हें कड़े कड़े दण्ड दिये जाने लगे।

**स्कॉटलैण्ड में धार्मिक युद्ध**—हम पहले बतला आये हैं कि स्कॉटलैण्ड के चर्च का सुधार महात्मा कैल्विन के शिष्य जॉन नॉक्स के सिद्धान्तों के अनुसार हुआ था। उसमें पादरियों के स्थान पर चुने हुए पदाधिकारी होते थे और कोई निश्चित प्रार्थना पुस्तक भी न होती थी। चार्ल्स स्कॉटलैण्ड के इस प्रेस्बिटेरियन चर्च ( Presbyterian Church ) का शुरू से ही विरोधी था; और अपने पिता जेम्स की भाँति उसका भी यही मत था कि चर्च पर राजा का दबाव रहने के लिये पादरियों का होना अत्यन्त आवश्यक है। लॉड की सम्मति से चार्ल्स ने स्कॉटलैण्ड के लिये भी आंगल चर्च के ढंग की एक प्रार्थना पुस्तक के प्रयुक्त होने की आज्ञा दे दी। स्कॉटलैण्ड की जनता ने इसका बहुत जोरों से विरोध किया। सब ने एक "जातीय प्रतिज्ञा-पत्र" ( National Covenant ) पर हस्ताक्षर किये, जिसका आशय यह था कि देश के प्रेस्बिटेरियन चर्च की रक्षा करना सब का जातीय कर्तव्य

है। इस पर चार्ल्स ने बल से काम लिया; और इस कारण रा
तथा स्कॉटलैण्ड की जनता में दो युद्ध हुए जो पादरियों के यु
( Bishop Wars ) के नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि चार्ल्स क
उद्देश्य यही था कि स्कॉटलैण्ड के चर्च में केवल राजा के नियु
किये हुए पादरी ही रहा करें। यथेष्ट धन और सेना के अभा
के कारण चार्ल्स स्कॉटलैण्ड की उत्तेजित जनता को न द
सका। अन्त में उसे स्कॉटलैण्ड के प्रेस्बिटेरियन चर्च का अधिका
स्वीकृत कर लेना पड़ा; और इस प्रकार वहाँ के निवासियों क
अपने धर्म की रक्षा करने में पूर्ण सफलता हुई।

## ( ३ ) "प्रलंब पार्लिमेण्ट" का अधिवेशन।

अल्पकालिक और प्रलंब पार्लिमेण्ट—( Short and Long Parliaments)—स्कॉटलैंड के धार्मिक युद्ध में बहुत खर्च हो जाने के कारण चार्ल्स को फिर धन की कमी पड़ने लगी; और इसलिये ग्यारह वर्ष बाद अब वह फिर पार्लिमेण्ट की बैठक करने के लिये बाध्य हुआ। पहली पार्लिमेण्ट ने धन स्वीकृत करने के लिये यह शर्त लगाई कि राजा पहले देशवासियों की सब शिका-यतें दूर कर दे। चार्ल्स ने इस पार्लिमेण्ट को तुरन्त ही विसर्जित कर देने की आज्ञा दी; और इसलिये यह "अल्पकालिक पार्लिमेण्ट" ( Short Parliament ) कहलाती है। धन की बहुत कमी होने के कारण चार्ल्स को फिर दूसरी पार्लिमेण्ट बुलानी पड़ी जिसका विसर्जन पूरे बीस वर्ष बाद हुआ। इस कारण इतिहास में यह "प्रलम्ब पार्लिमेण्ट ( Long Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। जिस प्रकार चार्ल्स के राज्यकाल की आ-

रम्भिक पार्लिमेण्टों का नेता ईलियट था, उसी प्रकार इस प्रलम्ब पार्लिमेण्ट का नेता पिम ( Pym ) नामक एक बड़ा योग्य पुरुष था; और उसकी सहायता के लिये हैम्पडन (Hampden) था जिसके "जहाजी कर" के विरोध का वर्णन पहले हो चुका है।

**स्ट्रेफ़ोर्ड तथा लॉड को प्राण दण्ड**—"प्रलम्ब पार्लिमेण्ट" ने सब से पहले राजमन्त्रियों की खबर ली। चार्ल्स के स्वेच्छाचार के मुख्य समर्थक स्ट्रेफोर्ड पर अभियोग चलाया गया; परन्तु उसका कोई अपराध सिद्ध न हो सका। उसने जो कुछ किया था, वह राजा की आज्ञा से किया था; और इस कारण उस काल के नियमानुसार वह दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। जब पार्लिमेण्ट ने देखा कि अभियोग चला कर उसे दण्ड देना असम्भव है, तब उसने एक विशेष प्रकार का प्रस्ताव (Bill of Attainder) पास किया, जिसका आशय यह था कि स्ट्रेफोर्ड देशद्रोही है और उसे प्राण दण्ड मिलना चाहिए। राजा उसे बहुत मानता था; परन्तु उसे पार्लिमेण्ट के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य किया गया और इस प्रकार स्ट्रेफोर्ड को प्राण-दण्ड मिला।

पार्लिमेण्ट ने प्योरिटन दलवालों पर अत्याचार करनेवाले लॉड पर भी अभियोग चलाया; और उसे बन्दीगृह भेजवा दिया गया। वहाँ चार वर्ष तक रहने के पश्चात् उसे भी प्राण दण्ड दिया गया।

**राज-नियमों में संशोधन**—अब पार्लिमेण्ट ने ऐसे राज-नियम बनाने आरम्भ किये, जिनसे भविष्य में राजा का स्वेच्छाचारी और निरंकुश राज्य स्थापित होना असम्भव हो जाय। एलिजेबेथ का स्थापित किया हुआ "धार्मिक न्यायालय" (High

Commission Court ) तथा हेनरी सप्तम का स्थापित किया हुआ "नक्षत्र भवन" (Star Chamber Court) नामक दोनों न्यायालय, जिनमें बिना नियमानुसार मुकद्मा चलाये ही दण्ड की आज्ञा दी जा सकती थी, अब हटा दिये गये। इन्हीं विशेष प्रकार के न्यायालयों के द्वारा चार्ल्स ने अपने विरोधियों को कड़े कड़े दण्ड देने का ढंग निकाल रखा था। "जहाजी कर" लगाना तथा बलात् ऋण लेना नियमानुमोदित शासन के सिद्धान्तों के विरुद्ध ठहराया गया। इसके अतिरिक्त एक त्रैवार्षिक राज-नियम ( Triennial Act ) भी पास किया गया जिसके अनुसार पार्लियमेंट का बुलाना अब केवल राजा की इच्छा पर निर्भर न रह गया; और तीन वर्षों में कम से कम एक बार पार्लिमेण्ट का अधिवेशन होना आवश्यक हो गया।

**धार्मिक सुधारों का प्रश्न**—राजनीतिक विषयों में पार्लिमेण्ट के सब सदस्य एक मत थे और सभी नियमानुमोदित शासन की स्थापना करने के पक्ष में थे। परन्तु जब एक धार्मिक प्रश्न पर वाद विवाद चला, तब पार्लिमेण्ट में दो दल हो गये। प्योरिटन दल आंग्ल चर्च को बिलकुल स्कॉटलैण्ड के चर्च की भाँति प्रेस्बिटेरियन बनाना चाहता था; और दूसरा दल, जो अब उच्च चर्च पार्टी ( High Churchmen ) के नाम से प्रसिद्ध हुआ था, प्योरिटन दल के सिद्धान्तों का पूर्णतया विरोधी था। इस दूसरे दल का नेता एडवर्ड हाइड ( Edward Hyde ) था, जो आगे चल कर क्लैरेण्डन का अर्ल ( Earl of Clarendon ) हुआ।

**" महान् विरोधपत्र "**—पिम और हैम्पूडन के नेतृत्व में

पार्लिमेंएट में एक "महान् विरोधपत्र" ( The Grand Remonstrance ) उपस्थित किया गया। उस में चार्ल्स के समस्त अत्याचारों का उल्लेख किया गया; और इस बात पर जोर दिया गया कि लोक-सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही राज-मन्त्री बनाये जायँ। धार्मिक प्रश्न पर बने हुए पार्लिमेंएट के दो दलों में से प्योरिटन दलवाले इसके समर्थक थे; परन्तु उच्च

चार्ल्स प्रथम के समय के पहनावे



नागरिक पुरुष



नागरिक स्त्री

चर्च दल के सदस्यों ने इस का विरोध किया। अन्त में बहुमत से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ; परन्तु समर्थकों की विजय केवल थोड़ी सी ही सम्मतियों के अधिक हो जाने के कारण हुई। इस पत्र की भी गणना इँगलैण्ड के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-पत्रों में की जाती है।

**राजा और पार्लिमेण्ट के युद्ध का प्रारम्भ**—पार्लिमेण्ट में दो दल हो जाने से चार्ल्स का उत्साह बहुत बढ़ गया और उसने लोक सभा के पिम, हैंपडन आदि पाँच मुख्य नेताओं को पकड़ने का प्रयत्न किया। वह स्वयं कुछ सैनिकों को लेकर लोक सभा के भवन में पहुँचा। परन्तु उन पाँचों सदस्यों को पहले ही राजा की धूर्तता का पता लग चुका था। लन्दन निवासियों ने

चार्ल्स प्रथम के समय के पहनावे



ग्रामीण पुरुष ग्रामीण स्त्री

उन्हें नगर में छिपा दिया और चार्ल्स ने उनके स्थान खाली पाये। राजा का प्रयत्न विफल हुआ; परन्तु उस के सैनिकों को साथ लेकर पार्लिमेण्ट भवन में घुस आने से सदस्यों में बड़ी उत्तेजना फैली। अब यह स्पष्ट हो गया कि केवल राजनियम बना देने से चार्ल्स वश में नहीं आ सकता। नियमों का उल्लंघन करना

चार्ल्स के लिये कोई बड़ी बात न थी; और इसलिये विना बल का प्रयोग किये देश में नियमानुमोदित शासन स्थापित करना असम्भव प्रतीत होने लगा। अब राजा और पार्लिमेण्ट का युद्ध अनिवार्य हो गया और स्वतन्त्रता देवी की पूजा के लिये रक्तपात का प्रारम्भ हुआ।

## ( ४ ) राजा और पार्लिमेण्ट का संघर्ष
## ( The Civil War )

गृह्य-युद्ध ( The Civil War) के दोनों दल—हम बतला चुके हैं कि धार्मिक सुधारों के प्रश्न पर पार्लिमेण्ट में दो दल हो गये थे। इनमें से राजा और पार्लिमेण्ट के गृह्य-युद्ध ( The Civil War) में उच्च पार्टी के लोगों ने राजा का पक्ष लिया; और प्योरिटन दलवालों ने पार्लिमेण्ट के अधिकारों की रक्षा के लिये राजा से युद्ध किया। लार्डों में से अधिकांश ने राजा की सहायता की और ग्रामीण जनता ने भी पूर्णतया राजा का साथ दिया। परन्तु नगर-निवासी तथा मध्यम श्रेणी की जनता पार्लिमेण्ट के पक्ष में रही। भौगोलिक विचार से देश के उत्तरी तथा पूर्वी भागों के लोग राजा के पक्ष में रहे; और दक्षिणी तथा पश्चिमी भागों के लोगों ने, जहाँ व्यापार का केन्द्र होने के कारण जनता शिक्षित तथा नागरिकों के अधिकारों को भली भाँति समझनेवाली थी, पार्लिमेण्ट का पक्ष लिया। राजा के दलवाले कैवेलियर * ( Cavaliers ) कहलाने लगे, क्योंकि उनके पास सवारों की सेना अधिक थी।

* घुड़सवार।

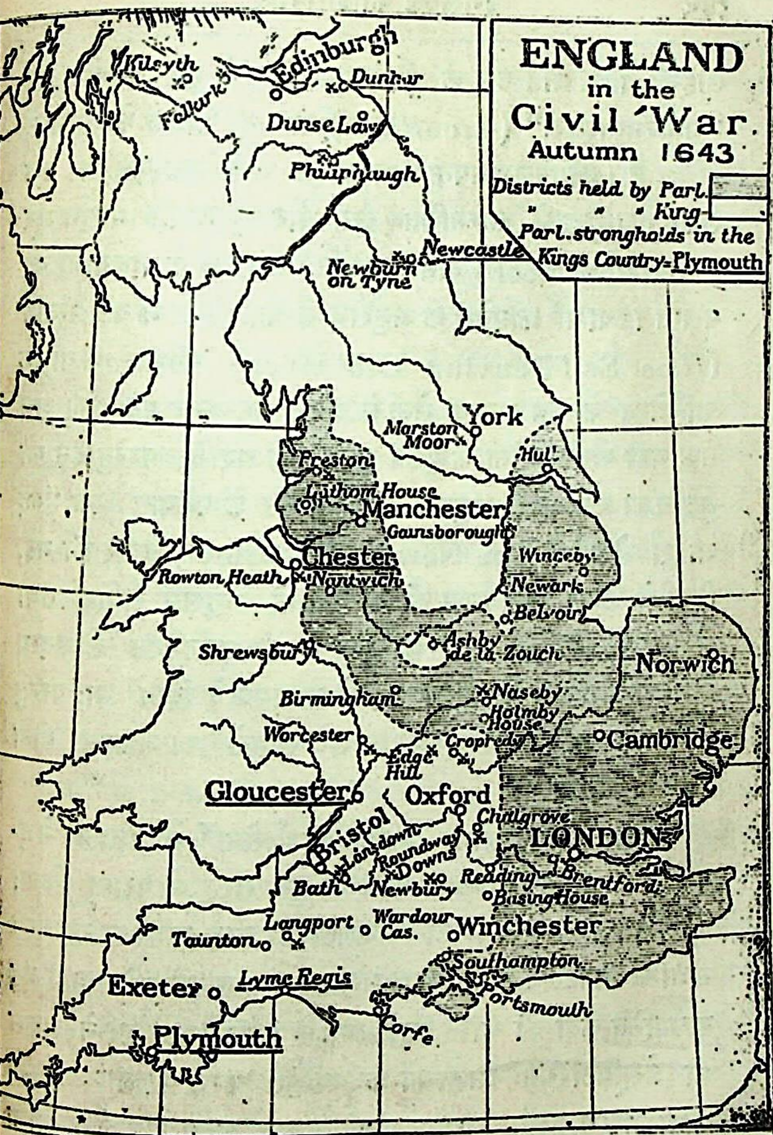
पार्लिमेण्ट दल में अधिकांश बाल कटे हुए प्योरिटन थे, इस कारण उन का नाम राउंडहेड † (Roundheads) पड़ गया।

**युद्ध की मुख्य मुख्य घटनाएँ**—लन्दन राजधानी के सब लोग राजा से विमुख हो गये थे। चार्ल्स ने अपने एक अफसर को उत्तरीय प्रान्त से और दूसरे को पूर्वीय प्रान्त से आकर लन्दन पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। परन्तु वे दोनों अफसर अपने ही प्रान्तों के विद्रोह शान्त करने में बुरी तरह से फँसे हुए थे; और इस कारण चार्ल्स का राजधानी पर अधिकार जमाने का प्रयत्न सफल न हो सका।

अब राजा ने आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता से सहायता माँगी; और यह देख कर पार्लिमेण्ट के पक्षवालों ने स्कॉटलैण्ड निवासियों को अपनी ओर मिला लिया। एक सन्धिपत्र (Solemn League and Covenant) पर स्कॉटलैण्ड तथा पार्लिमेण्ट के नेताओं ने हस्ताक्षर किये, जिस के अनुसार स्कॉटलैण्डवालों ने पार्लिमेण्ट दल को इस शर्त पर सहायता देना स्वीकार किया कि इँगलैण्ड के चर्च को भी स्कॉटलैण्ड के चर्च की भाँति प्रेसबिटेरियन बना दिया जायगा।

**क्रॉमवैल तथा "नई सेना" का संघटन**—युद्ध काल में अपनी रक्षा करने के लिये अलग अलग प्रान्तों ने छोटी छोटी मंडलियाँ चुन कर कुछ सैनिक एकत्र कर रखे थे। उन में से पूर्वीय मंडली (Eastern Association) का सेनापति ऑलिवर क्रॉमवेल (Oliver Cromwell) था, जो योग्य नेता था

† गोल अर्थात् मुँड़े हुए सिरवाले।




इँग्लैण्ड का गृह युद्ध ( १६४२ )

साहसी वीर था। उस के सैनिक बड़े सीखे हुए थे और व
"आयरनसाइड्स" ( Ironsides ) या वीर सैनिक के नाम से
प्रसिद्ध हैं। क्रॉम्वेल अपनी सेना सहित पार्लिमेण्ट दल का पक्ष
लेकर गृह्य युद्ध में सम्मिलित हुआ और तुरन्त ही मार्स्टन मूर
( Marston Moor ) नामक स्थान पर राजा के दलवालों को
परास्त किया। क्रॉम्वेल के अनुरोध से पार्लिमेण्ट ने यह प्रस्ताव
( The Self-Denying Ordinance ) स्वीकृत किया कि
पार्लिमेण्ट के सब सदस्य सेना से अपना सम्बन्ध हटा लें। अब
तक यही सदस्य सेना के मुख्य मुख्य पदों पर थे; परन्तु इन को
युद्ध कला का कोई अनुभव न था। इस के पश्चात् एक "नई
आदर्श सेना" ( The New Model Army ) तैयार की गई
जिस में केवल युद्ध कला की योग्यता के अनुसार सैनिक तथा
अफसर नियुक्त किये गये। क्रॉम्वेल ने भी पार्लिमेण्ट के सदस्य
होने के कारण अपने सैनिक पद से त्यागपत्र दे दिया था; परन्तु
सैनिकों के अनुरोध करने पर उसने सवारों का अफ़सर होना
मंजूर कर लिया।

**राजा का क़ैद होना**—"नई आदर्श सेना" ने राजा को नेज़-
बाई ( Naseby ) नामक स्थान पर बुरी तरह से परास्त किया
और अब राजपक्षवालों को सफलता की कोई आशा न रह गई।
राजा ने स्कॉटलैण्ड की सेना में जाकर शरण ली और वहाँ वह
सम्मानित कैदी की भाँति रहने लगा। स्कॉटलैण्डवालों ने चार्ल्स
को प्रेस्बिटेरियन सिद्धान्तों के स्वीकृत करने पर बाध्य करना
चाहा, परन्तु उसने साफ़ जवाब दे दिया। इस पर उन्होंने राजा
को आंग्ल पार्लिमेण्ट के सपुर्द कर दिया। युद्ध में सम्मिलित

होने के बदले में चालीस हजार पाउंड पुरस्कार लेकर स्कॉटलैण्ड की सेना अपने देश को लौट गई।

**पार्लिमेण्ट और सेना में झगड़ा**—युद्ध समाप्त हो जाने के कारण अब पार्लिमेण्ट ने "नई आदर्श सेना" का विसर्जन करना चाहा। परन्तु सैनिकों के वेतन अभी पूरी तरह नहीं चुकाये गये थे; और बिना वेतन लिये वे लोग हटने को तैयार न होते थे। इस प्रकार सेना और पार्लिमेण्ट में झगड़ा चला; और दोनों में धार्मिक विषयों में मतभेद होने के कारण यह झगड़ा और भी बढ़ गया। प्योरिटन लोग इस समय दो दलों में विभक्त हो गये थे। एक दल तो प्रेस्बिटेरियन ( Presbyterian ) लोगों का था, जो स्कॉटलैण्ड के चर्च की संस्था के अतिरिक्त शेष सब धार्मिक संस्थाओं के विरोधी थे और पार्लिमेण्ट में जिनकी संख्या अधिक थी। दूसरा स्वतन्त्र-दल ( Independents ) था। इस दल के लोग किसी विशेष प्रकार की संस्था के पक्षपाती न थे और सब को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता देना चाहते थे। "नई आदर्श सेना" में इनकी संख्या अधिक थी।

क्रॉम्वेल ने पहले दोनों दलों में समझौता कराना चाहा; परन्तु यह प्रयत्न निष्फल होने पर उसने सेना का पक्ष लिया। सेना ने बलपूर्वक राजा को पार्लिमेण्ट से छीन लिया; और उसके सम्मुख संधि करने के प्रस्ताव उपस्थित किये। यद्यपि वे शर्तें राजा के लिये बुरी न थीं, परन्तु फिर भी उसने उन्हें स्वीकृत न किया। कुछ ही दिनों में चार्ल्स किसी प्रकार से सेना के हाथों से निकल भागा और सकुशल वाइट-द्वीप ( Isle of Wight) में पहुँच गया।

**द्वितीय गृह्य युद्ध**—अब राजा ने फिर स्कॉटलैण्डवालों से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया; और उनके प्रेस्बिटेरियन सिद्धान्तों को स्वीकृत करने की शर्त भी मान ली। इस पर स्कॉटलैण्डवालों ने राजा का पक्ष लेकर युद्ध करना आरम्भ किया; और आंग्ल चर्च दलवालों ने भी उनका साथ दिया। इस प्रकार द्वितीय गृह्य युद्ध (Second Civil War) का आरम्भ हुआ। "नई आदर्श सेना" क्रॉम्वेल के नेतृत्व में स्कॉटलैण्ड को रवाना हुई। चलने से पहले उस सेना ने यह प्रण किया कि विजय प्राप्त करके लौटने पर चार्ल्स से, जिसके कारण देश में इतना रक्तपात हुआ है, अवश्य बदला लेंगे। "नई आदर्श सेना" ने स्कॉटलैण्डवालों को परास्त किया और बड़े समारोह से वह लौट कर इँगलैण्ड आई।

**चार्ल्स को प्राण-दण्ड**—अब सेना ने राजा पर अभियोग चलाना चाहा। लोक-सभा (House of Commons) के जिन सदस्यों से यह भय था कि वे राजा के पक्ष में रहेंगे, उन्हें सेना के अफ़सर प्राइड ने बलपूर्वक सभा भवन में न आने दिया। केवल वही सदस्य अन्दर जाने पाते थे जो राजा को दण्ड देने के पक्ष में थे। इस घटना को (Pride's Purge*) कहते हैं। तुरन्त ही इस "क्षीण लोक सभा" (The Rump) ने, जिसमें ८० से अधिक सदस्य न थे, एक न्याय समिति बनाई। उसका प्रधान ब्रैडशॉ (Bradshaw) था। इसी समिति के सम्मुख राजा के अपराध का विचार आरम्भ हुआ।

चार्ल्स ने कहा कि इस न्याय समिति को राजा पर अभियोग

---

* सेना के अफ़सर प्राइड का बल-पूर्वक कुछ सदस्यों को निकालना।

चलाने का कोई अधिकार नहीं है। इसके सिवा उसने कोई सफ़ाई पेश न की। जैसी कि पहले से ही आशा थी, न्याय समिति ने चार्ल्स को "अत्याचारी, देशद्रोही तथा घातक" ठहराया और उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा दी।

३० जनवरी सन् १६४९ को अपने ही राज-भवन के सामने-वाले मैदान में चार्ल्स का वध हुआ। वध दण्ड के समय उसने बड़ी शान्ति तथा धैर्य से काम लिया। उसने कहा—"मैंने इस-लिये गर्म वस्त्र पहन लिये हैं, जिसमें मेरे शीत काल के कारण काँपने को लोग भय से काँपना न समझें"। चार्ल्स ने प्राण दण्ड के समय जैसें शान्त स्वभाव तथा साहस का परिचय दिया, यदि वैसा ही स्वभाव और साहस उसका सदा रहता, तो उसे यह दिन न देखना पड़ता। जनता की स्वतन्त्रता की रक्षा के नाम पर इतना रक्तपात हुआ था; और अन्त में स्वयं राजा स्वतन्त्रता देवी की भेंट चढ़ाया गया।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६२५—चार्ल्स प्रथम का राज्याभिषेक।
" १६२६—बकिंघम पर अभियोग।
" १६२८—"अधिकार-पत्र"। (Petition of Right)
" १६३७—हैम्पूडन पर "जहाजी कर" का मुकदमा।
" १६४०—"अल्पकालिक पार्लिमेण्ट"।
" १६४०—५३—"प्रलम्ब पार्लिमेण्ट"।

" १६४१—स्ट्रेफोर्ड को प्राण-दण्ड ।

" १६४१—"महान् विरोध-पत्र" । ( The Grand Remonstrance )

" १६४४—मार्स्टन मूर का युद्ध ।

" १६४५—नेजबाई का युद्ध ।

" १६४९—चार्ल्स को प्राण-दण्ड ।

---

## तीसरा परिच्छेद



# इंगलैण्ड में प्रजातन्त्र तथा संरक्षित राज्य

### ( १ ) प्रजातन्त्र-राज्य

**प्रजातन्त्र राज्य**—चार्ल्स के प्राणदण्ड देने के पश्चात् लगभग ८० सदस्यों की "क्षीण लोक-सभा" ( The Rump ) ने राजा तथा लार्ड सभा दोनों को जनता की स्वतन्त्रता का नाशक ठहरा कर इँगलैण्ड में प्रजातन्त्र राज्य ( Commonwealth ) स्थापित किया। प्रबन्ध का कार्य्य चलाने के लिये ४१ सदस्यों की एक राष्ट्र सभा ( Council of State ) बनाई गई। उसका प्रधान वही ब्रैड्शॉ ( Bradshaw ) था जिसने चार्ल्स के प्राण दण्ड की आज्ञा सुनाई थी। प्रसिद्ध कवि जॉन मिलटन ( John Milton ) इसके विदेशी विभाग का मन्त्री था; और क्रॉमवेल भी इस के मुख्य सदस्यों में से एक था।

**आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्ड में कलह**—आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता बराबर राज्य-पक्ष की समर्थक रही थी; और चार्ल्स प्रथम की मृत्यु होने पर आयरलैण्डवालों ने उस के पुत्र को चार्ल्स द्वितीय के नाम से अपना राजा मान लिया। क्रॉमवेल ने एक भारी सेना ले जाकर आयरलैण्डवालों को परास्त किया; और वहाँ प्रबन्ध करने के लिये अपने एक सहायक सैनिक अफसर को छोड़ कर स्वयं इँगलैण्ड लौट आया। आयरिश जमीं-

दारों की जायदादें छीन कर अँग्रेजों में बाँट दी गईं। इन अत्याचारों के कारण आयरलैण्ड में बहुत दिनों तक अशान्ति फैली रही।

हम ऊपर कह आये हैं कि द्वितीय गृह्य युद्ध में जब स्कॉटलैण्ड के प्रेस्बिटेरियन लोगों ने राजा का पक्ष लिया था, तब उन्होंने चार्ल्स द्वितीय को देश में बुलाकर उसका राज्याभिषेक भी कर डाला था। इस पर आंग्ल प्रजातन्त्र-राज्य की ओर से क्रॉम्वेल ने स्कॉटलैण्ड पर चढ़ाई की और वहाँवालों को डन्बर (Dunbar) नामक स्थान पर परास्त किया। अगले वर्ष जब स्काटिश सेना इँगलैण्ड पहुँचने का प्रयत्न कर रही थी, तब फिर वारसेस्टर (Worcester) नामक स्थान पर क्रॉमवेल ने उस पर भारी विजय प्राप्त की। अब स्कॉटलैण्ड में भी एक सैनिक अफसर शासक नियत कर दिया गया; और ऐसी स्थिति में चार्ल्स द्वितीय ने निराश होकर फ्रांस जाकर शरण ली।

**"क्षीण लोक-सभा" का विसर्जन**—"क्षीण लोक-सभा" से देशवासी तंग आ गये थे। उस में अब केवल ८० सदस्य रह गये थे, और इस कारण वह नाम मात्र की ही प्रतिनिधि सभा थी। उस के सदस्य केवल अपने ही मित्रों को बड़े बड़े पदों पर नियुक्त करते थे; इस से उनकी बदनामी और भी अधिक बढ़ गई। सब यही कहते थे कि नया निर्वाचन होना चाहिए। परन्तु "क्षीण लोक-सभा" के सदस्य विसर्जित होने के लिये सहमत न थे। ऐसी अवस्था में क्रॉम्वेल ने कुछ सैनिकों की सहायता से बलपूर्वक उसके सदस्यों को सभा भवन से निकाल बाहर किया। देशवासियों की इस कार्य्य में पूर्ण सहानुभूति थी;

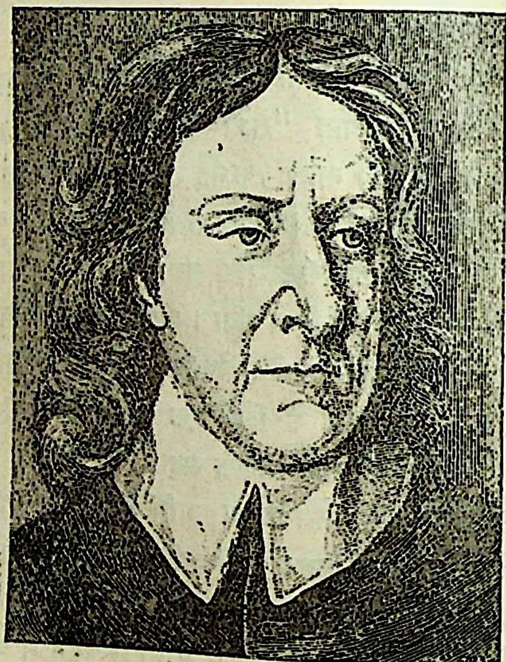
और इसलिये "क्षीण लोक-सभा" के विसर्जन का समाचार पाकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए।

**संरक्षित राज्य की स्थापना**—अब देश में केवल सेना का अधिकार रह गया, जिस का नेता क्रॉम्वेल था। एक दूसरी पार्लिमेण्ट बुलाई गई, जो अपने एक सदस्य के नाम पर बेयर-बोन्स पार्लिमेण्ट (Barebones Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु वह भी शीघ्र ही विसर्जित कर दी गई। उसके विसर्जन के पश्चात् "राज्य साधन" (Instrument of Government) नामक एक नई शासन प्रणाली बनाई गई। इसके अनुसार क्रॉम्वेल को संरक्षक (Lord Protector) की पदवी दी गई; और इँगलैण्ड स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड तीनों देशों को एक ही राष्ट्र में मिला दिया गया। पार्लिमेण्ट में केवल लोक सभा होती थी और उस में तीनों देशों के प्रतिनिधि बुलाये जाते थे। संरक्षक की सहायता के लिये एक राष्ट्र सभा (Council of State) नियत की गई, जिसके सदस्यों को संरक्षक पदच्युत न कर सकता था। पार्लिमेण्ट का अधिवेशन करने तथा उसे विसर्जित करने का अधिकार संरक्षक को दिया गया। इस नई शासन प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह था कि संरक्षक तथा पार्लिमेण्ट दोनों में से किसी का अधिकार सीमा से बढ़ने न पावे। इस प्रकार अब संरक्षित राज्य का प्रारम्भ हुआ।

## (२) संरक्षित राज्य
## (The Protectorate)

**क्रॉम्वेल और पार्लिमेण्ट**—संरक्षित राज्य के समय में क्रॉम्वेल और पार्लिमेण्ट में उसी तरह झगड़ा हुआ, जैसे पहले दोनों

स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेण्ट में हुआ था। क्रॉमवेल पार्लिमेण्ट द्वारा शासन होने के पक्ष में नहीं था; और वह ऐसे लोगों को पार्लिमेण्ट के लिये निर्वाचित न होने देता था, जो उस की नीति के विरोधी होते थे। अब देशवासियों को पता चला कि राज-



ओलिवर क्रॉम्वेल

नीतिक परिवर्तन से जनता की स्वतन्त्रता की कुछ भी वृद्धि नहीं हुई। एक स्वेच्छाचारी राजा के स्थान पर देश में सेना के एक नेता का प्रभुत्व स्थापित हो गया। संरक्षित राज्य की पहली पार्लिमेण्ट

ने संरक्षक के अधिकारों को कुछ कम करना चाहा। इस पर क्रॉम्वेल ने शीघ्र ही उस को विसर्जित कर दिया।

**सैनिक शासन—(Military Despotism)**—अब स्पष्ट रूप से सैनिक शासन का आरम्भ हुआ। क्रॉम्वेल ने समस्त इँगलैण्ड को दस जिलों में बाँट कर प्रत्येक जिले में एक मेजर जनरल को शासक नियत कर दिया। उसने अपने ही अधिकार से कर भी लगाने आरम्भ कर दिये; और मेजर जनरलों को आज्ञा दे दी कि राज-पक्षवालों की आय से दस प्रति सैंकड़े के हिसाब से राजकोष के लिये कर वसूल किया जाय। संरक्षक के विरुद्ध जो पुस्तकें तथा लेख आदि प्रकाशित होते थे, वे ज़ब्त कर लिये जाते थे। नाट्यशालाएँ तथा मनोविनोद के अन्य सब स्थान बन्द कर दिये गये। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि नियमानुमोदित या वैध शासन का इस प्रकार उल्लंघन होने पर भी देश में पूर्णतया शान्ति रही और इस काल में इँगलैण्ड की आर्थिक दशा खूब उन्नत हुई। क्रॉम्वेल का उद्देश्य अवश्य देश का हित करना था; परन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति सेना की सहायता से की जाती थी और इसलिये क्रॉम्वेल कभी लोकप्रिय न हो सका।

**"विनीत परामर्श तथा प्रार्थना"**—क्रॉम्वेल ने दूसरी बार फिर एक नई पार्लिमेण्ट का अधिवेशन किया। इस बार पार्लिमेण्ट के सब सदस्य संरक्षक के समर्थक थे। उन्होंने एक नई शासन-प्रणाली तैयार की और "विनीत परामर्श तथा प्रार्थना" (The Humble Advice and Petition) के रूप में उसे क्रॉम्वेल की स्वीकृति के लिये उसके समक्ष उपस्थित किया। इस के अनुसार क्रॉम्वेल को "राजा" बनाने और उस को

अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार देने का प्रस्ताव किया गया। दूसरा प्रस्ताव यह था कि लोक-सभा के अतिरिक्त एक लार्ड-सभा भी बनाई जाय, जिसके सदस्यों को क्रॉम्वेल स्वयं नियुक्त करे। सेना के लोग क्रॉम्वेल को "राजा" बनाना पसन्द नहीं करते थे; और इसलिये उसने यह उपाधि स्वीकृत न की। परन्तु प्रस्ताव की और सब बातें मान ली गईं और उनके अनुसार शासन होने लगा। केवल "राजा" का नाम न था; परन्तु क्रॉम्वेल को सब तरह से राजा के से अधिकार प्राप्त थे। दूसरी बार उसके "संरक्षक" होने के उपलक्ष में बड़े समारोह से दरबार किया गया।

## (३) परराष्ट्र नीति

## (Foriegn Politics)

हॉलैण्ड से युद्ध—(प्रथम डच युद्ध) "आरमेडा" की पराजय के पश्चात् स्पेन की समुद्री शक्ति घटने लगी। अब सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैण्ड और हॉलैण्डकी समुद्री शक्ति का मुक़ाबला था। हालैण्डवालों ने अपने जहाज़ इतने बढ़ा लिये थे कि इस समय समस्त भूमण्डल के देशों में प्रायः विदेशी माल हालैण्ड के जहाजों के द्वारा ही आया जाया करता था। एक देश से दूसरे देश तक माल पहुँचाने में हालैण्ड एकाधिकारी सा हो रहा था। हालैण्ड का यह काम कम करके इंगलिश व्यापार की उन्नति करने के आशय से आंग्ल पार्लिमेण्ट ने सन् १६५१ में "समुद्री व्यापार-नियम" (Navigation Act) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि जितने देशों का माल इँगलैण्ड में आवे, वह या तो उन्हीं देशों के जहाजों द्वारा या इँगलिश जहाज़ों द्वारा पहुँ

चाया जाय। इस नियम का समाचार पाकर हॉलैण्डवाले भला कब चुप चाप बैठ सकते थे! उन्होंने शीघ्र ही इँगलैण्ड से युद्ध ठान दिया। युद्ध में पहले तो हॉलैण्डवालों की विजय हुई; परन्तु अन्त में इँगलिश समुद्री अफ़सर ब्लेक (Admiral Blake) ने हॉलैण्ड के जहाज़ी बेड़े को बुरी तरह परास्त किया। परिणाम यह हुआ कि हॉलैण्डवालों को सन्धि करनी पड़ी, जिसके अनुसार उन्हें इँगलिश चैनेल में इँगलिश पताका (English Flag) का सम्मान करने के लिये बाध्य होना पड़ा। एक प्रकार से उन्होंने "समुद्री व्यापार नियम" भी मान ही लिया; क्योंकि सन्धि में उसका कोई विरोध नहीं किया गया था। आगे चल कर हॉलैण्ड से दो और युद्ध हुए, जिनके विषय में चार्ल्स द्वितीय के विवरण में उल्लेख किया जायगा।

**स्पेन से युद्ध**—संरक्षक क्रॉम्वेल इँगलैंड को धर्मरक्षा के कार्य्य में समस्त प्रोटेस्टेन्ट राज्यों का नेता बनाना चाहता था। स्पेन की कैथोलिक जाति को आंग्ल सदा अपना शत्रु समझते थे। क्रॉम्वेल ने फ्रान्स के राजा लूइस चौदहवें (Louis XIV) को अपनी ओर मिला कर स्पेन के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। थोड़े ही दिनों में जमायका (Jamaica) द्वीप स्पेन से छीन लिया गया और तब से वह बराबर इँगलैण्ड के अधीन है। ब्लेक ने कई बार समुद्री युद्धों में स्पेनवालों को परास्त किया; परन्तु अन्त में इँगलैण्ड लौटते समय जहाज पर ही इस प्रसिद्ध समुद्री अफ़सर की मृत्यु हो गई।

**पर-राष्ट्र नीति का परिणाम**—क्रॉम्वेल की पर-राष्ट्र नीति पूर्णतया सफल रही। इसी लिये कहा जाता है कि "देश में

क्रॉम्वेल का यश उसके विदेशों में होनेवाले यश के सामने कुछ भी न था"। पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं की पर-राष्ट्र नीति की विफलता के कारण इँगलैण्ड की प्रतिष्ठा युरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में बहुत कम रह गई थी। परन्तु क्रॉम्वेल ने फिर इँगलैण्ड का यश देशान्तरों में फैला दिया। हॉलैण्ड पर विजय प्राप्त करने से इँगलैण्ड की व्यापारिक स्थिति में बहुत उन्नति हुई और अब इँगलिश व्यापारिक तथा सैनिक जहाज़ों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। इँगलैण्ड को अब स्पेनियों से, जिनका सोलहवीं शताब्दी में हर समय भय लगा रहता था, कुछ भी भय न रह गया। अब आंग्ल बेधड़क होकर देशान्तरों में उपनिवेश स्थापित करने लगे। क्रॉम्वेल की पर-राष्ट्र नीति में बस एक ही कमी थी। फ्रान्स को स्पेन के विरुद्ध सहायता देने से लूइस चौदहवें की शक्ति बहुत बढ़ गई; और आगे चल कर हम देखेंगे कि फ्रान्स की शक्ति से युरोपीय राष्ट्रों के शक्ति-सन्तुलन (Balance of Power) को उसी प्रकार भय हो गया, जिस प्रकार अब तक स्पेन से था।

## (४) क्रॉम्वेल के जीवन-चरित्र का सारांश
## (Cromwell's Career Summarised)

क्रॉम्वेल के विषय में जो कुछ ऊपर लिखा गया है, उसे हम पाठकों के सुभीते के लिये यहाँ संक्षेप में दोहरा देते हैं।

**राजा और पार्लिमेण्ट के युद्ध में भाग—क्रॉम्वेल** बड़ा वीर तथा साहसी था और युद्ध कला में बहुत निपुण था। जब से उसके "वीर सैनिक" (Ironsides) पार्लिमेण्ट-दल की

सेना में आ कर मिले, तभी से इस दल की विजय होने लगी। वह सैनिकों के चरित्र पर भी विशेष ध्यान देता था और उसने सेना की दशा में बहुत कुछ सुधार किया था। उसी के अनुरोध से "नई आदर्श सेना" (New Model Army) बनाई गई, जिसने गृह्य युद्ध में राज-पक्षवालों को परास्त किया। जब धार्मिक मतभेद तथा वेतन चुकाने के प्रश्न के कारण पार्लिमेण्ट और सेना में झगड़ा चला, तब क्रॉम्वेल ने पहले तो समझौता कराना चाहा; परन्तु जब उस प्रयत्न में सफलता न हुई, तब उसने सेना का पक्ष लेकर आन्दोलन करना आरम्भ किया। द्वितीय गृह्य युद्ध में क्रॉम्वेल ने स्कॉटलैण्ड की सेना को परास्त किया; और इससे उसकी प्रतिष्ठा और भी अधिक बढ़ गई।

**क्रॉम्वेल तथा प्रजातन्त्र राज्य**—चार्ल्स के प्राण दण्ड के पश्चात् जब प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई, तब क्रॉम्वेल राष्ट्रीय सभा ( Council of State ) के मुख्य सदस्यों में था। जब आयरलैण्ड और स्कॉटलैण्डवालों ने चार्ल्स द्वितीय का पक्ष लेकर युद्ध ठान दिया, तब क्रॉम्वेल ने सेना ले जाकर बड़ी वीरता से उन्हें परास्त किया। क्रॉम्वेल ने ही "क्षीण लॉक-सभा" (The Rump) का बलपूर्वक विसर्जन किया; और इसके पश्चात् "राज्यसाधन" ( Instrument of Government ) के अनुसार उसे संरक्षक" ( Lord Protector) की पदवी दी गई। थोड़े ही दिनों बाद "विनीत परामर्श तथा प्रार्थना" (Humble Advice and Petition ) के अनुसार उसको पूरे पूरे अधिकार मिल गये। क्रॉम्वेल ने "राजा" की पदवी स्वीकृत नहीं की; परन्तु राजा के अधिकार उसको पूर्णतया प्राप्त थे और उसे अपना

उत्तराधिकारी ( Successor ) नियत करने का भी अधिकार दे दिया गया था।

गृह्य नीति—क्रॉम्वेल ने शासन-कार्य्य में बड़ी योग्यता दिखाई। राजा और पार्लिमेण्ट के झगड़े बखेड़ों के पश्चात् देश में सुख और शान्ति स्थापित करना उसी का काम था। वह हृदय से देशभक्त था और सदा देशहित की ही चेष्टा करता रहता था। परन्तु जिस स्वतन्त्रता के लिये इतना रक्तपात हुआ था, वह क्रॉम्वेल के शासन काल में बस नाम मात्र ही थी। बिना संरक्षक की आज्ञा के कोई पुस्तक या लेख प्रकाशित न हो सकता था। खेल तमाशे एक दम बन्द कर दिये गये थे और पार्लिमेण्ट के चुनाव में ऐसे सदस्य, जो "संरक्षक" की नीति के विरोधी होते थे, कभी न आने पाते थे। क्रॉम्वेल का शासन वास्तव में "सैनिक शासन" ( Military Despotism ) था; और इसी कारण देश-हितैषी होने पर भी वह कभी सर्वप्रिय न हो सका।

धार्मिक नीति—क्रॉम्वेल ने देश में पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करने का प्रयत्न किया। सब धर्मोंवाले अपनी अपनी रीतियों के अनुसार ईश्वर-प्रार्थना कर सकते थे; परन्तु पोप के माननेवाले ( Papists ) इस काल में भी इस सुभीते और अधिकार से वंचित रखे गये। क्रॉम्वेल चर्चवालों के सदाचारी होने पर विशेष ध्यान देता था। उसने उनके चरित्रों की जाँच कराई और जो लोग दुराचारी पाये गये, उन्हें निकाल बाहर किया गया।*

* प्रजातन्त्र-राज्य के काल में आंग्ल चर्च का प्रबन्ध प्योरिटन सिद्धान्तों के अनुसार होता था, क्योंकि उस काल में प्योरिटन लोगों की संख्या

**पर-राष्ट्र नीति**—क्रॉम्वेल का यश विशेषतया उसकी पर-राष्ट्र नीति की सफलता के कारण है। उसने हॉलैण्डवालों को परास्त करके इँगलैण्ड के व्यापार की बहुत उन्नति की। चार्ल्स प्रथम और जेम्स प्रथम के राज्य-काल में युरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में इङ्गलैण्ड की प्रतिष्ठा बहुत कम रह गई थी; परन्तु क्रॉम्वेल की विजयों के कारण इङ्गलैण्ड का यश देशान्तरों में फैल गया और उसकी अन्तर-राष्ट्रीय स्थिति में भी बहुत उन्नति हो गई।

**क्रॉम्वेल के कार्य्यों की समालोचना**—क्रॉम्वेल के देश-हितैषी होने में कोई शंका नहीं हो सकती। उसने देश का बहुत उपकार किया। उस जैसे योग्य शासक की अनुपस्थिति में न जाने राजा के प्राण दण्ड के पश्चात् देश में क्या क्या भयंकर काण्ड होते। क्रॉम्वेल का शासन "सैनिक शासन" था, इस कारण वह सर्वप्रिय न हो सका; परन्तु यह उसी के प्रयत्न का फल था कि प्रजातन्त्र राज्य के काल में देश में सुख और शान्ति बनी रही। सब धर्मों को स्वतन्त्रता दी गई; और इस काल में पहली बार इँगलैण्ड, स्कॉटलैण्ड और आयरलैण्ड एक साम्राज्य में सम्मिलित हुए। अन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्र में क्रॉम्वेल ने इङ्गलैण्ड के लिये जो कुछ किया, उसके लिये देश सदा उसका कृतज्ञ रहेगा। क्रॉम्वेल के स्वेच्छाचारी परन्तु हितकारी शासन काल में गृह्य युद्ध के झगड़े बखेड़ों के पश्चात् देश को पुनः बल संचित करने का अवसर

---

राष्ट्र के कर्मचारियों में, अधिक थी। पुनः राज्य स्थापन (Restoration) के समय "प्योरिटन चर्च" (Puritan Church) के स्थान पर "आंग्ल चर्च" का प्रबन्ध पहले की भाँति फिर होने लगा।

मिल गया; और देशवासी उस उन्नति में सम्मिलित होने के लिये तैयार हो गये, जो पुनः राज्य स्थापन ( Restoratin ) के समय से आरम्भ हुई।

## ( ५ ) पुनः राज्य-स्थापन

## ( Events leading to the Restoration )

**रिचर्ड क्रॉम्वेल**—सन् १६५८ में क्रॉम्वेल की मृत्यु हुई। उसको अपना उत्तराधिकारी नियत करने का अधिकार दे दिया गया था; और अब उसका पुत्र रिचर्ड क्रॉम्वेल ( Richard Cromwell) उसके स्थान पर संरक्षक नियत हुआ। रिचर्ड शासन कार्य्य के लिये सर्वथा अयोग्य था और सेना से उस की बिलकुल न बनी। नौ ही महीने बाद उसे अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और वह फ्रान्स चला गया।

**अव्यवस्था का वर्ष**—संरक्षक के त्यागपत्र के पश्चात् एक वर्ष तक बहुत अव्यवस्था रही। सेना को अब बड़ी कठिनाई यह आ पड़ी थी कि शासन कार्य्य किस प्रकार चलाया जाय। राजा के समय की "प्रलंब पार्लिमेण्ट" का फिर अधिवेशन किया गया; और उसमें उन सदस्यों को भी बुलाया गया जिन्हें सैनिक अफसर प्राइड ने बलपूर्वक हटा कर इस पार्लिमेण्ट को "क्षीण सभा" ( The Rump ) बना दिया था। परन्तु पहले की भाँति इस पार्लिमेण्ट की सेना से फिर न बनी और गड़बड़ी बराबर जारी रही। ऐसी अवस्था में विचारशील देशवासियों ने समझ लिया कि बिना पुनः राजकीय शासन की स्थापना के देश में शान्ति नहीं हो सकती। यही विचार करके जनरल मांक ( General

Monck) जो उस समय प्रजातन्त्र राज्य की ओर से स्कॉटलैण्ड की सेना का सेनापति था, अपने सैनिकों को लेकर लन्दन पहुँचा; और उसके अनुरोध से "प्रलम्ब पार्लिमेण्ट" ने बिसर्जन होने का प्रस्ताव पास किया। इस पार्लिमेण्ट का तेरह वर्ष (१६४०—१६५३) तक अधिवेशन होने पर क्रॉम्वेल ने इस के "क्षीण भाग" का विसर्जन किया था; और अब एक वर्ष से कुछ अधिक (१६५९—१६६०) समय तक अधिवेशन होने पर इस पार्लिमेण्ट का अन्त हुआ।

पुनः राज्य-स्थापन (The Restoration)—अब एक नई पार्लिमेण्ट का निर्वाचन हुआ। उसके लिये राजा के नाम से निमन्त्रण नहीं हुआ था, इस कारण वह "प्रतिनिधि सभा" (The Convention) कहलाती है। इसी समय चार्ल्स प्रथम के पुत्र ने, जो अपने पिता के प्राण-दण्ड के समय से अपने को बराबर "चार्ल्स द्वितीय" कहता था, हालैण्ड के ब्रेडा नामक नगर से, जहाँ वह उस समय रहता था, एक घोषणा प्रकाशित की, जो "ब्रेडा की घोषणा" (Declaration of Breda) कहलाती है। इस में सब अपराधियों को क्षमा करने, धार्मिक स्वतन्त्रता देने और सेना का वेतन चुकाने इत्यादि का वचन था। इसका समाचार पाते ही "प्रतिनिधि सभा" ने निर्णय किया कि पूर्व परम्परा के अनुसार देश का शासन "राजा, लॉर्ड और लोक सभा" द्वारा हो। २९ मई १६६० को चार्ल्स द्वितीय ने लन्दन में प्रवेश किया और समस्त देशवासियों ने हृदय से उसका स्वागत किया। यह घटना इतिहास में "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के नाम से प्रसिद्ध है।

**प्रजातन्त्र राज्य की विफलता**—इस प्रकार प्रजातन्त्र राज्य का अन्त हुआ। कई कारणों से जनता इस राज्य से कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी। जनता की स्वतन्त्रता के नाम पर राजा से युद्ध हुआ था; परन्तु इन ग्यारह वर्षों में जनता के अधिकारों की रक्षा तो अलग रही, उलटे देश में स्पष्ट रूप से "सैनिक शासन" स्थापित हो गया। क्रॉम्वेल देशहितैषी अवश्य था; परन्तु उस का शासन वास्तव में सैनिक शासन था, इस कारण प्रजातन्त्र राज्य के प्रति जनता की सहानुभूति कभी न हो सकी। पुनः राज्य स्थापन से सब देशवासी प्रसन्न हुए; और यह विचार फैलने लगा कि रक्तपात के स्थान पर वैध रीति से आन्दोलन करना ही जनता के अधिकारों की रक्षा का एक मात्र मार्ग है।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६४९—प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना।
" १६५०—डन्बर का युद्ध।
" १६५१—वॉरसेस्टर का युद्ध।
" १६५१—"समुद्री व्यापार नियम"। ( Navigation Act )
" १६५३—क्रॉम्वेल का "संरक्षक" बनना।
" १६५२—१६५४—प्रथम डच युद्ध
" १६५८—क्रॉम्वेल की मृत्यु।
" १६६०—पुनः राज्य-स्थापन।

---

# चौथा परिच्छेद

## चार्ल्स द्वितीय

( सन् १६६०—१६८५ )

**चार्ल्स द्वितीय का स्वागत**—"पुनः राज्यस्थापन" (Restoration ) से सब देशवासी बहुत प्रसन्न हुए; क्योंकि प्रजातंत्र काल के "सैनिक-शासन" से सब लोग असन्तुष्ट थे। बड़े समारोह से चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक हुआ और जनता ने हृदय से राजा का स्वागत किया। चार्ल्स ने कहा—"यह मेरा ही अपराध है कि मैंने इससे पहले देश को लौटने का विचार न किया। यहाँ मैं जिससे मिलता हूँ, उससे यही पता लगता है कि देशवासी मेरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।" चार्ल्स द्वितीय के राजत्व काल के वर्णन को हम दो भागों में विभक्त करते हैं—( १ ) अन्तरराष्ट्रीय स्थिति ( Foriegn Politics ) और ( २ ) गृह्य स्थिति ( Domestic Politics )।

### ( १ ) अन्तरराष्ट्रीय स्थिति तथा डचों से युद्ध।

**चार्ल्स द्वितीय की परराष्ट्रनीति**—क्रॉम्वेल की भाँति चार्ल्स द्वितीय भी फ्रान्स से मित्रता रखना चाहता था और स्पेन तथा हॉलैण्ड को इँगलैण्ड का शत्रु समझता था। परन्तु क्रॉम्वेल और चार्ल्स में भारी अन्तर यह था कि चार्ल्स धीरे धीरे फ्रान्स के राजा लूइस चौदहवें के हाथों का बिलकुल खिलौना बन गया। चार्ल्स

की माता फ्रान्स की ही थी और प्रजातंत्र काल में चार्ल्स ने फ्रान्स में ही शरण ली थी। लूइस चौदहवाँ (Louis XIV) उसे धन की सहायता देता था; और उसी सहायता के भरोसे चार्ल्स को पार्लिमेण्ट से नये राजकर स्वीकृत कराने की अधिक आवश्यक-



चार्ल्स द्वितीय

ता न होती थी। लूइस के अनुरोध से चार्ल्स ने पुर्तगाल की राजकुमारी कैथराइन से विवाह किया। इस विवाह के दहेज में उसे भारतवर्ष के पश्चिमी तट का बम्बई नामक बन्दरगाह प्राप्त हुआ, जो उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को किराये पर दे दिया। पुर्तगाल

अभी फ्रान्स की सहायता से स्पेनवालों के आधिपत्य से निकलकर स्वतन्त्र हुआ था। लूइस ही की सम्मिति से चार्ल्स ने हॉलैण्ड-वालों से दो और युद्ध किये जिनका वृत्तान्त नीचे दिया जाता है।

द्वितीय डच युद्ध—(१६६५-१६६७)—सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इँगलैण्ड और हालैण्ड में व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता चल रही थी। इसी कारण क्रामवेल के शासन काल में प्रथम डच युद्ध (१६५२—१६५४) हुआ था (देखो पृष्ठ १६२) अब आंग्ल पार्लिमेण्ट ने फिर से "व्यापार-नियम" (Naviga-tion Act) पास किया; और इस बार यह भी आज्ञा दी कि आंग्ल उपनिवेश केवल इँगलैण्ड से ही व्यापार करें। ऐसे नियमों से हॉलैण्डवालों के व्यापार की बड़ी हानि होती थी; और इस कारण अपने व्यापार की रक्षा के लिये डच लोगों को दूसरी बार युद्ध करना पड़ा। इस समय ब्लेक जैसा साहसी जहाजी अफ़सर इँगलैण्ड में कोई न था; और धन की कमी के कारण चार्ल्स ने बहुत से जहाज़ों को हटा भी लिया था। डच लोग बड़ी सुगमता से टेम्स नदी में मेड्वे (Medway) तक बढ़ आये; और उन्होंने आकर बहुत से अँग्रेज़ी जहाज़ों का नाश कर डाला। परन्तु उसी समय फ्रान्स का राजा हॉलैण्ड की सीमा पर भारी सेना भेज कर आक्रमण करने की धमकी दे रहा था; और इस कारण हॉलैण्डवालों को इँगलैण्ड के विरुद्ध युद्ध बन्द करना पड़ा। ब्रेडा की सन्धि (Peace of Breda) के अनुसार यह निर्णय हुआ कि जिसने युद्ध में जो कुछ जीत लिया है, वह उसी के पास रहे। इस प्रकार इँगलैण्ड को अमेरिका का डच उपनिवेश न्यू ऐम्स्टरडम (New Amsterdam) मिला, जिस पर उन्होंने

युद्ध-काल में अधिकार जमा लिया था। अब इसका नाम न्यू यॉर्क ( New york ) रखा गया; क्योंकि उस समय अँग्रेजों का बड़ा अफसर ( Lord High Admiral ) चार्ल्स का छोटा भाई ड्यूक आफ़ यॉर्क था, जो बाद में जेम्स द्वितीय के नाम से इँगलैण्ड का राजा हुआ। इस उपनिवेश के प्राप्त होने के कारण उत्तरी अमेरिका के उत्तरीय तथा दक्षिणी आंग्ल उपनिवेश एक साथ मिल गये; और अब उत्तरी अमेरिका का समस्त पूर्वीय तट आंग्लों के अधीन हो गया। यही न्यू यॉर्क अमेरिका के वर्तमान संयुक्त राज्यों का मुख्य नगर तथा राजधानी है।

**डोवर की गुप्त सन्धि**—लूइस चौदहवें से चार्ल्स द्वितीय की मित्रता बराबर बढ़ती गई और सन् १६७० में दोनों ने डोवर नामक स्थान पर एक सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार दोनों ने मिल कर हॉलैण्ड को जीतने और उसे आपस में बाँट लेने का इरादा किया। इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने यह भी वचन दिया कि मैं शीघ्र ही अपने आपको कैथोलिक घोषित कर दूँगा और आंग्ल कैथोलिकों को भी पूरी सुविधाएँ दे दूँगा। यह भी निश्चित हुआ कि यदि ऐसा करने में इँगलैण्ड में कुछ विद्रोह होगा, तो फ्रान्स का राजा उसको शान्त करने के लिये धन तथा जन से सहायता देगा। इस सन्धि का केवल प्रथम भाग प्रकाशित किया गया, जिसके अनुसार हालैण्ड से युद्ध करना निश्चित हुआ था। द्वितीय भाग, जिसमें चार्ल्स के कैथोलिक होने की बात थी, पूर्णतया गुप्त रखा गया। यहाँ तक कि राज-मन्त्रियों तक को उस का पता न था। इङ्गलैण्ड की प्रोटेस्टेण्ट जनता को दबाने के लिये चार्ल्स का इस प्रकार गुप्त सन्धि करना यह सूचित करता

है कि उसे अपनी प्रजा के हित का कुछ भी ध्यान न था; और फ्रान्स के राजा से धन की सहायता पाने के लालच से वह उसको प्रसन्न करने के लिये सब कुछ करने को तैयार था।

तृतीय डच युद्ध ( १६७२—१६७४ )—डोवर की सन्धि के अनुसार चार्ल्स ने हालैण्ड के जहाजों पर आक्रमण कर दिया; और इस प्रकार अब तीसरी वार डच लोगों से युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में इँगलैण्ड की जनता ने राजा का साथ न दिया। आंग्ल लोग समझते थे कि चार्ल्स फ्रान्स के राजा के हाथों का खिलौना बन रहा है; और उसे इस बात का कुछ ध्यान नहीं है कि फ्रान्स को डचों के विरुद्ध सहायता देने से फ्रान्स की शक्ति कितनी अधिक बढ़ जायगी। इँगलैण्डवाले बराबर यह भी सुन रहे थे कि लूइस फ्रान्स के प्रोटेस्टेन्टों ( Hugenots ) पर बड़ा अत्याचार कर रहा है; और इस कारण इँगलैण्ड की जनता ने फ्रान्स से मित्रता दृढ़ करने के लिये डचों से युद्ध करने की नीति का पूर्णतया विरोध किया। उधर डचों ने वड़ी वीरता दिखाई और अपने बाँध तोड़ कर अपने देश की बहुत सी भूमि समुद्र के अर्पण कर दी, परन्तु उस पर शत्रुओं का अधिकार स्थापित न होने दिया। अन्त में चार्ल्स को डचों से सन्धि करनी पड़ी और इस प्रकार तृतीय डच युद्ध समाप्त हुआ। थोड़े ही दिनों बाद चार्ल्स द्वितीय के भाई ड्यूक आफ यॉर्क ( भावी जेम्स द्वितीय ) की पुत्री राजकुमारी मेरी का विवाह "डच प्रजातन्त्र" के अधिष्ठाता विलियम ऑफ ऑरेंज ( William of Orange) से कर दिया गया। इस प्रकार अब इँगलैण्ड और हालेण्ड में परस्पर मेल तथा सहानुभूति बढ़ने लगी। यही विलियम

ऑफ ऑरेंज "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" ( Glorious Revolution ) के पश्चात् "विलियम तृतीय" के नाम से इँगलैण्ड का राजा हुआ था।

## ( २ ) गृह्य स्थिति

**"प्रतिनिधि सभा" का प्रबन्ध**—हम पहले कह आये हैं कि "प्रलम्ब पार्लिमेण्ट" का विसर्जन करके जनरल मांक (General Monck ) ने एक नई पार्लिमेण्ट बुलाई थी, जो राजा की ओर से निमन्त्रित न होने के कारण "प्रतिनिधी सभा" ( Convention Parliament) कहलाती है। इसी सभा ने चार्ल्स द्वितीय को राजा घोषित किया था; और अब "पुनः राज्य स्थापन" (Restoration ) के पश्चात् उसी ने देश का प्रबन्ध करना प्रारम्भ किया। एक "क्षमा नियम" (Act of Indemnity ) पास किया गया, जिस के अनुसार उन सब लोगों को क्षमा कर दिया गया जिन्होंने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध युद्ध किया था। परन्तु जिन लोगों ने चार्ल्स के प्राण-दण्ड की आज्ञा पर हस्ताक्षर किये थे, उन्हें "राजा का घातक" ( Regicides ) ठहरा कर प्राणदण्ड दिया गया। उनमें से बहुत से इस समय संसार में न थे। ऐसे लोगों के मृतक शरीर कबरों से निकाल कर फाँसीघर में लटका दिये गये। उनमें से एक क्रामवेल भी था। उस का मृतक शरीर भी टाइबर्न के फाटक ( Tyburn Gate ) पर फाँसीके चौखटे पर लटकाया गया था। "नई आदर्श सेना" ( New Model Army ) का वेतन चुका कर अब उस का विसर्जन किया गया; परन्तु उसका कुछ भाग राजा की रक्षा के लिये रख लिया गया;

और इस प्रकार इँगलैण्ड की "स्थायी सेना" ( Standig Army) का प्रारम्भ हुआ ।

**"कैवेलियर पार्लिमेण्ट" तथा क्लैरेण्डन कोड**—मई सन् १६६१ में एक नई पार्लिमेण्ट का निर्वाचन हुआ, जिसने जनवरी सन् १७७९ तक कार्य्य किया। प्रजातन्त्र राज्य की विफलता देशवासी देख ही चुके थे। इस पार्लिमेण्ट के सदस्यों ने राजा के प्रति पूर्ण भक्ति दिखलाई; इस कारण यह "कैवेलियर पार्लिमेण्ट" ( Cavalier Parliament ) कहलाती है। गृह्य युद्ध में राज-पक्षवाले कैवेलियर कहलाते थे। अब प्योरिटन दलवालों से, जिनके नेताओं ने प्रजातन्त्र राज्य का कार्य्य चलाया था, जनता घृणा करने लगी थी। इस नई पार्लिमेण्ट ने प्योरिटन मतावलम्बियों को दबाने के हेतु चार राजनियम स्वीकृत किये—(१) "नगर-मण्डली नियम" ( Corporation Act ) जिसके अनुसार केवल वही लोग नगर की शासन सभाओं के सदस्य हो सकते थे जो आंग्ल चर्च की रीतियों को मानते थे। (२) "एकरूपता नियम" (Act of Uniformity) जिसके अनुसार सब पादरियों को आंग्ल चर्च की प्रार्थना-पुस्तक का व्यवहार करने के लिये बाध्य किया गया था। जिन्होंने इसे स्वीकृत न किया, वे निकाल बाहर किये गये; और २४ अगस्त सन् १६६२ (St. Bartholomew's Day) को लगभग दो हज़ार पादरी इसी आधार पर निकाले गये। (३) "धर्म-सभा नियम" (Conventicle Act) जिसके अनुसार आंग्ल चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त पाँच से अधिक लोग मिल कर प्रार्थना न कर सकते थे। इसका यह आशय था कि अन्य मतावलम्बी धार्मिक सभाएँ न कर सकें। और

(४) "पाँच मील नियम" (Five Mile Act) जिसके अनुसार निकाले हुए पादरी न तो किसी विद्यालय में अध्यापक हो सकते थे और न किसी बड़े नगर के चारों ओर पाँच मील की सीमा में आ सकते थे।

ये सब नियम मिल कर क्लैरेण्डन कोड (Clarendon Code) के नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि क्लैरेण्डन इस समय प्रधान मन्त्री था; और उसी के अनुरोध से प्योरिटन दल के विरुद्ध ये नियम बनाये गये थे। इन नियमों का परिणाम यह हुआ कि प्योरिटन दलवाले अब सदा के लिये आंग्ल चर्च से पृथक् हो गये और वे Non-Conformists, Dissenters, Sepratitsts इत्यादि नामों से पुकारे जाने लगे। प्रसिद्ध कवि जान मिल्टन (John Milton) और प्रसिद्ध पुस्तक "Pilgrim's Progress" के लेखक जान बुनियन (Iohn Bunyan) दोनों प्योरिटन थे। बुनियन को तो अपने धार्मिक विचारों के कारण बारह वर्ष तक बन्दीगृह में भी रहना पड़ा था और वहीं उसने अपनी उक्त प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी।

**प्लेग तथा अग्नि**—सन् १६६५ में इँगलैण्ड को एक घोर विपत्ति का सामना करना पड़ा। देश में प्लेग फैल गया और गंदी गलियों तथा घनी बस्ती के कारण शीघ्र ही इस महामारी ने भयंकर रूप धारण कर लिया। विशेषतया लन्दन नगर में हजारों आदमी मरने लगे और नगर बिलकुल ख़ाली होने लगा। ऐसी अवस्था में मृतक शरीरों का रीतिपूर्वक अन्तिम संस्कार करना असम्भव था। रात को एक बड़ी गाड़ी शहर में घूमती थी और प्रत्येक चौराहे पर गाड़ीवाला घंटी बजा कर पुकारता था—"अपने

घरों के मुरदे निकाल लाओ"। बस ये सब मुरदे गाड़ी में भर कर बड़े गड्ढों में फेंक दिये जाते थे।

अगले वर्ष दूसरी विपत्ति आई। लन्दन नगर में आग लग गई और नगर का बहुत सा भाग तहस नहस हो गया। ४०० गलियाँ, ८९ गिरजें, और १३,००० घर भस्म हो गये! परन्तु



क्रिस्टोफर रेन

इस भीषण आपत्ति से एक लाभ भी हुआ। नगर का गन्दा भाग बहुत कुछ नष्ट हो गया; और इसके पश्चात् लन्दन नगर नये और अच्छे ढंग से बसाया गया जिससे प्लेग जैसी महामारी का फिर फैलना असम्भव हो गया। इसी आपत्ति के पश्चात् क्रिस्टाफ़र रेन (Christopher Wren) द्वारा बहुत सी नई और सुन्दर

इमारतें देश में बनीं। सेएट पॉल का गिरजा ( St. Paul's Cathedral ) जो अग्नि से नष्ट हो गया था, फिर से बनाया गया। जिस जगह से अग्नि प्रारम्भ हुई थी, उस जगह पर इस घोर आपत्ति की स्मृति में एक ऊँचा स्तम्भ (The Monument) बना दिया गया।

**क्लैरेएडन का पतन**—एडवर्ड हाइड ( क्लैरेएडन ) "प्रतम पार्लिमेएट" का सदस्य रह चुका था और उसने उसके राजनीतिक सुधार के कार्य्य में बहुत कुछ सहायता की थी। परन्तु जब धार्मिक सुधार के प्रश्न पर लोक-सभा के सदस्यों में दो दल हो गये, तब वह "उच्च चर्च दल" (High Churchmen) का नेता हो गया। उसी के नेतृत्व में "उच्च चर्च दल" ने गृह युद्ध में राजा का साथ दिया था। चार्ल्स के प्राण दएड के पश्चात् वह उसके पुत्र के साथ रहा; और जब वह पुत्र "चार्ल्स द्वितीय" के नाम से राजा हुआ, तब उसने एडवर्ड हाइड ( Edward Hyde ) को अर्ल ऑफ़ क्लैरेएडन ( Earl of Clarendon ) बना कर अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। क्लैरेएडन ही के अनुरोध से प्योरिटन दल को दबाने के लिये नियम बनाये गये थे। वह राजा की फ्रांस से मित्रता रखने की नीति का समर्थक था और इस कारण देशवासी उसके विरुद्ध हो गये। पार्लिमेएट ने उस पर अभियोग चलाया और उसे प्रधान मन्त्री के पद से हटना पड़ा। अब वह फ्रांस चला गया और वहीं उसकी मृत्यु हुई।

**कैबेल**—अब चार्ल्स ने पाँच मन्त्रियों का एक मएडल नियुक्त किया जो कैबेल ( Cabal ) के नाम से प्रसिद्ध है। कैबेल फ्रेंच भाषा के शब्द ( "Cabale" (Fr) = "Club" ( Eng )

बना है और उसका अर्थ "विशेष प्रकार की मण्डली" है। संयोग से इन पाँचों मन्त्रियों के अँग्रेज़ी नामों के पहले अक्षरों को मिलाने से भी कैबेल (Cabal) शब्द ही बनता था *। परन्तु यह कैबेल आजकल के "मन्त्री-मण्डल" (Cabinet) की तरह न था। इन पाँचों मन्त्रियों के राजनीतिक विचार एक से न थे और ये सब एक साथ मिल कर कार्य्य भी नहीं करते थे।

"परीक्षा-नियम" (The Test Act)—चार्ल्स द्वितीय वास्तव में कैथोलिक मत का अनुयायी था; परन्तु आंग्ल जनता के विरुद्ध हो जाने के भय से वह ऊपर से आंग्ल चर्च की रीतियों का ही पालन करता था। "डोवर की गुप्त सन्धि" के पश्चात् उसने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इँगलैण्ड के कैथोलिकों को कुछ सुविधाएँ देने का विचार किया। उसने एक "अनिषेध घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की, जिसका आशय यह था कि सब धर्मावलम्बियों को अपने इच्छानुसार प्रार्थना करने का अधिकार है और धर्म के लिये राज्य की ओर से किसी को कोई दण्ड न दिया जायगा। राजा का यह कहना था कि मैं देश में धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहता हूँ; परन्तु लोग समझ गये कि इस घोषणा का यही आशय है कि राजा कैथोलिकों को सुविधाएँ देना चाहता है। पार्लिमेण्ट के विरोध के कारण राजा को यह घोषणा रद करनी पड़ी; और अब एक "परीक्षा-नियम" (The Test Act) पास किया गया, जिसके अनुसार राज्य के प्रत्येक पदाधिकारी को, उसे पद

* Clifford, Arlington, Buckingham, Ashley and Lauderdale.

देने से पहले, परीक्षा कर ली जाती थी कि वह आंग्ल चर्च की रीतियों को मानता है या नहीं।

इस नियम के कारण ड्यूक ऑफ़ यॉर्क (भावी जेम्स द्वितीय) ने प्रधान जहाजी अफ़सर ( Lord High Admiral ) के पद से त्याग-पत्र दे दिया। कैबेल के दो मन्त्रियों को अपने पद से हटना पड़ा; और शेष तीनों को राजा ने अलग कर दिया। इस प्रकार कैबेल नामक मन्त्री-मण्डल का भी अन्त हो गया।

डेन्बी—कैबेल के टूटने पर राजा ने डेन्बी ( Danby) को प्रधान मन्त्री बनाया। डेन्बी फ्रांस से मित्रता रखने के पक्ष में था; और उसी ने फ्रांस के राजा लूइस चौदहवें के विरोध होते हुए भी इँगलैण्ड तथा हॉलैण्ड की मित्रता स्थायी करने के आशय से डच प्रजातन्त्र राज्य के अधिष्ठाता विलियम ऑफ़ ऑरेंज से ड्यूक ऑफ़ यॉर्क ( भावी जेम्स द्वितीय ) की पुत्री राजकुमारी मेरी का विवाह कराया था। परन्तु चार्ल्स द्वितीय बराबर फ्रांस की मित्रता पर लट्टू बना रहा; और पार्लिमेण्ट के यथेष्ट धन की स्वीकृति न देने के कारण वह फ्रांस के राजा से धन की सहायता लेता रहता था। इसी आर्थिक सहायता के लालच से डेन्बी को भी फ्रांस से मित्र भाव का पत्र-व्यवहार करना पड़ता था। फ्रांस का राजा डेन्बी के पतन का अभिलाषी था; और उसने उसके द्वारा फ्रांस को लिखे हुए पत्रों से यह दिखाया कि डेन्बी इँगलैण्डवालों के सामने तो फ्रांस से मेल रखने का विरोध करता है, परन्तु गुप्त रूप से फ्रांस की मित्रता का पक्षपाती है। इस पर पार्लिमेण्ट ने डेन्बी पर अभियोग चलाया। चार्ल्स द्वितीय ने उसे क्षमापत्र प्रदान कर दिया।

उसने अपने बचाव के लिये वही क्षमा-पत्र उपस्थित किया; परन्तु पार्लिमेण्ट ने कह दिया कि देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख चलने-वाले अभियोग से बचने के लिये राजा का दिया हुआ क्षमा-पत्र निरर्थक है। डेन्बी को अपने पद से हटना पड़ा; और इस प्रकार पार्लिमेण्ट ने जतला दिया कि उसे राज-मन्त्रियों के कार्य्यों की देख रेख रखने का भी पूर्ण अधिकार है।

"स्वतन्त्रता-नियम"—सन् १६७९ में पार्लिमेण्ट ने एक बड़े महत्व का नियम स्वीकृत किया, जो "स्वतन्त्रता-नियम" (Haebus Corpus Act) के नाम से प्रसिद्ध है। यह नाम लैटिन भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ है–"तुम्हें उसे पेश करना होगा"। जो लोग दोष के निर्णय से पूर्व हवालात में रखे जाते थे, उनके मित्र इसके अनुसार जेलर के नाम यह आज्ञा प्राप्त कर सकते थे कि दोष का निर्णय होने के लिये अपराधी को तुरन्त न्यायालय में पेश किया जाय। इसका आशय यह था कि कहीं ऐसा न हो कि दोष के निर्णय की प्रतीक्षा में बहुत काल तक अपराधी को हवालात में कष्ट भोगना पड़े। इस नियम की भी गणना इँगलैण्ड के प्रसिद्ध "स्वतन्त्रता-पत्रों" (Charters of Liberty) में की जाती है।

पोपिश-षड्यन्त्र—इस समय कैथोलिक मतावलम्बियों के प्रति देशवालों की बिलकुल सहानुभूति न थी और वे घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। टाइटस ओट्स (Titus Oates) नामक एक बदमाश ने, जो अपनी धूर्तता के कारण आंग्ल चर्च से निकाल दिया गया था, यह झूठा समाचार फैला दिया कि आंग्ल चर्च पर भारी आपत्ति आनेवाली है। कैथोलिक लोग चार्ल्स

द्वितीय और राज्य के प्रधान कर्मचारियों को मार डालने के लिये षड्यन्त्र रच रहे हैं और वे ड्यूक ऑफ यॉर्क को राजा बनाना चाहते हैं। यह समाचार फैलाने से ओट्स का शायद यह अभिप्राय था कि आंग्ल चर्च को आनेवाली आपत्ति से सावधान करने के कारण लोग फिर मुझे आंग्ल चर्च में ले लें। यद्यपि यह समाचार झूठा था, पर फिर भी बहुत से लोगों को इस पर विश्वास हो गया; और बहुत दिनों तक देश में बड़ी हलचल मची रही।

"बहिष्कार प्रस्ताव"—चार्ल्स द्वितीय के कोई सन्तान न थी और उसका उत्तराधिकारी उसका कनिष्ठ भ्राता ड्यूक आफ़ यॉर्क ही था। ड्यूक ने "परीक्षा नियम" के स्वीकृत होने पर अपने प्रधान जहाजी अफ़सर के पद से त्यागपत्र दे दिया था; और इस कारण सब लोग जान गये थे कि वह पक्का कैथोलिक है। ऐसे समय में जब कि कैथोलिकों के प्रति इतनी घृणा थी और पोपिश षड्यन्त्र के समाचार देश में फैल रहे थे, जनता यह कभी पसन्द न कर सकती थी कि वह देश का राजा हो। पार्लिमेण्ट में एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया जो "बहिष्कार नियम" (Exclusion Bill) के नाम से प्रसिद्ध है। उसका यह आशय था कि ड्यूक आफ यॉर्क को गद्दी न मिले। लोक सभा में यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया, परन्तु लार्ड-सभा ने इसे स्वीकृत न किया। बिना पार्लिमेण्ट की दोनों सभाओं में स्वीकृत हुए यह प्रस्ताव राजनियम न बन सकता था; और इसलिये ड्यूक ऑफ यॉर्क को गद्दी से वंचित रखने का प्रयत्न सफल न हो सका।

ह्विग और टोरी दल—जिस समय "बहिष्कार नियम" पर

वाद विवाद हो रहा था, उस समय पार्लिमेण्ट में दो दल हो गये। इस प्रस्ताव के समर्थकों का मत था कि पार्लिमेण्ट को राजसिंहासन के प्रश्न के निर्णय का पूर्ण अधिकार है। इसके विपक्षवालों का मत था कि ऐसे प्रश्नों पर विचार करना एक प्रकार से राज्याधिकार पर आघात करना है। उस समय के ये दोनों दल स्थायी हो गये और आंग्ल इतिहास में ये ह्विग ( Whig ) तथा टोरी (Tory) नामों से प्रसिद्ध हैं। ह्विग का अर्थ स्कॉटलैण्ड के समाज में "खट्टा दूध" और टोरी का अर्थ आयरलैण्ड के समाज में "लुटेरा" था; और पहले दोनों दलवाले इन नामों का प्रयोग एक दूसरे को चिढ़ाने के लिये किया करते थे। परन्तु धीरे धीरे यही नाम स्थायी हो गये। आगे चल कर ह्विग लोग पार्लिमेण्ट के अधिकार के और टोरी लोग राजा के अधिकार के पक्षपाती हो गए। इन दोनों राजनीतिक दलों में से कभी एक और कभी दूसरे के हाथों में देश का शासन कार्य्य रहा। आगे चल कर हम बतलावेंगे कि इन्हीं राजनीतिक दलों के बनने से "दलबन्दी के शासन" ( Party Government ) का प्रारम्भ हुआ।

**चार्ल्स द्वितीय का चरित्र**—६ फरवरी सन् १६८५ को चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हुई। मरते समय उसने अपने को कैथोलिक मत का अनुयायी बतलाया और कैथोलिक रीतियों के अनुसार ही उसका अन्तिम संस्कार हुआ। अपने शासन काल में भी उसने कैथोलिकों को सहायता देने की चेष्टा की थी; परन्तु जनता के विरुद्ध हो जाने के भय से वह अपने कैथोलिक भावों को हृदय में ही रख कर बाहर से आंग्ल चर्च से मिला रहता था। चार्ल्स को कला कौशल तथा साहित्य से बड़ा प्रेम था और उसके राज्य

काल में रॉयल सोसाइटी ( Royal Society ) की स्थापना हुई, जिस के सदस्य होने में इस समय समस्त संसार के बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्वान् भी अपना गौरव समझते हैं। परन्तु चार्ल्स विषयी भी पूरा था और उसका दरबार व्यभिचार के लिये सारे युरोप में बदनाम था। उसने राजकोष का बहुत सा धन अपने भोग विलास में लुटा दिया। उस काल के एक कार्टून ( Cartoon ) या उपहास-चित्र में वह दो स्त्रियों के बीच में ख़ाली जेब लटकाये खड़ा हुआ दिखलाया गया है। चार्ल्स में केवल यही गुण था कि वह जनता को अपने विरुद्ध न होने देता था। जब जनता ने उसके मन्त्रियों की नीति का विरोध किया, तब वह उन्हें पद से हटाने को तैयार हो गया। जब उसके सब धर्म्मों को स्वतन्त्रता देने की घोषणा को देशवासियों ने ना-पसन्द किया, तब उसने उसे लौटा लिया। इसी कारण वह उस परिणाम से बच गया, जो उसके पिता का हुआ था या जो आगे चल कर उसके कनिष्ठ भ्राता जेम्स द्वितीय का हुआ।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६६०—चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक।
" १६६५-१६७०—द्वितीय डच युद्ध।
" १६७०—डोवर की गुप्त सन्धि।
" १६७२-१६७४—तृतीय डच युद्ध।
" १६६५—भयंकर प्लेग। (The Great Plague)

„ १६६६—भयंकर अग्नि। (The Great Fire)
„ १६६७—क्लैरेण्डन का पतन।
„ १६७३—"परीक्षा नियम" ( Test Act )
„ १६७८—डेन्बी का पतन।
„ १६७९—"स्वतन्त्रता नियम"। (Haebus Corpus Act)
„ १६८०—"बहिष्कार प्रस्ताव" ( The Exclusion Bill ) का अस्वीकृत होना।
„ १६८५—चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु।

---

## पाँचवाँ परिच्छेद



### जेम्स द्वितीय (१६८५—१६८८)

जेम्स द्वितीय—चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका कनिष्ठ भ्राता ड्यूक ऑफ यॉर्क, जिसे गद्दी से वंचित रखने के



जेम्स द्वितीय

प्रयत्न की विफलता का वर्णन पहले हो चुका है, "जेम्स द्वितीय" के नाम से राजा हुआ। जेम्स पक्का कैथोलिक था। यद्यपि उसने

राज्याभिषक के समय यह वचन दिया था कि मैं आंग्ल चर्च को कोई हानि न पहुँचाऊँगा, परन्तु फिर भी अपने शासन काल में उसका मुख्य उद्देश्य बराबर यही रहा कि कैथोलिक मत का खूब प्रचार हो। वह जानता था कि कैथोलिक मातावलम्बियों की सहायता करने से जनता मेरे विरुद्ध हो जायगी; परन्तु उसे जनता के विरोध की लेश मात्र भी परवाह न थी; और इसी कारण देश में भारी "राज्यक्रान्ति" हुई, जिस का वर्णन इस परिच्छेद में किया जायगा।

**मनमथ का विद्रोह**—"बहिष्कार नियम" के ह्विग समर्थकों ने चार्ल्स द्वितीय के एक दोगले लड़के ड्यूक ऑफ मनमथ (Duke of Monmouth) को गद्दी देना चाहा था। इस मनमथ ने अब ह्विग दल की सहायता से विद्रोह ठान दिया और उसके प्रोटेस्टेण्ट होने के कारण कुछ देशवासियों ने भी उसका साथ दिया। जेम्स द्वितीय ने इस विद्रोह को दबाने के लिये सेना भेजी, जिसने सेजमूर (Sedgemoor) नामक स्थान पर विद्रोहियों को परास्त किया। मनमथ भाग निकला; परन्तु वह शीघ्र ही पकड़ा गया और राजद्रोह के अपराध में उसे प्राणदण्ड दिया गया।

**"खूनी न्यायालय"**—मनमथ के बहुत से सहायक भी पकड़े गये और उनको दण्ड देने के लिये जेम्स ने जेफ्रे (Jeffrey) नामक एक बड़े ही निठुर और निर्दय न्यायाधीश को नियुक्त किया। जेफ्रे ने विद्रोहियों को कड़े दण्ड दिये। यहाँ तक कि बहुत से निर्दोष कृषक भी, जिनके खेतों में से होकर विद्रोहियों का दल आया था, दण्ड के भागी ठहराये गये। तीन सौ से अधिक

आदमियों को फाँसी दी गई। इसके सिवा लगभग आठ सौ आदमियों को दास बना कर बेच दिया गया और उन्हें पश्चिमी द्वीप समूह (West Indies) में कड़ी धूप में मिट्टी खोदने का काम दिया गया। इन अत्याचारों के कारण जेफ्रे का न्यायालय इतिहास में "खूनी न्यायालय" (Bloody Assisez) कहलाता है। राजा ने जेफ्रे का कार्य्य पसन्द किया और उसे प्रधान न्यायाधीश (Lord Chancellor) का पद दिया।

जेम्स का नियम भंग करना-"परीक्षा नियम" (Test Act) के अनुसार केवल आंग्ल चर्च के अनुयायी ही राज्य के कर्मचारी हो सकते थे। जेम्स ने देखा कि इससे कैथोलिकों को बड़ी हानि पहुँचती है, इसलिये उसने "परीक्षा नियम" को रद करना चाहा; परन्तु पार्लिमेण्ट उसे रद करने के लिये तैयार न हुई। इस पर जेम्स ने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर राजा को नियमों के स्थगित करने का अधिकार (Dispensing Power) है; और इस अधिकार का प्रयोग करके कैथोलिक तथा प्योरिटन दलवालों के विरुद्ध जितने नियम थे, उन सब को उसने रद कर दिया। जनता ने इसका विरोध किया; क्योंकि यदि यह मान लिया जाय कि राजा को नियमों के स्थगित करने का अधिकार है, तो नियमानुमोदित या वैध शासन (Constitutional Government) का बिलकुल अन्त हो जाता। जेम्स ने देशवासियों के विरोध की कुछ भी परवाह न की और कैथोलिकों को सेना तथा राज्य में बड़े बड़े पद देना आरम्भ कर दिया। यही नहीं बल्कि उसने रोम के पोप को निमन्त्रित करके इँगलैण्ड में राज्य की ओर से उसका स्वागत किया और इस आशय की एक "अति-

घोषणा" ( Declaration of Indulgence ) प्रकाशित की कि आंग्ल चर्च के विरोधियों के विरुद्ध जितने नियम बन चुके हैं, अब उनका प्रयोग न किया जायगा।

**जेम्स और विश्वविद्यालय**—इँगलैण्ड में इस समय दो बड़े विश्वविद्यालय थे—एक कैम्ब्रिज ( Cambridge ) में और दूसरा ऑक्सफ़ार्ड (Oxford) में। इन दोनों में केवल प्रोटेस्टेण्ट अध्यापक ही नियुक्त होते थे; और उनमें कैथोलिकों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। जेम्स इन विश्वविद्यालयों में भी कैथोलिक विचार फैलाना चाहता था; क्योंकि वहीं से शिक्षा पाये हुए युवक आगे चल कर देश और जाति के नेता होते थे। इसी लिये जब ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के मैग्डैलन कालिज ( Magdalen College ) के अधिष्ठाता की जगह ख़ाली हुई, तब जेम्स ने पार्कर (Parker) नामक एक कैथोलिक को उस पद पर नियुक्त कर दिया। विश्वविद्यालय के सदस्यों ने इसका विरोध किया; क्योंकि इस पद के लिये निर्वाचन करके नियुक्ति करने का केवल उन्हीं लोगों को अधिकार था। देश में इतना जोश फैला कि पार्कर के लिये अधिष्ठाता के स्थान का ताला खोलने के लिये कोई लोहार तैयार न होता था। जेम्स ने पार्कर को बल-पूर्वक मैग्डैलन कालिज का अधिष्ठाता बनाया; और ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के जिन सदस्यों ने उसका विरोध किया था, उन्हें निकाल बाहर किया। उन सदस्यों का जनता ने हार्दिक स्वागत किया; और देश के धनाढ्य पुरुषों ने उन्हें आदरपूर्वक अपने यहाँ रहने का स्थान दिया।

**जेम्स और सात पादरी**—अप्रैल सन् १६८८ में जेम्स ने

दूसरी बार वही "अनिषेध घोषणा" ( Declaration of Indulgence ) प्रकाशित की जिसका अभिप्राय यह था कि आंग्ल चर्च के विरोधियों के विरुद्ध जितने राजनियम हैं, वे सब स्थगित किये गये। पादरियों को आज्ञा दी गई कि जगह जगह गिरजाघरों में यह घोषणा पढ़ कर सुनावें। इस पर कैएटरवरी के बड़े पादरी (Archbishop of Canterbury) और छः अन्य पादरियों ने मिल कर जेम्स को इस आशय का एक प्रार्थनापत्र दिया कि कम से कम देवालय में तो राजनियमों का खण्डन करने वाली घोषणा न पढ़वाई जाय। जेम्स ने इसमें अपना अपमान समझा; और पादरियों पर, राजा के विरुद्ध विद्रोह फैलाने का अपराध लगा कर, अभियोग चलाया। न्यायालय ने पादरियों को निर्दोष ठहराया; और यह समाचार पाकर देश भर में खुशी मनाई गई। इससे पता चलता है कि देशवासी उस समय राजा से कितने असन्तुष्ट थे; और आंग्ल चर्च पर होनेवाले आघात को बिलकुल सहन न कर सकते थे।

**जेम्स के घर पुत्र-जन्म**—अब तक जनता यही समझ कर जेम्स के अत्याचारों को किसी प्रकार सहन कर रही थी कि यह दुःख थोड़े ही दिनों का है। जेम्स की वृद्धावस्था थी और उसके कोई पुत्र न होने के कारण उसकी पुत्री राजकुमारी मेरी ही उसकी उत्तराधिकारिणी थी। पिता के कैथोलिक होने पर भी मेरी सच्ची प्रोटेस्टेएट थी और उसका विवाह भी युरोप में प्रोटेस्टेएट दल की रक्षा करनेवाले विलियम ऑफ़ ऑरेंज से हुआ था। परन्तु १० जून सन् १६८८ को जेम्स के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। यह समाचार पाकर देश में बड़ी

खलबली मची। सब ने यही सोचा कि इस पुत्र की कैथोलिक ढंग से शिक्षा होगी; और यही जेम्स के बाद राज-सिंहासन का अधिकारी होगा। इस प्रकार देश में बराबर कैथोलिक राजाओं का शासन रहेगा; और आंग्ल चर्चवालों के साथ वर्तमान शासन के से अत्याचार हुआ करेंगे। अब इस आपत्ति से बचने का "राज्यक्रान्ति" के अतिरिक्त और कोई साधन न रह गया।

**विलियम ऑफ ऑरेंज को निमन्त्रण**—ऐसी अवस्था में इँगलैण्ड की जनता ने विलियम ऑफ ऑरेंज को देश तथा चर्च की रक्षा करने के लिये अपना राजा बनाने के उद्देश्य से निमन्त्रित किया। एक विश्वासपात्र दूत यह निमन्त्रण-पत्र लेकर हॉलैण्ड भेजा गया। उस निमन्त्रण-पत्र पर इँगलैण्ड के मुख्य मुख्य नेताओं के हस्ताक्षर थे। विलियम एक ओर जेम्स द्वितीय की बड़ी पुत्री राजकुमारी मेरी का पति था; और दूसरी ओर उसकी माता का भी नाम मेरी था, जो चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय की बहिन होती थी। विलियम इस प्रकार जेम्स द्वितीय का भान्जा भी था और दामाद भी। वह इस समय युरोप में प्रोटेस्टेण्ट मत की रक्षा के लिये फ्रान्स के राजा लूइस चौदहवें से युद्ध कर रहा था; और यह सोच कर कि इस युद्ध में इङ्गलैण्ड की सहायता प्राप्त करने का यह अच्छा अवसर है, उसने निमन्त्रण स्वीकृत किया और कुछ सेना लेकर इङ्गलैण्ड आ पहुँचा।

**"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति"**—विलियम के इँगलैण्ड पहुँचते ही देश के सब नेता उससे जा मिले। इनमें जॉन चर्चिल (John Churchill) भी था जो आगे चल कर ड्यूक ऑफ मार्लबरो (Duke of Marlborough) हुआ। जेम्स द्वितीय

की सेना ने उसका साथ न दिया और विलियम बिना रुकावट लन्दन पहुँच गया। इस समय जेम्स ने जनता को प्रसन्न करने के लिये बहुत से वचन दिये; परन्तु देशवासियों को उस पर बिल्कुल विश्वास न रह गया था। ऐसी अवस्था में जेम्स ने अपनी प्राण-रक्षा के लिये यही उचित समझा कि इङ्गलैंड छोड़ कर भाग जाय। वह फ्रान्स चला गया और लूइस चौदहवें के यहाँ जाकार उसने शरण ली।

अब आंग्ल पार्लिमेण्ट ने यह घोषणा की कि जेम्स द्वितीय देश छोड़ कर भाग गया है; अतः उसके इस भाग जाने को उसका राजसिंहासन का त्याग समझना चाहिए। अब पार्लिमेण्ट ने विलियम और उसकी धर्मपत्नी मेरी को "संयुक्त शासक" (Joint Soverlegns) बनाया। शासन कार्य्य वास्तव में विलियम के ही हाथ में रहा; परन्तु मेरी का नाम उसके साथ इसलिये सम्मिलित कर दिया गया था कि वह जेम्स द्वितीय की बड़ी पुत्री होने के कारण राजसिंहासम की नियमानुसार उत्तराधिकारिणी कही जा सकती थी। पार्लिमेण्ट यह दिखलाना चाहती थी कि राज्य में कोई भारी परिवर्तन नहीं हुआ है। जेम्स द्वितीय के राज-सिंहासन त्याग देने के पश्चात् उसकी उत्तराधिकारिणी राजकुमारी मेरी को गद्दी दी गई और मेरी के साथ उसके पति विलियम को भी "विलियम तृतीय" के नाम से राजा मान लिया गया। अब रहा जेम्स द्वितीय का नव-जात पुत्र; सो उसके विषय में कुछ लोगों को यह सन्देह था कि वह वास्तव में जेम्स की रानी का पुत्र नहीं है। देश में यह समाचार फैल रहा था कि जेम्स ने अपनी प्रोटेस्टेण्ट पुत्री को राजसिंहासन से वंचित रखने

के लिये किसी प्रसूतिका भवन से एक लड़का मँगा कर उसे रानी की सन्तान प्रसिद्ध कर दिया है। इस पुत्र और तत्पश्चात् इसके लड़के ने इँगलैण्ड का राजसिंहासन प्राप्त करने के लिये जो निष्फल प्रयत्न किये, उनका वर्णन आगे चल कर किया जायगा। इतिहास में ये Pretenders ( मिथ्या अधिकार जतलानेवाले ) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जेम्स द्वितीय के स्थान पर "विलियम और मेरी" के राज्याभिषेक की घटना को आंग्ल इतिहास में "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" ( The Glorious Revolution ) कहते हैं। जेम्स राजसिंहासन छोड़ कर भागने पर बाध्य हुआ, इसलिये यह घटना "राज्यक्रान्ति" तो अवश्य हुई; परन्तु यह राज्यक्रान्ति गौरवपूर्ण इसलिये हुई कि इसमें रक्तपात का नाम भी न था—न कोई युद्ध हुआ और न कोई प्राण-हत्या हुई। बहुत शान्तिपूर्वक जेम्स द्वितीय राजसिंहासन से हट गया और उसकी पुत्री तथा जामाता का राज्य स्थापित हो गया।

"अधिकार नियम" (Bill of Rights)—विलियम और मेरी को राजसिंहासन देते समय पार्लिमेण्ट ने "नियमानुमोदित या वैध शासन" की रक्षा के लिये उनसे कुछ शर्तें ठहरा लीं और अगले वर्ष विलियम के राज्यकाल की प्रथम पार्लिमेण्ट ने इन शर्तों को एक राजनियम के रूप में स्वीकृत किया। यह "अधिकार नियम" ( Bill of Rights ) के नाम से प्रसिद्ध है; और आंग्लों का तीसरा स्वतन्त्रतापत्र ( Third Great Charter of English Liberty) माना जाता है। दूसरा चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल का "अधिकारपत्र" ( Petition of Rights )

और पहला राजा जॉन का "महास्वतन्त्रता पत्र" (The Magna Charta) था, जिनके विषय में पहले उल्लेख हो चुका है। "अधिकार नियम" की मुख्य मुख्य धाराएँ ये थीं—(१) राजा को देश के नियमों के भंग करने या कुछ काल के लिये स्थगित करने का कोई अधिकार नहीं है। (२) पार्लिमेण्ट के सदस्यों के चुनाव में किसी प्रकार का दबाव न डाला जाय और उनको पार्लिमेण्ट भवन में समस्त विषयों पर स्वतन्त्रतापूर्वक मत प्रकाशित करने दिया जाय। (३) राजा को बिना पार्लिमेण्ट की स्वीकृति के किसी रूप में जनता पर कर लगाने का अधिकार नहीं है। (४) कोई कैथोलिक या जिसका विवाह किसी कैथोलिक से हुआ हो, इँगलैण्ड के राजसिंहासन का अधिकारी नहीं हो सकता।

"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" का राजनीतिक महत्व (Constitutional Importance of the Glorious Revolution)—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" ने यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि जिस राजा को जनता के प्रतिनिधि न चाहें, वह राजसिंहासन पर नहीं रह सकता। राजा को जनता की इच्छा के अनुसार ही कार्य्य करना पड़ेगा; और शासन नीति में उसे पार्लिमेण्ट की बात माननी पड़ेगी। विलियम और मेरी को राज-सिंहासन देकर पार्लिमेण्ट ने यह भी दिखला दिया कि वही नियमानुसार राजा है, जिसका राज्याधिकार पार्लिमेण्ट स्वीकृत करे। परन्तु पार्लिमेण्ट ने इस समय के प्रस्तावों में कोई ऐसी बात नहीं रखी जिससे भविष्य में "राज्यविप्लव" के पक्षपाती (Revolutionaries) लाभ उठा सकें। "अधिकारपत्र

में जेम्स द्वितीय के राजसिंहासन से हटाये जाने या इँगलैंण्ड के राजा की नियुक्ति चुनाव के सिद्धान्त के अनुसार होने का कहीं उल्लेख नहीं था। उसमें केवल प्राचीन राजनीतिक सिद्धान्त, फिर से पुष्ट करने के आशय से, दुहरा दिये गये थे। इससे यही अभिप्राय था कि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा भी हो जाय और देश की शासन प्रणाली में भी कोई भारी परिवर्तन करने की आवश्यकता न हो। आगे चल कर हम देखेंगे कि "फ्रांस की राज्य-क्रान्ति" (The French Revolution) इससे बिलकुल भिन्न ढंग की थी। उसमें घोर रक्तपात हुआ; और देश में कोई स्थायी शासन प्रणाली भी अधिक काल तक न रह सकी।

इँगलैंण्ड की "गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" से स्टुअर्ट काल के राजा और पार्लिमेंण्ट के झगड़े का अन्त माना जाता है। यह पहले चारों स्टुअर्ट राजाओं के राज्यकाल में बराबर चलता रहा। स्टुअर्ट राजा अपना "दैवी अधिकार" (Divine Right of Kings) जतला कर पार्लिमेंण्ट को दबाना चाहते थे; परन्तु इस प्रयत्न में वे सफल न हो सके। अन्त में पार्लिमेंण्ट ही की विजय हुई और अब "राजकीय एक-तन्त्र राज्य" (Monarchial Despotism) के स्थान पर "नियमानुमोदित या वैध शासन" (Constitutional Government) की स्थापना हुई। आगे चल कर भी पार्लिमेंण्ट के सुधार आदि के लिये बहुत कुछ आन्दोलन की आवश्यकता हुई; परन्तु इसके पश्चात् इस बात में कोई सन्देह न रह गया कि देश के शासन कार्य्य की बागडोर वास्तव में पार्लिमेंण्ट के हाथ में है और राजा को देश के प्रतिनिधियों की बात माननी पड़ेगी।

"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" और गृह्य युद्ध द्वारा राज्यक्रान्ति का मुक़ाबला—हम बतला आये हैं कि चार्ल्स प्रथम को हटाने के लिये जो राज्य-क्रान्ति हुई थी, वह वास्तव में विफल रही। उसके लिये गृह्य युद्ध (Civil War) का रक्तपात हुआ और अन्त में राजा को भी प्राण दण्ड दिया गया। परन्तु इस सब का परिणाम यह हुआ कि प्रजातन्त्र-राज्य के समय में देश में "सैनिक राज्य" (Military Despotism) की स्थापना हो गई; और जनता की स्वतन्त्रता पर और भी आघात हुआ। इस राज्य-क्रान्ति की विफलता का मुख्य कारण यह था कि राजा को नियमानुमोदित या वैध शासन के सूत्र में बाँधने के उद्देश्य के साथ एक धार्मिक प्रश्न भी लगा हुआ था। हम कह आये हैं कि धार्मिक प्रश्न पर ही "प्रलम्ब पार्लिमेण्ट" (Long Parliament) में दो दल हुए और उनमें से एक दल ने राजा का साथ दे दिया। "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" के समय समस्त आंग्ल जाति एक मत थी। केवल थोड़े से कैथोलिक ही जेम्स द्वितीय के सहायक थे। इस समय केवल राजनीतिक प्रश्न था और नियमानुमोदित शासन की रक्षा के लिये प्योरिटन दल तथा उच्च चर्च दल दोनों ने मिल कर कार्य्य किया। राजनीतिक दलों में से भी दोनों दलों की "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" से सहानुभूति थी। ह्विग दल ने पार्लिमेण्ट की विजय की दृष्टि से और टोरी दल ने सनातन शासन प्रणाली में कोई भारी परिवर्तन न होने के कारण इसमें हृदय से योग दिया; और इस प्रकार जाति के समस्त दलों की सहायता होने के कारण "गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" पूर्णतया सफल रही।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६८५—जेम्स द्वितीय का राज्याभिषेक।
" १६८५—सेजमूर का युद्ध।
" १६८५—"खूनी न्यायालय"। ( The Bloody Assizes )
४ अप्रैल " १६८७—प्रथम "अनिषेध घोषणा"। ( First Declaration of Indulgence )
२२ अप्रैल " १६८८—द्वितीय "अनिषेध घोषणा"। ( Second Declaration of Indulgence )
" १६८८—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति"। (The Glorious Revolution )
" १६८९—"अधिकार नियम"। (Bill of Rights)

---

# छठा परिच्छेद

## विलियम और मेरी; तथा रानी एनी।

### (१) अंतरराष्ट्रीय स्थिति (१६८८-१७१४)

**फ्रांस का राजा लूइस चौदहवाँ**—इस समय युरोप में फ्रांस के राजा लूइस चौदहवें की शक्ति बहुत बढ़ी चढ़ी थी। उसके पास उस युग के सर्वश्रेष्ठ मन्त्री, इंजीनियर तथा सेनापति थे, और उसकी इच्छा थी कि युरोप के समस्त राज्यों पर मेरा आधिपत्य हो जाय। वह भारतवर्ष के मुग़ल सम्राट् औरंगज़ेब का समकालीन था; और ये दोनों सम्राट् कई बातों में समान भी थे। लूइस किसी पर विश्वास न करता था और उसके शासन का प्रधान अंश गुप्तचर विभाग था। वह पक्का कैथोलिक भी था और फ्रांस के प्रोटेस्टेएट दल ( Hugenots ) के साथ उसने बड़ा अत्याचार किया। हम बतला चुके हैं कि इँगलैएड के राजा चार्ल्स द्वितीय ने उससे "डोवर की गुप्त सन्धि" की थी; और उससे आर्थिक सहायता पाने की आशा से चार्ल्स ने इँगलैएड के कैथलिकों को सुविधाएँ देने की उसकी शर्त मंजूर कर ली थी। जेम्स द्वितीय को भी लूइस आर्थिक सहायता देता था; और हम पहले कह आये हैं कि जेम्स ने इँगलैएड से भाग कर फ्रांस में ही शरण ली थी। लूइस यही चाहता था, कि इँगलैएड के राजा मेरी मुट्ठी में रहें और युरोपीय युद्धों में बराबर मेरा साथ दिया करें।

विलियम तृतीय का परराष्ट्र नीति—"गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" ने लूइस चौदहवें के सब मन्सूबे बिगाड़ दिये। अब इँगलैण्ड में राज-सिंहासन पर विलियम तृतीय था जिसका समस्त जीवन लूइस के विरुद्ध युद्ध करने में व्यतीत हुआ था। विलियम ने युरोप के प्रोटेस्टेण्ट राज्यों का नेता बनकर लूइस को खूब तंग



चौदहवाँ लूइस

किया था; और अब इँगलैण्ड के राजा होने पर वह फ्रान्स की शक्ति को रोकने की नीति का और भी दृढ़तापूर्वक पालन करने लगा। यदि लूइस चौदहवें की नीति सफल हो जाती, तो युरोप के राष्ट्रों के शक्ति-संतुलन ( Balance of Power ) में बड़ी बाधा पड़ती और फ्रान्स की शक्ति इतनी बढ़ जाती कि अन्य

राज्यों को उससे सर्वदा भय बना रहता। विलियम ने युरोप में लूइस की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के आशय से कुछ राज्यों का एक संघ बनाया था। उसके इँगलैण्ड के सिंहासन पर बैठने के समय से इँगलैण्ड की पर राष्ट्र नीति में भारी परिवर्तन हो गया। अब जेम्स द्वितीय और चार्ल्स द्वितीय की फ्रान्स से मित्रता की नीति



विलियम तृतीय

का अन्त हो गया और "गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" के समय से इँगलैण्ड और फ्रान्स के पारस्परिक युद्ध का काल आरम्भ हुआ।

**फ्रान्स से प्रथम युद्ध—( १६८९–१६९७ )—**पहले नीदरलैण्ड प्रदेश, जिसमें वर्तमान काल के हॉलैण्ड तथा बेलजियम राज्य हैं, स्पेन के अधीन था। सन् १६०९ में हॉलैण्ड तो स्वतन्त्र

हो गया, परन्तु बेल्जियमवाले भाग में अभी तक स्पेन का ही राज्य था। लूइस (चौदहवाँ) इस बेलजियमवाले भाग को जीतना चाहता था, जिसमें फ्रान्स की सीमा राइन नदी के मुहाने तक पहुँच जाय। उस समय लूइस की सेना इसी भाग में पहुँची हुई थी और स्पेन के शक्तिहीन होने के कारण उसे सफलता की



रानी मेरी द्वितीय

पूर्ण आशा थी। इस भाग में फ्रान्स का आधिपत्य स्थापित हो जाने से इँगलैण्ड तथा हॉलैण्ड दोनों के लिये भय था और इसलिये विलियम इसे कभी सहन न कर सकता था। लूइस इस समय विलियम को हटाकर फिर जेम्स द्वितीय को इँगलैण्ड का

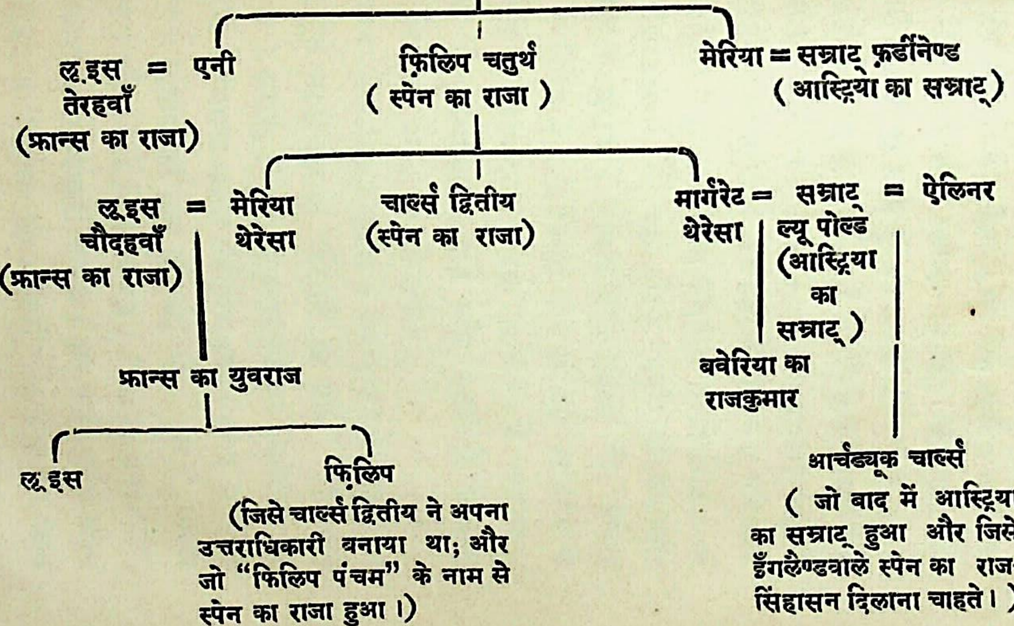
राजा बनाने के भी उपाय कर रहा था; और इसलिये "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" के प्रबन्ध की रक्षा के हेतु इँगलैण्ड का फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध करना और भी आवश्यक हो गया।

विलियम स्वयं नीदरलैण्ड जाकर युद्ध में सम्मिलित हुआ; परन्तु उसें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई बार उसकी पराजय हुई, परन्तु अन्त में नामूर ( Namur ) का प्रसिद्ध गढ़ उसके अधिकार में आ गया; और इस विजय ने बेलजियमवाले भाग में फ्रान्स का राज्य स्थापित न होने दिया। जल-युद्ध में भी पहले तो आंग्ल सेना बीची हेड ( Beachy Head ) के युद्ध में हार गई; परन्तु अन्त में लॉर्ड रसेल ( Lord Russel) ने लाहेग ( La Hague ) के युद्ध में भारी विजय प्राप्त की।

सन् १६९७ में रिस्विक की संधि (Peace of Ryswick) के अनुसार इँगलैण्ड और फ्रान्स दोनों ने अपने जीते हुए प्रदेश लौटा दिये। लूइस का राइन नदी के मुहाने को फ्रान्स के राज्य में मिलाने का प्रयत्न सफल न हो सका और वह विलियम को इँगलैण्ड का राजा स्वीकृत करने के लिये भी बाध्य हुआ। आंग्ल इतिहास में यह युद्ध "इँगलिश उत्तराधिकार का युद्ध" ( War of the English Succession ) कहलाता है; क्योंकि इसके परिणाम-स्वरूप विलियम तृतीय का राज्याधिकार अन्य राज्यों ने स्वीकृत किया था।

स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" ( १७०२—१७१३)—थोड़े ही दिनों बाद युरोप में एक दूसरा बड़ा युद्ध हुआ, जो "स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the Spanish Succe-

## स्पेनिश राज-सिंहासन के उत्तराधिकारी





ssion ) के नाम से प्रसिद्ध है। स्पेन का राजा "चार्ल्स द्वितीय" वृद्ध हो चला था और उसके अधिक समय तक जीवित रहने की कोई आशा न थी। उसके कोई सन्तान न थी, और उस की उत्तराधिकारिणी उसकी दो बहनें ही हो सकती थीं। एक बहन का विवाह फ्रांस के राजा लूइस चौदहवें से और दूसरी का विवाह अस्ट्रिया के सम्राट् ल्यूपोल्ड ( Emperor Leopold) से हुआ था। यदि फ्रान्स या आस्ट्रिया में से किसी के राजवंश को स्पेन की गद्दी मिलती, तो "युरोपीय शक्ति सन्तुलन" ( Balance of Power in Europe ) में बड़ी बाधा पड़ने का भय था; और इस कारण युरोप के समस्त राजनीतिज्ञों को स्पेनिश उत्तराधिकार के विषय में बड़ी चिन्ता थी। स्पेनिश साम्राज्य में इस समय स्पेन के अतिरिक्त दक्षिण अमेरिका के उपनिवेश, नीदरलैण्ड का बेल्जियमवाला भाग और इटली में मिलान, नेपिल्स और सिसिली प्रान्त सम्मलित थे।

ऐसी अवस्था में विलियम तृतीय ने आस्ट्रिया और फ्रान्स के राज्यों से बातचीत करके दोबारा "बँटवारे की संधि" (Partition Treaty ) कराई, जिसके अनुसार स्पेनिश साम्राज्य को उन दोनों राज्यों में विभक्त करना निश्चित हुआ। इसके थोड़े ही दिनों बाद चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई; और उस ने अपनी वसीयत में लूइस चौदहवें के पोते फिलिप ( Philip ) को अपने समस्त साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। इस वसीयत का समाचार पाते ही लूइस ने "बँटवारे की संधियों" पर पानी फेर दिया और उसके पोते फिलिप ने जाकर स्पेनिश राजसिंहासन पर अधिकार जमा लिया। अब लूइस ने फिलिप को ही फ्रांस के राज-

सिंहासन का भी उत्तराधिकारी उद्घोषित कर दिया और बड़े अभिमान से कहा—"अब पिरेनीज़ ( Pyranese ) पर्वत स्पेन और फ्रान्स को अलग नहीं रख सकता।"

**इँगलैएड और स्पेनिश उत्तराधिकार का प्रश्न**—इन सब घटनाओं के कारण समस्त युरोप में बड़ी हलचल मची। विशेषतया इँगलैएडवाले ऐसी अवस्था में कभी चुप न बैठ सकते थे। उन्होंने सोचा कि फिलिप के स्पेनिश साम्राज्य और फ्रांस के स्वामी होने से फ्रांस की शक्ति का मुक़ाबला युरोप का कोई राज्य न कर सकेगा; फ्रान्सवाले यूरोप में जो चाहेंगे, वह कर सकेंगे; और समस्त भूमएडल का व्यापार तथा उपनिवेश भी उन्हीं के हाथ में रहेंगे। फ्रान्सवाले राइन नदी के मुहाने पर अधिकार जमा लेंगे और इससे इङ्गलैएड तथा हॉलैएड दोनों को उनसे सदा भय बना रहेगा। लूइस ने रिस्विक की सन्धि में विलियम को इँगलैएड का राजा स्वीकृत कर लिया था; परन्तु अब अपनी शक्ति के मद में वह फिर जेम्स द्वितीय के लड़के को इँगलैंड का सिंहासन प्राप्त करने के लिये सहायता देने लगा। विलियम का समस्त जीवन फ्रान्स की शक्ति को रोकने में व्यतीत हुआ था; परन्तु अब फ्रान्स की शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाने के कारण उसके जीवन-कार्य्य के भंग होने के ढंग दिखाई देने लगे। ऐसी स्थिति में विलियम ने युरोपीय शक्ति संतुलन की रक्षा के लिये फ्रान्स के विरुद्ध कई राज्यों का एक संघ बनाया। इस संघ का यह उद्देश्य था कि स्पेनिश साम्राज्य में कुछ बँटवारा कराके आस्ट्रिया के राजकुमार चार्ल्स ( Archduke Charles) को स्पेन का राजसिंहासन दिलाया जाय।

इस प्रकार "स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" आरम्भ हुआ। परन्तु इसी बीच में विलियम की मृत्यु हो गई और यह युद्ध रानी एनी (Queen Anne) के राज्यकाल में, जो उसके पश्चात् इंगलैण्ड के राजसिंहासन पर बैठी थी, हुआ।

मार्लबरो की विजय—इस युद्ध में इँगलैण्ड की ओर से



ड्यूक आफ मार्लबरो

सेनापति जान चर्चिल ड्यूक ऑफ मार्लबरो (John Churchill Duke of Marlboraugh) था। वह बहुत ही सुन्दर था और उस की स्त्री भी अपने समय की परम सुन्दरियों में थी। चर्चिल की स्त्री की रानी एना (Qneen Anne) से बड़ी

मित्रता थी। चर्चिल विश्वासपात्र न था। "बहिष्कार-प्रस्ताव" के समय उसने जेम्स ( ड्यूक आफ यॉर्क ) का साथ दिया था। परन्तु जब जेम्स "जेम्स द्वितीय' के नाम से राजा हुआ, तब चर्चिल उसके विरुद्ध हो गया और उसने गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति तथा विलियम तृतीय के राज्याभिषेक में बहुत काम किया। थोड़े ही दिनों बाद वह विलियम के भी विरुद्ध हो गया और उसने फिर पदच्युत जेम्स से पत्र व्यवहार आरम्भ किया। विलियम उसके दोषों को भली भाँति समझता था, परन्तु वह उसकी युद्ध कला की निपुणता से भी परिचित था; और मरते समय उसने एनी से कहा था कि स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध के लिये मार्लबरो से अधिक योग्य सेनापति कोई दूसरा नहीं हो सकता।

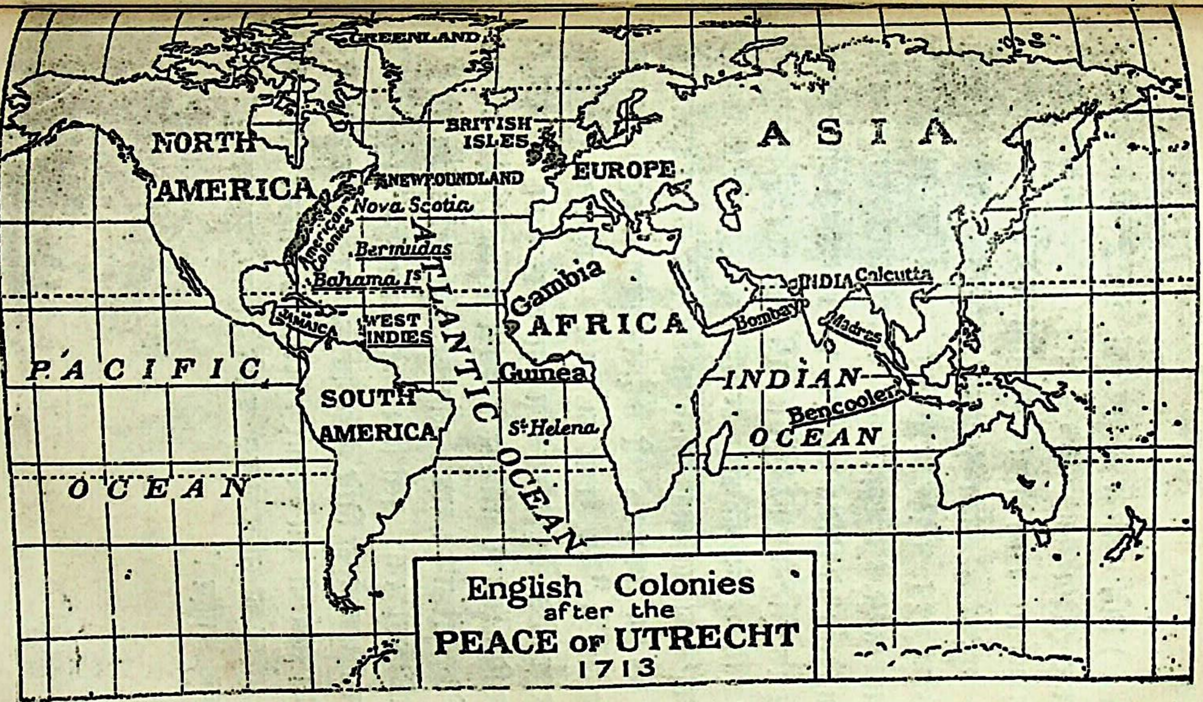
मार्लबरो ने नीदरलैण्ड पहुँच कर वहाँ से फ्रान्सीसियों को निकालने का कार्य्य आरम्भ किया। उसी समय समाचार मिला कि आस्ट्रिया की राजधानी वीना ( Vienna ) नगर पर फ्रान्सीसियों ने आक्रमण कर दिया है। यह समाचार पाते ही मार्लबरो नीदरलण्ड से चल पड़ा और वैरियों के देश में से निकलता हुआ सकुशल आस्ट्रिया जा पहुँचा। ब्लेन्हैम (Blenheim) के प्रसिद्ध युद्ध में मार्लबरो ने भारी विजय प्राप्त की और आस्ट्रिया के राज्य को घोर संकट से बचा लिया। उस युद्ध में मार्लबरो का सहकारी राजकुमार युगेन (Prince Eugene)था, जो आस्ट्रिया की सेना का सेनापति था। अब तक फ्रांसीसी सेना को स्थल-युद्ध में इस बुरी तरह से किसी ने परास्त न किया था। अगले वर्ष फिर नीदरलैण्ड पहुँच कर मार्लबरो ने रैमील्स (Ramilles) के युद्ध में दूसरी भारी विजय प्राप्त की; और फ्रांसीसी सेना को नीदरलैंड

से भगा कर बेलजियमवाले भाग में उनका अधिकार न जमने दिया। इन्हीं भारी विजयों के कारण मार्लबरो की गणना इँगलैंड के प्रसिद्ध सेनापतियों में की जाती है।

**स्पेन में युद्ध**—इसी समय एक दूसरी आंग्ल सेना स्पेन से फ्रान्सीसियों को निकालने का प्रयत्न कर रही थी। उसका सेनापति अर्ल आफ़ पीटरबरो ( Earl of Peterborough ) था। फ्रान्स के राजकुमार फ़िलिप को स्पेन के भूतपूर्व राजा की वसीयत के अनुसार स्पेन का राज-सिंहासन मिला था; और इस कारण स्पेन की जनता फ़िलिप को अपने "जातीय राजा" के समान मानने लगी थी। इसी कारण समस्त देशवासियों की उसके प्रति सहानुभूति थी। स्पेनवालों ने छोटी छोटी टोलियाँ बनाकर आंग्ल सेना को खूब छकाया और अन्त में पीटरबरो ने समझ लिया कि फिलिप को स्पेन के राज-सिंहासन से हटाना असम्भव है।

**जल-युद्ध**—समुद्र पर आंग्ल सेना ने अच्छा काम कर दिखाया। अब तक इँगलैण्ड में कोई स्थायी जल-सेना न थी। आवश्यकता पड़ने पर कुछ अफ़सर तथा सैनिक थोड़े दिनों के लिये भरती कर लिये जाते थे; और कार्य्य समाप्त होने पर उस सेना का विसर्जन कर दिया जाता था। यह ढंग अच्छा न था; और इसलिये अब एक स्थायी जल-सेना तैयार की गई जिसके नेता उस समय रूक ( Rooke ) और शोवेल ( Schovell ) थे। आंग्ल जल-सेना ( English Navy ) ने जाकर जिब्राल्टर ( Gibralter ) पर अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार यह "रूम सागर का फाटक" इँगलैण्ड के अधिकार में आ गया।

यूट्रेक्ट की सन्धि (१७१३)—परन्तु कई घटनाओं के कारण इस युद्ध का शीघ्र ही अन्त हो गया। इँगलैण्ड में ह्विग दल के स्थान पर टोरी दल का मंत्री मंडल (Tory Ministry) स्थापित हो गया। टोरी पहले ही से युरोपीय युद्धों में सम्मिलित होने की नीति के विरोधी थे; अतः उन्होंने मार्लबरो को पदच्युत करके आंग्ल सेना को युरोपीय क्षेत्रों से हटा लिया। इसी समय राजकुमार चार्ल्स (Archduke Charles) जिसको इँगलैण्ड-वाले फिलिप के स्थान पर स्पेन का राजा बनाना चाहते थे, आस्ट्रिया का सम्राट् हो गया; और इसलिये अब इँगलैण्ड के लिये यह प्रयत्न करना मूर्खता का काम था कि चार्ल्स को स्पेन का भी राज्य दिलाया जाय। सन् १७१३ में यूट्रेक्ट की सन्धि (Peace of Utrecht) की गई; और इस प्रकार "स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" समाप्त हुआ। इस सन्धि के अनुसार (१) लूइस चौदहवें के पोते फिलिप को स्पेन तथा अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों का राजा मान लिया गया; परन्तु यह निर्णय कर दिया गया कि फिलिप को फ्रान्स और स्पेन का संयुक्त राजा न बनाया जाय। (२) स्पेनिश साम्राज्य का इटलीवाला भाग तथा नीदरलैंड आस्ट्रिया के सम्राट् चार्ल्स को दिया गया; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि वह हालैण्डवालों को अपनी सीमा की रक्षा करने तथा व्यापार बढ़ाने के लिये सुभीते देगा। और (३) आंग्ल पार्लिमेण्ट का यह निर्णय कि रानी एनी के पश्चात् इँगलैण्ड का सिंहासन हनोवर वंश को मिलेगा, युरोप के राज्यों ने स्वीकृत कर लिया। इँगलैण्ड को जिब्राल्टर (Gibralter) और अमेरिका में नवास्कोटिया (Nova Scotia) और न्यूफाउण्डलैंड (New Found-




यूट्रेक्ट की सन्धि के बाद ब्रिटिश उपनिवेश

land ) मिले। आंग्लों को अमेरिका के दास-व्यापार का एकाधिकार दे दिया गया; और उन्हें स्पेनिश अमेरिका तक प्रति वर्ष एक व्यापारी जहाज ले जाने की आज्ञा दी गई।

**यूट्रेक्ट की सन्धि का प्रभाव**—यूट्रेक्ट की सन्धि ने फ्रान्स के राजा लूइस चौदहवें के बड़े बड़े मन्सूबों को पानी में मिला दिया। फ्रान्स के राजकुमार को अवश्य स्पेन का राजा मान लिया गया, परन्तु यह निश्चित कर दिया गया कि फ्रान्स और स्पेन के राष्ट्र एक दूसरे से पृथक् रहेंगे। इससे "युरोपीय शक्ति-सन्तुलन" को हानि पहुँचने की कोई सम्भावना न रह गई। नीदरलैंड में फ्रान्स का आधिपत्य स्थापित हो जाने के कारण इँगलैंड को जो भय था, अब उसकी भी कोई सम्भावना न रही। जिब्राल्टर मिल जाने से "रूम सागर का फाटक" इँगलैंड को प्राप्त हुआ; और अमेरिका में कुछ उपनिवेश तथा दास-व्यापार का एकाधिकार मिल जाने से अमेरिका के समुद्रों पर भी इँगलैंड का यथेष्ट अधिकार हो गया। अब इँगलैंड की समुद्री शक्ति दिन पर दिन उन्नति करने लगी। इसी लिये कहा जाता है—"यदि आरमेडा के परास्त करने की तिथि से इँगलैंड की समुद्री शक्ति और उपनिवेश सम्बन्धी तथा व्यापारिक उन्नति का आरम्भ माना जाय, तो यूट्रेक्ट की सन्धि से उस उन्नति का मार्ग पूर्णतया खुल जाना मानना चाहिए।"

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६८९–१६९७—"इँगलिश उत्तराधिकार का युद्ध"।
(War of the English Succession)

" १७०१–१७१३—"स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध"।
(War of the Spanish Succession)

" १६९७—रिस्विक की सन्धि (Peace of Ryswick)

" १७०४—ब्लेन्हेम का युद्ध (Battle of Blenheim) और जिब्राल्टर (Gibralter) पर अधिकार।

" १७०६—रैमील्स का युद्ध। (Battle of Ramilles)

" १७११—मार्लबरो (Marlborough) का पदच्युत होना।

" १७१३—यूट्रेक्ट की सन्धि।

---

# सातवाँ परिच्छेद

## विलियम और मेरी; तथा रानी एनी ।

### (२) गृह्य स्थिति

### ( Domestic Politics )

**स्कॉटलैण्ड में विद्रोह**—इँगलैण्ड की "गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" ( Glorious Revolution ) की व्यवस्था स्कॉट-लैण्ड और आयरलैण्डवालों ने सुगमता से स्वीकृत की। स्काटलैण्ड में डंडी के नवाब ( Viscount Dundee ) ने एक पहाड़ी सेना तैयार करके जेम्स द्वितीय को फिर राजा बनाने के उद्देश्य से विलियम तृतीय के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया। इँग-लैण्ड से तुरन्त सेना भेजी गई, जिसने जाकर स्कॉटलैण्ड की पहाड़ी सेना को किलेक्रेन्की ( Killiecrenkie ) के युद्ध में परास्त किया। डंडी का नवाब युद्ध में मारा गया, और सब पहाड़ी (Highlanders) भाग गये। विलियम ने घोषणा की कि जितने विद्रोही १ जनवरी सन् १६९२ तक मुझे राजा स्वीकृत करने की शपथ खा लेंगे, उन्हें क्षमा कर दिया जायगा। और तो सभी पहाड़ी सरदारों ने यह शपथ खाई, परन्तु ग्लेन्को (Glen-coe ) के सरदार ने इसी में अपना गौरव समझा कि मैं बिलकुल अन्तिम तिथि को ही शपथ लूँगा। संयोगवश वह अन्तिम तिथि को ठीक स्थान पर न पहुँच सका; और इसलिये उसके शत्रुओं

को अच्छा अवसर मिल गया। झूठी सच्ची बातें बनाकर विलियम से ग्लेन्को जाति को कड़ा दण्ड देने की आज्ञा प्राप्त की गई; और एक सेना ने जाकर बड़े धोखे से इस जाति का क़त्ल आम (Massacre of Glencoe) किया। उनसे मित्रता दिखाकर शत्रुओं के भेजे हुए ये सैनिक उन्हीं के यहाँ ठहर गये और रात का उन्होंने सोते हुए लोगों को बड़ी क्रूरता से मार डाला। इस हत्या के लिये विलियम निर्दोष नहीं कहा जा सकता; परन्तु वास्तव में दोष स्कॉटलैण्ड के उन मन्त्रियों का था, जिन्होंने ग्लेन्को जाति से शत्रुता होने के कारण विलियम को बहका कर इस हत्याकाण्ड के लिये आज्ञा प्राप्त की थी। शीघ्र ही विलियम ने उन मन्त्रियों को उनके पदों से हटा दिया, जिससे इस दुर्घटना के कारण स्कॉटलैण्ड में फैली हुई उत्तेजना कुछ कम हो जाय।

**आयरलैण्ड में विद्रोह**—आयरलैण्ड में जेम्स द्वितीय स्वयं पहुँच गया; और वहाँ की कैथोलिक जनता ने उस का पक्ष लेकर विलियम के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया। आयरलैण्ड में अधिकांश निवासी कैथोलिक ही थे, परन्तु कुछ भागों में कैथोलिकों की जायदादें छीन कर प्रोटेस्टेण्ट आंग्लों ने अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। विद्रोहियों ने इन प्रोटेस्टेण्टों के लण्डनरी (Londonnery) गढ़ को घेर लिया; परन्तु शीघ्र ही विलियम स्वयं सेना लेकर आयरलैण्ड पहुँचा और जेम्स द्वितीय के पक्षपातियों को बोयन के युद्ध (Battle of Boyne) में बुरी तरह परास्त किया। जेम्स आयरलैण्ड से भाग निकला और अब विद्रोहियों को सफलता की कोई आशा न रही। कैथोलिकों का बड़ा गढ़ लिमरिक (Limmerick) भी उनके

हाथ से निकल जाने के कारण इस विद्रोह का अन्त हुआ और आयरलैण्डवालों को विलियम तथा मेरी का राज्याधिकार स्वीकृत करना पड़ा।

**लोक सभा का उत्थान**—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" से इँगलैंड में "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) का आरम्भ होता है। "अधिकार-नियम" (Bill of Rights) के विषय में, जो आंग्लों का तीसरा स्वतंत्रता-पत्र समझा जाता है, हम ऊपर लिख आये हैं। विलियम के राज्यकाल में पार्लिमेण्ट के अधिकारों में और भी वृद्धि हुई। अब पार्लिमेण्ट ने शासन कार्य्य के लिये केवल एक वर्ष के लिये धन की स्वीकृति देने की प्रथा आरम्भ की, जिससे पार्लिमेण्ट की बैठक प्रति वर्ष करना आवश्यक हो गया। पार्लिमेण्ट को राज्य के हिसाब किताब की जाँच करने का भी अधिकार मिल गया; और इस प्रकार राज्य की बागडोर बहुत कुछ पार्लिमेण्ट के हाथ में आ गई; क्योंकि समस्त शासनकार्य्य का संचालन धन पर ही निर्भर होता है। धन की स्वीकृति लोक-सभा (House of Commons) ही देती थी, क्योंकि उसी में जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं; और इस प्रकार लोक-सभा ही अब पार्लिमेण्ट का प्रधान अंश बन गई। स्थायी सेना रखने की भी स्वीकृति पार्लिमेण्ट से प्रति वर्ष लेनी पड़ती थी; और यह स्वीकृति भी केवल एक ही वर्ष के लिये दी जाती थी। इस प्रकार देश की सेना पर भी पार्लिमेण्ट का बहुत कुछ अधिकार हो गया।

**दल-बन्दी के शासन का प्रारम्भ**—विलियम समस्त जनता को प्रसन्न रखने के आशय से ह्विग तथा टोरी दोनों राजनीतिक

दलों में से अपने मंत्री नियुक्त करता था। परन्तु धीरे धीरे उसे प्रतीत होने लगा कि ह्विग और टोरी परस्पर मतभेद के कारण कभी एक साथ मिल कर कार्य्य नहीं कर सकते, और इससे शासन-कार्य्य में बड़ी बाधा पड़ती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये विलियम ने यह निश्चय किया कि यदि मन्त्री-मण्डल (Cabinet) में एक ही प्रकार के राजनीतिक विचारवाले हों, तो कार्य्य अधिक सुगमता से हो सकेगा। इस समय लोक-सभा में ह्विग दलवालों की अधिक संख्या थी; और यह सोच कर कि मन्त्रियों को शासन कार्य्य के संचालन के लिये बार बार लोकसभा ही से धन की स्वीकृति लेनी पड़ती है, विलियम ने यही उचित समझा कि ह्विग दलवालों को ही मन्त्री-मण्डल में नियुक्त किया जाय। अनुभव से इस ढंग में बहुत सुभीता मालूम हुआ; और इसलिये यही प्रणाली प्रचलित हो गई कि मंत्री-मण्डल में एक से ही राजनीतिक विचारवाले नियुक्त किये जायँ; और जिस राजनीतिक दल के सदस्यों की लोक-सभा में अधिक संख्या हो, उसी दल में से मंत्री नियुक्त किये जायँ। वर्तमान समय में इसी ढंग से इँगलैण्ड के मंत्री-मण्डल का काम चलता है; और इस प्रणाली को दलबन्दी का शासन (Party Government) कहते हैं। वर्तमान मंत्री-मण्डल में और भी कई विशेषताएँ हैं जिनके विषय में आगे चल कर लिखा जायगा।

**"धार्मिक सहनशीलता का नियम" (१६८९)**—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" के एक वर्ष बाद पार्लिमेण्ट ने एक बड़े महत्त्व का नियम पास किया जो "धार्मिक सहनशीलता का नियम" (Toleration Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार कैथोलिकों

के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार के धर्मावलम्बियों को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई कि वे जिस ढंग से चाहें, ईश्वर की आराधना करें। अभी कैथोलिकों के प्रति घृणा कम न हुई थी और उनके विरुद्ध नियम अभी एक शताब्दी तक नहीं हटाये गये; परन्तु फिर भी इस नियम ने देश में काफ़ी धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित कर दी। यह वही समय था जब कि इङ्गलैएड का प्रसिद्ध दर्शन-शास्त्र का लेखक जॉन लॉक ( John Locke ) धार्मिक सहनशीलता के पक्ष में निबन्ध प्रकाशित कर रहा था।

"उत्तराधिकार निर्णय" (१७०१)—विलियम तथा मेरी के कोई सन्तान न थी और उनके पश्चात् राज-सिंहासन की उत्तराधिकारिणी मेरी की छोटी बहिन एनी का भी कोई पुत्र जीवित न था। ऐसी अवस्था में पार्लिमेएट ने "उत्तराधिकार निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार यह निश्चित किया कि सन्तान की अनुपस्थिति में एनी के पश्चात् इङ्गलैंड का सिंहासन हनोवर की रानी सोफ़िया (Electress Sophia) तथा उसकी सन्तान को मिलना चाहिए। सोफ़िया जेम्स प्रथम की दौहित्री थी; और ऐसी अवस्था में वंशगत अधिकार की दृष्टि से वही स्टुअर्ट वंश के सिंहासन की उत्तराधिकारिणी हो सकती थी।

"उत्तराधिकार-निर्णय" के नियम में नियमानुमोदित शासन की पुष्टि के लिये भी कई धाराएँ रखी गई थीं। यथा—(१) भविष्य में केवल आंग्ल चर्च के अनुयायी ही इङ्गलैंड के राज-सिंहासन पर बैठ सकेंगे। ( २ ) बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के इङ्गलैंड किसी अन्य राष्ट्र से युद्ध न करेगा। ( ३ ) राजा का क्षमापत्र मन्त्रियों को पार्लिमेंट के सम्मुख अभियोग से न बचा सकेगा। ( इससे

मंत्री-मंडल अपनी नीति के लिये अब पूर्णतया जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हो गया।) (४) राजा न्यायाधीशों को तब तक पदच्युत नहीं कर सकेगा, जब तक पार्लिमेंट उससे ऐसा करने के लिये प्रार्थना न करे। (इससे न्यायाधीशों को स्वतंत्रता मिल गई; और न्याय करते समय उन्हें इस बात का भय न रहा कि कहीं हमारे निर्णय से राजा अप्रसन्न न हो जाय।)

**विलियम तथा मेरी का चरित्र**—विलियम साहसी, वीर तथा योग्य राजनीतिज्ञ था। उसकी नीति का मुख्य उद्देश्य यही था कि फ्रांस के राजा लूइस चौदहवें की बढ़ती हुई शक्ति को रोका जाय जिससे युरोपीय शक्ति संतुलन में बाधा न पड़ने पावे। युद्ध में कई बार वह स्वयं सेनापति रहा और युद्ध कला में बड़ी निपुणता दिखाई। इँगलैण्ड के राजा होने पर उसने नियमानुमोदित शासन का कभी उल्लंघन न किया। धार्मिक विचारों में वह महात्मा कैल्विन का अनुयायी था; और इसलिये इँगलैंड की उच्च चर्च पार्टी ( High churchmen ) की सहानुभूति उस के प्रति न थी। विलियम इँगलैंड में कभी सर्वप्रिय न हो सका; क्योंकि वह युरोपीय राजनीति की ही ओर विशेष ध्यान देता था; और फिर उसका स्वभाव भी रूखा था। परन्तु उसकी योग्यता के कारण सब लोग उसका आदर करते थे।

रानी मेरी बड़ी हँसमुख और दयालु थी। इँगलैण्ड की जनता उससे हार्दिक प्रेम करती थी। उसकी मृत्यु विलियम से आठ वर्ष पूर्व ही हो गई। मेरी की दयालुता की यादगार ग्रीनिच का अस्पताल अब तक विद्यमान है।

**रानी एनी ( Queen Anne ) ( १७०२-१७१३ )**—

विलियम की मृत्यु के पश्चात् जेम्स द्वितीय की दूसरी पुत्री रानी एनी इँगलैण्ड के सिंहासन पर बैठी। एनी की मार्लबरो की धर्म-पत्नी से बड़ी मित्रता थी और दोनों अपने पदों का ध्यान छोड़कर एक दूसरी से सदा सखी भाव से मिलती थीं। अपनी पत्नी के रानी की सखी होने के कारण मार्लबरो की भी प्रतिष्ठा अधिक बढ़ गई और वह "स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध" के लिये इँगलैण्ड की सेनाओं का प्रधान सेनापति बना दिया गया। रानी एनी उच्च चर्च पार्टी के सिद्धान्त मानती थी और इस कारण देश की इस शक्तिशाली धार्मिक संस्था से उसे पूर्ण सहायता मिली। राजनीतिक दलों में एनी टोरी दलवालों को पसन्द करती थी; परन्तु उनके युद्ध के विरोधी होने के कारण रानी को कुछ दिनों तक ह्विग दल में से ही मन्त्री चुनने पड़े।

**स्कॉटलैण्ड और इँगलैण्ड का संयुक्त राज्य (Union with Scotland) (१७०७)**—"स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध" के अतिरिक्त रानी एनी के राज्य काल में सब से महत्वपूर्ण घटना यह हुई कि इँगलैण्ड तथा स्कॉटलैंड में एक संयुक्त राज्य स्थापित हो गया। जेम्स प्रथम के समय से इँगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड के राजसिंहासन सम्मिलित तो हो गये थे, परन्तु दोनों देशों की पार्लिमेण्ट तथा शासन प्रणालियाँ अभी पृथक् ही थीं। इस समय स्कॉटलैण्ड-वालों को कई शिकायतें थीं। उन्हें व्यापारिक स्वतन्त्रता न थी; और यह देखकर उनका असन्तोष बढ़ता जाता था कि इँगलैण्ड का व्यापार तो खूब उन्नति कर रहा है, परन्तु स्कॉटलैण्डवालों को नये उपनिवेशों से व्यापार करने के लिये कोई सुभीता नहीं है। धीरे धीरे स्कॉटलैण्ड की जनता में यह विचार फैलने लगा कि जब

तक इँगलैण्ड से बिलकुल सम्बन्ध हटा न लिया जायगा, तब तक स्कॉटलैण्ड की इन कठिनाइयों का अन्त न होगा। सन् १७०२ में स्कॉटलैण्ड की पार्लिमेण्ट ने यह निर्णय किया कि एनी की मृत्यु के पश्चात् इँगलैण्ड का जो राजा हो, वही स्कॉटलैंड का भी



रानी एनी

राजा न होना चाहिए। उस समय स्कॉटलैण्ड के लिये किसी अन्य प्रोटेस्टेण्ट राजकुमार को राजा चुन लिया जायगा। इस निर्णय से इँगलैण्ड में बड़ी सनसनी फैली। दोनों देशों के पूर्णतया पृथक्

हो जाने का यही परिणाम हो सकता था कि जिस प्रकार दोनों में पहले परस्पर युद्ध चल रहा था, वही दशा फिर हो जाती।

ऐसी अवस्था में आंग्ल पार्लिमेण्ट ने दोनों देशों को एक संयुक्त राज्य में मिलाने का प्रस्ताव किया जिससे दोनों देशों के निवासियों को कोई शिकायत न रहे। यह प्रस्ताव स्कॉटलैंड की पार्लिमेण्ट ने भी स्वीकृत कर लिया। सन् १७०७ में दोनों देशों की पार्लिमेण्टों ने "संयुक्त राज्य नियम" ( Act of Union) पास किया, जिसके अनुसार इँगलैंड और स्कॉटलैण्ड की पार्लिमेण्टें एक कर दी गईं। यह निश्चय हुआ कि इँगलैंड के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त स्कॉटलैंड से १६ प्रतिनिधि लार्ड-सभा के लिये और ४५ प्रतिनिधि लोकसभा के लिये भेजे जायँगे; संयुक्त राज्य का नाम ग्रेट ब्रिटन ( Great Britain ) होगा, और उसके दोनों भागों की प्रजा को एक से अधिकार प्राप्त होंगे। परन्तु इँगलैंड और स्कॉटलैंड के क़ानून तथा चर्च पृथक् ही रखे गये, क्योंकि इन दोनों बातों में दोनों देशों में बहुत अन्तर था। इस संयुक्त राज्य के स्थापित होने से दोनों देशों को लाभ हुआ। अब स्कॉटलैण्ड को व्यापारिक उन्नति का पूरा अवसर मिल गया और इँगलैंड का यह भय जाता रहा कि कहीं उत्तर से स्कॉटलैंडवाले आक्रमण न कर दें। दोनों देशों की जनता की भी इस संयुक्त राज्य के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी, क्योंकि दोनों देशों की पार्लिमेंटों ने मिलकर "संयुक्त-राज्य नियम" की धाराओं का निश्चय किया था और दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने उसे स्वीकृत किया था।

**ह्विग तथा टोरी दल**—रानी एनी के राज्य काल में ह्विग तथा टोरी दलों में बराबर झगड़ा रहा। इस काल तक पहुँचते पहुँचते

इन दोनों राजनीतिक दलों का भली भाँति संघटन हो चुका था। दोनों दलों के अलग अलग नेता थे और उन्होंने अपने दल के लिये निश्चित सिद्धान्त बना लिये थे, जिन पर उनकी सारी नीति निर्भर थी। इस समय इन दोनों दलों में निम्नलिखित प्रश्नों पर मत भेद था—(१) ह्विग "नियमानुमोदित शासन" के पक्षपाती थे, पर टोरी अभी तक राजा के "दैवी अधिकार" का ही समर्थन करते थे। (२) ह्विग धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते थे, पर टोरी उच्च चर्च पार्टी के कट्टर अनुयायी थे; और उनका मत था कि आंग्ल चर्च के विरोधियों को किसी प्रकार की सुविधाएँ न दी जायँ। (३) ह्विग "स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" जारी रखने के पक्ष में थे, परन्तु टोरी पहले तो यह चाहते थे कि इँगलैण्ड केवल जल-युद्ध में सम्मिलित हो और फिर वे इस युद्ध की नीति के बिलकुल विरोधी हो गये। (४) ह्विग एनी के पश्चात् हनोवर वंश को इँगलैंड का राजसिंहासन देना चाहते थे, पर टोरी चाहते थे कि जेम्स द्वितीय के पुत्र को, जो अपने पिता की मृत्यु होने पर अपने को "जेम्स तृतीय" कहता था और जो इतिहास में Cld Pretender (बड़ा अधिकार जतलानेवाला) के नाम से प्रसिद्ध है, इँगलैंड का राजा बनाना चाहते थे।

**टोरी मन्त्री-मण्डल**—एनी के राज्य के आरम्भिक काल में मन्त्री-मण्डल ह्विग दलवालों के हाथ में रहा। परन्तु रानी ह्विगों से सन्तुष्ट न थी और कई कारणों से पार्लिमेण्ट में भी इस दलवालों की संख्या कम होने लगी। ह्विग धार्मिक स्वतन्त्रता के पक्षपाती थे और टोरी अब उन्हें आंग्ल चर्च का शत्रु कह कर बदनाम करने लगे। आंग्ल चर्च के एक उपदेशक सैकवेरेल (Sacheve;

rill ) ने ह्विग दल के विरुद्ध व्याख्यान देने शुरू किये। ह्विग मन्त्रियों ने सेकवेरेल पर अभियोग चलाया; और इस से टोरियों को यह दिखाने का अच्छा अवसर मिल गया कि ह्विग दलवाले उपदेशकों को दण्ड देकर आंग्ल चर्च को दबाना चाहते हैं। पार्लिमेण्ट के नये चुनाव में टोरियों की संख्या अधिक रही और रानी ने तुरन्त मन्त्री-मण्डल में ह्विगों के स्थान पर टोरियों को नियुक्त किया। इस टोरी मन्त्री-मण्डल के नेता हार्ले, अर्ल ऑफ ऑक्सफोर्ड ( Harley, Earl of Oxford ) और सेण्ट जॉन वाईकाउण्टबोलिंगब्रोक (St. John, Viscount Bolling-broke ) थे। इस मन्त्री-मण्डल ने मार्लबरो को पदच्युत कर के यूट्रेक्ट की सन्धि के द्वारा "स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध" समाप्त किया, जिस के विषय में हम ऊपर लिख आये हैं। इस से कुछ ही दिन पहले मार्लबरो की धर्मपत्नी का रानी एनी से झगड़ा हो गया था और इस कारण दरबार में मार्लबरो का अब पहले की तरह आदर न रह गया था।

**रानी एनी के अन्तिम दिवस**—रानी एनी का स्वास्थ्य ठीक न था और उस के अधिक काल तक जीवित रहने की कोई आशा न थी। बोलिंगब्रोक चाहता था कि एनी के पश्चात् हनोवर वंश को राजसिंहासन न मिले और जेम्स द्वितीय का पुत्र ( जेम्स तृतीय ) इँगलैण्ड का राजा हो। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने पहले अपने सहकारी मन्त्री अर्ल ऑफ ऑक्सफोर्ड को किसी प्रकार मन्त्री-मण्डल से हटाया और जेम्स तृतीय से पत्र व्यवहार आरम्भ किया। सब से बड़ी कठिनता यह थी कि इँगलैण्ड की जनता कैथोलिक राजा को कभी स्वीकृत न कर

सकती थी और जेम्स तृतीय अपने कैथोलिक मत पर दृढ़ था। इसी बीच में, जब कि बोलिंगब्रोक की तदबीरें पूरी नहीं हुई थीं, रानी एनी की भी मृत्यु हो गई और "उत्तराधिकार निर्णय" के अनुसार हनोवर वंश की रानी सोफ़िया का पुत्र "जार्ज प्रथम" के नाम से इँगलैण्ड का राजा बना दिया गया। अपने प्रयत्न की विफलता पर बोलिंगब्रोक ने कहा—"मंगलवार को अर्ल ऑफ़ ऑक्सफ़ोर्ड मन्त्री-मण्डल से हटा और रविवार को रानी की मृत्यु भी हो गई। संसार भी क्या ही विचित्र है; और भावी हमारे बने बनाये खेल को किस सुगमता से बिगाड़ देती है!"

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६८९—किलेक्रेन्की का युद्ध।
(Battle of Killecrenkie)

" "धार्मिक सहनशीलता नियम"।
( Toleration Act )

" १६९२—ग्लेन्को का हत्याकांड।
( Massacre of Glencoe )

" १६९४—रानी मेरी द्वितीय की मृत्यु।

" १७०१—"उत्तराधिकार निर्णय।
( Act of Settlement )

" १७०१—विलियम तृतीय की मृत्यु तथा रानी एनी का राज्याभिषेक।

" १७०७—इङ्गलैंड और स्कॉटलैंड का संयुक्त राज्य।
( Union with Scotland )

" १७१४—रानी एनी की मृत्यु।

# आठवाँ परिच्छेद

## स्टुअर्ट काल में इँगलैण्ड की दशा

### ( १ ) राजनीतिक उन्नति

**राजा तथा पार्लिमेण्ट का संघर्ष**—सत्रहवीं शताब्दी राजनीतिक आन्दोलन तथा राजा और पार्लिमेण्ट के संघर्ष का काल है। स्टुअर्ट राजा "दैवी अधिकार" ( Divine Right ) जतलाते थे। उनका कहना था कि राजा पृथवी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है; उसको सब कुछ करने का अधिकार है और उसके कार्य्य में किसी को हस्तक्षेप न करना चाहिए। हम बतला चुके हैं ( देखो पृष्ठ १८५ ) कि ट्यूडर राजाओं को स्वेच्छाचारी बनने में जो सुबिधाएँ थीं, वे स्टुअर्ट काल तक आते आते ग़ायब हो चुकी थीं। देश की स्थिति में भारी परिवर्तन हो गया था और सत्रहवीं शताब्दी की जनता निरंकुश शासन को कभी नहीं सह सकती थी। ऐसी दशा में स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेंट का संघर्ष अनिवार्य सा हो गया। संघर्ष विशेषतः इन प्रश्नों पर हुआ— ( १ ) क्या राजा के लिये कर लगाने से पहले सदा पार्लिमेंट की स्वीकृति लेना आवश्यक है ? ( २ ) क्या राजमन्त्री अपनी नीति के लिये पार्लिमेंट के सम्मुख उत्तरदायी हैं ? ( ३ ) क्या राजा अपराध का बिना नियमानुसार निर्णय हुए भी किसी को

बन्दीगृह में भेज सकता है ? ( ४ ) क्या राजा अपने धार्मिक विचार मनवाने के लिये देश को बाध्य कर सकता है ? ( ५ ) क्या राजा का सिंहासन पर रहना पार्लिमेण्ट की अनुमति पर निर्भर है ? ( ६ ) शासन की समस्त नीति राजा के हाथ में है या पार्लिमेण्ट के ?

**राजनीतिक आन्दोलन**—इन प्रश्नों पर राजा और पार्लिमेण्ट में खूब संघर्ष हुआ। पहले तो पार्लिमेण्ट ने कुछ राजनियम बना कर राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधने की चेष्टा की। "अधिकार-पत्र" ( Bill of Rights ) पास किया गया; और ग्यारह वर्ष के स्वेच्छाचारी राज्य के बाद जब "प्रलम्ब पार्लिमेण्ट" ( Long Parliament ) की बैठक हुई, तब और बहुत से राजनीतिक सुधार किये गये। परन्तु जब चार्ल्स प्रथम के कार्य्यों से पार्लिमेण्ट ने देखा कि उसके स्वेच्छाचार तथा अनुचित व्यवहारों को रोकने के लिये केवल राजनियम बनाने से काम नहीं चलता, तब उसको राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाना पड़ा। गृह युद्ध ( The Civil War ) के पश्चात् राजा को प्राण दण्ड दिया गया और देश में प्रजातन्त्र-राज्य ( Commonwealth ) स्थापित कर दिया गया। परन्तु प्रजातन्त्र राज्य के "सैनिक राज्य" का रूप धारण कर लेने के कारण वह सफल न हो सका; और ग्यारह वर्ष के उपरान्त जब पुनः राज्य स्थापन ( Restoration ) हुआ, तो जनता ने उसे पसन्द किया। राजनीतिक आन्दोलन का कार्य्य बराबर चलता रहा और सन् १६७९ में "स्वतन्त्रता नियम" ( Haebus Corpus Act ) पास किया गया। जेम्स द्वितीय के राज्य काल में जब फिर नियमों का स्पष्ट

रूप से उल्लंघन होने लगा, तो देशवासियों ने विलियम को निमन्त्रित किया। जेम्स द्वितीय ने गद्दी छोड़ कर फ्रान्स में जाकर शरण ली और "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) के बाद स्थिर रूप से "वैध शासन" (Constitutional Government) की स्थापना हुई।

**"वैध शासन" की स्थापना**—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" के समय से राजा और पार्लिमेण्ट के संघर्ष का अन्त माना जाता है। इस संघर्ष में पार्लिमेण्ट की विजय हुई और उसके अधिकारों का भली भाँति निर्णय हो गया। "अधिकार नियम" (Bill of Rights) तथा "उत्तराधिकार निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार पार्लिमेण्ट को और भी अधिकार मिल गये और सत्रहवीं शताब्दी का राजनीतिक आन्दोलन पूर्णतया सफल रहा। इसके पश्चात् भी राजनीतिक क्षेत्र में बहुत से सुधारों की आवश्यकता पड़ी; परन्तु अब इस बात में कोई सन्देह न रहा कि देश के शासन की बागडोर वास्तव में पार्लिमेण्ट के ही हाथ में है और शासन कार्य्य जनता के प्रतिनिधियों की अनुमति से ही चलेगा। जितने प्रश्नों पर राजा और पार्लिमेण्ट में संघर्ष हुआ था, उन सब का निर्णय पार्लिमेण्ट के ही पक्ष में हुआ। राजकरों की स्वीकृति का पूर्ण अधिकार, राजमन्त्रियों के कार्य्यों की देख भाल, सेना पर अधिकार, राज-सिंहासन के उत्तराधिकार का निर्णय आदि सभी प्रश्नों पर पार्लिमेण्ट की ही विजय हुई। इस प्रकार "वैध शासन" (Constitutional Government) की नींव पक्की हो गई और "स्वेच्छाचारी शासन" (Absolute Rule) के पुनः प्रचलित होने की कोई सम्भावना न रह गई।

## (२) धार्मिक दल

**प्योरिटन दल**—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैण्ड में तीन मुख्य धार्मिक दल थे। एक तो कैथोलिक दल जो अभी तक रोम के पोप को अपना धर्म-गुरु मानता था। दूसरा आंग्ल चर्च दल जो एलिज़ेबेथ द्वारा स्थापित चर्च की रीतियों को मानता था। तीसरा प्योरिटन दल जो जेनेवा के महात्मा कैल्विन के सिद्धान्तों का अनुयायी था। ये लोग उपासना को आडम्बर-रहित बनाना और चर्च के पदाधिकारियों को जनता द्वारा चुनना चाहते थे। जेम्स प्रथम ने हैम्पटन कोर्ट की धर्म सभा (Hampton Court Conference) में इनको आंग्ल चर्च में मिलाना चाहा था। पर वह प्रयत्न विफल रहा। इस पर राजा ने प्योरिटन दल को कई तरह से दबाना शुरू किया; और इससे तंग आकर सन् १६२० में कुछ प्योरिटन जो "धार्मिक यात्री" (Pilgrim Fathers) के नाम से प्रसिद्ध हैं, देश छोड़ कर अमेरिका में जा बसे। चार्ल्स प्रथम के राज्य काल में लॉड (Laud) द्वारा प्योरिटन दलवालों पर बहुत अत्याचार हुए और आंग्ल चर्च की रीतियों को न मानने के अपराध में "धार्मिक न्यायालय" (High Comission Court) से इन्हें कड़े कड़े दण्ड दिलाये गये।

प्योरिटन दल को चैन से रहने का अवसर प्रजातन्त्र शासन काल में मिला। गृह युद्ध में राजा से युद्ध करनेवाले विशेषतया इसी दल के लोग थे और प्रजातन्त्र राज्य में इन्हीं की प्रधानता रही। देश के नाचघर तथा मनोविनोद के सब स्थान बन्द कर दिये गये, यहाँ तक कि रविवार को छुट्टी मनाने की भी मनाही कर दी गई। परन्तु, "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के

पश्चात् प्योरिटन दलवालों पर फिर अत्याचार होने लगे। उनके विरुद्ध कड़े कड़े नियम बनाये गये जो उस काल के प्रधान मन्त्री के नाम पर क्लेरेण्डन कोड ( Clarendon Code ) के नाम से प्रसिद्ध हैं। देश के "स्थापित चर्च" की रीतियों को न मानने के कारण प्योरिटन दलवाले डिसेन्टर्स ( Dissenters ) तथा नान कन्फरमिस्ट्स ( Non-conformists ) कहलाने लगे। इन लोगों को बहुत दिनों तक कष्ट भोगना पड़ा। परन्तु सन् १६८९ में "धार्मिक सहनशीलता नियम" (Toleration Act) के पास होने से इन लोगों को अपने ढंग से प्रार्थना करने की स्वतंत्रता मिल गई।

**कैथोलिक दल**—कैथोलिक दल के प्रति सत्रहवीं शताब्दी भर जनता की सदा घृणा रही। उनके विरुद्ध कड़े कड़े नियम बनाये गये और वे कभी सुख से न रह सके। जेम्स प्रथम के समय में कैथोलिकों ने शासन अपने हाथ में लेने के लिये "बारूद का षड़यन्त्र" ( Gunpowder Plot ) रचा। परन्तु वह प्रयत्न विफल रहा और उनके विरुद्ध पहले से भी अधिक कड़े नियम बना दिये गये। चार्ल्स द्वितीय स्वयं कैथोलिक था और पुनः राज्य-स्थापन के बाद उसने कैथोलिकों को सुविधाएँ देने का बहुत कुछ प्रयत्न किया। फ्रान्स के राजा लूइस चौदहवें ने उसे इस कार्य्य में सहायता दी; और इसी सहायता के बल पर उसने कई बार "अनिषेध घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की। परन्तु जनता के विरोध के कारण इस प्रकार की घोषणाएँ लौटानी पड़ीं। पार्लिमेण्ट ने "परीक्षा नियम" (Test Act) पास कर दिया जिससे आंग्ल चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त और कोई राज्य में कर्मचारी

नहीं हो सकता था। "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" ( Glorious Revolution ) के पश्चात् कैथोलिकों ने जेम्स द्वितीय तथा उसकी सन्तान के पक्षपातियों ( Jacobites ) का साथ दिया; और इस कारण देशवासी उन से और भी अधिक घृणा करने लगे।

**आंग्ल चर्च दल**—सत्रहवीं शताब्दी में देश में आंग्ल चर्च दल ( English Church Party ) की ही प्रधानता रही। प्रजातन्त्र राज्य के काल को छोड़ कर, जिस में प्योरिटन दलवालों के हाथ में शासन था, शेष सब कालों में राज्य के प्रधान कर्मचारी आंग्ल चर्च दल के ही लोग होते थे। आंग्ल चर्च ही देश का जातीय चर्च ( National Church ) था। इस दलवालों को उच्च चर्च दल ( High Churchmen ) भी कहते हैं। ये लोग सदा राज्य पक्ष के समर्थक रहे; पर जेम्स द्वितीय जैसे पक्के कैथोलिक राजा का इन्होंने भी विरोध किया। रानी एनी आंग्ल चर्च की बड़ी समर्थक थी और उस के राज्यकाल में आंग्ल चर्च दल की प्रतिष्ठा और भी अधिक बढ़ गई।

## ( ३ ) उपनिवेश तथा व्यापार

**अमेरिकन उपनिवेश**—सत्रहवीं शताब्दी आंग्लों द्वारा भू-मण्डल के भिन्न भिन्न भागों में उपनिवेश स्थापित होने का काल है। हम बतला चुके हैं कि रानी एलिज़ेबेथ के राज्यकाल में वाल्टर रेले ( Walter Raleigh ) ने उत्तरी अमेरिका में वर्जीनिया ( Virginia ) नाम का उपनिवेश स्थापित किया था। सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में नये उपनिवेशों के स्थापित होने का एक अपूर्व कारण प्रस्तुत हो गया। बहुत से लोग, जो अपने धार्मिक

विचारों के कारण इँगलैंएड में सताये जा रहे थे, देश छोड़ कर अमेरिका में जाकर बसने लगे। सन् १६२० में लगभग २०० प्योरिटन, जो इतिहास में "धार्मिक यात्री" ( Pilgrim Fathers ) के नाम से प्रसिद्ध हैं, मेफ्लावर ( Mayflower ) नामक जहाज में इँगलैंएड छोड़ कर अमेरिका में बसने के लिये रवाना हुए। ज्यों ज्यों इँगलैंएड में प्योरिटन दल के विरुद्ध कड़े नियम बनते गये, त्यों त्यों बहुत से प्योरिटन देश छोड़ने के लिये बाध्य हुए। अमेरिका में उनके स्थापित किये हुए छोटे छोटे उपनिवेशों का समूह न्यू इँगलैंएड ( New England ) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सन् १६२४ में कुछ कैथोलिक भी, जो इँगलैंएड में प्योरिटनों से भी अधिक सताये जा रहे थे, उत्तरी अमेरिका पहुँचे; और उन्होंने चार्ल्स प्रथम की कैथोलिक रानी हैनरिटा मेरिया ( Henrietta Maria) के नाम पर दक्षिण में मेरीलैंड (Maryland) नामक उपनिवेश स्थापित किया। इन उपनिवेशों की सफलता देखकर इँगलैंएड-निवासियों का उत्साह बढ़ने लगा; और जहाँ पहले केवल धार्मिक अत्याचारों ( Religious Persecution) से बचने के लिये ही लोग देश छोड़ते थे, वहाँ अब धीरे धीरे व्यापार तथा विदेश की सैर आदि के लिये भी बहुत से आंग्ल प्रति वर्ष अमेरिका पहुँचने लगे। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक उत्तरी अमेरिका के समस्त पूर्वीय तट पर आंग्ल उपनिवेश ( English Colonies ) स्थापित हो गये। इनमें उत्तर के उपनिवेशों में अधिकतर प्योरिटन तथा अन्य प्रोटेस्टेएटों और दक्षिण में अधिकतर कैथोलिकों की बस्तियाँ थीं।

**भारतवर्ष में व्यापारिक कोठियाँ**—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैण्ड निवासी भारतवर्ष भी पहुँचने लगे। उनके भारतवर्ष आने का मुख्य कारण अपना व्यापार फैलाना था। सन् १६०० में रानी एलिजेबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी ( East India Company ) को पूर्वीय देशों से व्यापार करने के लिये आज्ञापत्र ( Charter ) प्रदान किया था। भारतवर्ष के मुगल सम्राट् जहाँगीर के दरबार में इँगलैण्ड से दो राजदूत हॉकिन्स ( Hawkins ) और सर टामस रो ( Sir Thomas Roe ) भेजे गये; और उन्होंने अँग्रेजों के लिये भारतवर्ष में व्यापार की आज्ञा प्राप्त की। सन् १६१२ में भारत-वर्ष की पहली अँग्रेजी व्यापारिक कोठी ( Factory ) सूरत ( Surat ) में स्थापित हुई। सन् १६४० में चन्द्रगिरि के राजा से कुछ जमीन किराये पर लेकर वहाँ फोर्ट सेण्ट जॉर्ज (Fort St George ) बनाया गया। सन् १६६१ में चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाल की राजकुमारी से विवाह करने पर दहेज में बम्बई (Bombay) मिला और सन् १६६९ में चार्ल्स ने उसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी को किराये पर दे दिया। सन् १६९० में अँग्रेजों ने बंगाल में पास पास तीन गाँव मोल लिये, जिनमें एक कालीघाट था, जो बाद में कलकत्ता ( Calcutta ) नामक प्रसिद्ध नगर हुआ; और भारतवर्ष में अँग्रेजी राज्य स्थापित हो जाने पर बहुत दिनों तक ब्रिटिश इण्डिया की राजधानी रहा।

**डचों तथा फ्रेन्चों से मुकाबला**—उपनिवेश स्थापित करने तथा व्यापार बढ़ाने के कार्य्य में इँगलैण्डवालों का हॉलैण्ड तथा फ्रान्सवालों से मुकाबला था। इसी मुकाबले के कारण इँगलैण्ड

का तीन बार हॉलैंण्डवालों ( डचों ) से युद्ध हुआ जिसका उल्लेख पहले हो चुका है। दूसरे डच युद्ध के बाद अमेरिका का डच उपनिवेश न्यू एम्सटर्डम ( New Amsterdem ) इँगलैण्ड के हाथ आया; और अब उसका नाम बदल कर न्यूयॉर्क (New York) रखा गया। अब तक उत्तरी अमेरिका के उत्तरी तथा दक्षिणी आंग्ल उपनिवेश एक दूसरे से अलग थे; परन्तु न्यूयार्क ने इन दोनों को मिला दिया और उत्तरी अमेरिका का समस्त पूर्वीय तट आंग्लों के अधीन हो गया। डच युद्धों का यह परिणाम हुआ कि पूव में डचों की शक्ति तो पूर्वीय द्वीप-समूह ( East Indies ) में अधिक रही और भारतवर्ष का व्यापार आंग्लों के हाथ रहा। पश्चिम में अमेरिका के महाद्वीप पर आंग्लों की प्रधानता रही; परन्तु पश्चिमी द्वीप समूह ( West Indies ) अधिकतर डचों के अधीन रहा।

विलियम के राज्याभिषेक के समय से डचों से मित्रता हो गई और अब फ्रेंचों के विरुद्ध युद्ध का काल आरम्भ हुआ। इँगलैण्ड और फ्रान्स का अमेरिका के उपनिवेश तथा भारतवर्ष के व्यापार के लिये मुकाबला था; और इन दोनों देशों में लगभग सवा सौ वष ( १६८९-९८२५ ) तक झगड़ा चला। सत्रहवीं शताब्दी में इस झगड़े का प्रारम्भ मात्र ही था। परन्तु "स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध" में आंग्लों ने जो कई बार विजय प्राप्त की, उससे यह विदित होने लगा था कि उपनिवेश तथा व्यापार के मुकाबले में फ्रान्स के विरुद्ध भी इँगलैण्ड की विजय ही होगी।

**ब्रिटिश साम्राज्य का प्रारम्भ**—सत्रहवीं शताब्दी के अमेरिकन उपनिवेशों तथा भारतवर्ष की व्यापारिक कोठियों को वर्तमान

ब्रिटिश साम्राज्य की नींव समझना चाहिए। इन्हीं छोटे छोटे उपनिवेशों तथा व्यापारिक केन्द्रों के बढ़ने से इतना बड़ा साम्राज्य बना, जिसके विषय में कहा जाता है कि इसमें सूर्य्य कभी अस्त नहीं होता। सोलहवीं शताब्दी तक इँगलैण्ड की गणना युरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों में न थी; परन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक आते आते इँगलैण्ड की स्थिति में भारी परिवर्तन हो गया। यूट्रेक्ट की सन्धि में रूम सागर का प्रसिद्ध फाटक जिब्राल्टर इँगलैण्ड को प्राप्त हुआ; और समुद्र के ऐसे ही स्थानों पर आधिपत्य होने के कारण वर्तमान काल में ब्रिटन की समुद्री शक्ति इतनी बढ़ी चढ़ी है। ऐतिहासिकों का कहना है—"यदि आरमेडा के नाश के समय से इँगलैण्ड का उपनिवेश स्थापित करने तथा व्यापार बढ़ाने के क्षेत्र में प्रवेश माना जाय, तो यूट्रेक्ट की सन्धि के समय तक इँगलैण्ड ने इस क्षेत्र में बड़ा उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था।"

## ( ४ ) सामाजिक दशा

**नगर तथा ग्राम**—रानी एलिज़ेबेथ के राज्यकाल से देश में जो उन्नति शुरू हुई थी, वह बराबर बढ़ती गई। लन्दन नगर धीरे धीरे देश की सभ्यता तथा व्यापार का केन्द्र होता जा रहा था। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक यह नगर बहुत गन्दा था। प्लेग आदि रोग प्रायः फैला करते थे। सन् १६६६ में नगर में भयंकर आग लग गई जिस से नगर का बहुत सा भाग भस्म हो गया। इस भयंकर अग्नि से एक लाभ भी हुआ। नगर की गन्दी गलियाँ और मकान सब साफ़ हो गये; और इस के बाद नये और अच्छे ढंग से नगर बसाया गया। इसी समय इँगलैण्ड के प्रसिद्ध इमारत बनानेवाले ( Architect ) क्रिस्टिफोर रेन ( Christopher

Wren) ने बहुत सी सुन्दर इमारतें बनाईं जिन से नगर की शोभा बढ़ गई। सन् १६९४ में लन्दन में बैंक आफ इँगलैंण्ड (Bank of England) की स्थापना हुई, जिसकी गणना ब्रिटिश जाति के व्यापार की उन्नति होने के कारण धीरे धीरे दुनिया के प्रसिद्ध बंकों में होने लगी।

अन्य नगरों की दशा इतनी सन्तोषजनक न थी। गलियों की सफ़ाई तथा रोशनी का कोई प्रबन्ध न था और रात में घर से कहीं बाहर जाना कठिन होता था। दूकानों में आज कल की भाँति लिखे हुए साइनबोर्ड आदि नहीं होते थे। कुछ विलक्षण ढंग के चिह्न दूकानों के बाहर बना दिये जाते थे जिन से पता चलता था कि इस दूकान में क्या बिकता है। मकानों पर नम्बर न होते थे और बिना जाने किसी मकान का पता लगाने में बड़ी कठिनाई होती थी। पुलिस का उचित प्रबन्ध न था और आये दिन चोरियाँ हुआ करती थीं।

ग्रामों की दशा और भी ख़राब थी। अभी तक बड़ी बड़ी दलदलें और जंगल भरे पड़े थे। ग्राम की स्त्रियों को बहुत काम करना पड़ता था। रसोई बनाना, शराब निकालना, कपड़े सीना आदि उन्हीं का काम था और वही बीमारों की भी देख भाल करती थीं; क्योंकि उस काल में ग्रामों में डाक्टर बिलकुल न मिलते थे।

**यात्रा की कठिनाइयाँ**—अभी तक देश के किसी भाग में अच्छी सड़कें न थीं। सत्रहवीं शताब्दी में पाल-गाड़ियों (Stage Coaches) का रवाज शुरू हुआ; परन्तु सड़कें ख़राब होने के कारण वे प्रायः कीचड़ में धँस जाया करती थीं और, आस पास

से घोड़े मँगाकर उन्हें खींच कर निकाला जाता था। लन्दन से यॉर्क तक जाने में पूरे चार दिन लगते थे। जो गाड़ियाँ दिन भर में चालीस मील चल सकती थीं, वे उन दिनों सब से तेज गाड़ियाँ ( Flying Coaches ) समझी जाती थीं। सड़कों के किनारे सराएँ होती थीं, जहाँ गाड़ीवाले अपने घोड़े बदलते थे। प्रत्येक गाड़ी के साथ सवारों का पहरा रहता था; परन्तु फिर भी डाकुओं से जान न बचती थी। इन्हीं पालगाड़ियों द्वारा डाक भी जाती थी। प्रत्येक चौराहे पर जब गाड़ीवाला ज़ोर से घंटी बजाता था, तब आस पास के लोग आकर उसे अपनी चिट्ठियाँ दे जाते थे। इन पालगाड़ियों का भाड़ा बहुत होता था; और इस-लिये ग़रीब लोगों को ठेलों ( Wagons ) पर जाना पड़ता था, जिन पर लाद कर सामान भी भेजा जाता था। ठेले बहुत धीरे धीरे चलते थे और रास्ते में प्रायः उलट भी जाते थे। ऐसी अव-स्था में बहुत से लोग पैदल चलने या घोड़े पर जाने को ही अच्छा समझते थे।

**सामाजिक जीवन**—सत्रहवीं शताब्दी में लोगों के खान पान तथा वस्त्रों में भी उन्नति हुई। शराब के स्थान पर चाय और क़हवे का प्रयोग होने लगा और कई तरह की मिठाइयाँ भी बनने लगीं। देश में बहुत से क़हवाघर ( Coffee Houses ) खुल गये, जहाँ लोग मिल कर जलपान करते और गप शप लड़ाते थे। इन क़हवाघरों को वर्तमान क्लबों ( Clubs ) का प्राचीन रूप समझना चाहिए। यहीं राजनीतिक विषयों पर भी वाद विवाद होता था। पीछे धीरे धीरे प्रत्येक राजनीतिक दल-वालों ने अपने अपने अलग अलग क़हवाघर घर स्थापित कर लिये।

सत्रहवीं शताब्दी के वस्त्र, विशेषतया पुनः राज्यस्थापन के बाद, एलिज़ेबेथ के राज्यकाल के वस्त्रों से भी अधिक भड़कीले होते थे। पुरुषों में यह फैशन चल पड़ा था कि सिर के बाल मुँडवा कर नक़ली बालों की टोपियाँ ( Wigs ) पहनते थे, जिन की लागत भी बहुत होती थी और जो भारी भी बहुत होती थीं। स्त्रियाँ भी पुरुषों का अनुसरण कर के नकली घूँघरवाले बालों से शृंगार करने लगी थीं। वे अपना सौन्दर्य बढ़ाने के लिये कपोलों पर नक़ली तिल बनाती थीं। यह फ़ैशन एनी के राज्यकाल तक रहा। इस काल में टोरी स्त्रियाँ बाएँ और ह्विग स्त्रियाँ दाहिने कपोल पर तिल बनाती थीं।

देश में बहुत सी नृत्य तथा नाट्यशालाएँ भी बनने लगीं। प्योरिटनों ने प्रजातन्त्र काल में इन सब को बन्द करवा दिया था; परन्तु पुनः राज्यस्थापन ( Restoration ) के बाद ये और भी अधिक संख्या में दिखाई पड़ने लगीं। नाटकों में जनता की रुचि बढ़ती गई और अब स्त्रियाँ भी अभिनय या पार्ट करने लगीं। परन्तु देशवासियों की रुचि अभी भद्दी ही थी; और अपराधियों को कोड़े लगने आदि के बेहूदे दृश्य देखने के लिये सैकड़ों आदमियों की भीड़ पहुँच जाती थी। शिक्षा का अभी बड़ा अभाव था। स्त्री शिक्षा तो थी ही नहीं; और पुरुषों में भी प्रति सैकड़े दो चार से अधिक शिक्षित न थे।

## ( ५ ) साहित्य तथा विज्ञान

विज्ञान—"वर्तमान विज्ञान के जन्मदाता" बेकन (Bacon) के विषय में हम पहले लिख आये हैं। सत्रहवीं शताब्दी में विज्ञान

में और भी अधिक उन्नति हुई और सन् १६६० में प्रसिद्ध "रॉयल सोसायटी" ( Royal Society ) की स्थापना हुई, जिस का आज्ञापत्र ( Charter ) चार्ल्स द्वितीय ने प्रदान किया। वर्तमान काल में संसार के प्राय: सभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक इस सोसाइटी के सदस्य हैं। सत्रहवीं शताब्दी के विज्ञान के सम्बन्ध में सब से प्रसिद्ध नाम सर आइज़ेक न्यूटन (Sir Isaac Newton) का है, जिसने आकर्षण शक्ति का सिद्धान्त ( Law of Attraction ) ढूँढ़ निकाला और जिसने बतलाया कि पृथ्वी तथा तारागण आदि एक दूसरे की आकर्षण शक्ति के द्वारा ही विश्व मण्डल में स्थित हैं।

**साहित्य**—सत्रहवीं शताब्दी का प्रसिद्ध कवि जॉन मिल्टन (John Milton ) था, जो पक्का प्योरिटन था और जो प्रजातन्त्र काल में राजसभा के विदेशी विभाग का मन्त्री (Foreign Secretary) था। मिल्टन के पश्चात् अँग्रेजी साहित्य में पद्य की ओर कम ध्यान रह गया, परन्तु गद्य में खूब उन्नति हुई। इस काल के प्रसिद्ध गद्य लेखक ये थे–( १ ) जॉन बुनियन ( John Bunyan ) Pilgrim's Progress का लेखक; ( २ ) स्विफ्ट (Swift) Gulliver's



मिलटन ( बाल्यावस्था )

Travels का लेखक; (३) डेनियल डीफो (Daniel Defoe) Robinson Crusoe का लेखक; और (४) एडिसन (Addison) प्रसिद्ध निबन्धलेखक तथा स्पेक्टेटर (Spectator) पत्र का सम्पादक ।

**समाचारपत्र**—"विलियम और मेरी" के राज्यकाल में समाचारपत्रों को स्वतन्त्रता (Liberty of Press) मिल गई; और इसी समय से समाचारपत्रों का वास्तविक प्रारम्भ हुआ। राजनीतिक दलों ने पत्रों द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार आरम्भ किया। स्पेक्टेटर (Spectator) के सम्पादक एडिसन (Addison) ने ह्विग सिद्धान्तों का समर्थन किया; और स्विफ्ट (Swift) ने टोरी सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये बहुत से लेख प्रकाशित किये। धीरे धीरे समाचारपत्र बढ़ते गये; और अब वर्तमान काल में हम देखते हैं कि देश के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन के लिये समाचार-पत्र कितने आवश्यक हो गये हैं ।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १६२०—"धार्मिक यात्रियों" (Pilgrim Fathers) का इँगलैंड छोड़ कर अमेरिका में जा बसना ।
" १६३४—मिल्टन की "Comus" का प्रकाशन
" १६६२—"रायल सोसाइटी" (Royal Society) की स्थापना ।
" १६६७—मिल्टन के "Paradise Lost" का प्रकाशन।
" १६७८—बुनियन की Pilgrim's Progress का प्रकाशन
" १६८७—न्यूटन की Principia का प्रकाशन।

## MODEL QUESTIONS.

### (*Stuart Period*)

1. What were the causes of the Thirty Years War ? What was the attitude of the king (James I) and of the people of England towards it ? What part did England play in this war ?

(*Hint*—The king was anxious to be the peacemaker of Europe and he tried, though in-vain, to marry his son Charles to the Spanish Infanta, thus trying to persuade Spain to restore the Palatinate to Frederick. The people, on the other hand, disapproved of the King's policy of Spanish alliance and they wanted England to be the champion of Protestantism and to make war against the Catholic States of Europe.)

2. Analyse briefly the causes of the struggle between king and Parliament during the Stuart Period.

(*Hint*—Explain how the various circums-tances made the war inevitable and then refer to the points at issue e. g. responsibility of ministers, control of taxation, etc.)

3. Write a short account of the reign of Charles I during the period between 1629 and 1640.

(*Hint*—This was the period of Charles I's "Arbitrary Rule". Specially refer to the influence of Laud and Strafford during this period and explain why the people came to hate them both.)

4. Under what circumstances did the Long Parliament meet? Give some account of its beneficial measures.

(*Hint*—The financial pressure of the Bishop Wars forced the king to summon Parliament after eleven years of arbitrary rule. The Long Parliament sought to abolish the extra ordinary powers of the Crown.)

5. Explain the term "Divine Right of Kings". What were the points at issue in the struggle of James I with his Parliaments?

6. Write a short account of the Great Civil War.

*Hint*—Causes that led to it—parties—principal battles—result.)

7. Narrate the circumstances which led to the execution of Charles I.

8. Write a short sketch of the career of Oliver Cromwell under the following headings:–

(*a*) His position in the Commonwealth, (*b*) His Domestic Policy, (*c*) His Foreign Policy and (*d*) An estimate of what he did for England.

9. Describe the various forms of Government that were tried in England during the preiod between 1649 and 1660.

(*Hint*—(1) The "Rump" and the Council of State, (2) The Instrument of Government, (3) Scheme of Majors-General, (4) The Humble Advice and Petition and (5) Monarchy restored in its usual form with the Restoration.)

10. Comment on the following:—

(*a*) "Cromwell was frankly a military despot, governing for the Nation's good."

(*Hint*—Military character of Cromwell's rule; the "New Model" was always supreme—tried to raise the moral standard of the people, to preserve order, and to raise England's status abroad.)

(*b*) "Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad."

(*Hint*—Explain the vigorous foriegn policy of Cromwell and his achievements against the Dutch.)

11. Narrate the circumstances leading to the Restoration. Why was the Restoration welcomed by the people ?

(*Hint*—The Restoration was welcomed by the people, who had become tired of the Commonwealth and who had great hopes from Charles II owing to his Declaration of Breda.)

12. Give an account of the important measures of the "Convention" and "Cavalier" Parliaments.

(*Hint—Convention*—The Restoration settlement. *Cavalier*—Strongly Royalist—Laws against the Puritans and the Dissenters.)

13. Describe the foriegn policy of Charles II and compare it with that of (*a*) Cromwell and (*b*) William III.

(*Hint*—Like Cromwell Charles II formed an alliance with France and fought against the Dutch; but for the sake of money Charles II became a mere tool in the hands of the French King. As for William III, his whole life was spent in checkmating the ambitions of Louis XIV.)

14. Give a short account of Louis XIV's relations with England.

(*Hint—Cromwell*—Friendship with Louis XIV, in order to fight against the Dutch and to raise England's status in Continental politics. *Charles II and James II*—Friendship with Louis XIV degenerated into a subservience to the French policy—the two English monarchs were merely the pensioners of the French King. *William and Anne*—England's war against Louis XIV's growing power—grand designs of the French King were successfully checkmated.)

15. Narrate the circumstances which led to the expulsion of James II from England. Explain the term "Glorious Revolution."

16. What was the effect of the Revolution of 1688 upon the English Constitution ? Discuss the constitutional importance of the Bill of Rights and the Act of Settlement.

17. Give a brief account of the War of the Spanish Succession. What was England's interest in the war ?

(*Hint*—England's interest in the war was to guard the Balance of Power in Europe, which was threatened by the prospect of the union of the Crowns of Spain and France. England was specially anxious that the French should not

be allowed to establish themselves in the Netherlands.)

18. "If at the Armada England entered the race for Colonial expansion, she won it at the Treaty of Utrecht". Explain.

(*Hint*—The Naval Supremacy of England begins from her victory over the Armada; the terms of the Treaty of Utrecht made her a really strong maritime Power.)

19. How did the Whig and the Tory parties come into existence? What different principles did the two parties stand for in the reign of Queen Anne?

20. Narrate the circumstances which led to the Scottish Union of 1707.

21. Describe the position of the various religious parties in the Stuart Period.

(*Hint*—See pp. 229—31)

22. Carefully narrate the story of British Colonisation in the 17th century.

(*Hint*—See pp. 231—35)

23. Give a brief account of the general progress in the country in the 17th century.

(*Hint*—See pp. 235—38)

24. Discuss the constitutional importance of the following Acts:—

Petition of Right, Grand Remonstrance, Haebus Corpus Act, Bill of Rights, Act of Settlement.

25. Write short notes on:—

Gunpowder plot, Buckingham, Hampton Court Conference, Solemn League and Covenant, Self-Denying Ordinance, Pride's Purge, Ship Money, Pilgrim Fathers, Execution of Raleigh, Secret Treaty of Dover, Declaration of Indulgence, Impeachment of Danby, Earl of Clarendon, Marlborough, Navigation Act, Test Act, Exclusion Bill, Massacre of Glencoe, Toleration Act.

---



# THE HIGH SCHOOL HISTORY

OF

# MODERN ENGLAND.

## Part II.

( *Hindi Edition* )

BY

**SHIVA CHANDRA KAPOOR** M. A., M. R. A. S.

WITH A FOREWORD BY

**Dr. BENI PRASAD** M. A., PH. D.



Published by
NAND KISHORE & BROS.
Booksellers, Chowk, Benares City.
&
RAMA CHANDRA VARMA
Sahitya Ratna Mala Office, Benares City.

---

First Edition
2100 Copies

1927

Price as 12/-

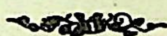
Printed by G K. Gurjar, at
Shri Lakshmi Narayan Press, Benares City.

आधुनिक

# इँगलैण्ड का इतिहास

[ हाई स्कूलों के लिए ]

द्वितीय भाग



लेखक

शिवचंद्र कपूर

एम० ए०, एम० आर० ए० एस०



[ डाक्टर वेणीप्रसाद जी एम० ए० पी० एच० डी० (लण्डन) लिखित प्रस्तावना सहित ]

---

पहला संस्करण }
२१०० प्रतियाँ }

जून १९२७.

मूल्य ।॥)

प्रकाशक

रामचन्द्र वर्मा

साहित्य-रत्न माला कार्यालय,

बनारस सिटी



और



नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स

बुकसेलर्स, चौक,

बनारस सिटी ।

# विषय-सूची

## पहला परिच्छेद

### जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय का राजत्व काल पृष्ठ १—२५

---



## दूसरा परिच्छेद

### जार्ज तृतीय तथा अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध पृष्ठ २६—३४

---

## ˆसरा परिच्छेद



## चौथा परिच्छेद

## पाँचवाँ परिच्छेद



## छठा परिच्छेद

## सातवाँ परिच्छेद



## आठवाँ परिच्छेद

## ग्यारहवाँ परिच्छेद



---



## बारहवाँ परिच्छेद



---

---

# चित्र-सूची

# मानचित्र (नकशे)



## वंशावली

आधुनिक

# इँगलैण्ड का इतिहास

## [ दूसरा भाग ]

## हनोवर वंश तथा

# आधुनिक ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना



# हनोवरियन राजाओं की वंशावली

जेम्स प्रथम

|

राजकुमारी ऐलिज़ेबेथ = फ्रेडरिक, पेलेटिनेट का राजा

|

स फ़य = हनोवर का राजा

|

जार्ज प्रथम ( १७१४—१७२७ )

|

जाज द्वितीय ( १७२७—१७६० )

|

फ्रेडरिक, प्रिंस आफ़ वेल्ज़

|

जार्ज तृतीय ( १७६०—१८२० )

|

जार्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०)

विलियम चतुर्थ १८३०-१८३७)

एडवर्ड, ड्यूक आफ़ केण्ट

|

महारानी विक्टोरिया = राजकुमार एलबर्ट
( १८३७-१९०१ )

|

एडवर्ड सप्तम = रानी एलेकज़ेण्ड्रा
( १९०१-१९१० )

|

जार्ज पंचम = रानी मेरी
( १९१०- )
( हाउस आफ़ विंडसर )



# पहला परिच्छेद



## जॉर्ज प्रथम और जॉर्ज द्वितीय का राजत्व काल

### ( १ ) ह्विग शासन काल

### ( १७१४–६३ )

**जॉर्ज प्रथम और जॉर्ज द्वितीय**—"उत्तराधिकार निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार रानी एनी की मृत्यु के बाद जेम्स प्रथम की दौहित्री सोफिया (Sophia) के पुत्र जॉर्ज को राजसिंहासन मिला, जो "जॉर्ज प्रथम" (१७१४–२७) के नाम से ब्रिटन का पहला हनोवरियन राजा हुआ। उस समय जॉर्ज की अवस्था ५४ वर्ष



जॉर्ज प्रथम ( १७१४–२७ )

की थी; और जर्मन होने के कारण न तो वह अँग्रेजी भाषा ही समझता था और न उसे आंग्ल राजनीति में कोई रुचि ही थी। हनोवरियन वंश के अगले राजा "जॉर्ज द्वितीय" (१७२७--१७६०) का भी यही हाल था; परन्तु उसने थोड़ी बहुत अँग्रेजी भाषा सीख ली थी। जॉर्ज द्वितीय वीर योद्धा भी था; और कई युद्धों में वह स्वयं आंग्ल सेना का नेता बना था। पहले दोनों जॉर्जों के राजत्व काल में देश का शासन कार्य्य बहुत कुछ मन्त्री मण्डल (Cabinet) के हाथ में आ गया।



जॉर्ज द्वितीय (१७२७–६०)

और यह बड़े महत्व की बात है कि अपने देश हनोवर * में स्वेच्छाचारी राजा होने पर भी उन्होंने ब्रिटन में "नियमानुमोदित

* जरमनी की एक रियासत।

शासन" (Constitutional Government) का कभी उल्लंघन नहीं किया।

**ह्विग शासन काल**—सन् १७१४ से १७६३ तक देश का शासन कार्य ह्विग दल के मन्त्री मण्डल के हाथ में रहा। उस समय टोरी दलवाले देश में बहुत बदनाम थे; क्योंकि उन्होंने हनोवर वंश को सिंहासन से वंचित रखने का प्रयत्न किया था; और सब लोग उन्हें पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश का समर्थक समझते थे। इस कारण हनोवर वंश के पहले दोनों राजाओं ने टोरियों पर विश्वास न करके ह्विग दलवालों को ही मन्त्री मण्डल में स्थान दिया। ह्विग दलवाले धनी थे और इस कारण लॉर्ड सभा में उनकी संख्या अधिक थी। चुनाव में खूब धन व्यय करके उन्होंने लोक सभा में भी अपने समर्थकों की संख्या बढ़ा ली; और इस प्रकार लगभग आधी शताब्दी तक शासन कार्य में बड़े बड़े ह्विग वंशों की ही प्रधानता रही।

## (२) जेकोबाइट विद्रोह

**सन् १७१५ का विद्रोह**—पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश के समर्थक इतिहास में जेकोबाइट (Jacobite) नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि जेम्स शब्द के स्थान पर लैटिन भाषा में जेकोबस शब्द का प्रयोग होता है। हनोवर वंश का राज्य स्थापित होने पर बहुत से टोरी फ्रान्स पहुँच कर जेम्स द्वितीय के पुत्र जेम्स एडवर्ड (James Edward) से, जो इतिहास में "ओल्ड प्रिटेण्डर" (Old Pretender *) के नाम से प्रसिद्ध है,

* Pretender (प्रिटेण्डर) शब्द का अर्थ है—"अधिकार जतलानेवाला"।

जा मिले; और इस सहायता के भरोसे ओल्ड प्रिटेण्डर ने अपने पिता का सिंहासन प्राप्त करने का प्रयत्न किया। स्कॉटलैण्ड में अभी तक पहाड़ी लोगों (Highlanders) की स्टुअर्ट वंश के प्रति बड़ी राजभक्ति थी; और जॉर्ज प्रथम के राज्याभिषेक के एक ही वर्ष बाद जब अर्ल ऑफ मार (Earl of Mar) ने हनोवर राज्य के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया, तो बहुत से पहाड़ियों ने उसका साथ दिया। कुछ समय बाद ओल्ड प्रिटेण्डर स्वयं स्कॉटलैण्ड पहुँचा, परन्तु उसकी अयोग्यता देख कर उसके समर्थकों का उत्साह ठंढा पड़ गया। इसी समय फ्रान्स के राजा लूइस चतुर्दश की, जो अब तक जेकोबाइट दल को सहायता दे रहा था, मृत्यु हो गई; और ऐसी अवस्था में निराश होकर ओल्ड प्रिटेण्डर फ्रान्स लौट गया।

**"सप्तवार्षिक नियम" (१७१६)**—इस जेकोबाइट विद्रोह के कारण शासन प्रणाली में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। ऐसी अशान्ति के काल में नया चुनाव करना ठीक नहीं समझा गया; और इसलिये "सप्तवार्षिक नियम" (Septennial Act) द्वारा यह निश्चित किया गया कि पार्लिमेण्ट की अवधि सात वर्ष होनी चाहिए। अब तक "त्रैवार्षिक नियम" * (Triennial Act) के अनुसार पार्लिमेण्ट की अवधि केवल तीन वर्ष की होती थी; परन्तु अब इस नियम के अनुसार पार्लिमेण्ट का चुनाव सात वर्ष के लिये होने की प्रथा चल गई। "सप्तवार्षिक नियम" लगभग दो सौ वर्ष तक प्रचलित रहा; परन्तु सन् १९११ में पार्लि-

* देखो पृष्ठ १४६ (पहला भाग)।

मेण्ट की अवधि घटा कर सात वर्ष के स्थान पर पाँच वर्ष कर दी गई।

**सन् १७४५ का विद्रोह**—सन् १७४५ में जॉर्ज द्वितीय के राजत्व काल में जेकोबाइट दल ने फिर स्टुअर्ट वंश का राज्य स्थापित करना चाहा। "ओल्ड प्रिटेण्डर" अभी जीवित था, परन्तु इस समय उसका पुत्र चार्ल्स एडवर्ड (Charles Edward) जो "यंग प्रिटेण्डर" (Young Pretender) कहलाता है, बहुत सर्वप्रिय हो रहा था। "यंग प्रिटेण्डर" सुन्दर तथा प्रसन्न-चित्त युवक था। उसके स्कॉटलैण्ड पहुँचते ही सब पहाड़ी जातियाँ उससे आ मिलीं और हनोवर राज्य के विरुद्ध बड़ा भयंकर विद्रोह उठ खड़ा हुआ। यंग प्रिटेण्डर एडिन्बरा से चल कर कार्लाइल होता हुआ इँगलैण्ड पहुँचा; और उसकी सेना डरबी (Derby) तक, जो लन्दन से कुल १२५ मील है, बेधड़क पहुँच गई। ऐसी अवस्था में इँगलैण्ड की जनता में बड़ी घबराहट फैली और लोग अपना रुपया लेने के लिये बंकों को पहुँचने लगे। कहते हैं कि स्वयं जॉर्ज द्वितीय इतना घबराया कि उसने हनोवर भाग जाने की कुल तैयारी कर डाली। यंग प्रिटेण्डर ने फॉलक्रिक (Falkrik) नामक स्थान पर विजय प्राप्त की; परन्तु शीघ्र ही जॉर्ज द्वितीय के पुत्र ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड (Duke of Cumberland) ने उसे कलोडन (Culloden) के युद्ध में परास्त किया। जेकोबाइट दल के बहुत से लोग मार डाले गये और स्वयं यंग प्रिटेण्डर बड़ी कठिनाइयाँ सहकर किसी प्रकार फ्रान्स की ओर भाग निकला।

पदच्युत जेम्स द्वितीय के वंश को सिंहासन दिलाने का यह

अन्तिम प्रयत्न था। इस के पश्चात् हनोवरियन राजाओं को इस प्रकार की किसी आपत्ति का सामना न करना पड़ा। स्काटलैण्ड की स्वतन्त्र पहाड़ी जातियों के, जिन्होंने जेकोबाइट दल का साथ दिया था, हथियार छीन लिये गये और उन को अपने जातीय वस्त्र पहनने तक की मनाही कर दी गई। तब से ये पहाड़ी जातियाँ शान्तिपूर्वक रहने लगीं; परन्तु अभी तक स्काटलैण्ड में यंग प्रिटेण्डर ( Young Pretender, Prince Charlie ) की सुन्दरता तथा साहस के जोशीले गीत गाये जाते हैं।

## ( ३ ) वालपोल का मन्त्रित्व

## ( १७२०—४२ )

**दक्षिण सागर का बुलबुला**—यूट्रेक्ट की सन्धि में ब्रिटन को स्पेनिश उपनिवेशों से व्यापार करने के लिये एक जहाज़ प्रति वर्ष अमेरिका को भेजने का अधिकार मिल गया था। ब्रिटिश सरकार ने यह अधिकार एक व्यापारिक कम्पनी को दे दिया, जो "दक्षिण सागर कम्पनी" (South Sea Company) के नाम से प्रसिद्ध है। सब को यही आशा थी कि इस कम्पनी को बहुत लाभ होगा; और इस कारण उसके हिस्सों (Shares) का भाव प्रति दिन बढ़ता गया। धीरे धीरे यह दशा हो गई कि सौ पाउण्ड के हिस्से के लिये एक हज़ार पाउण्ड देने से भी उनका मिलना दुर्लभ हो गया। कुछ ही दिनों में इस कम्पनी का दिवाला निकल गया; और उस में बहुत से देशवासियों का हिस्सा होने के कारण यह एक जातीय विपत्ति सी हो गई। "दक्षिण सागर का बुलबुला" ( The South

Sea Bubble ) इतना फूल गया था कि उस का टूटना अनिवार्य सा हो गया था। ऐसी आपत्ति के समय जॉर्ज प्रथम ने वालपोल को, जो अपनी अर्थ शास्त्र की निपुणता के लिये प्रसिद्ध था, अपना प्रधान मन्त्री बनाया। वालपोल ने पहले स्वयं इस कम्पनी में सम्मिलित होकर बहुत धन उपार्जन किया था;



वालपोल ( बैठे हुए )

परन्तु थोड़े ही दिनों पीछे वह उस से अलग हो गया था और उसने यह जतला दिया था कि ऐसी कम्पनी का अवश्य दिवाला निकलेगा।

**वाल्पोल का मन्त्रित—**वाल्पोल ( Walpole ) की शिक्षा ईटन कालिज (Eton College) में हुई थी, जहाँ के हॉल में उस

का चित्र अब तक लगा हुआ है। सन् १७०२ में उस का पार्लि- मेण्ट में प्रवेश हुआ, और अपनी योग्यता के कारण वह शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। वह सदा ह्विग दल का पक्षपाती रहा। जॉर्ज प्रथम के राज्याभिषेक के समय जब ह्विग दल का मन्त्री मण्डल स्थापित हुआ, तब उस में वाल्पोल भी सम्मिलित था; परन्तु कुछ मतभेद के कारण थोड़े ही दिनों बाद वह उस से पृथक् हो बैठा था। अब सन् १७२० में "दक्षिण सागर के बुलबुले" के टूटने पर वह मन्त्री मण्डल का नेता बनाया गया। जॉर्ज प्रथम तथा जॉर्ज द्वितीय दोनों उस पर विश्वास रखते थे; और इसी कारण वह सन् १७४२ तक ( पूरे बाईस वर्ष ) प्रधान मन्त्री रहा।

**प्रथम प्रधान मन्त्री**—वाल्पोल इँगलैंड का प्रथम प्रधान मन्त्री माना जाता है। अब तक राजा स्वयं मन्त्री मण्डल के प्रधान होते थे। परन्तु जॉर्ज प्रथम जर्मन होने के कारण अँग्रेज़ी भाषा तक न समझता था; और इसलिये धीरे धीरे उसने मन्त्री मण्डल की बैठकों में जाना बन्द कर दिया था। ऐसी अवस्था में मन्त्रियों में से ही एक व्यक्ति मन्त्री मण्डल का प्रधान होने लगा और वह प्रधान मन्त्री ( Prime Minister ) कहलाने लगा। यह पद सब से पहले वाल्पोल ने ग्रहण किया। इस परि- वर्तन का सब से बड़ा परिणाम यह हुआ कि राजा का मन्त्री मण्डल पर बिलकुल दबाव न रहा और प्रधान मन्त्री ही सब तरह से मन्त्री मण्डल का नेता होने लगा। वाल्पोल ने उन मन्त्रियों को, जो उस की नीति के विरोधी थे, पद त्याग करने पर बाध्य किया; और धीरे धीरे यह प्रथा चल गई कि मन्त्री

मण्डल में अपने सहकारियों की नियुक्ति पूर्णतया प्रधान मन्त्री के अधिकार में रहा करे। इस प्रकार इस समय से मन्त्री मण्डल (Cabinet) के वर्तमान रूप के पूर्व चिह्न प्रकट होने लगे।

**वाल्पोल की गृह नीति**—वाल्पोल की नीति का सारांश यह है—"विदेश से युद्ध न हो और देश में सुख शान्ति रहे"। वह यह नहीं चाहता था कि देश में किसी प्रकार के आन्दोलन का अवसर आवे। उस का सिद्धान्त था—"सोते हुए कुत्तों को जगाना बुद्धिमानी नहीं है"। वह स्वयं बहुत ईमानदार था; परन्तु पार्लिमेण्ट में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये उसे सदस्यों को पद आदि देकर अथवा कभी कभी धन देकर भी प्रसन्न करना पड़ता था। परन्तु फिर भी वाल्पोल को बहुत से विरोधियों का मुक़ाबला करना पड़ा। रानी एनी के राजत्व काल के टोरी मन्त्री बोलिंगब्रोक ने इँगलैण्ड में आकर क्रॉफ्ट्समैन (Craftsman) नामक पत्र द्वारा वाल्पोल की नीति का विरोध किया। स्वयं पार्लिमेण्ट में छोटी अवस्था के कुछ सदस्य, जो "बॉयज़" (Boys) कहलाते थे, वाल्पोल के विरोधी थे। उन्हीं में विलियम पिट भी था, जो आगे चल कर इँगलैण्ड का इतना प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा प्रधान मन्त्री हुआ।

**आर्थिक नीति**—वाल्पोल अर्थ-शास्त्र में पूर्णतया निपुण था। "दक्षिण सागर के बुलबुले" के टूटने के बाद देश की व्यापारिक तथा आर्थिक दशा का सुधार करना उसी का काम था। वह "स्वतन्त्र व्यापार" (Free Trade) का पक्षपाती था और उसने व्यापारिक वस्तुओं पर महसूल बहुत कम कर दिया था। बहुत से व्यापारी बिना महसूल दिये चोरी से विदेश से माल

मँगाते थे। इसे रोकने के लिये वाल्पोल ने एक प्रस्ताव (Excise Bill) उपस्थित किया, जिसके अनुसार बन्दरगाह के बदले देश की दूकानों पर, जहाँ जा कर माल बिकता था, महसूल वसूल करने का प्रबन्ध किया गया था। प्रस्ताव अच्छा था, परन्तु व्यापारियों ने उसका विरोध किया। यह कहा गया कि सरकारी कर्मचारी आकर दूकानों का निरीक्षण करेंगे; और बहुधा घरों में ही दूकानें होने के कारण गृहस्थों को इससे बड़ी दिक्कत होगी। वाल्पोल आन्दोलन से बहुत घबराता था, इसलिये उसने यह प्रस्ताव वापस ले लिया।

पर-राष्ट्र नीति—इँगलैण्ड के इतिहास में वाल्पोल युद्ध नीति का सब से बड़ा विरोधी हुआ है। उसने सदा यही प्रयत्न किया कि इँगलैण्ड को किसी विदेशी युद्ध में सम्मिलित न होना पड़े। परन्तु एक अवसर पर उसे इस नीति पर दृढ़ रहने में बड़ी कठिनाई हुई। यूट्रेक्ट की सन्धि के अनुसार अँग्रेज़ केवल एक जहाज़ प्रति वर्ष दक्षिण अमेरिका को स्पेनिश उपनिवेशों से व्यापार करने के लिए भेज सकते थे। उन्होंने यह ढंग निकाला कि बन्दरगाह पर तो एक ही जहाज़ जाता था, परन्तु उसके ख़ाली होने पर रात को अन्य जहाज़ों द्वारा उस पर बहुत सा सामान पहुँचा दिया जाता था। समुद्र तट के स्पेनिश सिपाहियों को इस ढंग का पता लग गया और उन्होंने अँग्रेज व्यापारियों को नियम उल्लंघन के अपराध में दण्ड दिलाना आरम्भ किया। इस पर इँगलैण्ड निवासियों में बड़ी उत्तेजना फैली; और पार्लिमेण्ट में यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि स्पेन के विरुद्ध युद्ध ठान देना चाहिए। वाल्पोल ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा—"झगड़ा

मोल लेना बहुत सहज बात है। परन्तु महाशयो! कितने मन्त्री ऐसे हैं जो बिना युद्ध किये झगड़े का निबटारा करा सकते हैं?"

अन्त में जैन्किन्स (Jenkins) नामक एक अँग्रेज़ कप्तान ने एक दिन अपना एक कान बोतल में बन्द करके लोक सभा में भेजा और कहा कि बड़े अपमानपूर्वक मेरा यह कान स्पेनवालों ने काटा है। सम्भवतः वाल्पोल को युद्ध करने पर बाध्य करने के आशय से ही यह ढंग रचा गया था। इस पर लोक सभा ने बड़े जोश से युद्ध का प्रस्ताव पास किया। यह देख कर वाल्पोल ने कहा—"अभी युद्ध का समाचार सुन कर सब लोग खुशी के घण्टे बजा रहे हैं; परन्तु शीघ्र ही सब को हाथ मल कर पछताना पड़ेगा।"

वाल्पोल का पतन—ऐसी अवस्था में वाल्पोल को त्याग-पत्र देकर अलग हो जाना चाहिए था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। स्पेन से युद्ध आरम्भ हुआ, पर वाल्पोल उसका उचित प्रबन्ध न कर सका। लोक सभा में उसके समर्थकों की संख्या धीरे धीरे घटती गई और इस कारण उसे बाध्य होकर त्यागपत्र देना ही पड़ा। प्रधान मन्त्री तभी तक अपने पद पर आरूढ़ रह सकता है, जब तक लोक सभा में उसके समर्थकों की संख्या उसके विरोधियों की संख्या से अधिक हो। इस प्रकार सन् १७४२ में वाल्पोल के मन्त्रित्व का अन्त हुआ।

## (४) जॉन वेस्ली तथा मेथोडिस्ट दल

जॉन वेस्ली तथा मेथोडिस्ट दल—अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इँगलैण्ड में धर्म की बड़ी बुरी अवस्था थी। धार्मिक

विषयों में लोगों की बहुत कम रुचि रह गई थी, और नगरों में लोग प्रायः भोग विलास में ही जीवन व्यतीत करते थे। लोगों का यह विचार हो चला था कि धर्म एक व्यर्थ का बखेड़ा है और ईश्वरोपासना आदि के नाम पर लोग हँसते थे। ऐसे समय में



जॉन वेस्ली

लोगों को धर्म के पथ पर लाने का कार्य जॉन वेस्ली ( John Wesley ) ने किया। उसे सहायता देनेवालों में उसका भाई चॉर्ल्स वेस्ली ( Charles Wesley ) तथा उसका मित्र जॉर्ज ह्वाइटफ़ील्ड ( George Whitefield ) था। जॉन वेस्ली

"आंग्ल चर्च" का एक पादरी था, जिसने ऑक्सफोर्ड और तत्पश्चात् लन्दन में धार्मिक विषयों पर खुले मैदान व्याख्यान देना शुरू किया। "आंग्ल चर्च" के सिद्धान्तों से कुछ मतभेद हो जाने के कारण उसे एक पृथक् संस्था स्थापित करनी पड़ी। वह नियमित रूप से जीवन व्यतीत करने की ओर विशेष ध्यान देता था; और इसलिये उसके अनुयायी मेथोडिस्ट ( Methodist ) कहलाने लगे। लन्दन में पहली मेथोडिस्ट संस्था सन् १७३९ में स्थापित की गई थी।

**मेथोडिस्ट दल का प्रभाव**—मेथोडिस्ट दल के नियमित जीवन तथा उसके खुले मैदान के व्याख्यानों का देश पर बड़ा प्रभाव पड़ा। धर्म में फिर से लोगों की रुचि होने लगी और उनमें मनुष्य मात्र की सेवा करने का भाव फैलने लगा। देश में बहुत से अस्पताल तथा सेवक मण्डल स्थापित किये गये और निःस्वार्थ होकर समाज की सेवा करना एक उच्च आदर्श माना जाने लगा। दासत्व-निवारण, बन्दीगृह के सुधार आदि को भी एक प्रकार से मेथोडिस्ट दल के प्रचार का ही परिणाम समझना चाहिए।

## ( ५ ) आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध

## ( १७४०—१७४८ )

## (War of the Austrian Succession)

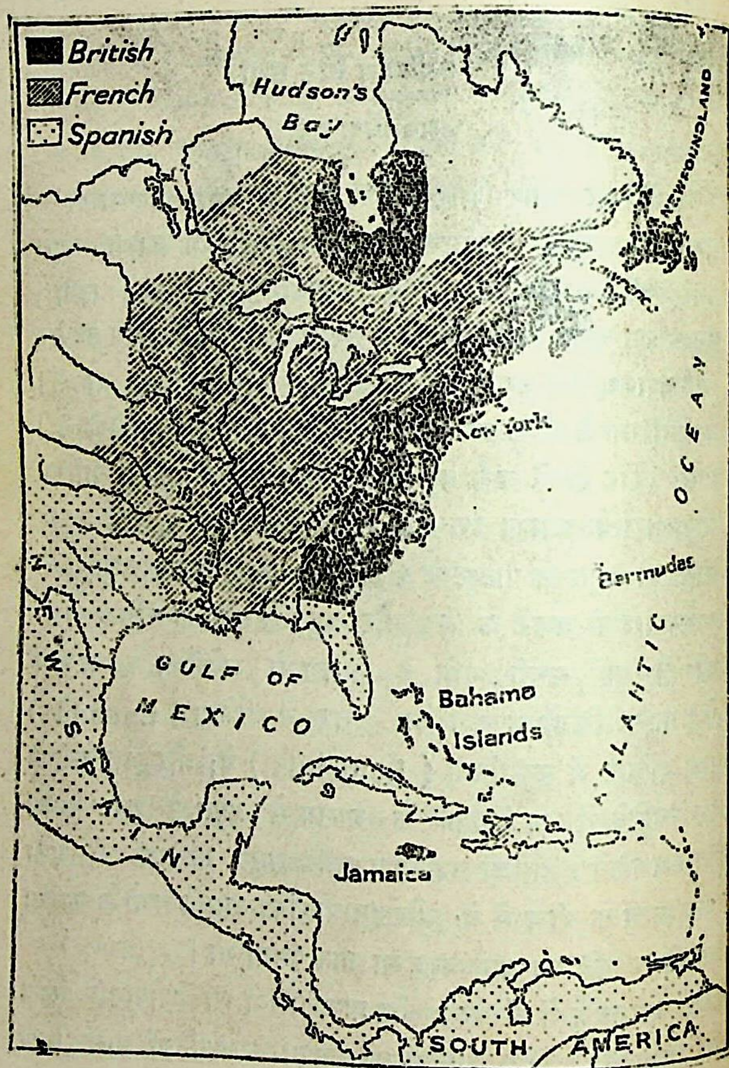
सन् १७४० में आस्ट्रिया के सम्राट् चार्ल्स षष्ठ की मृत्यु हुई। उस के कोई पुत्र न था; अतः उस ने यह वसीयत की थी कि मेरे समस्त राज्य की उत्तराधिकारिणी मेरी पुत्री मेरिया थेरेसा

(Maria Theressa ) हो। एक स्त्री के राजत्व काल में फ्रान्स आदि आस पास के राज्यों ने आस्ट्रिया का कुछ भाग दबा लेने का अच्छा अवसर समझा। जरमनी की प्रशा ( Prussia) नामक उन्नतिशील रियासत ने, जिसका शासक उस समय प्रसिद्ध राजा फ्रेडरिक ( Frederick, the Great ) था, आस्ट्रिया के एक सूबे सिलीशिया ( Silisea ) पर अधिकार जमा लिया। इँगलैण्ड की जनता ने मेरिया थेरेसा के प्रति बहुत सहानुभूति दिखाई; परन्तु वालपोल के शान्तिपूर्ण शासन काल में इँगलैण्ड उस को सहायता न दे सका। वालपोल के पतन के बाद जॉर्ज द्वितीय स्वयं सेना लेकर जरमनी पहुँचा और डेटिंजन ( Dettingen ) नामक स्थान पर उसने भारी विजय प्राप्त की। परन्तु कुछ दिनों बाद जॉर्ज द्वितीय के पुत्र ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड (Duke of Cumberland ) को फ्रान्स और प्रशा की सेना ने फान्टेनॉय ( Fontenoy ) के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। अन्त में सन् १७४८ में एक्श ला चेपेल (Aixla Chapelle ) की सन्धि हुई, जिस के अनुसार सब ने मेरिया थेरेसा का उत्तराधिकार स्वीकृत कर लिया। फ्रान्स ने इस युद्ध काल में यंग प्रिटेण्डर को सहायता दी थी; और इसी सहायता के भरोसे सन १७४५ के जेकोबाइट दल के विद्रोह ( देखो पृष्ठ ३) ने इतना भयंकर रूप धारण किया था। इस सन्धि के समय फ्रान्स ने इँगलैण्ड में हनोवर वंश का उत्तराधिकार स्वीकृत कर लिया; और इस के बाद जेकोबाइट दल निराश होकर कुछ दिनों में छिन्न भिन्न हो गया।

## ( ६ ) विलियम पिट तथा
## सप्तवार्षिक युद्ध

**अमेरिका और भारतवर्ष में अँग्रेज़ तथा फ्रान्सीसी**— अठारहवीं शताब्दी में अँग्रेजों और फ्रान्सीसियों में व्यापार बढ़ाने तथा उपनिवेश स्थापित करने के लिये प्रतिद्वन्द्विता होने लगी। हम बतला चुके हैं कि अँग्रेजों ने उत्तरी अमेरिका के पूर्वीय तट पर उपनिवेश स्थापित कर लिये थे (देखो पृष्ठ २३१—३२ प्रथम भाग)। फ्रान्सीसियों ने भी उत्तरी अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किये थे। जिस प्रकार इँगलैण्ड से बहुत से प्योरिटन तथा कैथोलिक धार्मिक अत्याचारों के कारण देश छोड़ कर यहाँ आ बसे थे, उसी प्रकार फ्रान्स से बहुत से प्रोटेस्टेण्ट ( Hugenots ) लूइस चतुर्दश के अत्याचारों से बचने के लिये और बहुत से लोग कैथोलिक राजा की दी हुई सस्ती भूमि के लालच से अमेरिका में आ बसे थे। फ्रान्सीसियों के उपनिवेश उत्तर में कैनेडा ( Canada ) तथा दक्षिण में लूसीनिया ( Louisinia ) थे; और अब उन्होंने इन उपनिवेशों के मिलाने के आशय से बहुत से दुर्ग बनाने आरम्भ किये। अँग्रेज़ी उपनिवेश पूर्वीय समुद्र तट तथा ऐलेघेनी पर्वतमाला के बीच में थे; और इन प्राकृतिक असुबिधाओं के कारण उनकी उन्नति का मार्ग बन्द सा जान पड़ता था।

भारतवर्ष में अँगरेजों और फ्रान्सीसियों का व्यापार के लिये मुक़ाबला था। दोनों जातियों की व्यापारिक कोठियाँ पास पास थीं और दोनों में दो बार युद्ध भी हो चुका था। पहला युद्ध "आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध" के काल में हुआ और उस से




सन् १७५६ में उत्तरी अमेरिका

किसी को कुछ लाभ न हुआ। दूसरे युद्ध में भारतवर्ष के दक्षिण के शासक भी सम्मिलित थे। उस में अँग्रेजों और फ्रान्सीसियों को बराबर बराबर लाभ रहा। पर थोड़े ही दिनों बाद बंगाल में "ब्लैक होल" की दुर्घटना के कारण अंग्रेजों को बड़ी हानि पहुँची।

सप्तवार्षिक युद्ध ( १७५६—६३ )—दोनों जातियों में व्यापार तथा उपनिवेश सम्बन्धी प्रतिद्वन्द्विता बढ़ती ही जा रही थी; और इस कारण दोनों में युद्ध होना अनिवार्य सा हो गया था। अमेरिका में फ्रान्सीसियों के दुर्ग बनते देख कर अँग्रेज बहुत घबरा रहे थे। उन्होंने ड्यूकेन (Duquesne) नामक दुर्ग पर अधिकार जमाने के लिये जेनरल ब्रेडॉक (General Braddock) को भेजा; परन्तु वह प्रयत्न विफल रहा और वह स्वयं मारा गया। तत्पश्चात् फ्रान्सीसियों ने माइनार्का ( Minorca ) पर, जो उस समय अंगरेजों के अधीन था, आक्रमण किया। इस घटना से दोनों जातियों में स्पष्ट रूप से युद्ध ठन गया। इस युद्ध ने शीघ्र ही भयंकर रूप धारण किया। यह युद्ध पूरे सात वर्ष तक चलता रहा; और अमेरिका, युरोप तथा भारतवर्ष में जहाँ कहीं ये दोनों जातियाँ थीं, इनमें खूब युद्ध हुआ। इस युद्ध में "आस्ट्रियन उत्तराधिकार" के युद्ध की दलबन्दी बदल गई। आस्ट्रिया ने फ्रान्स का साथ दिया और प्रशा का प्रसिद्ध राजा फ्रेडरिक इँगलैण्ड की ओर रहा।

युद्ध के आरम्भ में अँग्रेजों पर बड़ी आपत्तियाँ आईं। जहाजी अफ़सर बिंग (Admiral Byng) को माइनार्का की रक्षा के लिये भेजा गया; परन्तु वह बिना युद्ध किये ही हार कर भाग आया। इस कायरता के कारण अँग्रेजी सरकार ने उसे गोली से मरवा डाला।

**विलियम पिट**—ऐसे घोर संकट के काल में इँगलैंड को विलियम पिट ( William Pitt ) की योग्यता ने बचाया। पिट का जन्म २५ नवम्बर सन् १७०८ को हुआ था। उस का दादा टॉमस पिट भारतवर्ष में मद्रास का गवर्नर रह चुका था।



विलियम पिट ( लॉर्ड चैथम )

पिट ने सेना में नौकरी शुरू की। लन्दन में रहने उसे पार्लिमेंट में भी सम्मिलित होने का अवसर मिला भाषण देने में बड़ा कुशल था और वालपोल के मन्त्रित्व काल में उसने उसकी नीति का बड़े ज़ोरों से विरोध किया था। वह

देशप्रेमी था। जनता उसका विश्वास करती थी और उसे Great Commoner ( जनता का नेता ) कहा करती थी।

सप्तवार्षिक युद्ध छिड़ने के समय न्यूकैसिल इँगलैण्ड का प्रधान मन्त्री था। परन्तु वह युद्ध का संचालन भली भाँति न कर सका; और इसलिये उसने यही उचित समझा कि पिट को अपना सहकारी बना ले। इस प्रकार सन् १७५७ में पिट तथा न्यूकैसिल के "संयुक्त मन्त्रित्व" (Coalition Ministry) का आरम्भ हुआ। न्यूकैसिल लोगों को पद आदि का लोभ देकर पार्लिमेण्ट में मन्त्री मण्डल के समर्थकों की संख्या बढ़ाता था; और पिट ने "युद्ध सचिव" ( War Minister ) होकर सप्तवार्षिक युद्ध के संचालन का भार लिया था।

**सप्त-वार्षिक युद्ध में पिट की नीति**—युद्ध के संचालन में पिट ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया। उसने प्रशा के राजा फ्रेडरिक को धन तथा सेना की सहायता देना आरम्भ किया, जिस से वह फ्रान्स के विरुद्ध अच्छी तरह युद्ध कर सके। इससे यही अभिप्राय था कि फ्रान्स जर्मनी ही के युद्ध में इतना फँस जाय कि वह अमेरिका तथा भारतवर्ष को काफी सेना आदि न भेज सके। पिट का कथन था—"हम लोग कैनेडा को जरमनी में एल्ब [illegible] पर जीतेंगे।" राजा फ्रेडरिक अपने समय का बड़ा [illegible] हुआ है। इँगलैण्ड से सहायता पाकर उसने [illegible] जर्मनी में इतना छकाया कि फ्रान्स अन्य युद्ध-क्षेत्रों में पूरी शक्ति का प्रयोग न कर सका। पिट ने सप्त-वार्षिक [illegible] के लिये योग्य नेता भी नियुक्त किये। एक वर्ष पहले जहाँ अँग्रेज संकट में पड़े हुए थे, वहाँ अब वे प्रत्येक क्षेत्र में जीतने लगे।

कैनेडा पर अधिकार—पिट ने जनरल वूल्फ़ (General Wolfe) को कैनेडा की राजधानी क्वेबेक (Quebec) पर अधिकार जमाने के लिये भेजा। वहाँ का फ्रान्सीसी जनरल माण्टकाम (General Montcalm) युद्ध से बचना चाहता था; और इस कारण वूल्फ़ को बहुत दिनों तक नगर का घेरा



वूल्फ

डाले पड़ा रहना पड़ा। अन्त में वूल्फ़ ने सेण्ट लारेन्स नदी की ओर अब्राहम की पहाड़ी (Heights of Abraham) पर अँग्रेज़ी और फ्रान्सीसी सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। वूल्फ़ और माण्टकाम दोनों रणक्षेत्र में मारे गये; परन्तु अँग्रेजी सेना

अपेक्षा फ्रान्सीसियों की बहुत हानि हुई और क्वेबेक पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया। कुछ ही दिनों पीछे माण्टरीयल (Montreal) भी फ्रान्सीसियों के हाथ से निकल गया और इस प्रकार समस्त कैनेडा अँग्रेजों के अधीन हो गया।

**बंगाल पर अधिकार**—भारतवर्ष में भी अँगरेजों ने कई भारी विजय प्राप्त कीं। राबर्ट क्लाइव (Robbert Clive) ने बंगाल के नवाब को प्लासी (Plassey) के युद्ध में परास्त किया। यही विजय भारतवर्ष में अँग्रेजी राज्य की नींव समझी जाती है। दक्षिण में फ्रान्सीसी वाण्डवाश (Wandewash) के युद्ध में बुरी तरह परास्त हुए। कुछ दिनों पीछे पाण्डीचेरी पर भी अँग्रेजों का अधिकार हो गया; और इस प्रकार भारतवर्ष में फ्रान्सीसियों की शक्ति का अन्त हुआ।



राबर्ट क्लाइव

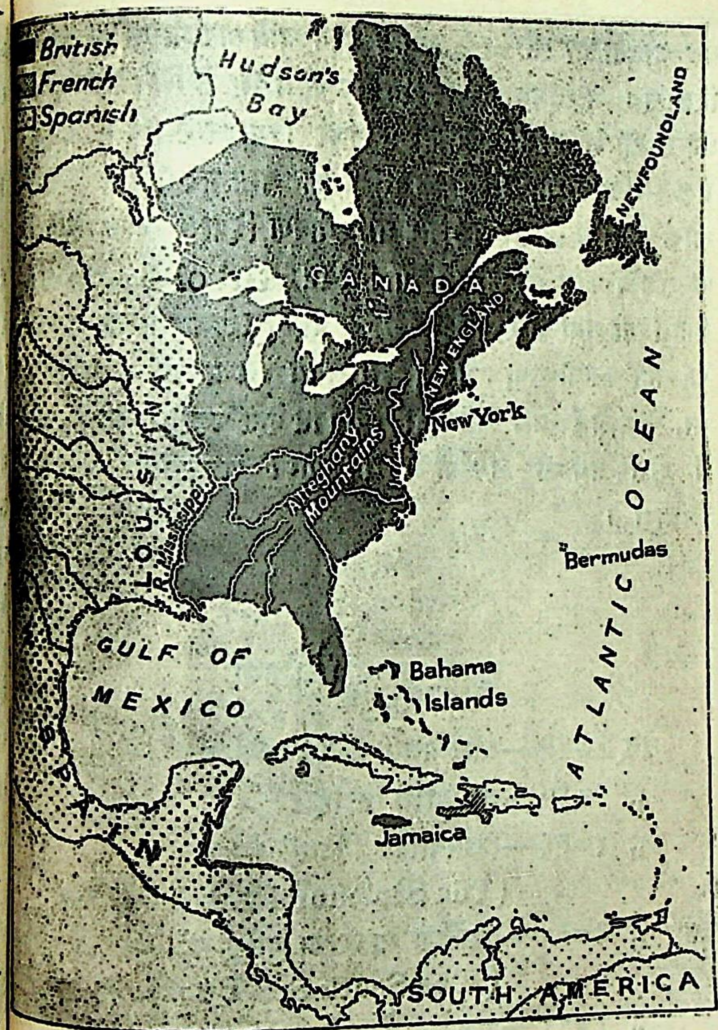
**पिट का त्याग-पत्र**—सन् १७६२ ई० में स्पेन ने फ्रान्स का साथ देना शुरू किया। पिट को पहले ही इसकी खबर मिल चुकी थी और वह चाहता था कि शीघ्र ही स्पेन के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी जाय। परन्तु उसके सहकारी इससे सहमत न थे, इसलिये पिट ने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। थोड़े ही दिनों पीछे न्यूकैसिल ने भी त्याग-पत्र दे दिया; और इस

प्रकार इस "संयुक्त मन्त्री मण्डल" का, जिसने इतनी योग्यता से सप्त-वार्षिक युद्ध का संचालन किया था, अन्त हुआ। सन् १७६० में जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु हो चुकी थी और परवर्ती सम्राट् जॉर्ज तृतीय ने अपनी शक्ति बढ़ाने के आशय से अब टोरियों को मन्त्री मण्डल में स्थान दिया। इस प्रकार पिट तथा न्यूकैसिल के संयुक्त मन्त्रित्व के समाप्त होने के साथ ही ह्विग दल की शक्ति का भी अन्त हो गया।

**पेरिस की सन्धि (१७६३)**—सन् १७६३ में पेरिस की सन्धि से सप्त-वार्षिक युद्ध का अन्त हुआ। कैनेडा तथा उत्तरी अमेरिका के समस्त फ्रान्सीसी उपनिवेशों पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया। इस युद्ध में सम्मिलित होने से स्पेन की भी बड़ी हानि हुई। अमेरिका का स्पेनिश उपनिवेश फ्लोरिडा ( Florida ) भी अँग्रेज़ों के अधीन हो गया। भारतवर्ष में फ्रान्सीसियों की व्यापारिक कोठियाँ उनको लौटा दी गईं; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि वे स्थान केवल व्यापार के काम में लाये जायँगे। वहाँ अधिक सैनिक रखने तथा दुर्ग आदि बनाने की भी मनाही कर दी गई।

इस सन्धि से इँगलैण्ड की शक्ति युरोप में ही नहीं, बल्कि समस्त भूमण्डल में बड़ी जबरदस्त हो गई। फ्रान्सीसियों की शक्ति का अमेरिका तथा भारतवर्ष दोनों क्षेत्रों में अन्त हुआ। व्यापार बढ़ाने तथा उपनिवेश स्थापित करने की प्रतिद्वन्द्विता में अँग्रेजों की ही विजय हुई और ब्रिटन के वर्तमान काल के बड़े साम्राज्य के पूर्व चिह्न दिखाई देने लगे।

**पिट की मृत्यु**—पेरिस की सन्धि से पिट सन्तुष्ट न हुआ।




सप्तवार्षिक युद्ध के बाद उत्तरी अमेरिका

वह चाहता था कि जो कुछ थोड़े बहुत अधिकार फ्रान्स को अमेरिका तथा भारतवर्ष में छोड़ दिये गये थे, वे भी ले लिये जायँ और फ्रान्स की शक्ति का पूर्णतया अन्त कर दिया जाय। इस समय वह रोग-ग्रस्त था; परन्तु इस सन्धि का समाचार पाते ही उसने लोक सभा में आकर पूरे चार घंटे भाषण दिया। जॉर्ज तृतीय के राजत्व काल में पिट अर्ल ऑफ चैथेम (Earl of Chatham) बना दिया गया और सन् १७६६ में वह दूसरी बार मन्त्री मण्डल का नेता बनाया गया। परन्तु इस समय उसका स्वास्थ्य ठीक न था, इसलिये उसे शीघ्र ही त्यागपत्र देना पड़ा। सन् १७७८ में सत्तर वर्ष की अवस्था में यह योग्य राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १७१४—जॉर्ज प्रथम का राज्याभिषेक।
" १७१५—जेकोबाइट विद्रोह।
" १७१६—"सप्तवार्षिक नियम"।
(The Septennial Act)
" १७२०—"दक्षिण सागर का बुलबुला"।
(The South Sea Bubble)
" १७२१—वालपोल के मंत्रित्व का आरम्भ।
" १७२७—जॉर्ज प्रथम की मृत्यु तथा
जॉर्ज द्वितीय का राज्याभिषेक।

" १७३९—इँगलैण्ड में प्रथम मेथोडिस्ट संस्था ।

" १७४२—वाल्पोल का पतन ।

" १७४०-४८—"आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध ।"
(War of the Austrian Succession)

" १७४५—अन्तिम जेकोबाइट विद्रोह ।

" १७५६-६३—"सप्तवार्षिक युद्ध" ।
( The Seven Years War )

" १७५७-६१—पिट युद्ध-सचिव ।

" १७६०—जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु ।

" १७६६—पिट का पुनः मंत्रित्व ।

" १७७८—पिट की मृत्यु ।

---

## दूसरा परिच्छेद



### जॉर्ज तृतीय तथा अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध

**जॉर्ज तृतीय ( १७६०-१८२० )**—सन् १७६० में जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पोता "जॉर्ज तृतीय" के नाम



जार्ज तृतीय ( १७६०-१८२० )

से राजा हुआ। जॉर्ज द्वितीय के लड़के का पहले ही देहान्त हो चुका था। जॉर्ज तृतीय पहला हनोवरियन राजा था; जिसका

जन्म तथा पालन पोषण इँगलैण्ड ही में हुआ था। उसकी माता ने उसके कानों में भर दिया था—"जॉर्ज! वास्तविक राजा होना।" राज्याभिषेक के समय से ही उसकी यही अभिलाषा रही कि राज्य की शक्ति बढ़ाई जाय। इस अभिलाषा की पूर्ति के लिये वह साधारण योग्यता के मनुष्यों को मन्त्री बनाना पसन्द करता था जिससे वह उन्हें अपने इच्छानुसार चला सके। अपने राजत्व काल में अमेरिकन उपनिवेशों की हानि आदि दुर्घटनाएँ होने के कारण वह बदनाम हो गया। परन्तु कुछ वर्ष बाद उसे "छोटा पिट" सरीखा योग्य मन्त्री मिल गया, जिसने शासन कार्य का पूर्ण सफलता से संचालन किया। जॉर्ज तृतीय बहुधा लन्दन की सड़कों पर घूमने जाया करता था और राह में ईटन विद्यालय के विद्यार्थियों से खूब बात चीत किया करता था।

**टोरियों का मन्त्री मण्डल में प्रवेश**—जॉर्ज तृतीय ह्विग दलवालों से बहुत ही चिढ़ता था और उन्हें राज-शक्ति का वैरी समझता था। इस से पहले टोरी दलवाले जेकोबाइट दल के पक्षपाती होने के कारण देश में बदनाम थे। परन्तु जेकोबाइट दल अब टूट चुका था; इसलिये जार्ज तृतीय टोरियों पर विश्वास कर सकता था। पिट तथा न्यूकैसिल के ह्विग मन्त्री मण्डल के टूटने पर जार्ज ने टोरियों ही को शासन कार्य सपुर्द करना चाहा; परन्तु लोक सभा में टोरी दल की संख्या बढ़ाने में उसे पूरे दस वर्ष लग गये। सन् १७७० में जॉर्ज को अपने मन का सा लॉर्ड नॉर्थ ( Lord North ) नामक एक टोरी प्रधान मन्त्री मिल गया। नॉर्थ राजशक्ति का पूर्ण पक्षपाती था; और

उसके मन्त्रित्व काल में शासन कार्य की बागडोर बहुत कुछ जॉर्ज तृतीय के हाथ में आ गई।

## ( १ ) अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध
## ( १७७५—८३ )

**सप्तवार्षिक युद्ध के बाद अमेरिकन उपनिवेशों की दशा—** जॉर्ज तृतीय तथा नॉर्थ ने शासन कार्य में कई भूलें कीं; परन्तु उनकी सब से बड़ी भूल यह थी कि वे अमेरिकन उपनिवेशों को सन्तुष्ट न रख सके। कहा जाता है कि "वूल्फ के क्वेबेक विजय करने के समय से वर्तमान संयुक्त अमेरिकन राज्य का इतिहास आरम्भ होता है।" सप्त-वार्षिक युद्ध के बाद कैनेडा पर अँगरेजी सरकार का अधिकार हो जाने के कारण अमेरिका के पूर्वीय तट के अँग्रेज़ी उपनिवेशों को फ्रान्सीसियों का भय न रहा। इस कारण अब उन्हें इँगलैण्ड की सहायता की भी उतनी परवाह न रही; और अब वे अपने प्राचीन देश (Mother Country) का अनुचित व्यवहार कभी सहन न कर सकते थे। शासन कार्य में उन्हें शिकायत का अधिक अवसर न था। प्रत्येक उपनिवेश के लिये इँगलैण्ड की सरकार की ओर से गवर्नर नियुक्त हो कर आता था जिस को उपनिवेशों की कौन्सिलों की सम्मति के अनुसार शासन करना होता था। परन्तु व्यापार के विषय में उपनिवेशों को कई प्रकार की असुविधाएँ थीं जिन्हें वे अनुचित समझते थे।

**स्टाम्प एक्ट—**सप्तवार्षिक युद्ध में अधिक व्यय हो जाने के कारण इँगलैण्ड की सरकार ने यह कहा कि अमेरिका की

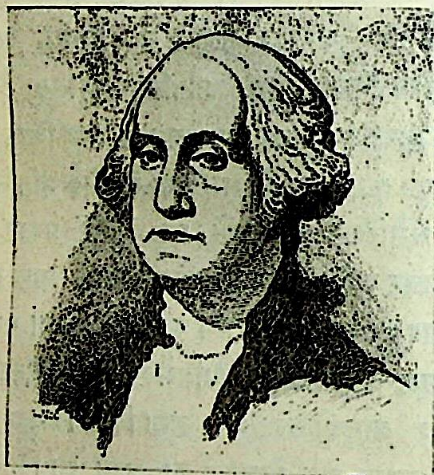
रक्षा के लिये जो सेना रखी जाती है, उसके व्यय का कुछ भार उपनिवेशों को भी उठाना चाहिए। इसी आशय से इँगलैण्ड की पार्लिमेण्ट ने स्टाम्प एक्ट (Stamp Act) पास किया, जिस के अनुसार अमेरिकावालों को कानूनी दस्तावेजों पर स्टाम्प लगाना आवश्यक हो गया। स्टाम्प की आमदनी से अमेरिकन सेना का तिहाई खर्च वसूल हो सकता था; और शेष दो तिहाई खर्च का भार इँगलैण्ड की सरकार स्वयं उठाने के लिये तैयार थी। अमेरिकावालों ने स्टाम्प एक्ट का बड़े जोरों से विरोध किया और "प्रतिनिधि नहीं तो टैक्स भी नहीं" * का सिद्धान्त लेकर यह आन्दोलन आरम्भ किया कि इँगलैण्ड की पार्लिमेण्ट को, जिस में अमेरिका से कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया जाता, अमेरिकन उपनिवेशों पर किसी प्रकार का कर लगाने का अधिकार नहीं है। यह आन्दोलन इतना बढ़ गया कि कुछ ही दिनों बाद पार्लिमेण्ट को स्टाम्प एक्ट रद्द करना पड़ा।

**चाय पर महसूल**—इस के बाद पार्लिमेण्ट ने अमेरिका को जानेवाली चाय आदि वस्तुओं पर कर लगा दिया। यह कर बहुत अधिक न था; परन्तु वही सिद्धान्त का प्रश्न था कि इँगलैण्ड की पार्लिमेण्ट का, जिस में उपनिवेशों के प्रतिनिधि नहीं होते, लगाया हुआ कर सर्वथा अनुचित है। पार्लिमेण्ट ने अमेरिकावालों को सन्तुष्ट करने के आशय से चाय सस्ती करने का प्रबन्ध किया और ईस्ट इण्डिआ कम्पनी को अपने जहाज़ सीधे अमेरिका ले जाने की आज्ञा दे दी। परन्तु अमेरिकावालों ने प्रण कर लिया था कि इस प्रकार के महसूलों का पूर्णतया विरोध

* "No Taxation without Representation".

करेंगे, इसलिये जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाज़ आये, तब कुछ लोग अमेरिका के "लाल हब्शियों" का भेस बना कर उन जहाज़ों में घुस पड़े। सारी चाय, जो सस्ती बिकने के लिये आई थी, समुद्र में फेंक दी गई और जहाज़ों में आग लगा दी गई।

**युद्ध का प्रारम्भ**—दुर्भाग्यवश इँगलैण्ड में इस समय विलियम पिट जैसा कोई योग्य राजनीतिज्ञ न था जो अमेरिकन उपनिवेशों का आन्दोलन शान्त कर सकता। लॉर्ड नॉर्थ बिलकुल राजा के कहने पर चलता था; और जॉर्ज तृतीय का मत था- "उपनिवेशों के ऐसे आन्दोलन के समय दबने का यही अर्थ हो सकता है कि साम्राज्य से हाथ धो बैठा जाय।" इँगलैण्ड की सरकार ने सेना भेज कर बलपूर्वक आन्दोलन दबाना चाहा। यह देख कर अमेरिकावाले भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये पूर्ण रूप से तत्पर हो गये। इँगलैण्ड के विरुद्ध युद्ध करने के लिये एक सेना तैयार की गई, जिस का सेनापति वर्तमान "संयुक्त



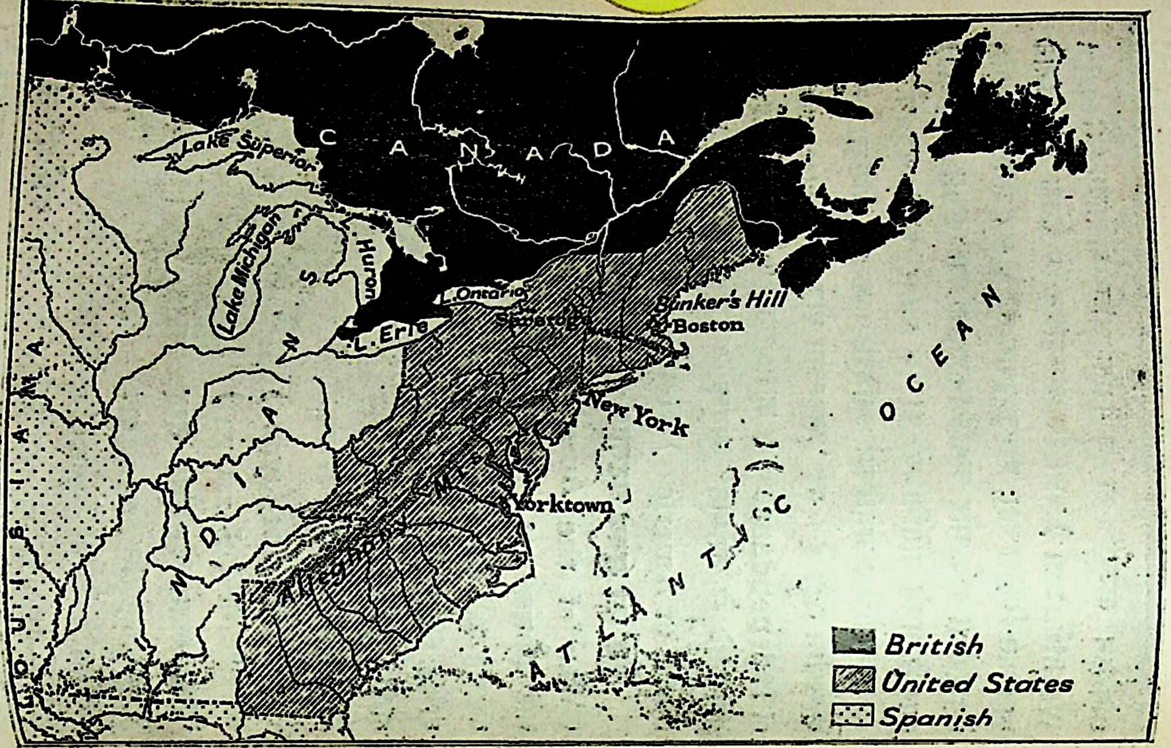
जॉर्ज वाशिंग्टन

अमेरिकन राज्य" का जन्मदाता जॉर्ज वाशिंगटन ( George Washington ) था। इस आन्दोलन में कैनेडा को मिलाने का प्रयत्न विफल रहा; परन्तु पूर्वीय तट के सब अँगरेजी उपनिवेश एक हो गये और उन्होंने फिलाडेल्फिया (Philadelphia) नगर में अपने प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस करके यह घोषणा कर दी कि अब अमेरिकन उपनिवेश स्वतन्त्र हैं और जॉर्ज तृतीय के अधीन नहीं हैं। यह "स्वतन्त्रता घोषणा" ( Declaration of Independence ) ४ जूलाई सन् १७७६ को की गई; और इसी तिथि से वर्तमान" संयुक्त अमेरिकन राज्य" ( United States of America ) का प्रारम्भ समझना चाहिए।

युद्ध की मुख्य घटनाएँ—अमेरिकन स्वतंन्त्रता का युद्ध ( War of the American Independence ) लगभग आठ वर्ष तक चला। दो वर्ष तक यह नहीं कहा जा सकता था कि किस ओर की विजय होगी। परन्तु सन् १७७७ में इँगलैण्ड के जनरल बरगाऊन ( General Burgoyne ) की सेरेटोगा ( Saratoga ) नामक स्थान पर बुरी तरह पराजय हुई। इसके बाद इँगलैण्ड के वैरियों—स्पेन और फ्रान्स—ने यह सोचा कि इँगलैण्ड की शक्ति को धक्का पहुँचाने का यह अच्छा अवसर है।



लार्ड कार्नवालिस


CANADA
Lake Superior
Lake Michigan
Huron
L. Ontario
L. Erie
Bunker's Hill
Boston
New York
Yorktown
OCEAN
ATLANTIC
INDIANS
LOUISIANA
British
United States
Spanish

उन्होंने अमेरिकावालों की सहायता करना शुरू किया। इँगलैण्ड बड़े संकट में पड़ गया और सन् १७८१ में लार्ड कार्नवालिस (Lord Cornwallis) के, जो बाद में भारतवर्ष का दूसरा गवर्नर जनरल हुआ, यार्क टाउन (York Town) नामक स्थान पर परास्त होने से इँगलैण्ड को अब सफलता की बिलकुल आशा न रही।

**वार्शेल्ज़ की सन्धि (१७८३) (Peace of Versailles)**— सन् १७८३ में वार्शेल्ज की सन्धि के अनुसार इँगलैण्ड को अमेरिकन उपनिवेशों की स्वतंत्रता स्वीकृत कर लेनी पड़ी। अब अमेरिका में केवल कैनेडा (Canada), न्यूफाउण्डलैण्ड (New-foundland) तथा नवा स्कोशिया (Nova Scotia) इँगलैण्ड के अधीन रह गये और पूर्वीय तट के अन्य उपनिवेशों में "संयुक्त अमेरिकन राज्य" (United States of America) नाम का प्रजातंत्र राज्य स्थापित हो गया। अब अमेरिकावालों का इँगलैण्ड से कोई सम्बन्ध न रहा और उनकी एक नई जाति बन गई। यही अमेरिकन जाति, जिसका जन्म हुए केवल डेढ़ सौ वर्ष हुए हैं, आजकल इतनी उन्नतिशील हो रही है और संसार की प्रथम श्रेणी की जातियों में गिनी जाती है।

इस प्रकार जार्ज तृतीय और लॉर्ड नॉर्थ के दूरदर्शी राजनीतिज्ञ न होने के कारण अमेरिकन उपनिवेश सदा के लिये इँगलैण्ड के हाथ से निकल गये।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १७६०—जार्ज तृतीय का राज्याभिषेक।
,, १७७०-८२—लार्ड नॉर्थ का मन्त्रित्व।
,, १७७५-८३—अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध।
,, १७६५—स्टाम्प एक्ट।
,, १७६७—चाय पर महसूल।
,, १७७३—चाय के जहाजों का बॉस्टन बन्दरगाह में ध्वंस।
,, जूलाई सन् १७७६—अमेरिकन उपनिवेशों को "स्वतन्त्रता घोषणा"।
,, १७७७—बरगाइन का सेरेटोगा नामक स्थान पर परास्त होना।
,, १७८१—कार्नवालिस का यॉर्क टाउन नामक स्थान पर परास्त होना।
,, १७८३—वार्सेल्ज़ की सन्धि तथा "अमेरिकन संयुक्त राज्य" की स्वतन्त्रता का स्वीकृत होना।

---

# तीसरा परिच्छेद



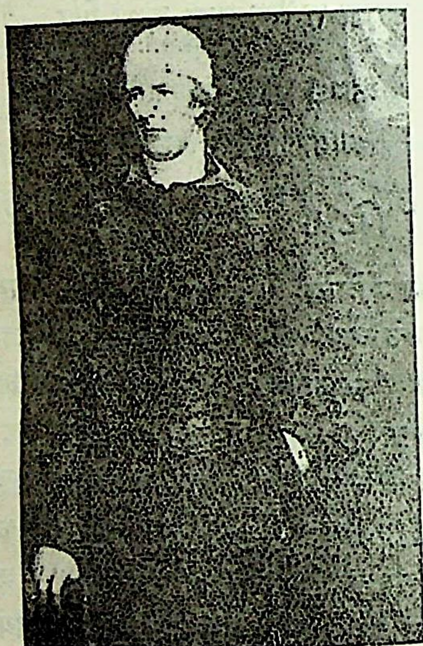
## जॉर्ज तृतीय तथा छोटा पिट

### ( फ्रान्स की राज्यक्रान्ति तथा आयरलैण्ड से सम्बन्ध )

### ( १ ) छोटा पिट तथा फ्रांस की राज्यक्रांति का युद्ध

**छोटे पिट का मंत्रित्व (१७८३-१८०१)**—लार्ड नार्थ ने "अमेरिकन स्वतन्त्रता के युद्ध" के समाप्त होने के एक वर्ष पहले ही त्यागपत्र दे दिया था। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद नये ह्विग दल के नेता जेम्स फॉक्स ( James Fox ) से मिलकर वह फिर अधिकारारूढ़ हो गया। नॉर्थ तथा फाक्स का "संयुक्त मन्त्री मण्डल" ( The Coalition Ministry ) शासन कार्य का संचालन भली भाँति न कर सका। इसलिये सन् १७८३ में जॉर्ज तृतीय ने विलियम पिट को प्रधान मन्त्री बनाया। विलियम पिट के पिता का भी नाम पिट ही था, जिसके योग्य शासन तथा सप्तवार्षिक युद्ध की नीति की सफलता के विषय में हम पहले लिख आये हैं। पिता और पुत्र के नामों में पहचान करने के लिये पिता को "बड़ा पिट" ( Pitt, the Elder ) और पुत्र को "छोटा पिट" (Pitt, the Younger) कहते हैं। प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त होने के समय छोटे पिट की अवस्था कुल २४ वर्ष की

थी। उस समय पार्लिमेण्ट में उसके समर्थकों की संख्या भी अधिक न थी। परन्तु पिट ने अपने कार्य में इतनी योग्यता दिखाई कि अगले चुनाव में उसके समर्थकों की संख्या एक दम बढ़ गई और सन् १८०१ तक वह राजा तथा जनता दोनों का



छोटा पिट

विश्वासपात्र बना रहा। जॉर्ज तृतीय ने शासन कार्य बिलकुल पिट के भरोसे छोड़ दिया; और इसलिये पिट के प्रधान मन्त्री होने के समय से जॉर्ज तृतीय के "स्वेच्छाचारी राज्य" (Personal Rule) का अन्त समझना चाहिए।

**पिट तथा सुधार के प्रस्ताव**—पिट की शासन नीति बड़ी उदार थी और उसने सुधार के कई प्रस्ताव उपस्थित किये। वह ऐडम स्मिथ की प्रसिद्ध पुस्तक Wealth of Nations के "स्वतन्त्र व्यापार" ( Free Trade ) के सिद्धान्तों को मानता था। उसने फ्रान्स से एक व्यापारिक सन्धि की, जिसके अनुसार दोनों देशों ने एक दूसरे की व्यापारिक वस्तुओं को अपने देश में बिना कर दिये ही आने का सुभीता कर दिया। पिट ने लोक सभा के चुनाव की परिपाटी में भी सुधार करना चाहा, परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता न हुई। पिट "दास व्यापार" को हटाने का भी पक्षपाती था; परन्तु अमीर लोगों के विरोध के कारण वह इस सम्बन्ध में भी कुछ न कर सका। पिट ही के शासन काल में "पिट्स इंडिया एक्ट" (१७८४) (Pitt's India Act) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कार्यों की देख भाल करने के लिये छः सदस्यों की एक समिति ( Board of Control ) स्थापित की गई। भारतवर्ष के ब्रिटिश राज्य की बागडोर सन् १८५८ तक इसी समिति के हाथ में रही।

पिट को अपने सुधार के कार्य में पूर्ण सफलता न मिलने का यही कारण था कि देश अभी इस प्रकार के बड़े बड़े सुधारों के लिये तैयार न था।

**"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति"**—इसी समय युरोप में "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" ( The French Revolution ) नामक एक प्रसिद्ध घटना के कारण पिट के सुधार का कार्य बिलकुल ही रुक गया। फ्रान्स की सरकार पूर्णतया स्वेच्छाचारी थी; और शासन कार्य कुछ थोड़े से दरबारियों के हाथ में था, जो जनता के

हित की ओर लेश मात्र भी ध्यान न देते थे। कर बड़े ही अनुचित ढंग से लगाये जाते थे। ऊँची श्रेणी के लोगों से कर न लिया जाता था और उसका सारा भार बेचारी साधारण जनता पर पड़ता था। दो प्रसिद्ध लेखकों—रूसो ( Rousseau ) और वॉलटायर ( Voltaire )—ने अपने जोरदार लेखों में शासन प्रणाली की त्रुटियों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। इसी समय "अमेरिकन स्वतन्त्रता के युद्ध" की सफलता देखकर फ्रान्स की जनता में अपने देश में स्वतन्त्रता स्थापित करने का उत्साह बढ़ने लगा।

सन् १७८९ में धन की कमी के कारण फ्रान्स का राजा लूइस सोलहवाँ देश की प्राचीन प्रतिनिधि सभा ( States General ) को, जिसकी पौने दो सौ वर्ष से कोई बैठक न हुई थी, बुलाने के लिये बाध्य हुआ। देश में उत्तेजना फैली ही हुई थी। इस प्रतिनिधि सभा ने तुरन्त शासन प्रणाली के सुधार का कार्य्य आरम्भ कर दिया। धीरे धीरे जनता की उत्तेजना बढ़ती गई और अन्त में राजा और रानी दोनों स्वतन्त्रता देवी की भेंट चढ़ाये गये। देश में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित कर दिया गया, जिसमें वास्तविक अधिकार "राज्यविप्लव के पक्षपातियों" ( Revolutionaries ) के ही हाथ में रहा। जिन लोगों के विषय में लेश मात्र भी यह सन्देह था कि वे राज्यपक्ष के समर्थक हैं, उन्हें चुन चुनकर मार डाला गया; और फ्रान्स में बहुत काल तक नित्य भीषण हत्याकाण्ड होते रहे। स्वतन्त्रता के नाम पर इतना रक्तपात हुआ कि नया शासन "भयंकर शासन" ( Reign of Terror ) के नाम से पुकारा जाने लगा।

**इँगलैण्ड के राजनीतिज्ञों की सम्मतियाँ**—पहले इँगलैण्ड निवासियों की "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी। उन्होंने समझा था कि फ्रान्सवाले भी इँगलैण्ड की भाँति "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) की स्थापना के लिये आन्दोलन कर रहे हैं। ह्विग दल ने हृदय से "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" का स्वागत किया और फाक्स ने फ्रान्स की घटनाओं की खूब प्रशंसा की। परन्तु धीरे धीरे इँगलैण्ड निवासियों को यह विदित होने लगा कि फ्रान्स में स्वतन्त्रता के नाम पर रक्त की धारा बहाई जा रही है और बहुत से निर्दोष नागरिक नित्य स्वतन्त्रता देवी की भेंट चढ़ाये जाते हैं। इँगलैण्ड की "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) इससे बिलकुल अलग ढंग की थी। उससे नियमानुमोदित शासन की भी भली भाँति स्थापना हो गई थी और उसमें रक्तपात का नाम भी न था। फ्रान्स के हत्याकाण्डों का समाचार पाकर इँगलैण्ड के राजनीतिज्ञों की सम्मति बदलने लगी और वह फ्रान्स के "राज्यविप्लव के पक्षपातियों" को "स्वतन्त्रता के समर्थक" के स्थान पर "अत्याचारी, हत्यारे तथा देश की शान्ति के वैरी" समझने लगे। इसी समय बर्क ( Burke ) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Reflections on the French Revolution" प्रकाशित की, जिसमें उसने फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के दोष भली भाँति दिखलाये।

**"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" का पिट की शासन नीति पर प्रभाव**—"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के काल में पिट को भी अपनी शासन नीति बदलनी पड़ी। पहले उसका विचार था कि

फ्रान्स की घटनाओं का अन्य देशों पर कुछ प्रभाव न पड़ेगा। परन्तु जब उसने देखा कि फ्रान्स के क्रान्तिकारी अन्य देशों में भी अपने विचार फैलाने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो उसे इँगलैण्ड के बचाने की फ़िक्र पड़ी। उसने अपनी उदार शासन नीति छोड़ दी और सुधार आदि के प्रश्नों का कुछ काल के लिये नाम तक न लिया। "स्वतन्त्रता नियम" (Habeus Corpus Act) स्थगित कर दिया गया और इँगलैण्ड में राज्यविप्लव के सिद्धान्तों का प्रचार करनेवालों को बन्दीगृह भेज दिया गया। बहुत सी राजनीतिक मंडलियाँ तोड़ दी गईं। जिन विदेशियों के विषय में कुछ भी सन्देह हुआ, उन्हें इँगलैण्ड से निकाल दिया गया। इन सब बातों का यही आशय था कि कहीं राज्य-विप्लव के सिद्धान्त इँगलैण्ड में भी न फैल जायँ, जिससे यहाँ भी फ्रान्स के से हत्या-काण्ड होने लगें।

## फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का युद्ध (१७९३–१८०५)

**"प्रथम संघ" की विफलता**—फ्रान्स के नये प्रजातन्त्र राज्य ने यह घोषणा कर दी कि जो देश राजकीय शासन हटा कर स्वतन्त्रता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे, उन्हें पूर्ण सहायता दी जायगी। इस घोषणा से युरोप के समस्त राज्यों में बड़ी हलचल मची। परन्तु पिट अभी अपनी "शान्तिप्रिय नीति" पर दृढ़ रहा। थोड़े ही दिनों में फ्रान्सीसियों ने बेलजियम पर अपना अधिकार जमा लिया और इस प्रकार अपने देश की सीमा राइन नदी के मुहाने तक बढ़ा ली। इस से इँगलैण्ड की स्थिति का बड़ा भय था; परन्तु पिट अब भी युद्ध के झगड़े से बचना ही चाहता था।

इसी समय फ्रान्स ने स्वयं इँगलैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी; और इसलिये पिट को युद्ध करना ही पड़ा।

पिट ने फ्रान्स के विरुद्ध हालैण्ड, आस्ट्रिया, प्रशा तथा स्पेन का "संघ" (Coalition) बनाया। परन्तु इतने राज्य कभी मिल कर कार्य न कर सकते थे। आपस की फूट तथा फ्रान्सीसियों की विजय के कारण यह "संघ" थोड़े ही दिनों में टूट गया और फ्रान्स का मुक़ाबला करने के लिये इँगलैण्ड बिलकुल अकेला रह गया।

नेपोलियन की उन्नति—इसी समय फ्रान्स का प्रसिद्ध जनरल नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) बहुत महत्वपूर्ण विजय प्राप्त कर रहा था। नेपोलियन सेना के एक छोटे पद से बढ़ कर अपनी योग्यता के कारण बराबर उन्नति करता गया। पीछे धीरे धीरे उसका यश इतना फैल गया कि वह फ्रान्स के प्रजातंत्र राज्य का संरक्षक बनाया गया; और इस के बाद अवसर पाकर वह फ्रान्स का सम्राट् भी बन बैठा था। जेनरल नेपोलियन फ्रान्स से भारी सेना लेकर रवाना हुआ और सब से पहले उसने आस्ट्रियावालों को निकाल कर इटली पर अपना अधिकार जमाया। इसके बाद रूम सागर में माल्टा को विजय करता हुआ वह मिस्र देश में पहुँचा और शीघ्र ही मिस्र को भी जीत कर वहाँ अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद नेपोलियन का यह इरादा था कि आगे बढ़ कर एशिया माइनर, फ़ारस, अफ़गानिस्तान, भारतवर्ष आदि जीत कर समस्त पूर्वीय देशों में फ्रान्स के प्रजातन्त्र राज्य का आधिपत्य स्थापित किया जाय।

नाइल का युद्ध ( १७९८ )—इस समय ब्रिटेन की स्थिति बड़ी नाजुक थी; परन्तु प्रसिद्ध जहाज़ी अफसर नेल्सन (Admiral Nelson ) की योग्यता ने ब्रिटिश जाति को संकट से बचा लिया। नेपोलियन के मिस्र देश जीत लेने का समाचार पाते ही



नेल्सन

नेल्सन एक अँग्रेजी जहाज़ी बेड़ा लेकर रवाना हुआ; और मिस्र पहुँच कर नाइल नदी के मुहाने पर उसने जल युद्ध में फ्रान्सीसियों को पूर्णतया परास्त किया। नेल्सन की इस विजय से मिस्र में फ्रान्सीसियों की शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और उनके

समस्त पूर्व को जीतने के मन्सूबे टूट गये । रूम सागर में अँग्रेजों की शक्ति प्रधान हो गई और नेपोलियन आगे बढ़ने का इरादा छोड़ कर फ्रान्स लौट गया ।

फ्रान्स के विरुद्ध "द्वितीय संघ"—नाइल की विजय के बाद इँगलैण्ड ने दूसरी बार फ्रान्स के विरुद्ध कई राज्यों का "संघ" बनाया; परन्तु "प्रथम संघ" की भाँति यह "द्वितीय संघ" (Second Coalition) भी शीघ्र ही टूट गया और इँगलैण्ड फिर अकेला रह गया । उसी समय नेलसन ने डेन्मार्क देश में कोपेनहेगेन (Copenhagen) के जलयुद्ध में भारी विजय प्राप्त की और इस कारण इँगलैण्ड पर कोई आपत्ति न आ सकी।

एमीन्स की सन्धि (१८०२)—फ्रान्स तथा इँगलैण्ड दोनों युद्ध करते करते थक गये थे; इसलिये सन् १८०२ में एमीन्स की सन्धि (Peace of Amiens) की गई। इसमें कोई विशेष बात तय नहीं हुई । दोनों देश जानते थे कि इस सन्धि के अधिक काल तक ठहरने की सम्भावना नहीं है । इस सन्धि का समाचार इँगलैण्ड पहुँचने पर शेरिडन (Sheridan) ने कहा था—"इस सन्धि से दोनों ओरवाले प्रसन्न हैं (क्योंकि कुछ काल के लिये युद्ध रुक गया) परन्तु किसी के लिये अभिमान करने का अवसर नहीं है ।" एमीन्स की सन्धि के थोड़े ही दिनों बाद इँगलैण्ड और फ्रान्स में फिर भयंकर युद्ध छिड़ गया ।

आयरलैण्ड की दशा—"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के युद्ध" के अतिरिक्त पिट के शासन काल में दूसरी बड़ी घटना यह हुई कि आयरलैण्ड भी इँगलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के संयुक्त राज्यों में सम्मिलित हो गया । आयरलैण्ड के निवासियों को इस

समय बहुत सी असुविधाएँ थीं। हेनरी सप्तम के राजत्व काल के "पॉयनिंग्स नियम" ( Poyning's Act ) के अनुसार इँगलैण्ड की पार्लिमेण्ट की स्वीकृति के बिना आयरलैण्ड की पार्लिमेण्ट कोई नियम न बना सकती थी। इस प्रकार अपनी पृथक् पार्लिमेण्ट होने पर भी आयरलैण्ड का शासन वास्तव में पूर्णतया इँगलैण्ड ही के हाथ में था। इँगलैण्ड वाले आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता से घृणा करते थे और उसे दबाने के लिये बहुत से अनुचित नियम बने हुए थे। कैथोलिक लोग भूमिपति नहीं हो सकते थे और उनको पार्लिमेण्ट में तथा सरकारी पदों पर स्थान न मिल सकता था। आयरलैण्ड वालों को बहुत सी व्यापारिक असुविधाएँ भी थीं और वहाँ के किसानों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ था।

**ग्रेटन तथा आयरिश पार्लिमेण्ट की स्वतन्त्रता**—"अमेरिकन स्वतंत्रता के युद्ध" के काल में आयरलैण्डवालों ने भी ग्रेटन ( Grattan ) के नेतृत्व में अपनी स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन करना शुरू किया। इँगलैण्ड सरकार को इस समय यह भय था कि कहीं आयरलैण्डवाले अन्य राज्यों से मिल कर विद्रोह न ठान दें। इसलिये "पॉयनिंग्स नियम" हटा कर आयरलैण्ड की पार्लिमेण्ट को स्वतन्त्रा दे दी गई। परन्तु आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता केवल इतने से कभी सन्तुष्ट न हो सकती थी। कैथोलिकों को तो पार्लिमेण्ट में स्थान पाने की भी मनाही थी; इसलिये आइरिश पार्लिमेण्ट की स्वतन्त्रता से उनको कुछ भी लाभ न हुआ।

**यूनाइटेड आइरिशमैन तथा सन् १७९८ का विद्रोह**—

"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" का समाचार पाकर आयरलैण्डवालों का भी उत्साह बढ़ा। वूल्फ टोन (Wolfe Tone) के नेतृत्व में प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथोलिक दोनों धार्मिक दलों ने मिल कर यूनाइटेड आयरिशमैन ( United Irishmen ) नामक एक संस्था स्थापित की। इस संस्था का यही उद्देश्य था कि आयरलैण्ड को स्वतन्त्र बनाने के लिये पूर्ण दृढ़ता से आन्दोलन किया जाय। सन् १७९८ में फ्रान्सीसियों की सहायता के भरोसे आयरलैण्डवालों ने विद्रोह ठान दिया, परन्तु वह विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया; और विद्रोहियों का दल विनेगर हिल ( Vinegar Hill ) के युद्ध में बुरी तरह परास्त हुआ।

**पिट तथा आयरलैण्ड से सम्बन्ध (१८००)**—ऐसी अवस्था में पिट ने समझ लिया कि आयरलैण्ड में शान्ति स्थापित करने का एक मात्र उपाय यही हो सकता है कि आयरलैण्ड को भी इंगलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के संयुक्त राज्य में मिला लिया जाय। आयरलैण्डवालों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया; परन्तु जब पिट ने यह वचन दिया कि आयरलैण्ड के कैथोलिकों को सब प्रकार की सुविधाएँ दे दी जायँगी, तब आयरिश पार्लिमेण्ट ने "संयुक्त राज्य का प्रस्ताव" ( Act of Union ) स्वीकार कर लिया। उसके अनुसार इँगलैण्ड, स्काटलैण्ड तथा आयरलैण्ड एक संयुक्त राज्य में सम्मिलित हो गये और तीनों देशों की एक ही पार्लिमेण्ट हो गई, जिसमें आयरलैण्ड से चार बड़े पादरी तथा २८ सदस्य लार्ड सभा के लिये और १०० प्रतिनिधि लोक सभा के लिये बुलाना निश्चित हुआ।

**कैथोलिकों के उद्धार का प्रश्न तथा पिट का त्यागपत्र**—

अब पिट ने अपने वचन के अनुसार आयरलैंड के कैथोलिकों को सुविधाएँ देने का प्रस्ताव उपस्थित किया। परन्तु जॉर्ज तृतीय ने उसे स्वीकार न किया। राजा का कहना था कि मैंने राज्याभिषेक के समय प्रोटेस्टेण्ट चर्च की रक्षा करने की शपथ खाई है और इस प्रस्ताव के मानने से मेरी वह शपथ टूट जायगी। इस पर पिट ने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया और इस प्रकार आयरलैण्ड को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न अधूरा रह गया। आयरलैण्ड में अधिकांश कैथोलिकों ही की बस्ती है; इस कारण कैथोलिकों को सुविधाएँ मिले बिना आयरलैण्ड में कभी शान्ति स्थापित न हो सकती थी। "स्कॉटलैण्ड का संयोग" सफल हुआ था, परन्तु "आयरलैण्ड के संयोग" से देशवासी सन्तुष्ट न हो सके; और इस कारण आयरलैण्ड का राजनीतिक आन्दोलन बराबर जारी रहा।

**पिट का द्वितीय मन्त्री मण्डल तथा पिट की मृत्यु**—पिट ने एमीन्स की सन्धि के एक वर्ष पहले अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। परन्तु जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, फ्रान्स और इँगलैण्ड में फिर भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया; और इसलिये जॉर्ज तृतीय को पिट जैसे योग्य राजनीतिज्ञ की फिर आवश्यकता पड़ी। सन् १८०४ में पिट दूसरी बार प्रधान मन्त्री हुआ; परन्तु इस समय उसकी वृद्धावस्था थी और उसका स्वास्थ्य भी ठीक न था। उसके "द्वितीय मन्त्री मण्डल" के काल में इँगलैण्ड ने ट्राफलगर ( Trafalgar ) की प्रसिद्ध विजय प्राप्त की; परन्तु इसके थोड़े ही दिनों बाद जनवरी सन् १८०६ में यह प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

**पिट की नीति की समालोचना**—पिट बहुत से सुधार करना चाहता था; परन्तु "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के कारण उसको अपनी शासन नीति बदलनी पड़ी थी। युद्ध सचिव ( War Minister ) के कार्य में वह अपने पिता की भाँति योग्य न था। बड़े पिट की नीति सप्तवार्षिक युद्ध में पूर्णतया सफल रही थी; परन्तु छोटे पिट के फ्रान्स के विरुद्ध बनाये हुए "संघ" शीघ्र ही टूट जाते थे। पिट "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" को भली भाँति न समझ सका; और युद्ध के संचालन के लिये भी वह योग्य अफसर नियुक्त न कर सका। परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि यह पिट ही की योग्यता का परिणाम था कि ऐसे विकट समय में भी इँगलैण्ड पर कोई आपत्ति न आई; और "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के काल में, जब कि युरोप के अन्य राज्यों में हलचल मची हुई थी, इँगलैण्ड में शान्ति बनी रही। रहा आयरलैण्ड का प्रश्न, सो उसके विषय में पिट की नीति बहुत उदार थी। और यदि उसका कैथोलिकों को सुविधाएँ देने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाता, तो आयरलैण्ड की जटिल समस्या भी हल हो जाती।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १७८३—छोटे पिट के मन्त्रित्व का प्रारम्भ ।
,, १७८९—"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" का प्रारम्भ ।
,, १७९३—"फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के युद्ध" का प्रारम्भ।
,, १७९८—नेल्सन की नाइल की विजय ।
,, १८०१—नेल्सन की कोपेन्हेगेन की विजय ।
,, १८०२—एमीन्स की सन्धि ।
,, १७८२—आइरिश पार्लिमेण्ट की स्वतन्त्रता ।
,, १८००—इँगलैण्ड और आयरलैण्ड का संयोग ।
,, १८०१—पिट का पद-त्याग ।
,, १८०४-१८०६—पिट का द्वितीय मन्त्री मण्डल ।
,, १८०६—पिट की मृत्यु ।

---

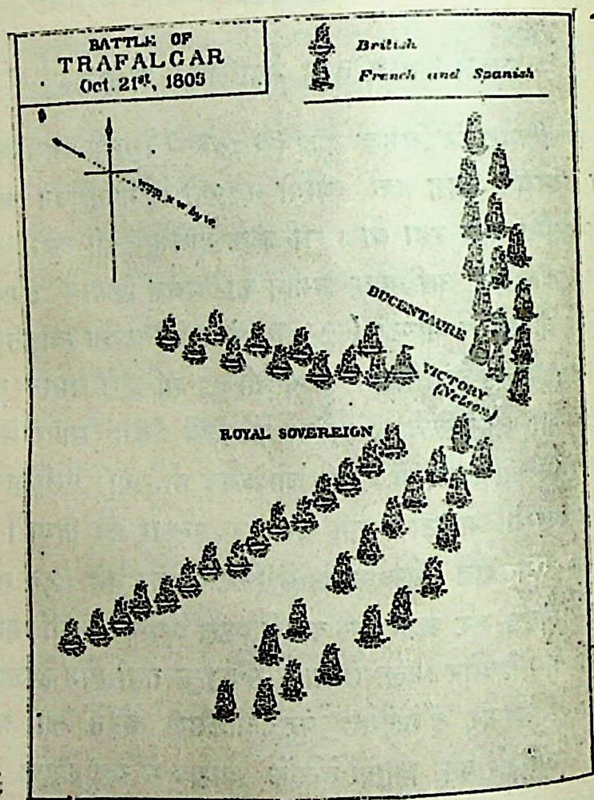
## चौथा परिच्छेद

## जॉर्ज तृतीय तथा नेपोलियन से युद्ध

**नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध ( १८०३–१८१५ )**—एमीन्स की सन्धि अधिक काल तक स्थायी न रही। नेपोलियन बराबर अपनी शक्ति बढ़ा रहा था। सन्धि के होते हुए भी उसने युरोप के कई राज्यों पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। इँगलैण्ड ने सन्धि के समय माल्टा ( Malta ) खाली करना स्वीकृत कर लिया था; परन्तु नेपोलियन की बढ़ती हुई शक्ति से समस्त युरोप को भय था, इसलिये इँगलैण्ड के लिये रूम सागर में एक स्थान अपने अधिकार में रखना आवश्यक हो गया। ऐसी अवस्था में इँगलैण्ड ने माल्टा खाली करने से इन्कार कर दिया। इस प्रश्न पर इँगलैण्ड और फ्रान्स में फिर भयंकर युद्ध छिड़ गया।

**इँगलैण्ड पर आक्रमण का निष्फल प्रयत्न**—नेपोलियन ने स्पेन को अपनी ओर मिला लिया और फ्रान्स तथा स्पेन के जहाजी बेड़ों को मिलाकर इँगलैण्ड पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया। अँग्रेजों को धोखा देने के आशय से यह संयुक्त बेड़ा पहले पश्चिमी द्वीप-समूह की ओर चला; और यह प्रबन्ध किया गया कि जब अँग्रेजी बेड़ा उसका पीछा करने के लिये इँगलिश चैनेल से रवाना हो जाय, उस समय तुरन्त लौट कर इँगलैण्ड के खाली तट पर आक्रमण कर दिया जाय। अँग्रेज पहले धोखे

में आ गये; परन्तु उन्हें शीघ्र ही नेपोलियन की चालाकी का पता लग गया; इस कारण उसका इँगलैण्ड पर आक्रमण करने का प्रयत्न सफल न हो सका।



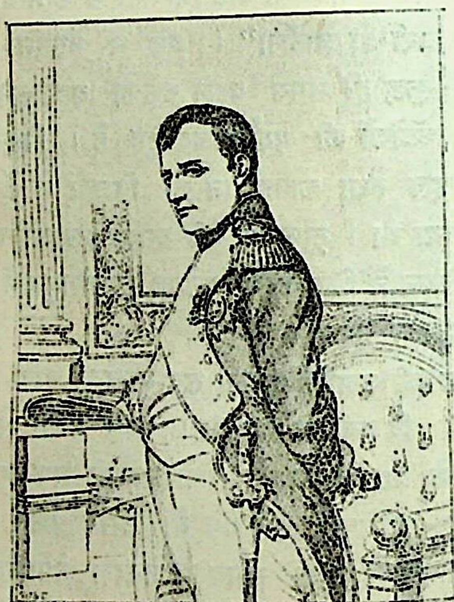

ट्राफलगर का युद्ध

ट्राफ़लगर की विजय तथा नेलसन की मृत्यु (१८०५)— अगले वर्ष अँग्रेज़ी अफ़सर नेलसन ने फ्रान्स और स्पेन के संयुक्त

बेड़े को ट्राफलगर (Trafalgar) के जलयुद्ध में बुरी तरह से परास्त किया। युद्ध आरम्भ होने के समय नेलसन ने अपने सैनिकों को झण्डी द्वारा यह समाचार भेजा—"मुझे आशा है कि प्रत्येक व्यक्ति इँगलैण्ड के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेगा।" और बड़े जोश से यह भी कहा—"आज सायंकाल के समय तक मैं या तो लार्ड सभा में या वेस्ट मिन्सटर के कब्रिस्तान में स्थान पाने का अधिकारी हो जाऊँगा"। युद्ध में नेलसन मारा गया; परन्तु मृत्यु से कुछ ही समय पहले उसको यह समाचार मिल चुका था कि अँग्रेज़ों की पूर्ण विजय हुई है। पिछले युद्ध में नेलसन की नाइल तथा कोपेनहेगन की विजयों ने इँगलैण्ड को संकट से बचाया था। ट्राफलगर की उसकी इस अन्तिम विजय के बाद नेपोलियन ने फिर कभी इँगलैण्ड का जलयुद्ध में मुक़ाबला करने का साहस न किया।

**इँगलैण्ड की उन्नति का पूर्ण रूप**—परन्तु स्थल युद्धों में नेपोलियन खूब विजयी हो रहा था। जिस प्रकार इँगलैण्ड में चार्ल्स प्रथम के प्राण-दण्ड के पश्चात् फ़ौजी अफसर क्राम्वेल के हाथ में पूर्ण अधिकार आ गये थे, उसी प्रकार फ्रान्स में राज्यक्रान्ति का अशान्ति के समय में जेनरल नेपोलियन, जिस का विजयी होने के कारण यश फैल रहा था, देश में पूर्णतया शक्तिमान हो गया। पहले वह फ्रान्स के नये प्रजातंत्र राज्य का संरक्षक (First Consul) बनाया गया; और इसके बाद अवसर पाकर उसने अपने को फ्रान्स का सम्राट् (Emperor of the French) उद्घोषित कर दिया। नेपोलियन "विश्व-विजयी" होने के मन्सूबे बाँध रहा था; और कुछ काल तक

युरोप के समस्त राज्य उसके नाम से थर्राने लगे थे। उसने आस्ट्रिया को ऑस्टरलिज ( Austerlitz ), प्रशा को येना ( Jena ) और रूस को फ्रेडलैंड ( Friedland ) के युद्धों में परास्त किया। इन विजयों के बाद नेपोलियन की शक्ति ने अपना पूर्ण रूप धारण किया था; और हालैण्ड, इटली, पोलैण्ड तथा



नेपोलियन

जर्मनी की बहुत सी रियासतें उसके अधीन हो गई थीं। केवल इँगलैण्ड ही उसकी शक्ति का बराबर मुकाबला करता रहा।

**इँगलैण्ड के व्यापार पर विफल आघात—(Napoleon's Continental System )—इँगलैण्ड पर आक्रमण के प्रयत्न**

की विफलता के बाद नेपोलियन ने अँग्रेजों का व्यापार नष्ट करना चाहा। वह अँग्रेजों को "दुकानदारों की जाति" (Nation of Shop-keepers ) कहा करता था। उसने सोचा था कि अँग्रेजों का व्यापार नष्ट होने से उनकी समस्त शक्ति नष्ट हो जायगा। जितने राज्यों पर उसका दबाव था, उन सब को उसने बाध्य किया कि वे अँग्रेजों से किसी प्रकार का व्यापारिक सम्बन्ध न रखें और अपने देश में अँग्रेजी माल न आने दें। इस के जवाब में इँगलैण्ड ने भी यह घोषणा कर दी कि जो जहाज बिना किसी अँग्रेजी बन्दरगाह पर ठहरे युरोप में व्यापार करेंगे, वे सब पकड़ कर नष्ट कर दिये जायँगे। परन्तु नेपोलियन का अँग्रेजों के व्यापार को आघात पहुँचाने का प्रयत्न सफल न हो सका। प्रति दिन के काम की बहुत सी वस्तुएँ, जैसे चाय और चीनी, अँग्रेजी उपनिवेशों के अतिरिक्त और कहीं से मिल ही न सकती थीं। इन वस्तुओं की दर बढ़ने लगी; अतः स्वयं नेपोलियन के मित्रों ने भी उसकी आज्ञा की परवाह न करके इँगलैण्ड के साथ गुप्त रूप से व्यापारिक सम्बन्ध जारी रखा।

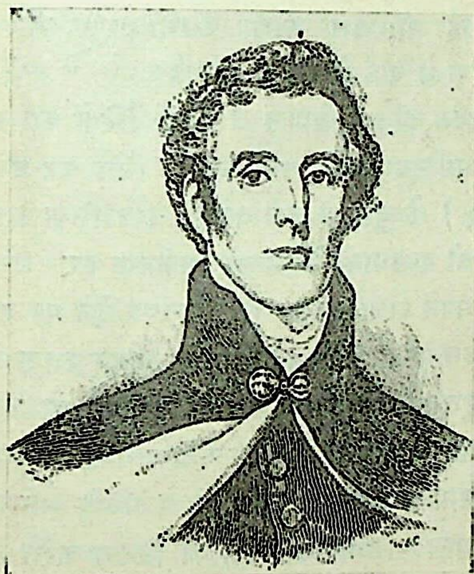
"प्रायद्वीप का युद्ध"* (The Peninsular War)—पुर्तगाल ने नेपोलियन की इँगलैण्ड से व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ देने की आज्ञा नहीं मानी थी; इसलिये उसने सेना भेज कर पुर्तगाल पर अपना अधिकार जमा लिया। कुछ समय बाद नेपोलियन को स्पेन पर भी अपना अधिकार जमा लेने का अवसर मिल

* इस का यह नाम इसलिये पड़ा कि यह युद्ध "आइबेरियन प्रायद्वीप" में हुआ था, जो पुर्तगाल तथा स्पेन के दो राज्यों में विभक्त है।

गया। स्पेन के राजा चार्ल्स चतुर्थ और उसके लड़के में झगड़ा चल रहा था। दोनों ने नेपोलियन से सहायता माँगी। नेपोलियन ने यह निश्चय किया कि शासन कार्य के लिये दोनों अयोग्य हैं; और उसने अपने भाई जोसफ ( Joseph ) को स्पेन का राजा बना कर भेज दिया। स्पेनवाले एक विदेशी राजा के अधीन रहना कभी पसन्द न कर सकते थे; अतः उन्होंने तुरन्त जोसफ के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया।

स्पेनिश जाति के विद्रोह में इँगलैण्ड ने पूर्ण सहायता दी; और शीघ्र ही सर आर्थर वेलेजली ( Sir Arthur Welessley ) के नेतृत्व में एक अँग्रेजी सेना आइबेरियन प्रायद्वीप को भेजी गई। आर्थर का भाई मार्क्विस वेलेज्ली ( Marquis Welessley) भारतवर्ष का गवर्नर जनरल रह चुका था और स्वयं आर्थर ने मराठों के युद्ध में खूब यश प्राप्त किया था। आर्थर ने आते ही फ्रान्सीसियों को पुर्तगाल से निकाल बाहर किया और स्पेन पहुँच कर उन्हें टेलेवेरा ( Talavera ) के युद्ध में परास्त किया। यह समाचार पाकर नेपोलियन ने एक बहुत बड़ी सेना स्पेन को भेजी। आर्थर ने यह सोच कर कि मेरी सेना थोड़ी है, अपने बचाव का प्रबन्ध किया। उसने समुद्र के निकट तीन पुश्ते ( Torres Vedras ) बनाये जिन की आड़ में उसकी सेना सुरक्षित रह सके; और यदि आवश्यकता हो तो समुद्र की राह से इँगलैण्ड लौट आने का भी सुभीता रहे। परन्तु इसकी आवश्यकता न पड़ी और नेपोलियन की भेजी हुई सेना स्पेन के उजाड़ खेतों में खाने तक का सहारा न पाकर शीघ्र ही फ्रान्स लौट गई।

अब आर्थर स्पेन को रवाना हुआ और सेलेमेन्का (Salamanca) के युद्ध में फ्रान्सीसियों को परास्त कर के बड़े समारोह से स्पेन की राजधानी मेडरिड (Madrid) में प्रवेश किया। जोसफ निराश होकर राजधानी से भाग निकला और अँग्रेजों को पूर्ण सफलता हुई। इसके बाद आर्थर ने विटोरिया (Vittoria) की प्रसिद्ध विजय प्राप्त की, जिसके परिणाम स्वरूप सब फ्रान्सीसी सेनाएँ स्पेन छोड़ कर भाग निकलीं। "प्रायद्वीप के युद्ध" में आर्थर ने बड़ा नाम पाया और वह ड्यूक आफ वेलिंगटन (Duke of Wellington) बना दिया गया।



ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन

**नेपोलियन का पतन**—रूस ने भी कुछ समय बाद नेपोलियन की इँगलैण्ड से व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ देने की आज्ञा मानना बन्द कर दिया। इसलिये सन् १८१२ में नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण किया। वह मास्को ( Moscow ) तक पहुँच गया; परन्तु उसके आने पर रूसियों ने स्वयं नगर में आग लगा दी। नेपोलियन को लौटना पड़ा; परन्तु इस समय शीत ऋतु आरंभ हो गई थी; इस कारण उसकी बहुत सी सेना रूस जैसे ठंढे देश में बर्फ से तबाह हो गई।

नेपोलियन की इस विपत्ति से उसके वैरियों का उत्साह बढ़ गया; और आस्ट्रिया, प्रशा, तथा रूस ने मिल कर उसे लीप्जिग ( Liepzig ) के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। इसके बाद उन्होंने उसकी राजधानी पेरिस पर आक्रमण कर दिया। नेपोलियन को अपने राजसिंहासन से त्यागपत्र देने पर बाध्य किया गया और उसे एल्बा (Elba) द्वीप में जाकर शरण लेनी पड़ी। फ्रान्स के भूतपूर्व राजा लूइस सोलहवें के भाई को "लूइस अठारहवें" के नाम से फ्रान्स का राजा बनाया गया; और यह निश्चित हुआ कि वायना नगर में सब राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर युरोप के समस्त राजनीतिक प्रश्नों का निर्णय करेंगे।

**"शत दिवस" ( The Hundred Days )**—फ्रान्स का नया राजा लूइस अठारहवाँ देश में सर्वप्रिय न हो सका और युरोपीय राजनीतिक प्रश्नों के निर्णय के सम्बन्ध में बहुत से झगड़े होने लगे। नेपोलियन ने इस अवसर से लाभ उठाया और वह एल्बा द्वीप से भाग कर फिर फ्रान्स आ पहुँचा। उसके नाम में इतना जादू था कि उसके आते ही लूइस अठारहवाँ भाग

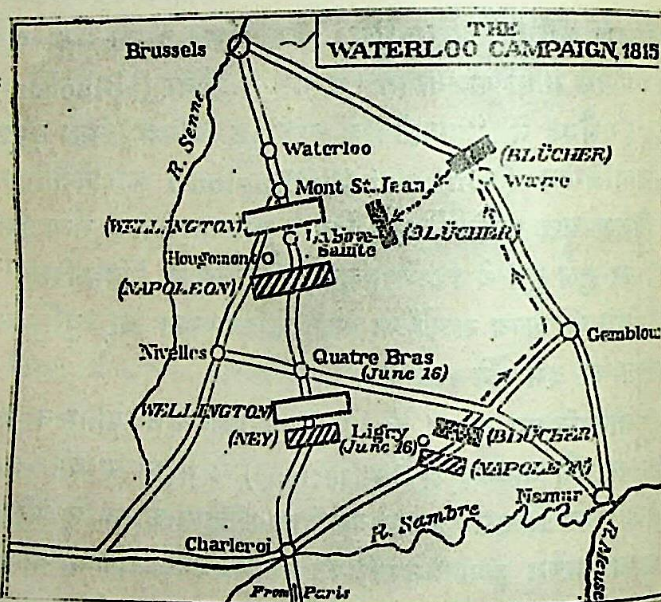
निकला और नेपोलियन फिर फ्रान्स का सम्राट् हो गया। इस बार वह कुल सौ दिन राज-सिंहासन पर रह सका; इस कारण उसके दूसरे शासन का काल इतिहास में "शत दिवस" (The Hundred Days) के नाम से प्रसिद्ध है।

नेपोलियन ने घोषणा की कि अब मैं शान्तिप्रिय नीति का अनुसरण करूँगा; परन्तु युरोप के राज्यों को उसकी इस बात का विश्वास न हो सकता था। प्रशा ने ब्लेचर (Bluchar) और इँगलैण्ड ने "प्रायद्वीप के युद्ध" के प्रसिद्ध योद्धा ड्यूक आफ वेलिंग्टन (Duke of Wellington) को नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध करने को भेज दिया। समस्त युरोपीय राज्य इस बात पर तुले हुए थे कि नेपोलियन को, जिसकी "विश्व-विजय" की नीति ने अन्य राज्यों को भयभीत कर रक्खा था, युरोप से निकाल कर दम लेंगे।

**वाटरलू का युद्ध (१८१५)**—नेपोलियन ने वेलिंग्टन की सेना पर, जो वाटरलू (Waterloo) के मैदान में थी, आक्रमण किया। इस प्रकार युरोपीय इतिहास के सब से प्रसिद्ध युद्ध का प्रारम्भ हुआ। नेपोलियन ने ऐसा प्रबन्ध किया था कि ब्लेचर की सेना वाटरलू तक न पहुँच सके। परन्तु जिस अफ़-सर को उसने इस प्रबन्ध का भार सौंपा था, वह ब्लेचर को न रोक सका। जिस समय वाटरलू के रणक्षेत्र में घमासान युद्ध हो रहा था, उस समय ब्लेचर की सेना वेलिंग्टन से आ मिली; और दोनों ने मिलकर नेपोलियन को पूर्णतया परास्त किया।

नेपोलियन को दूसरी बार राजसिंहासन से त्यागपत्र देने को बाध्य किया गया। इस बार उसे कैद कर के सेण्ट हेलेना (St.

Helena ) भेज दिया गया। सेण्ट हेलेना में इँगलैण्ड की सरकार ने नेपोलियन के साथ अच्छा व्यवहार न किया; और उसके अपमान से पीड़ित होकर छः वर्ष बाद सन् १८२२ में यह प्रसिद्ध योद्धा परलोक सिधारा।




वाटरलू का युद्ध (सन् १८१५)

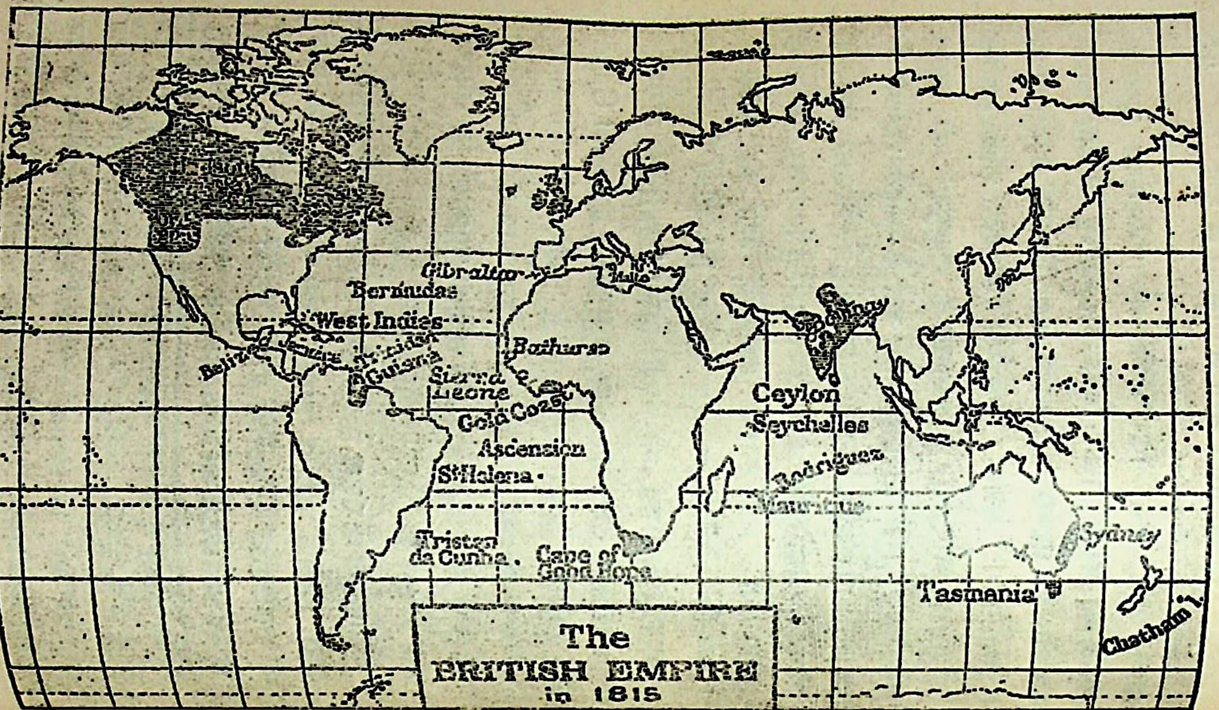
**वायना की कांग्रेस ( The Congress of Veinna )**— नेपोलियन के पतन के पश्चात् युरोपीय राज्यों के प्रतिनिधियों ने वायना नगर में सम्मिलित होकर समस्त राज्यों की सीमा के निर्णय का कार्य आरम्भ किया। फ्रान्स की राज्यक्रान्ति तथा नेपोलियन के राजत्व काल से पहले युरोपीय राज्यों की जो सीमा थी,

अधिकतर वही सीमा फिर कर दी गई। अठारहवें लूइस * को फ्रान्स का राजसिंहासन दिया गया। परन्तु जो भाग नेपोलियन ने जीत कर फ्रान्स के राज्य में मिला लिये थे, वे सब वापस कर दिये गये। समस्त नीदरलैण्ड में एक राज्य स्थापित कर दिया गया और ऑरेंज रियासत के राजकुमार को उसका राजा बनाया गया। इटली के राज्य वहाँ के भूतपूर्व राजाओं को वापस मिल गये; और स्पेन में चार्ल्स चतुर्थ, जिसको हटा कर नेपोलियन ने अपने भाई जोसफ को राज्य दे दिया था, फिर राजा बना दिया गया। आस्ट्रिया को इटली में, प्रशा को जर्मनी में और रूस को पोलैण्ड में कुछ भाग दे दिये गये।

अब रहा इंगलण्ड, सो उसको माल्टा (Malta), मॉरीशस (Mauritius), तथा केप आफ गुड होप (Cape of Good Hope) मिले। माल्टा मिल जाने से इँगलैण्ड का रूम सागर पर अधिकार हो गया और केप आफ गुड होप के इँगलैण्ड के हाथ में आने से वर्तमान" संयुक्त दक्षिणी अफ्रिका" का प्रारम्भ समझना चाहिए।

**नेपोलियन के पतन में इँगलैण्ड की सहायता**—नेपोलियन के विरुद्ध, जिसके नाम से समस्त युरोप थर्राता था, युद्ध करने का भार अधिकतर इँगलैण्ड ही ने उठाया। इँगलैण्ड ने कई बार फ्रान्स से विरुद्ध युरोपीय राज्यों के "संघ" बनाये; परन्तु

* यह फ्रान्स के भूतपूर्व सम्राट् लूइस सोलहवें का भाई था। हम बतला चुके हैं कि लूइस सोलहवाँ "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के समय मार डाला गया था। अब लगभग पचीस वर्ष बाद उस के कुटुम्ब को फिर राजसिंहासन मिल गया।



Gibraltar
Malta
Bermudas
West Indies
Belize
Jamaica
Trinidad
Guiana
Bathurst
Sierra Leone
Gold Coast
Ascension
St. Helena
Tristan da Cunha
Cape of Good Hope
Ceylon
Seychelles
Rodriguez
Mauritius
Sydney
Tasmania
Chatham I.
The BRITISH EMPIRE in 1815

नेपोलियन की स्थल युद्धों की विजयों के कारण वे "संघ" शीघ्र ही टूट जाते थे और फ्रान्स का मुकाबला करने के लिये इँगलैण्ड अकेला रह जाता था। इँगलैण्ड ही की नाइल की विजय के कारण नेपोलियन के समस्त पूर्वीय देशों को जीतने के मन्सूबे पूरे न हो सके; और ट्राफलगर की विजय के बाद तो नेपोलियन ने फिर कभी इँगलैण्ड के विरुद्ध जल युद्ध करने का साहस ही न किया। इँगलैण्ड ही की सहायता के कारण "प्रायद्वीप के युद्ध" में फ्रान्सीसियों के सब प्रयत्न विफल रहे; और अन्त में नेपोलियन के भाई जोसफ को स्पेन का राज-सिंहासन छोड़ कर भागना पड़ा। वाटरलू के युद्ध में, जिस के परिणाम स्वरूप नेपोलियन का अन्तिम पतन हुआ, इँगलैण्ड के ही प्रसिद्ध योद्धा वेलिंग्टन ने विजय प्राप्त की थी। "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" तथा नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों का काल इँगलैण्ड के लिये बड़े संकट का था; परन्तु अँग्रेजी जहाजी बेड़े की शक्ति ने इँगलैण्ड पर कोई आपत्ति न आने दी। इँगलैण्ड की जल शक्ति ही आड़े समय में उसके काम आई; और उसी के भरोसे ब्रिटिश जाति आज कल समस्त भूमण्डल के इतने बड़े भाग को अपने अधीन किये हुए है।

युद्ध के बाद इँगलैण्ड की दशा—इँगलैण्ड ने नेपोलियन का सफलता से मुकाबला किया; परन्तु युद्ध के बाद देश की आर्थिक तथा व्यापारिक दशा सुधरने में कई वर्ष लग गये। युद्ध काल में सरकार का व्यय अधिक बढ़ गया था, इस कारण बहुत दिनों तक प्रजा पर अधिक कर लगाने पड़े। बहुत से सिपाही युद्ध के बाद बेकार फिरने लगे; और व्यापार की दशा

अभी तक सन्तोषजनक न होने के कारण कई वर्ष तक देश में बहुत से मनुष्यों को कोई काम धन्धा न मिलता था। कृषि की भी बहुत समय तक बड़ी बुरी दशा रही। संयोगवश वर्षा भी कई वर्ष तक अच्छी न हुई; इस कारण देश की पैदावार बहुत घट गई। ऐसी अवस्था में सरकार ने देश की पैदावार को बाहर के अनाज के मुकाबले से बचाने के लिये एक नियम (Corn Law) बनाया, जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि जब तक देश के अनाज की दर सन्तोषजनक न हो जाय, तब तक बाहर से देश में अनाज न आने पावे। इस नियम के कारण कुछ दिनों तक इँगलैण्ड में गरीबों को पेट भर अन्न मिलना भी कठिन हो गया; और इस कारण देश में कई जगह उपद्रव भी खूब हुए। परन्तु थोड़े ही दिनों में यह संकट का काल समाप्त हो गया; और जैसा कि छठे परिच्छेद में बतलाया जायगा "व्यावसायिक क्रान्ति" ( The Industrial Revolution ) का प्रारम्भ हो जाने के कारण इँगलैण्ड की दशा शीघ्र ही फिर सन्तोषजनक हो गई।

**जॉर्ज तृतीय की मृत्यु—( १८२० )**—वाटरलू के युद्ध के पाँच वर्ष बाद सन् १८२० में इँगलैण्ड का राजा जॉर्ज तृतीय परलोक सिधारा। वृद्धावस्था तथा मानसिक दुर्बलता के कारण मृत्यु के दस वर्ष पूर्व ही से वह शासन कार्य के अयोग्य हो गया था; और उसके पुत्र ने " संरक्षक " ( Regent ) होकर राज्य का संचालन आरम्भ कर दिया था। अब यह पुत्र " जॉर्ज चतुर्थ " के नाम से राजा हो गया।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १८०३—नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध का आरम्भ।

,, १८०५—नेलसन की ट्राफलगर की विजय तथा उस की मृत्यु।

,, १८०८—१८१४—"प्रायद्वीप का युद्ध" ( The Peninsular War )

,, १८१४—नेपोलियन का पद-त्याग तथा उसका एल्बा द्वीप में शरण लेना।

,, १८१५—वाटरलू का युद्ध तथा नेपोलियन की अन्तिम पराजय।

,, १८२०—जॉर्ज तृतीय की मृत्यु।

,, १८२१—सेण्ट हेलेना में नेपोलियन की मृत्यु।

—·· —

## पाँचवाँ परिच्छेद



## जॉर्ज चतुर्थ तथा विलियम चतुर्थ

## ( १८२०—१८३७ )

**जॉर्ज चतुर्थ ( १८२०—१८३० )**—जॉर्ज चतुर्थ घमंडी, व्यभिचारी तथा आलसी था। शासन कार्य में भी उसकी अधिक रुचि न थी; इस कारण उसके राजत्व काल में उसके पिता जॉर्ज तृतीय की प्राप्त की हुई राज-शक्ति स्थिर न रह सकी।

**रानी केरोलीन (Queen Caroline)**—जॉर्ज चतुर्थ ने अपनी स्त्री केरोलीन के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार किया। बहुत दिनों से दोनों अलग रहते थे। राजा होने पर जॉर्ज ने पार्लिमेण्ट में केरोलीन के परित्याग का प्रस्ताव उपस्थित कराया; परन्तु जनता की दुखिया रानी के प्रति सहानुभूति हो जाने के कारण वह प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ। जिस दिन वेस्टमिनिस्टर एबे ( West Minister Abbey ) में जॉर्ज चतुर्थ का राज्याभिषेक संस्कार हो रहा था, उस समय रानी केरोलीन ने भी उस संस्कार में सम्मिलित होना चाहा था; परन्तु राजा के सिपाहियों ने उसे अन्दर न जाने दिया। इस अपमान के कारण रानी के हृदय पर इतनी चोट लगी कि वह दूसरे ही महीने परलोक सिधारी।

**केटो स्ट्रीट का षड़यन्त्र**—हम बतला चुके हैं कि नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध समाप्त होने के बाद इँगलैण्ड को अपनी आर्थिक

तथा व्यापारिक दशा सुधारने में कई वर्ष लग गये थे। बहुत दिनों तक बेचारे गरीबों को पेट भर अन्न भी न मिलता था; और सरकार के सुधार आदि के विरोधी होने के कारण देश में असन्तोष भी फैला हुआ था। केटो स्ट्रीट के कुछ लोगों ने राजा तथा मन्त्रियों के प्राण लेने के लिये षड़यंत्र रचा; परन्तु उसका शीघ्र ही पता लग गया और उसमें सम्मिलित होनेवालों को फाँसी दी गई।

**केनिंग तथा यूनान को स्वतन्त्रता का युद्ध**—सन् १८२२ में जॉर्ज केनिंग (George Canning) प्रधान मन्त्री तथा विदेशी विभाग का मन्त्री (Foriegn Secretary) नियुक्त हुआ। उसके विचार बड़े उदार थे; और युरोपीय राज्यों में जहाँ कहीं स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन होता था, वहाँ उसकी पूर्ण सहानुभूति रहती थी। जब यूनान के निवासियों ने तुर्कों के अत्याचारी शासन से तंग आकर विद्रोह ठान दिया, तब केनिंग ने यूनानियों की पूर्ण सहायता की। इँगलैण्ड में और बहुत से लोग भी यूनानियों की स्वतन्त्रता के पक्षपाती थे। प्रसिद्ध कवि लॉर्ड बायरन (Lord Byron) ने स्वयं यूनान जाकर "यूनान की स्वतन्त्रता के युद्ध" (Greek War of Independence) में अपने प्राण निछावर किये थे। इँगलैण्ड तथा रूस की सहायता के कारण यूनानियों को सफलता हुई और टर्की को यूनान की स्वतंन्त्रता स्वीकृत करनी पड़ी।

परन्तु आगे चल कर इँगलैण्ड की नीति बिलकुल बदल गई। इसके बाद रूस की शक्ति को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकने के लिये इँगलैण्ड ने टर्की का प्रत्येक अवसर पर साथ दिया और उसको रूसियों के आक्रमणों से बचाया।

**कैथोलिकों को सुबिधाएँ (१८२९) (The Catholic Emancipation)** सन् १८२७ में केनिंग की मृत्यु के बाद नेपोलियन के विरुद्ध के युद्ध का प्रसिद्ध योद्धा वेलिंग्टन (Wellington) प्रधान मन्त्री हुआ। इस समय कैथोलिकों को सुबिधाएँ दिलाने के लिये आन्दोलन हो रहा था। हम बतला चुके हैं कि "आयरलैण्ड के संयोग" के समय पिट ने कैथोलिकों को सुबिधाएँ दिलाने का प्रयत्न किया था, परन्तु जॉर्ज तृतीय के विरोध के कारण उसे सफलता न हुई थी। अब आयरलैण्ड में डेनियल ओकोनेल (Daniell O'Connell) नामक एक बैरिस्टर ने "कैथोलिक समाज" (Catholic Association) नामक एक संस्था स्थापित करके कैथोलिकों की सुबिधाओं के लिये बड़े ज़ोरों से आन्दोलन शुरू किया। सन १८२८ में ओकोनेल पार्लिमेण्ट का सदस्य चुना गया; परन्तु कैथोलिक होने के कारण वह पार्लिमेण्ट की बैठकों में सम्मिलित न हो सकता था। उसके चुनाव से बड़ी उत्तेजना फैली और बिद्रोह के ढंग दिखाई पड़ने लगे। प्रधान मन्त्री वेलिंग्टन इस सुधार के पक्ष में न था; परन्तु आन्दोलन बराबर बढ़ता गया, इसलिये उसे अपनी नीति बदलनी पड़ी। सन् १८२९ में "कैथोलिकों की सुबिधाओं का नियम" (The Catholic Emancipation Act) स्वीकृत हुआ और कैथोलिकों को पार्लिमेण्ट के सदस्य होने की आज्ञा मिल गई। "परीक्षा नियम" (The Test Act) जिस के अनुसार "आंग्ल चर्च" के अनुयायियों को ही सरकारी नौकरी मिल सकती थी, एक वर्ष पहले ही टूट गया था। अब कैथोलिकों और प्रोटेस्टेण्टों के पुराने झगड़े का अन्त हुआ और दोनों दल देश में शान्तिपूर्वक रहने लगे।

**विलियम चतुर्थ ( १८३०-३७ )**—सन् १८३० में जॉर्ज चतुर्थ की मृत्यु के बाद उसका भाई "विलियम चतुर्थ" ( William IV ) के नाम से राजा हुआ। विलियम बहुत दिनों तक "जहाजी सेना" ( Navy ) में अफसर रह चुका था; इस कारण वह "जहाजी राजा" ( The Sallor King ) के नाम से प्रसिद्ध है।

**ह्विग दल का पुनः शक्तिमान् होना**—विलियम चतुर्थ के राज्याभिषेक के समय से ह्विग दल के पुनः शक्तिमान् होने का काल आरम्भ होता है। ह्विग दल जॉर्ज प्रथम तथा जॉर्ज द्वितीय के राजत्व काल में शक्तिमान् रह चुका था; परन्तु जॉर्ज तृतीय तथा जॉर्ज चतुर्थ के राजत्व काल में टोरी दल शक्तिमान हो गया था। इस समय सुधार आदि के आन्दोलन के कारण लगभग पचास वर्ष बाद देश का शासन कार्य फिर ह्विग दल के हाथ में आया। इस काल के प्रसिद्ध ह्विग नेता लार्ड ग्रे (Lord Grey) तथा लार्ड मेल्बोर्न (Lord Melbourne) थे जिन्होंने सुधार के कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत कराये। इस काल के सब से प्रसिद्ध "पार्लिमेण्ट सुधार के नियम" ※ का उल्लेख सातवें परिच्छेद में किया जायगा। इस परिच्छेद में हम केवल ह्विग नेताओं के अन्य सुधारों का उल्लेख करते हैं।

**गुलामों का उद्धार**—दास व्यापार की प्रथा लगभग ढाई सौ वर्षों से चली आ रही थी। युरोपीय उपनिवेशों में खानें आदि

---

※ विलियम चतुर्थ के राजत्व काल के पार्लिमेण्ट सुधार के प्रथम नियम (First Reform Act, 1832) के लिये पृष्ठ ८९ देखो।

खोदने का कठोर परिश्रम करने के लिए लोग कठिनाई से मिलते थे; इसलिए अफ्रिका के हब्शियों को पकड़ कर उनसे इस प्रकार का काम लिया जाने लगा। कुछ लोगों ने हब्शियों को पकड़ लाने का व्यवसाय शुरू कर दिया और उन्हें लाकर बिलकुल पशुओं की भाँति बेचना आरम्भ कर दिया। इन मोल लिये हुए गुलामों के साथ उनके स्वामी बड़ा बुरा व्यवहार करते थे। कभी कभी उनसे इतना कड़ा परिश्रम लिया जाता था कि वे बेचारे हाँपते हाँपते मर जाते थे।

"मेथोडिस्ट संस्था" के स्थापित होने से जनता में दयाभाव बढ़ने लगा और कुछ दयावान लोगों ने दास व्यापार के रोकने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। सन् १७७२ में प्रधान न्यायाधीश मेन्स्फील्ड (Chief Justice Meansfield) ने यह निर्णय कर दिया कि ब्रिटन की भूमि पर पैर रखते ही प्रत्येक गुलाम स्वतन्त्र हो जाता है। परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों में दास व्यापार अभी जारी रहा। इसी समय दो दयावान व्यक्ति क्लार्कसन (Clarkeson) तथा विल्बरफोर्स (Wilberforce) ने यह प्रण किया कि हम अपना समस्त जीवन गुलामों के उद्धार के आन्दोलन में व्यतीत करेंगे। इस आन्दोलन के प्रभाव से सन् १८०७ में समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में दास व्यापार बन्द करने की आज्ञा दे दी गई; परन्तु जो हब्शी गुलाम हो चुके थे, अभी उन्हें स्वतन्त्र न किया गया। सन् १८३३ में इन गुलामों को स्वतन्त्र कर देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया; और १ अगस्त सन् १८३४ को समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के गुलामों के स्वतन्त्र हो जाने से इस अत्याचारपूर्ण प्रथा का पूर्णतया अन्त हुआ।

**नागरिक शासन का सुधार**—सन् १८३५ में एक और बड़े महत्व का नियम स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार नागरिक शासन (Municipal Government) का सुधार किया गया। अब तक बहुत से नगरों में केवल थोड़े से ही नागरिकों को "नगर मंडलियों" (Corporation) के चुनाव में वोट देने का अधिकार था; परन्तु इस नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को, जो नगर का कर देता हो ( Rate Payer ), वोट देने का अधिकार मिल गया। इस प्रकार नगरों में वास्तविक "प्रतिनिधि शासन" ( Representative Government ) की स्थापना हुई। आजकल इँगलैण्ड के प्रत्येक नगर का शासन चुने हुए सदस्यों (Aldermen) की एक मंडली के अधीन है और उसका प्रधान लॉर्ड मेयर ( Lord Mayor ) कहलाता है।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १८२०—जॉर्ज चतुर्थ का राज्याभिषेक।
,, १८२१—१८२९—"यूनान की स्वतन्त्रता का युद्ध।"
,, १८२२-१८२७—केनिंग का मन्त्रित्व।
,, १८२८—१८३०—वेलिंग्टन का मन्त्रित्व।
,, १८२९—"कैथेलिकों की सुबिधाओं का नियम।"
(The Catholic Emancipation Act)
,, १८३०—जार्ज चतुर्थ की मृत्यु तथा विलियम चतुर्थ का राज्याभिषेक।
,, १८३३—दास व्यापार का अन्त।
,, १८३५—नागरिक शासन का सुधार।
,, १८३७—विलियम चतुर्थ की मृत्यु।

---

# छठा परिच्छेद



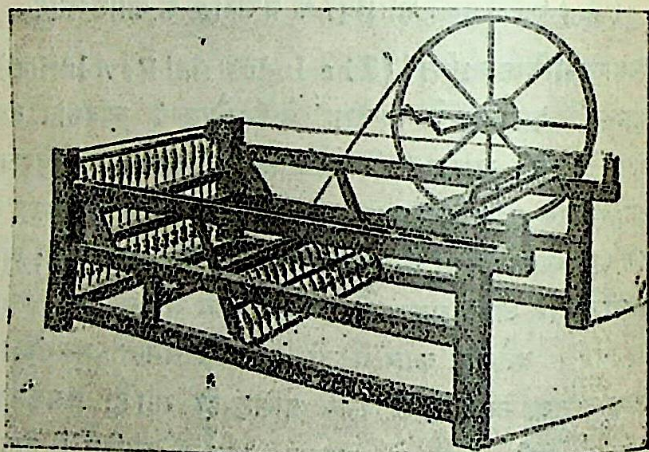
## अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा सामाजिक उन्नति

### ( १ ) अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के आविष्कार

**"व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution)**– अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इँगलैण्ड के व्यवसाय तथा व्यापार में बड़ी भारी उन्नति हुई। बहुत सी कलों का आविष्कार हुआ, जिनके द्वारा कारबार में बड़ा सुभीता होने लगा। सब से पहले सूत कातने तथा कपड़ा बुनने के लिये कलें बनाई गईं; और तब धीरे धीरे अन्य प्रकार के व्यवसायों में भी कलों का प्रयोग होने लगा। वर्तमान काल में जो इँगलैण्ड समस्त भूमण्डल में व्यवसाय तथा व्यापार के लिये प्रसिद्ध हो रहा है, उसकी इस उन्नति का इसी समय से प्रारम्भ समझना चाहिए। देश में सैकड़ों पुतलीघर बनने लगे; और इँगलैण्ड, जहाँ अब तक केवल कृषि का ही सहारा था, कारबार का केन्द्र हो गया। इस परिवर्तन के कारण देश का जीवन ही बिलकुल नये ढंग का हो गया; इसलिए इतिहास में यह परिवर्तन "व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है।

**कलों का आविष्कार तथा कपड़े के व्यापार की उन्नति**— अब तक कपड़ा बनाने के लिए घरों में स्त्रियाँ हाथ के चरखे पर

सूत काता करती थीं और गाँव के जुलाहे हाथ के करघे पर उस का सूत बुन देते थे। सन् १७६४ में हारग्रीव्स (Hargreaves) ने एक मशीन (Spinning Jenny) बनाई जिसके द्वारा एक आदमी चरखे से आठ गुना सूत कात सकता था। सन् १७६७ में आर्कराइट (Arkwright) ने पानी के जोर से चलने-वाला चरखा (Water Frame) बनाया; और सन् १७७५



हारग्रीव्स की सूत कातने की मशीन

में क्रॉम्पटन (Crompton) ने इन दोनों आविष्कारों का प्रयोग करके एक ऐसी मशीन (The Mule) बनाई, जो पानी से चलती थी और चरखे से कई गुना ज्यादा सूत कातती थी। सूत कातने के साथ साथ कपड़ा बुनने के व्यवसाय में भी शीघ्र ही उन्नति होने लगी; और सन् १७८५ में कार्टराइट (Cartwright) ने पानी से चलनेवाला करघा भी बना डाला।

**वॉट तथा भाप के एन्जिन का अविष्कार**—सन् १७८५ में जेम्स वॉट (James Watt) ने एक बड़ा महत्वपूर्ण आविष्कार किया। उसने भाप से चलनेवाला एन्जिन बनाया, जिसके द्वारा मशीनों के चलाने में बड़ा सुभीता हो गया। सूत कातने तथा कपड़ा बुनने की मशीनें अब हाथ तथा पानी के स्थान पर भाप से चलाई जाने लगीं; और थोड़े ही दिनों में लैंकाशायर प्रान्त में, जो आज कल सूती कपड़े के व्यवसाय का केन्द्र है, लाखों रुपये साल का कपड़ा बनने लगा। भाप के एन्जिन के आविष्कार ने सचमुच व्यावसायिक संसार में क्रान्ति कर दी। इँगलैण्ड के वेस्ट मिन्सटर एबे में, जहाँ देश के प्रसिद्ध राजाओं योद्धाओं, राजनीतिज्ञों तथा कवियों के स्मारक चिह्न हैं, जेम्स वॉट की भी यादगार बनी हुई है।

**पुतलीघरों का बनना तथा लोहे और कोयले की आवश्यकता**—अब इँगलैण्ड में बहुत बड़े बड़े पुतलीघर (Factories) बनने लगे और कलों का प्रचार दिन पर दिन बढ़ता गया। कलों के बनाने के लिये लोहे की आवश्यकता होने लगी; इसलिये लोहे के कारबार में भी खूब उन्नति हुई। पुतलीघरों के एन्जिनों में कुछ दिनों तक लकड़ी के कोयले से काम लिया गया; परन्तु उसकी आग बहुत देर तक न ठहरती थी; इसलिये उसके स्थान पर पत्थर के कोयले का प्रयोग होने लगा। भाग्यवश इँगलैण्ड के उत्तर तथा पश्चिम में पत्थर के कोयले की बहुत सी खानें थीं; इस कारण देश में पुतलीघरों की स्थापना के कार्य में बड़ी सुविधा हुई। वर्तमान समय में इँगलैण्ड में जितने बड़े बड़े व्यावसायिक नगर हैं, वे प्रायः कोयले की खानों ही के आस पास बसे हुए हैं।

**सड़कों का सुधार**—देश में व्यवसाय तथा व्यापार की उन्नति होने के कारण अच्छी सड़कों की भी आवश्यकता पड़ने लगी। तीसरे भाग के अन्तिम परिच्छेद में हम बतला चुके हैं कि अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ तक देश की सड़कें इतनी खराब थीं कि गाड़ियों के पहिये सड़क के गड्ढों में फँस जाते थे और गड्ढों में कीचड़ होने के कारण कभी कभी गाड़ियों को खींच कर निकालने के लिये आस पास के गाँवों से घोड़े मँगाने पड़ते थे। अब देश में बहुत सी अच्छी सड़कें बनाई गईं जिनके द्वारा व्यापार में बड़ी सुबिधा होने लगी। सड़क बनाने के काम में स्काटलैण्ड के मेकेडम (Macadem) नामक एक इंजीनियर ने बड़ा नाम पाया। उसने रोमन ढंग की सड़कें बनाईं जो प्रत्येक ऋतु में काम दे सकती थीं।

थोड़े ही दिनों पीछे गैस की रोशनी का आविष्कार हुआ और सड़कों पर रोशनी का उचित प्रबन्ध कर दिया गया। सन् १८०७ में लन्दन की पॉल मॉल ( Pall Mall ) नामक सड़क पर पहले पहल गैस के हंडे लगाये गये और सन् १८१४ तक लन्दन की प्रायः सब सड़कों पर गैस की रोशनी हो गई।

**नहरों का बनना**—इसी समय कुछ लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ कि यदि देश में नहरें बना दी जायँ, तो कोयले आदि के सड़कों द्वारा भेजने की अपेक्षा बहुत कम खर्च पड़े। इँगलैण्ड की सब से पहली नहर ड्यूक आफ ब्रिजवाटर ( Duke of Bridgewater) ने मैनचेस्टर नगर तक कोयला पहुँचाने के लिये ब्रिंडले ( James Brindley ) नामक इंजीनियर की सहायता से सन् १७६७ में बनवाई थी। नहरें क्रमशः बढ़ती गईं और

थोड़े ही दिनों में इँगलैण्ड की बड़ी बड़ी नदियों को नहरें काट कर मिला दिया गया।

"व्यावसायिक क्रान्ति" का प्रभाव तथा उसके दोष—व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) के काल के इन नये नये आविष्कारों के कारण देश का जीवन बिलकुल नये ढंग का हो गया। देश की सम्पत्ति बढ़ने लगी और इसी के भरोसे इँगलैण्ड नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध करने का भार सह सका। कलों का व्यवहार बढ़ जाने से कोयले और लोहे की आवश्यकता पड़ने लगी; इसलिये देश के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों में हा नये व्यावसायिक केन्द्र बने, जहाँ इन दोनों वस्तुओं के मिलने की सुविधा है। इँगलैण्ड के निवासियों का अब व्यवसाय ही प्रधान उद्यम हो गया और कृषि की ओर बहुत कम ध्यान रह गया। आजकल इँगलैण्ड में अनाज आदि अधिकतर विदेश से मँगाया जाता है और उसके बदले कारखानों का बना हुआ सामान वहाँ से विदेश भेजा जाता है। इस परिवर्तन के कारण देश के पूर्वीय तथा दक्षिणी भागों का, जहाँ अब तक भूमि उपजाऊ होने के कारण घनी आबादी थी, इतना महत्व न रह गया; और अब उत्तर तथा पश्चिम के व्यावसायिक केन्द्रों की की ओर आबादी बढ़ने लगी। इँगलैण्ड अब कृषक देश के स्थान पर व्यावसायिक देश हो गया, और इसलिए गाँवों की अपेक्षा नगरों की संख्या बढ़ने लगी। नया व्यवसाय भी नये ही ढंग का हुआ। कलों के आविष्कार के कारण छोटे छोटे कारीगरों का युग (Domestic Stage of Production) समाप्त हुआ; और उसके स्थान पर बड़े बड़े पुतलीघरों ( Factory System ) की

स्थापना हुई जिनमें हजारों लाखों आदमी मजदूरी पर काम करते हैं।

इस परिवर्तन से सामाजिक दशा के कुछ दोष भी प्रकट होने लगे। ग्रामों की शुद्ध हवा में रहने के स्थान पर अब जन-संख्या नगरों की ही की ओर खिंचने लगी; यहाँ तक कि नगरों में रहने भर का भी ठिकाना मिलना दुर्लभ हो गया। पुतलीघरों की स्थापना से छोटे कारीगरों का कारबार चौपट हो गया और उनमें बहुत से लोग मजदूरी लेकर कारखानों में नौकरी करने पर बाध्य हुए। मजदूरों की दशा बहुत दिनों तक बड़ी असन्तोषजनक रही और उनको काम ढूँढने में भी बहुधा बड़ी कठिनाई पड़ने लगी। पुतलीघरों के स्वामी केवल अपने लाभ की परवाह करते थे; और मजदूरों के स्वास्थ्य आदि का ध्यान छोड़ कर कभी कभी उनसे प्रति दिन अठारह घंटे तक काम लेते थे। इसी परिच्छेद के तीसरे अधिकरण में हम बतलावेंगे कि इन सामाजिक दोषों का किस प्रकार सुधार हुआ।

(२) वैज्ञानिक उन्नति का काल (उन्नीसवीं शताब्दी)

**स्टीफेन्सन तथा रेल गाड़ी का आविष्कार**—उन्नीसवीं शताब्दी में और भी बड़े बड़े आविष्कार हुए जिनके सामने अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के आविष्कार तुच्छ जान पड़ने लगे। जेम्स वॉट भाप का एंजिन बना चुका था, परन्तु उसका केवल कलों के चलाने में प्रयोग हो सकता था। जार्ज स्टीफेन्सन (George Stephenson) ने भाप द्वारा गाड़ियों के खींचने के लिए एंजिन बनाया; और इस प्रकार लोहे की पटरी पर चलनेवाली रेल गाड़ी का आविष्कार हुआ। इँगलैएड में पहली रेल की पटरी मैनचेस्टर और लिवरपूल के बीच में सन् १८३० में बनाई गई। उस पर

स्टीफेन्सन का प्रसिद्ध एंजिन राकेट (Rocket) लगभग ३५ मील प्रति घंटे की गति से रेल गाड़ी खींच सकता था। महारानी विक्टोरिया ने रेल द्वारा पहली यात्रा सन् १८४२ में की और सन् १८४६ में "सस्ती रेलयात्रा नियम" (Cheap Trains Act) के अनुसार रेल का किराया एक पेनी प्रति मील हो जाने के कारण सभी श्रेणियों के लोगों को रेलगाड़ी से लाभ उठाने का अवसर मिला।

**भाप के जहाज**—जल यात्रा के लिए भाप द्वारा चलनेवाले जहाजों का आविष्कार रेल गाड़ी से भी कई वर्ष पहले हो चुका था। सन् १८१२ में हेनरी बेल (Henry Bell) की कामेट नामक भाप की नाव स्काटलैण्ड की नदियों पर किराये पर चलने लगी। फिर धीरे धीरे समुद्र यात्रा के लिये भी भाप के जहाज बनाये जाने लगे। भाप का पहला अँग्रेजी जहाज, जिसने एटलान्टिक महासागर पार किया, ग्रेट वेस्टर्न (Great Western) था। यह यात्रा सन् १८३८ में हुई और इसमें पूरे चौदह दिन लगे थे। परन्तु आज कल इतने अच्छे भाप के जहाज बनने लगे हैं कि वे एटलान्टिक महासागर को साढ़े चार दिन में पार कर सकते हैं। रेल गाड़ी तथा भाप के जहाजों ने मनुष्य मात्र का बड़ा उपकार किया; और उन्हीं की सहायता से दुनिया के व्यापार में इतनी आश्चर्यजनक उन्नति हो सकी।

**रोलैण्ड हिल तथा डाक के प्रबन्ध का सुधार**—अठारहवीं शताब्दी में डाक का प्रबन्ध सन्तोषजनक न था। चार्ल्स प्रथम के राजत्व काल से डाक का प्रबन्ध सरकार ने ले लिया था; परन्तु चिट्ठियाँ भेजने का महसूल अधिक होता था; इस कारण साधारण श्रेणी के लोग बहुत कम चिट्ठियाँ भेजते थे। महसूल

प्रति मील के हिसाब से लिया जाता था; और देश ही में भिन्न भिन्न स्थानों को चिट्ठियाँ भेजने का भिन्न भिन्न महसूल लगता था। डाक के प्रबन्ध के सुधार का आन्दोलन रोलैण्ड हिल (Rowland Hill) ने किया। उसी के अनुरोध से सन् १८४० में डाक का महसूल सस्ता और देश के प्रत्येक भाग के लिए एक सा कर दिया। एक पेनी में आधे आउन्स की चिट्ठी ब्रिटेन के चाहे जिस भाग को भेजी जाने लगी। इस सुधार से डाकखाने की आय में कमी पड़ने के स्थान पर उसकी प्रति दिन वृद्धि होने लगी; क्योंकि अब सस्ता महसूल हो जाने के कारण बहुत से लोग चिट्ठियाँ भेजने लगे। इसी समय रेल तथा भाप के जहाज के आविष्कार के कारण डाक के प्रबन्ध में और भी सुविधा होने लगी।

**बिजली का आविष्कार तथा टेलीग्राफ और टेलीफोन**—वैज्ञानिक संसार में उन्नीसवीं शताब्दी की सब से प्रसिद्ध घटना बिजली का आविष्कार है। बिजली के काम में खोज शुरू करने-वाला फैरेडे (Faraday, 1791—1867) नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक था, जिसके परिश्रम ने समस्त संसार का बड़ा उपकार किया। बिजली ही के आविष्कार के कारण टेलीग्राफ (Telegraph), केबिल (Cable), टेलीफोन (Telephone) आदि का आविष्कार हो सका। इँगलैण्ड में टेलीग्राफ की पहली लाइन सन् १८४४ में बनाई गई; और सन् १८५१ में समुद्र के पार तार भेजने के लिये एटलान्टिक महासागर में तार (Cable) लगाया गया। सन् १८७६ में टेलीफोन का आविष्कार हुआ जिसके द्वारा बहुत दूर बैठे हुए मनुष्य आपस में बात चीत कर सकते हैं।

**समाचार-पत्र**—डाक, तार आदि की सुविधाएँ हो जाने के कारण समाचारपत्रों में भी खूब उन्नति हुई। हम बतला चुके हैं कि इँगलैण्ड में समाचार-पत्रों का प्रकाशन रानी एनी के राजत्व काल से प्रारम्भ होता है। अब टेलीग्राफ के द्वारा देश के समाचार और केबिल के द्वारा देशान्तर के समाचार मँगा कर समाचार-पत्रों में प्रकाशित किये जाने लगे; और डाक का अच्छा तथा सस्ता प्रबन्ध होने के कारण यह समाचार-पत्र सस्ते मूल्य में मिलने लगे। वर्तमान समय में समाचार-पत्र सामाजिक जीवन का प्रधान अंग माने जाते हैं; और देशवासियों को राजनीतिक प्रश्नों की ओर प्रवृत्त करने तथा सरकार का ध्यान देश की आवश्यकताओं की ओर आकर्षित करने का भी अधिकतर कार्य इन्हीं समाचार-पत्रों के द्वारा होता है।

**अन्य वैज्ञानिक आविष्कार (बीसवीं शताब्दी)**—वैज्ञानिक आविष्कार क्रमशः बढ़ते जा रहे हैं। जीवन के प्रत्येक कार्य में प्रति दिन नई सुविधाएँ होती जा रही हैं। आज कल सड़कों पर मोटरें (Motor Car) दौड़ती हैं, आकाश में वायुयान (Aeroplane) चक्कर लगाते हैं। समुद्र में पानी के नीचे चलने-वाले जहाज (Submarines) भी बन गये हैं। अब समाचार बे-तार के टेलीग्राफ (Wireless Telegraph) द्वारा भी भेजे जाने लगे हैं और वायुयान द्वारा डाक भेजने का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अभी बीसवीं शताब्दी का केवल चौथाई भाग ही व्यतीत हुआ है; और यदि इसी प्रकार उन्नति होती रही, तो इस शताब्दी के अन्त तक वैज्ञानिकों की बुद्धि न मालूम और क्या क्या चमत्कार दिखलावेगी।

## ( ३ ) उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार

**सामाजिक सुधार का काल**—"व्यावसायिक क्रान्ति" ( The Industrial Revolution ) के दोषों को दूर करने तथा अन्य सामाजिक समस्याओं का निराकरण करने के लिये उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से नियम बनाये गये। इनमें से "गुलामों का उद्धार" "केथोलिकों को सुविधाएँ", तथा नगरों में "प्रतिनिधि शासन" की स्थापना के विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। इस परिच्छेद में हम सामाजिक सुधार के अन्य मुख्य मुख्य नियमों का उल्लेख करते हैं।

**पुतलीघरों के सुधार के नियम** ( Factory Laws )—पुतलीघरों में मजदूरों की दशा बहुत असन्तोषजनक थी। उनको कभी कभी कोयलों की भीट्टीवाले कमरों में १६ तथा १८ घंटे काम करना पड़ता था। कभी कभी एंजिन आदि के फट जाने से बहुत से मजदूरों की जानें भी जाती थीं। पुतलीघरों के मजदूरों को अधिक परिश्रम करने के कारण प्रायः क्षय रोग हो जाता था। स्त्रियाँ और छोटे छोटे बच्चे भी पुतलीघरों में नौकर रख लिये जाते थे; और उनसे जमीन के नीचे कोयले की अँधेरी खानों में काम लिया जाता था, जिससे उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता था।

पुतलीघरों के मजदूरों की यह हीन दशा देख कर इँगलैण्ड के अर्ल ऑफ शेफ्ट्सबरी ( Earl of Shaftesbury ) नामक एक दयावान् व्यक्ति के हृदय पर बड़ी चोट लगी। उसने सोचा कि यदि यही दशा जारी रही, तो कुछ दिनों में ब्रिटिश जाति का

बहुत बड़ा भाग दुर्बल तथा रोगग्रस्त होने के कारण देश की जातीय शक्ति कम होने लगेगी। उसी के अनुरोध से पार्लिमेण्ट ने कई नियम स्वीकृत किये जो "पुतलीघरों के सुधार के नियम" ( Factory Laws ) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार का पहला नियम सन् १८३३ में स्वीकृत हुआ। इन नियमों द्वारा इन बातों का निर्णय किया गया—( १ ) पुतलीघरों के मजदूरों से दस घंटे प्रति दिन से अधिक काम न लिया जाय। ( २ ) स्त्रियों तथा दस वर्ष से कम के बच्चों के लिये खानों में या जमीन के नीचे काम करने की मनाही कर दी गई। ( ३ ) मशीनों के फटने आदि से मज़दूरों की रक्षा करने का भार पुतलीघरों के स्वामियों पर रखा गया। और (४) पुतलीघरों में हवा, रोशनी आदि का उचित प्रबन्ध होना चाहिए।

पुतलीघरों के लिए निरीक्षक ( Factory Inspectors ) नियुक्त किये गये जो जाकर देखते थे कि इन नियमों का ठीक ठीक पालन हो रहा है या नहीं। जिन पुतलीघरों में इन नियमों का उल्लंघन होता था, उनके स्वामियों को कड़े दण्ड दिये जाते थे।

"दरिद्र संरक्षण नियम" में संशोधन—हम बतला चुके हैं कि रानी एलिज़ेबेथ के राजत्वकाल में "दरिद्र संरक्षण नियम" ( Poor Laws ) स्वीकृत हुए थे, जिनके अनुसार गरीबों तथा अपाहिजों की सहायता करने का प्रबन्ध किया गया था। "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के भीषण युद्ध के काल में इँगलैंण्ड में दरिद्रों की संख्या अधिक बढ़ गई; इसलिए यह नियम कर दिया गया कि उनको "दरिद्रालय" (Poor House) में न बुला कर उन्हीं के मकान पर आवश्यकतानुसार सहायता दे दी जाय। बहुत

से लोगों ने इस नियम का दुरुपयोग करना आरम्भ किया। प्रायः ऐसा होता था कि काफी आमदनी होने पर भी लोग सहायता के लिये प्रार्थनापत्र भेज देते थे। इसको रोकने के लिये सन् १८३४ में एक नया "दरिद्र संरक्षण नियम" स्वीकृत किया गया, जिसके अनुसार यह निर्णय हुआ कि बुड्ढों, अपाहिजों, विधवाओं तथा रोगियों के अतिरिक्त किसी को उसके घर पर सहायता न दी जाय। इसके अतिरिक्त और जो लोग सहायता चाहें, उन्हें "दरिद्रालय" (Poor House) में रक्खा जाय और वहाँ उनसे पूरा परिश्रम लेकर तब उन्हें पेट भर अन्न दिया जाय। इसका यही आशय था कि जब वास्तव में मनुष्य की जीविका का कोई साधन न रहे, तभी वह "दरिद्रालय" की शरण ले।

देश के दरिद्रों की जीविका का प्रबन्ध करना भी वर्तमान काल की बड़ी कठिन समस्या हो रही है; और ब्रिटिश सरकार को सेना के आधे व्यय के बराबर दरिद्रों की सहायता में खर्च करना पड़ता है।

**"व्यावसायिक संघों" की स्थापना**—उन्नीसवीं शताब्दी में पुतलीघरों में काम करनेवालों की संख्या प्रति दिन बढ़ती गई और प्रत्येक व्यवसाय के मज़दूरों ने एक दूसरे की सहायता करने के लिये "व्यावसायिक संघ" ( Trade Unions ) स्थापित किये। इन संघों ने अपने व्यवसायवालों की मजदूरी बढ़वाने के लिये कई बार बड़े बड़े आन्दोलन किये और पुतलीघरों के स्वामियों को मजदूरी बढ़ाने पर बाध्य करने के लिये मजदूरों ने हड़ताल ( Strike ) कर देने का अच्छा ढंग निकाल लिया। सन् १८०० में सरकार ने एक नियम

(Combination Act) बनाया जिसके अनुसार मजदूरों का मिल कर अपने "व्यावसायिक संघ" बनाना कानून के विरुद्ध ठहराया गया। सन् १८१५ में यह नियम हटा दिया गया; परन्तु हड़ताल करना अभी तक देश के कानून का उल्लंघन ही समझा जाता था। मजदूरों की संख्या बराबर बढ़ती जाने के कारण सरकार उनको कुछ सुविधाएँ देने के लिये बाध्य हुई; और सन् १८७० में उन्हें "व्यावसायिक संघ" स्थापित करने की नियमानुसार आज्ञा मिल गई। सन् १९०६ में इन "व्यावसायिक संघों" के लिये कई प्रकार की सुविधाएँ कर दी गईं और तब से मज़दूरों की दशा बराबर सुधरती गई। आज कल पार्लिमेण्ट में "मज़दूर दल" (Labour Party) नामक एक राजनीतिक दल भी है जिसका उद्देश्य ही यह है कि देश के मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा की जाय।

शिक्षा विभाग का सुधार—उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षा विभाग में भी बहुत कुछ सुधार हुआ। सन् १८७० में महाशय फॉस्टर (W. E. Forster) के अनुरोध से पार्लिमेण्ट ने "प्रारम्भिक शिक्षा नियम" (Elementary Education Act) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार "शिक्षालय समितियों" (School Boards) की स्थापना हुई और उनको देश के प्राइमरी स्कूलों की देख भाल का कार्य सौंपा गया। सन् १८७६ में यह नियम कर दिया गया कि छः से बारह वर्ष तक की अवस्था के प्रत्येक बालक को शिक्षा पाने के लिये स्कूल जाना आवश्यक है। सन् १८९१ में प्राइमरी स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया गया।

अभी थोड़े दिन हुए, सन् १९१८ में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष महाशय फ़िशर (Right Hon. H. A. L. Fisher) के अनुरोध से एक बड़ा महत्वपूर्ण "शिक्षा नियम" ( The Education Act of 1918 ) स्वीकृत हुआ है। इस नियम की मुख्य मुख्य धाराएँ ये हैं—( १ ) पाँच से चौदह वर्ष तक के प्रत्येक बालक को स्कूल जाना होगा। ( २ ) बारह वर्ष से कम अवस्थावाला कोई बालक किसी प्रकार की मजदूरी न करने पावेगा। बारह से चौदह वर्ष की अवस्थावाले बालक रविवार को दो घण्टे मजदूरी कर सकते हैं, परन्तु स्कूल के दिन उनसे इस प्रकार का कोई काम न लिया जायगा। ( ३ ) स्कूलों में शारीरिक शिक्षा, खेल कूद, तैरने आदि का भी प्रबन्ध किया जाय और प्रति मास छात्रों का डाक्टरी निरीक्षण होना चाहिए, जिससे उनके स्वास्थ्य का पता लगता रहे। ( ४ ) जिन छात्रों में कोई प्राकृतिक दोष पाया जाय, उनकी शिक्षा के लिये विशेष प्रकार के स्कूल खोले जायँ।

इन नियमों से पता लगता है कि इँगलैंएड में बालकों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की ओर सरकार कितना अधिक ध्यान देती है।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १७६४—हारग्रीव्स की सूत कातने की मशीन।
( Hargreave's Spinning Jenny )

,, १७६७—आर्कराइट का पानी से चलनेवाला चरखा।
( Arkwright's Water Frame )

,, १७६७—जेम्स ब्रिंडले (James Brindley) द्वारा इँगलैण्ड में पहली नहर का बनना।

,, १७७५—क्रॉम्पटन की सूत कातने की मशीन।
( Crompton's Mule )

,, १७८५—कार्टराइट का पानी से चलनेवाला करघा।
(Cartwright's Power Loom )

,, १७८५—वॉट ( Watt ) द्वारा भाप के एंजिन का आविष्कार।

,, १८०७—लन्दन की पाल माल सड़क पर गैस की रोशनी।

,, १८१२—हेनरी बेल की "कॉमेट" (Comet) नामक भाप की नाव।

,, १८३०—स्टीफेन्सन का रेल गाड़ी का "राकेट" (Rocket) नामक एंजिन।

,, १८३३—"पुतलीघर के सुधार का नियम"।
( Factory Laws )

,, १८३४—"दरिद्र संरक्षण नियमों" ( Poor Laws ) में संशोधन।

,, १८३८—"ग्रेट वेस्टर्न" ( The Great Western)

नामक भाप के जहाज का एटलांटिक महासागर पार करना।

„ १८४०—डाक के प्रबन्ध का सुधार।

„ १८४४—इँगलैण्ड में तार की पहली लाइन।

„ १८४६—"सस्ती रेलयात्रा नियम"।
( Cheap Trains Act )

„ १८५१—एटलाण्टिक महासागर में केबिल (Cable) लगना।

„ १८७०—"व्यावसायिक संघों" ( Trade Unions ) के स्थापित करने की आज्ञा मिलना।

„ १८७०—फॉस्टर महाशय का "प्रारम्भिक शिक्षा नियम"।
( Foster's Elementary Education Act )

„ १८७६—टेलीफोन (Telephone) का आविष्कार।

„ १९०६—"व्यावसायिक संघों" को विशेष सुबिधाएँ।

„ १९१८—फिशर महोदय का "शिक्षा नियम"।
(Fisher's Education Act of 1918)

---

# सातवाँ परिच्छेद



## पार्लिमेंट के सुधार का आन्दोलन तथा वर्तमान शासन प्रणाली

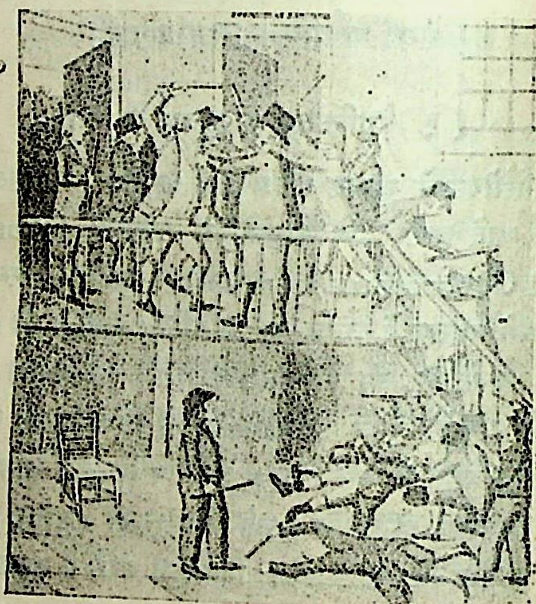
### ( १ ) पार्लिमेंट के सुधार के नियम

**पार्लिमेंट के चुनाव की प्रणाली के दोष**—उन्नीसवीं शताब्दी तक आते आते "नियमानुमोदित शासन" ( Constitutional Government) की स्थापना हो चुकी थी; परन्तु पार्लिमेंट अभी वास्तव में जनता की प्रतिनिधि सभा न थी। अभी बहुत से स्थानों को, जो "व्यावसायिक क्रान्ति" के कारण अब बड़े नगर हो गये थे, अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न मिला था। परन्तु बहुत से ऐसे स्थान* जो अब बिलकुल ग्राम रह गये थे, बराबर अपने प्रतिनिधि भेजते थे। दूसरी अनुचित बात यह थी कि प्रतिनिधियों की संख्या निर्धारित करने में उनके स्थानों की जन संख्या का बिलकुल ध्यान न रक्खा जाता था। चुनाव के नियम भी बहुत असन्तोषजनक थे। काफी जायदादवाले लोग ही वोटर हो सकते थे और साधारण जनता का पार्लिमेंट के चुनाव से कोई सम्बन्ध न था।

---

* ऐसे स्थान Rotten Boroughs कहलाते थे।

**पार्लिमेण्ट के सुधार का पहला निश्चय ( १८३२ )**— छोटा पिट पहला राजनीतिज्ञ था, जिसने चुनाव की प्रणाली का सुधार करना चाहा था; परन्तु धनी लोगों के विरोध के कारण उसका प्रयत्न सफल न हो सका था। "फ्रान्स की राज्यक्रान्ति" के काल में इँगलैण्ड की सरकार इतनी घबराई हुई थी कि इस



अठारहवीं शताब्दी का चुनाव

प्रकार के सुधार आदि के प्रश्नों पर विचार करना ही असम्भव था। परन्तु वाटरलू के युद्ध के बाद पार्लिमेण्ट के सुधार का आन्दोलन बड़े जोरों से उठा और सन् १८३१ में लार्ड जॉन रसेल ( Lord John Russel ) ने इस सुधार के लिए एक

प्रस्ताव उपस्थित किया। लोक सभा में बड़ी कठिनाई से केवल एक सम्मति अधिक होने के कारण यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, परन्तु लार्ड सभा ने उसे अस्वीकृत कर दिया। अगले साल नई पार्लिमेण्ट का चुनाव हुआ और उसमें वही सुधार का प्रस्ताव फिर उपस्थित किया गया। इस बार लोक सभा में १०९ के बहुमत से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ; परन्तु लार्ड सभा ने फिर इसका विरोध किया। सुधारवादियों को अपने आन्दोलन में दृढ़ देखकर राजा विलियम चतुर्थ ने दबाव डाल कर लार्ड सभा में भी यह प्रस्ताव स्वीकृत करा दिया; और इस प्रकार सन् १८३२ में "पार्लि-मेण्ट के सुधार का पहला प्रस्ताव" ( First Reform Bill ) "राजनियम" ( Act ) बन गया। इस नियम के अनुसार जिन स्थानों की जन-संख्या २,००० से कम थी, उनको पार्लिमेण्ट की लोकसभा में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न रहा; और जिनकी जन-संख्या २,००० और ४,००० के बीच में थी, उनको केवल एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार रह गया। इस प्रकार जो जगहें खाली हुईं, उनको भरने के लिये उन स्थानों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया जो "व्यावसायिक क्रान्ति" के कारण अब बढ़ कर नगर हो गये थे। चुनाव के नियमों में भी संशोधन किया गया। वोटरों की जायदाद की शर्त हटा दी गई और प्रत्येक मनुष्य को जो १० पाउंड सालाना किराये के मकान में रहता हो, या जिसके पास ५० पाउंड सालाना लगान की भूमि हो, वोट देने का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार पार्लिमेण्ट में, जिसमें अब तक जमींदार तथा धनिक लोग ही भरे हुए थे, मध्यम श्रेणी के लोगों का भी प्रवेश हो गया।

**चार्टिस्ट आन्दोलन**—महारानी विक्टोरिया के राजत्व काल के आरम्भिक भाग में राजनीतिक सुधार के लिये एक बहुत बड़ा आन्दोलन उठा। इस समय कॉर्न लॉ (Corn Law) के कारण अनाज बड़ा महँगा था; इसलिये बेचारे मजदूरों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ था। कुछ लोगों का यह विचार था कि इस असन्तोषजनक अवस्था के सुधार का एक मात्र उपाय यही है कि सब देशवासियों को राजनीतिक अधिकार दे दिये जायँ। फ़ीयरगस ओकोनर ( Feargus O'Connor ) ने एक बहुत बड़ा प्रार्थनापत्र तैयार किया जो Peoples Charter ( "जनता का अधिकार-पत्र" ) कहलाता है और जिसके समर्थक "चार्टिस्ट" ( Chartists ) नाम से प्रसिद्ध हैं। उसमें समस्त देशवासियों को वोट देने का अधिकार, गुप्त वोट और लोकसभा के सदस्यों के वेतन आदि के लिये प्रार्थना की गई थी; परन्तु पार्लिमेण्ट में यह प्रार्थनापत्र स्वीकृत न हुआ। इस पर चार्टिस्ट दलवालों ने विराट् सभाएँ करके बड़े जोरों से आन्दोलन आरम्भ किया; परन्तु उनके कुछ नेताओं के पकड़े जाने से यह दल धीरे धीरे टूट गया। चार्टिस्ट दलवाले जो सुधार चाहते थे, वे अनुचित न थे; और जैसा कि हम अभी बतलावेंगे, समय आने पर पार्लिमेण्ट ने धीरे धीरे इन सब सुधारों के लिये प्रस्ताव स्वीकृत कर लिये।

**पार्लिमेण्ट के सुधार का दूसरा नियम ( १८६७ )**—सन् १८३२ के "सुधार-नियम" के अनुसार मध्यम श्रेणी के लोगों को वोट देने का अधिकार मिल चुका था; परन्तु देश के कारीगर और मजदूर अब भी इस अधिकार से वंचित थे। सन् १८६७

में डिसूरायले के मन्त्रित्व काल में "पार्लिमेण्ट के सुधार का दूसरा नियम" ( Second Reform Act ) स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार नगरों के सब मकानदारों का वोट देने का अधिकार दे दिया गया। मकानदारों की श्रेणी में नगर के साधारण कारीगर तक आ जाते थे; अतः नगरों के अधिकांश निवासी पार्लिमेण्ट के चुनाव में वोट देने के अधिकारी हो गये।

**पार्लिमेण्ट के सुधार का तीसरा नियम ( १८८४ )**—सन् १८८४ में ग्लैडस्टन के मन्त्रित्व काल में "पार्लिमेण्ट के सुधार का तीसरा नियम" ( Third Reform Act ) स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार गाँवों तथा नगरों दोनों के लिये यह नियम कर दिया गया कि प्रत्येक मकानदार वोट देने का अधिकारी है। अब बहुत से मज़दूर तथा गाँव के साधारण किसान तक वोटर हो गये। इस प्रकार पार्लिमेण्ट की लोक सभा में देश की समस्त श्रेणियों के प्रतिनिधियों का प्रवेश हो जाने के कारण उसने वास्तविक जातीय सभा का रूप धारण कर लिया।

**बैलट एक्ट तथा गुप्त वोट ( १८७२ )**—पार्लिमेण्ट के सुधार के तीसरे नियम से कुछ वर्ष पहले सन् १८७२ में एक बड़ा आवश्यक नियम स्वीकृत हो चुका था, जो बैलट एक्ट ( Ballot Act ) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि वोट ऐसे ढंग से लिया जाय जिससे यह पता न लग सके कि किसने किसके लिए वोट दिया है। वोटर जिसे वोट देना चाहे, उसके नाम के सामने एक चिह्न बनाकर कागज़ को स्वयं एक बन्द सन्दूक में, जो "बैलट बाक्स" कहलाता है, डाल दे। इससे पहले जब गुप्त वोट का कोई प्रबन्ध न था,

वोटर स्वतन्त्रतापूर्वक अपना मत प्रकाशित करने से झिझकते थे। परन्तु अब वोटरों को किसी प्रकार का भय न रहा; और चुनाव में दबाव डालकर वोट प्राप्त करने की प्रथा बहुत कम हो गई।

**पार्लिमेण्ट एक्ट ( १९११ ) तथा लोकसभा की प्रधानता**—सन् १९११ में प्रसिद्ध पार्लिमेण्ट एक्ट ( Parliament Act ) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार पार्लिमेण्ट की लोकसभा तथा लार्ड सभा का पारस्परिक सम्बन्ध निर्धारित हुआ। अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावों ( Money Bills ) पर, जिनमें कर आदि का प्रश्न होता था, लार्ड सभा का कोई अधिकार न रहा; और इस प्रकार के प्रस्तावों पर विचार करने का पूर्ण अधिकार लोक सभा को दे दिया गया। शासन कार्य का संचालन कर पर ही निर्भर है; अतः पार्लिमेण्ट में अब लोक सभा ही की प्रधानता हो गई। यह भी निश्चित कर दिया गया कि जिन प्रस्तावों को लोक सभा तीन बार स्वीकृत कर दे, यदि उन्हें लार्ड सभा अस्वीकृत भी करे, तो भी वह राजा के हस्ताक्षर के बाद राजनियम बन सकते हैं। इस प्रकार नियम बनाने के कार्य में भी लोकसभा ही प्रधान रही; और लार्ड सभा की स्थिति अब केवल सम्मति देनेवाले मंडल ( Advisory Body ) के समान रह गई।

इस नियम के अनुसार पार्लिमेण्ट की अवधि में भी परिवर्तन हुआ। जार्ज प्रथम के राजत्व काल के "सप्तवार्षिक नियम" ( देखो पृष्ठ ४ ) के अनुसार पार्लिमेण्ट का चुनाव सात वर्ष के लिए होता था; परन्तु अब यह अवधि घटा कर पाँच वर्ष कर दी गई। इसी समय से लोक सभा के सदस्यों को ४०० पाउण्ड सालाना वेतन देने की प्रथा का प्रारम्भ हुआ; और इस सुविधा के

कारण ऐसे लोग भी जो अब तक अपने काम धन्धे की हानि के भय से चुनाव के लिए खड़े न होते थे, पार्लिमेण्ट के सदस्य हो सकते हैं ।

**चुनाव के नियमों में संशोधन (१६१८) तथा स्त्रियों का लोक सभा में प्रवेश**—सन् १९१८ में पार्लिमेण्ट के चुनाव के नियमों में और कई संशोधन किये गये । लोक-सभा के सदस्यों की संख्या ६७० से बढ़ाकर ७०७ कर दी गई; और २१ वर्ष से अधिक अवस्था के सब पुरुषों को (यदि उनमें पागलपन आदि दोष न हों) वोट देने का अधिकार दे दिया गया । यह नियम पार्लिमेण्ट के सुधार के पहले तीन नियमों से भी बढ़ कर रहा । इसमें एक और बड़े महत्व की यह बात निश्चित की गई कि स्त्रियाँ भी लोक सभा की सदस्य होने की अधिकारिणी हैं; और ३० वर्ष से अधिक की प्रत्येक स्त्री को, जिसका अपना घर का मकान हो या जिसके पति का घर का मकान हो, पार्लिमेण्ट के चुनाव में वोट देने का अधिकार है ।

२१ वर्ष से अधिक अवस्था के सब पुरुषों को वोट देने का अधिकार मिल जाने से लोक सभा अब पूर्णतया जनता की प्रतिनिधि सभा हो गई; और लोक सभा ही के हाथ में समस्त शासन की बागडोर होने के कारण अब वास्तविक "जनता का राज्य" (Democracy) स्थापित हो गया । स्त्रियों के वोट के अधिकार तथा उनके चुनाव में अभी मकानदार होने की शर्त आवश्यक है; और ३० वर्षसे कम अवस्था की स्त्रियाँ अभी राज-नीतिक अधिकारों से वंचित हैं । परन्तु आशा की जाती है कि शीघ्र ही पुरुषों की भाँति स्त्रियों के वोटर होने की अवस्था भी

घटा कर २१ वर्ष कर दी जायगी और मकानदार होने की भी शर्त हटाकर समस्त स्त्रियों को राजनीतिक अधिकार दिये जायँगे।

## (२) वर्तमान शासन प्रणाली

"नियमानुमोदित राजा" (Constitutional Monarchy) इँगलैण्ड के राजनीतिक इतिहास का सारांश यह समझना चाहिए कि देश के शासन कार्य की बागडोर धीरे धीरे राजा के हाथ से निकल कर पार्लिमेण्ट के हाथ में आ गई। आजकल इँगलैण्ड का राजा "नियमानुमोदित राजा" ( Constitutional Monarch ) होता है; अर्थात् जनता के चुने हुए मन्त्रियों की सम्मति के बिना वह कुछ नहीं कर सकता। शासन कार्य वास्तव में इन मन्त्रियों के ही हाथ में है; परन्तु सब कार्रवाई राजा ही के नाम से की जाती है। राज्य के समस्त कर्मचारी राजा ही के नौकर कहलाते हैं और न्यायालयों में न्याय का कार्य भी राजा ही के नाम से होता है। प्रधान मन्त्री को पार्लिमेण्ट के वाद विवाद तथा मन्त्री मण्डल के गुप्त निर्णय आदि की, राजा को रिपोर्ट भेजनी पड़ती है। पार्लिमेण्ट के चुनाव के लिये निमन्त्रण भी सदा राजा ही के नाम से भेजा जाता है। राजा का व्यक्तिगत रूप से बड़ा प्रभाव होता है; और किसी संस्था में राजा का सम्मिलित होना उस संस्था के लिये बड़े सम्मान की बात मानी जाती है। महारानी विक्टोरिया अपने व्यक्तिगत प्रभाव से अपनी समस्त प्रजा की प्रेमपात्र बन गई थीं। उसके मन्त्री प्रायः उससे राजनीतिक विषयों में परामर्श लेते थे। एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव ही से कई अवसरों पर युरोप में युद्ध न छिड़ने

दिया। इसके अतिरिक्त राजा अपनी समस्त प्रजा का प्रतिनिधि माना जाता है; और वर्तमान समय में ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न भाग एक राजा के अधीन होने के कारण ही सुगमता से एक साथ सम्बद्ध हैं।

पार्लिमेण्ट—लोकसभा तथा लार्ड सभा—पार्लिमेण्ट के दो भाग होते हैं। एक लार्ड सभा ( House of Lords ) है जिसके सदस्य प्रायः बड़े बड़े घरानों के लोग होते हैं। देश की कोई बड़ी सेवा करने के कारण कुछ बड़े घरानों के लोगों को पुश्तैनी उपाधियाँ * दे दी जाती हैं, जिनके कारण उन घरानों के सब से बड़े पुत्र वह उपाधि धारण करने तथा लार्ड सभा में सम्मिलित होने के अधिकारी हो जाते हैं। बड़े घरानों के सदस्यों के अतिरिक्त उसमें इँगलैण्ड तथा उत्तरी आयरलैण्ड के चर्च के बड़े पादरी भी सम्मिलित होते हैं। स्काटलैण्ड के चर्च में पादरी न होने के कारण, वहाँ के चर्च का कोई प्रतिनिधि लार्ड सभा में नहीं होता।

पार्लिमेण्ट का दूसरा भाग लोक सभा ( House of Commons ) कहलाता है। उसमें ७०७ सदस्य होते हैं जो इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड तथा उत्तरी आयरलैण्ड के भिन्न भिन्न स्थानों से चुने जाते हैं। हम बतला चुके हैं कि पार्लिमेण्ट में आज कल लोकसभा ही की प्रधानता है। अर्थ सम्बन्धी प्रस्तावों पर विचार करने का पूर्ण अधिकार लोकसभा ही को है। अन्य विषयों में भी जब लोकसभा तीन बार नियम स्वीकृत कर चुकती है, तब

* Duke, Marquis, Earl, Viscount, Baron आदि।

लार्ड सभा की अस्वीकृति भी उसे राजनियम बनने से नहीं रोक सकती। लोक सभा का प्रधान स्पीकर ( Speaker ) कहलाता है और सभा के कार्यों के नियमानुसार संचालन का भार उसी पर होता है। वर्तमान समय में लोकसभा में तीन राजनीतिक दल हैं; एक कन्सरवेटिव ( Conservative ) जो प्राचीन टोरी दल की भाँति सुधार आदि को कम पसन्द करते हैं; दूसरे लिबरल ( Liberals ) जो प्राचीन ह्विग दल की भाँति पक्के सुधारवादी हैं; और तीसरे लेबर पार्टी ( Labour Party ) जिसका उद्देश्य मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करना है। लोक सभा में जिस राजनीतिक दल की संख्या अधिक होती है, उसी दल का नेता प्रधान मन्त्री बनाया जाता है।

**नियम बनाने की प्रणाली**—पार्लिमेण्ट का मुख्य काम राजनियम बनाना है। पहले नियम "प्रस्ताव" ( Bill ) के रूप में लोकसभा या लार्डसभा में उपस्थित किया जाता है; परन्तु अर्थ सम्बन्धी प्रस्ताव ( Money Bills ) पहले लोक सभा ही में पेश होते हैं। प्रत्येक सभा में "प्रस्ताव" पर तीन बार विचार किया जाता है, जिसका यह आशय है कि राजनियम बहुत सोच विचार करके स्वीकृत किये जायँ। पहली बार "प्रस्ताव" पढ़ कर सुना दिया जाता है और उसके छपने की आज्ञा दे दी जाती है। दूसरी बार प्रस्ताव के मुख्य सिद्धान्तों पर वाद विवाद होता है; और इसके बाद उसकी धाराएँ निर्धारित करने के लिए एक उपसमिति नियत कर दी जाती है। तीसरी बार इन धाराओं पर अलग अलग वाद विवाद होता है और उनमें बहुत सी धाराओं का संशोधन भी कर दिया जाता है। इसके पश्चात् यदि प्रस्ताव

स्वीकृत हुआ, तो वह दूसरी सभा में भेज दिया जाता है जहाँ उस पर फिर उसी प्रकार तीन बार विचार होता है। साधारणतः नियम बनने के लिए पार्लिमेण्ट की दोनों सभाओं की स्वीकृति आवश्यक है; परन्तु जैसा कि हम बतला चुके हैं, सन् १९११ के पार्लिमेण्ट एक्ट के अनुसार यदि किसी नियम को लोक सभा बराबर तीनों बार स्वीकृत किये जाय, तो लार्ड सभा की अस्वीकृति भी उसे राजनियम बनने से नहीं रोक सकती। दोनों सभाओं में स्वीकृत हो जाने के बाद वह नियम राजा के पास उसके हस्ताक्षर के लिये जाता है। पार्लिमेण्ट के स्वीकृत किये हुए नियम पर राजा प्रायः सदा हस्ताक्षर कर देता है और इसके बाद वह नियम "राजनियम" ( Act ) हो जाता है।

इसी प्रकार पार्लिमेण्ट के बनाये हुए नियमों के अनुसार शासन कार्य का संचालन "मन्त्री मण्डल" द्वारा होता है। प्राचीन काल के मन्त्री केवल राजा के सम्मुख उत्तरदायी होते थे और पार्लिमेण्ट का उन पर कुछ भी दबाव न होता था। माध्यमिक काल में पार्लिमेण्ट ने अभियोग (Impeachment) द्वारा मन्त्रियों पर अपना अधिकार जतलाने का अच्छा ढंग निकाल लिया; और सत्रहवीं शताब्दी में यह सिद्धान्त निश्चित हो गया कि राजमन्त्री अपने कार्य के लिए जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हैं। यों धीरे धीरे वर्तमान "सचिवतंत्र शासन" का प्रारम्भ हुआ।

**वर्तमान मन्त्री मण्डल की विशेषताएँ**—सचिव-तन्त्र शासन को समझने के लिये वर्तमान "मन्त्री मण्डल" की निम्नलिखित विशेषताओं को भली भाँति समझ लेना चाहिए—

(१) "मन्त्री मण्डल" के सब सदस्य एक ही राजनीतिक दल के होते हैं। यह प्रथा विलियम तृतीय के राजत्व काल से चली आती है। इससे बड़ा सुभीता यह होता है कि सब मन्त्री एक ही प्रकार की नीति का अनुसरण करते हैं, जिससे शासन कार्य का संचालन सुगमतापूर्वक हो सकता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि दो दलों के नेता आपस में समझौता करके "संयुक्त मन्त्री मण्डल" (Coalition Ministry) भी स्थापित कर लेते हैं।

(२) मन्त्री मण्डल का प्रधान पहले राजा होता था; परन्तु जब से जार्ज प्रथम ने, अँग्रेजी भाषा न जानने के कारण, मन्त्री मण्डल की बैठकों में जाना धीरे धीरे बन्द कर दिया, तब से यही प्रथा चली आती है। आज कल मन्त्री मण्डल की बैठकों से राजा का कोई सम्बन्ध नहीं रहता। मन्त्री लोग जो चाहते हैं, स्वतन्त्रतापूर्वक कर लेते हैं, और उन पर राजा का दबाव नाम मात्र ही रह गया है।

(३) मन्त्री मण्डल का नेता "प्रधान मन्त्री" (Prime Minister) कहलाता है। वालपोल पहला मन्त्री था, जो जार्ज प्रथम के राजत्व काल में राजा की अनुपस्थिति में मन्त्री मण्डल का नेता हुआ था। आजकल ब्रिटिश साम्राज्य की नीति वास्तव में प्रधान मन्त्री ही निर्धारित करता है। मन्त्री मण्डल के अन्य सदस्यों को प्रधान मन्त्री स्वयं नियुक्त करता है और वे सब अपने नेता की ही नीति का अनुसरण करते हैं।

(४) लोकसभा में जिस राजनीतिक दल की अधिक संख्या होती है, उसी का नेता प्रधान मन्त्री बनाया जाता है। इससे बड़ा सुभीता यह होता है कि मन्त्री मण्डल को लोकसभा

से अपनी नीति को स्वीकृत कराने में बड़ी आसानी होती है। इस प्रकार जनता की प्रतिनिधि सभा तथा मन्त्री मण्डल दोनों की नीति सदा एक रहती है।

( ५ ) जिस राजनीतिक दल के सदस्य मन्त्री मण्डल में हों, यदि उस दल का लोक-सभा में बहुमत न रहे, तो ऐसी अवस्था में मन्त्री मण्डल के सब सदस्यों को त्यागपत्र देना पड़ता है। इसके बाद जिस दल का अब बहुमत हो गया हो, उसका नेता प्रधान मन्त्री होकर अपना नया मन्त्री मण्डल स्थापित करता है।

( ६ ) मन्त्री मण्डल अपनी नीति के लिये लोकसभा के सम्मुख उत्तरदायी है। यदि मन्त्री मण्डल की ओर से उपस्थित किया हुआ कोई प्रस्ताव लोक सभा में अस्वीकृत हो, तो इसका यह अर्थ समझा जाता है कि जनता के प्रतिनिधियों को मन्त्रियों पर विश्वास नहीं रहा। ऐसी अवस्था में मन्त्री मण्डल को तुरन्त त्यागपत्र देना पड़ेगा। इस प्रकार प्रधान मन्त्री तथा उसके सहकारी तभी तक मन्त्री मण्डल में रह सकते हैं, जब तक लोक सभा उनकी नीति का समर्थन करती रहे।

( ७ ) मन्त्री-मण्डल के सदस्य राज्य के भिन्न भिन्न विभागों की देखभाल करते हैं। प्रत्येक मन्त्री अपने विभाग के संचालन के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी है; और समस्त मन्त्री मण्डल सम्मिलित रूप से भी उत्तरदायी होता है। यदि लोक सभा किसी मन्त्री के विरुद्ध "अविश्वास का प्रस्ताव" ( Vote of No Confidence ) पास कर दे, तो उसके साथ उसके समस्त सहकारियों को भी त्यागपत्र देना पड़ता है।

इस प्रकार ग्रेट ब्रिटेन का शासन कार्य जनता की अनुमति पर

निर्भर है। देश के लिये नियम बनाने का कार्य वास्तव में लोक सभा के हाथ में है, जिसमें जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं; और इन नियमों के अनुसार शासन कार्य का संचालन मन्त्री मण्डल करता है जिसके सदस्य लोक-सभा के विश्वासपात्र होते हैं।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १८३२—पार्लिमेण्ट के सुधार का पहला नियम।
,, १८६७—पार्लिमेण्ट के सुधार का दूसरा नियम।
,, १८७१—बैलट एक्ट तथा गुप्त वोट।
,, १८८४—पार्लिमेण्ट के सुधार का तीसरा नियम।
,, १९११—"पार्लिमेण्ट एक्ट" ( The Parliament Act of 19" )
,, १९१८—चुनाव के नियमों में संशोधन तथा स्त्रियों का लोक सभा में प्रवेश।

---

# आठवाँ परिच्छेद

## महारानी विक्टोरिया का राजत्व काल
## ( १८३७–१९०१ )

**सर्वप्रिय महारानी विक्टोरिया**—विलियम चतुर्थ के कोई सन्तान न थी, इसलिए सन् १८३७ में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी भतीजी विक्टोरिया ( Victoria ) ब्रिटेन की रानी हुई। उसके राज्याभिषेक के समय से हनोवर का ब्रिटेन से कोई सम्बन्ध न रहा, क्योंकि हनोवर में स्त्रियाँ राज्य करने की अधिकारिणी नहीं समझी जाती थीं। विक्टोरिया की अवस्था उस समय अठारह वर्ष की थी; परन्तु अपनी योग्यता तथा अच्छे स्वभाव के कारण वह शीघ्र ही अपनी समस्त प्रजा की प्रेमपात्र बन गई।



महारानी विक्टोरिया

सन् १८४० में विक्टोरिया का कॉबर्ग * के राजकुमार एलबर्ट

* कॉबर्ग जर्मनी की एक रियासत है।

( Prince Albert of Coburg ) से विवाह हुआ और अपने पति से उसे शासन कार्य में अच्छी सहायता मिलने लगी। परन्तु बीस ही वर्ष बाद सन् १८६१ में राजकुमार एलबर्ट की मृत्यु हो गई। अपने पति के देहान्त के बाद रानी बड़े सादे ढंग से रहने लगी और अपने जीवन का शेष भाग अपनी प्रजा के हित करने में व्यतीत किया।

**विक्टोरिया, भारतवर्ष की महारानी ( १८७७ )**—सन् १८५७ में भारतवर्ष में एक भीषण विद्रोह हुआ, जो "गदर" (Mutiny) के नाम से प्रसिद्ध है। इस उपद्रव के शान्त होने के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्त हुआ और रानी विक्टोरिया ने ब्रिटिश भारतवर्ष का शासन स्वयं अपने हाथ में ले लिया। इस समय से यहाँ का गवर्नर जनरल "वाइसरॉय" * (Viceroy) कहलाने लगा; और "पिट्स इण्डिया एक्ट" के समय के बने हुए Board of Control के स्थान पर "सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया" ( Secretary of State for India ) को भारत सरकार के कार्य की देखभाल का भार सौंपा गया। इसके कुछ वर्ष बाद सन् १८७७ में विक्टोरिया ने "भारतवर्ष की महारानी" (Empress of India) की उपाधि ग्रहण की जिसके उपलक्ष में भारतवर्ष में बड़े समारोह से उत्सव मनाया गया।

## ( १ ) सर रॉबर्ट पील तथा कॉर्न लॉ के विरुद्ध आन्दोलन

**सर रॉबर्ट पील**—सर रॉबर्ट पील (Sir Robbert Peel) विक्टोरिया के राज्य के आरम्भिक काल का बड़ा प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री

* राजा का प्रतिनिधि।

हुआ है। उसकी शिक्षा इँगलैण्ड के प्रसिद्ध हेरो तथा आक्सफ़ोर्ड के शिक्षालयों में हुई थी। सन् १८०९ में वह पार्लिमेण्ट की लोक सभा का सदस्य हो गया और अपनी योग्यता के कारण उसने शीघ्र ही खूब नाम पैदा कर लिया। सन् १८१२ से १८१८ तक



सर रॉबर्ट पील

वह आयरलैण्ड का चीफ सेक्रेटरी रहा; और इसके बाद सन् १८२२ में वह मन्त्री मण्डल का "होम सेक्रेटरी" (देशीय विभाग का मन्त्री) हो गया। पील ने तुरन्त ही "कानून फ़ौज-दारी (Criminal Code) के सुधार का कार्य आरम्भ किया;

और जिन छोटे छोटे अपराधों पर अब तक प्राणदण्ड दिया जाता था, उनमें दंड कम कर दिया गया। इसके अतिरिक्त पील ने दूसरा महत्वपूर्ण सुधार यह किया कि नगरों में शान्ति रखने के लिये बुड्ढे चौकीदारों के स्थान पर बाक़ायदा पुलिस ( Police ) का प्रबन्ध कर दिया। इँगलैण्ड की वर्तमान पुलिस का, जो अपनी योग्यता के कारण जगत् प्रसिद्ध हो रही है, इसी समय से प्रारम्भ होता है।

**पील का मन्त्रित्व (१८४१-१८४६)—आर्थिक सुधार—** सन् १८४१ में पील प्रधान मन्त्री हो गया। उसके मन्त्रित्व काल में बहुत से आर्थिक सुधार हुए। व्यापारिक माल पर महसूल कम कर दिया गया और उसके स्थान पर "इन्कम टैक्स" ( Income Tax ) या लोगों की आय पर कर वसूल करने की प्रथा आरम्भ की गई। इस समय देश में "स्वतन्त्र-व्यापार-वादियों" (Free Traders) की संख्या बढ़ती जा रही थी, जिनका मत था कि व्यापारिक माल पर कर आदि लगाने से देश के व्यापार की उन्नति में बड़ी बाधा पड़ती है। पील पहले इस सिद्धान्त का विरोधी था; परन्तु धीरे धीरे वह "स्वतन्त्र-व्यापार-वादी" हो चला था। देश के बैंकों का भी सुधार करने का प्रयत्न किया गया; और सन् १८४४ में "बैंक सुधार नियम" ( Banks Charter Act ) के अनुसार बैंकों के नोटों की संख्या निश्चित कर दी गई, जिससे कोई बैंक अधिक नोट निकाल कर देश के व्यापार आदि को धक्का न पहुँचा सके।

**पील तथा आयरलैण्ड की समस्या—** इस समय आयरलैण्ड के निवासी ब्रिटेन से पृथक् होकर अपने देश में स्वराज्य

स्थापित करने के लिये आन्दोलन कर रहे थे। पील ने आयरलैण्ड के किसानों की शिकायतों की जाँच करने के लिए एक कमीशन बैठाया और कैथोलिकों को सन्तुष्ट करने के लिए मेमूथ कॉलिज (Maymooth College) को, जहाँ कैथोलिक पादरियों की शिक्षा होती थी, सरकार की ओर से सहायता दिलाई। इस के अतिरिक्त देश में शिक्षा फैलाने के लिए तीन बड़े कालिज खोले गये, जो रानी विक्टोरिया के नाम पर क्वीन्स कालिज (Queen's College) कहलाये। परन्तु आयरलैण्ड निवासी केवल इतनी बातों से सन्तुष्ट न हो सकते थे, अतः स्वराज्य के लिये उनका आन्दोलन बराबर जारी रहा।

**कॉर्न ला का अन्त तथा पील का पतन**—हम बतला चुके हैं कि नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध समाप्त होने के बाद इँगलैण्ड की कृषि की दशा बहुत असन्तोषजनक थी। ऐसी अवस्था में कॉर्न लॉ स्वीकृत हुआ था, जिसके अनुसार विदेश से आनेवाले अनाज पर बहुत काफी महसूल लगा दिया गया था, जिससे वह देशी अनाज के मुकाबले में सस्ता न बिक सके। इस नियम से भूमिपतियों को तो लाभ हुआ, परन्तु इस के कारण अनाज की दर बढ़ जाने से साधारण जनता को बड़ी असुबिधा हो गई। "स्वतन्त्र-व्यापार-वादियों" ने कॉर्न लॉ की विरोधी एक संस्था (Anti Corn Law League) स्थापित की, जिसके नेता रिचर्ड कॉब्डेन (Richard Cobden) और जॉन ब्राइट (John Bright) थे; और इस नियम के विरुद्ध बड़े जोरों से आन्दोलन शुरू किया। इसी समय आयरलैण्ड में, जहाँ के लोग अब तक अनाज के स्थान पर आलू खाकर जीवन निर्वाह

करते थे, आलू की फ़स्ल मारी गई, जिससे अनाज की महँगी लोगों के लिये असह्य हो गई। ऐसी अवस्था में पील को कॉर्न लॉ हटाना पड़ा। इस प्रकार इस मनहूस नियम का, जिसके कारण अनाज महँगा हो रहा था, अन्त हुआ।

पील के समर्थकों में अधिकतर भूमिपति ही थे, जो अपने स्वार्थ के कारण कॉर्न लॉ का रद्द होना कभी पसन्द न कर सकते थे। अपने समर्थकों के असन्तुष्ट हो जाने के कारण पील को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा; और थोड़े ही दिनों बाद यह योग्य राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

पील के राजनीतिक विचार तथा उसके कार्यों की आलोचना—पील टोरी दल का नेता था। उसके नेतृत्व में इस दल के राजनीतिक सिद्धान्त बड़े उदार होने लगे। "टोरी" नाम से लोग अब तक "नियमानुमोदित शासन" के विरोधी समझे जाते थे; इसलिए पील ने यह नाम बदल कर अपने दल को कन्जरवेटिव दल ( Conservatives ) अर्थात् "प्राचीन शैली के समर्थक" कहना शुरू किया था। इसके जवाब में ह्विग दलवाले अपने को लिबरल ( Liberal ) अर्थात् "सुधारवादी" कहने लगे।

लोक सभा में अपनी शक्ति स्थायी करने के लिए पील का काम बिना अपना दल बनाये न चल सकता था; परन्तु वास्तव में वह दलबन्दी के बखेड़ों को पसन्द न करता था *। जो बात उसे उचित मालूम होती थी, उसे वह अपने दल के सिद्धान्तों का

* उसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है—

"The most Liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Liberals"

विचार छोड़ कर तुरन्त करने के लिये अग्रसर हो जाता था। पील के दल के भूमिपति कॉर्न लॉ के हटाने के विरोधी थे; परन्तु उसने भूखी जनता के हितार्थ यह नियम हटा दिया। पील के अनुयायी बहुत दिनों तक "पीलाइट्स" (Peelites) नाम से प्रसिद्ध रहे। उन्हीं में ग्लैडस्टन भी था, जो स्वयं आगे चल कर इँगलैण्ड का बड़ा प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री हुआ।

## (२) "पूर्वीय समस्या"

## (The Eastern Question)

"पूर्वीय समस्या" का अर्थ—समस्त युरोपीय राज्य प्रायः ईसाई हैं। उनमें केवल टर्की ही एक ऐसा राज्य है जहाँ की शासक जाति अर्थात् तुर्क लोग मुसलमान हैं। धर्म का भेद होने के कारण तुर्कों की सभ्यता भी युरोपीय सभ्यता से भिन्न है। इन कारणों से टर्की की स्थिति बहुत दिनों तक यूरोपीय राजनीतिज्ञों के लिए एक पूरी समस्या रही। यह समस्या इसलिए और भी कठिन हो गई कि टर्की के साम्राज्य के कई सूबों के निवासी ईसाई थे, जो मुसलमान तुर्कों का शासन कभी पसन्द न कर सकते थे।

टर्की युरोप के बिलकुल पूर्वीय कोने में है और तुर्कों का राज्य एशिया के पश्चिमी सिरे तक फैला हुआ है। इसलिए इँगलैण्ड को "पूर्वीय समस्या" (Eastern Question) का निपटारा करने में विशेष रूप से सम्मिलित होना पड़ा। कारण यह था कि अँग्रेजों को अपने साम्राज्य के एशियाई भाग की रक्षा की सदा चिन्ता लगी रहती है। अँग्रेजों के अतिरिक्त दूसरी युरोपीय

जाति, जिसका एशिया में राज्य फैला हुआ है, रूसियों को है। इस कारण "पूर्वीय समस्या" से अधिकतर इँगलैण्ड और रूस का ही सम्बन्ध था।

**लार्ड पामर्स्टन तथा इँगलैण्ड की "पूर्वीय" नीति**—इँगलैण्ड की पूर्वीय नीति लार्ड पामर्स्टन ( Lord Palmerston ) ने निर्धारित की। पामर्स्टन बहुत दिनों तक अँग्रेजी सरकार के "विदेशी विभाग का मन्त्री" ( Foriegn Secretary ) था; और इसके पश्चात् "प्रधान मन्त्री" (Prime Minister) हुआ। उसका मत था कि इँगलैण्ड का हित इसी में है कि टर्की का साम्राज्य टूटने न पावे। यदि तुर्कों की शक्ति नष्ट हो गई, तो रूसियों को एशिया माइनर की ओर फैलने के लिए खुला मैदान मिल जायगा। इससे एशिया में रूस की शक्ति अधिक बढ़ जायगी; और ऐसी अवस्था में इँगलैण्ड के एशियाई साम्राज्य ( भारतवर्ष ) को सदा रूसियों का भय लगा रहेगा। रूसियों ने टर्की के कुछ भागों पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से कई बार तुर्कों से युद्ध किया, परन्तु अँग्रेजों ने तुर्कों को सहायता देकर रूसियों का वह प्रयत्न सफल न होने दिया।

**क्रीमिया का युद्ध ( The Crimean War ) १८५४-१८५६**—हम बतला चुके हैं कि यूनानवाले सन् १८२९ में ही तुर्कों के शासन से स्वतन्त्र हो चुके थे। टर्की के साम्राज्य के अन्य ईसाई प्रान्त भी स्वतन्त्र होने के लिये आन्दोलन कर रहे थे। रूसवालों ने टर्की की शक्ति कम करने का यह अच्छा अवसर समझा; और ईसाई प्रजा को मुसलमान तुर्कों के विरुद्ध खूब भड़काया। रूस के सम्राट् निकोलस प्रथम (Nicholas I.) ने

यह प्रस्ताव किया कि टर्की के साम्राज्य में ईसाइयों के जेरूसलम आदि जो पवित्र स्थान हैं, वे स्वतन्त्र कर दिये जायँ। तुर्कों के इसे अस्वीकार करने पर रूसियों ने तुरन्त टर्की पर आक्रमण कर दिया और उसके कई प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया।

इँगलैण्ड ने इस प्रश्न को धार्मिक दृष्टि से नहीं देखा। उसने रूस की शक्ति को रोकने के आशय से टर्की का साथ दिया और रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। फ्रान्स में इस समय नेपोलियन का भतीजा "नेपोलियन तृतीय" शासन कर रहा था। अपने चचा की भाँति युद्ध क्षेत्र में यश प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने भी टर्की का साथ दिया। इस प्रकार फ्रान्सीसियों और अँग्रेजों ने, जिनमें पीढ़ियों से वैर चला आता था, मिल कर रूसियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। यह युद्ध रूस के दक्षिणी प्रायद्वीप क्रीमिया में हुआ था, इस कारण यह "क्रीमिया का युद्ध" ( Crimean War ) कहलाता है।

फ्रान्सीसी और अँग्रेजी सेनाओं ने मिल कर रूस के प्रसिद्ध गढ़ सेबास्टपल ( Sebastpol ) पर घेरा डाला; परन्तु इसी समय क्रीमिया का कड़ा जाड़ा शुरू हो जाने के कारण उन्हें वह कार्य कुछ काल के लिये स्थगित करना पड़ा। थोड़े ही दिनों में रूसियों की सेना बेलेक्लावा ( Balaclava ) तथा इन्करमैन ( Inkerman ) के युद्धों में बुरी तरह परास्त हुई और अन्त में सेवास्टपल का गढ़ भी उनके हाथ से निकल गया।

ऐसी अवस्था में रूसियों को पेरिस की सन्धि ( Peace of Paris ) करनी पड़ी और वे इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री पामर्स्टन की सब शर्त्तें स्वीकृत करने के लिये बाध्य हुए। यह निश्चित

किया गया कि टर्की के साम्राज्य पर कोई आघात न होने पावे। "कृष्ण सागर" ( Black Sea ) से रूसियों को अपना जहाजी बेड़ा हटाना पड़ा और उन्हें सेबास्टपूल का गढ़ फिर बनाने की भी मनाही कर दी गई। इन शर्तों से रूस की जलशक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और टर्की का साम्राज्य नष्ट होने से बच गया।

**बालकन युद्ध** ※ ( The Balkan War ) १८७७-१८७८)—लगभग बीस वर्ष बाद "पूर्वीय समस्या" के सम्बन्ध में फिर भयंकर युद्ध छिड़ गया। तुर्की साम्राज्य के बाल्गेरिया ( Bulgaria ) आदि ईसाई प्रान्तों ने मुसलमान तुर्कों के शासन से तंग आ कर विद्रोह किया। रूस का टर्की पर सदा से दाँत था; अतः उसने ऐसे अवसर से फिर लाभ उठाना चाहा। ईसाई विद्रोहियों को सहायता देने के लिए रूस ने अपनी सेना भेजनी शुरू की; और शीघ्र ही इस सेना ने तुर्कों की राजधानी कान्स-टेन्टीनोपुल ( Constantinople ) पर अधिकार जमा लिया।

तुर्कों के ईसाइयों के साथ बहुत अत्याचार करने के कारण इँगलैण्ड ने इस बार युद्ध में टर्की का साथ नहीं दिया था। परन्तु साथ ही साथ इँगलैण्ड यह भी सहन नहीं कर सकता था कि रूस टर्की को नष्ट करके एशिया में अपनी शक्ति बढ़ाने का मार्ग साफ कर ले। कान्सटेन्टीनोपुल पर रूसियों का अधिकार

※ इस युद्ध के परिणाम स्वरूप बालकन प्रायद्वीप के वर्तमान स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हुई; इसलिए यह "बालकन युद्ध" ( The Balcan War ) कहलाता है। इसको कभी कभी "रूस और टर्की का युद्ध" ( Russo Turkish War ) भी कहते हैं।

हो जाने का समाचार पाकर इँगलैण्ड का चुप बैठे रहना अ-सम्भव था। इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री डिस्रायले (Disraeli) ने रूसियों पर दबाव डालना शुरू किया। अन्त में यह निश्चित हुआ कि समस्त पूर्वीय राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर टर्की के प्रश्न का निपटारा करें। सन् १८७८ में बर्लिन (Berlin) में समस्त युरोपीय राज्यों की कांग्रेस हुई, जिसका प्रधान जर्मनी का प्रसिद्ध मन्त्री प्रिन्स बिस्मार्क (Prince Bismarck) था। इस कांग्रेस ने यह निर्णय किया कि रूमानिया, सर्विया तथा मान्टोनीग्रो के ईसाई प्रान्त स्वतन्त्र राज्य बना दिये जायँ। बल्-गेरिया को भी थोड़ी सी स्वतन्त्रता दे दी गई और दो ईसाई प्रान्तों का शासन आस्ट्रिया को सौंपा गया। एशिया माइनर के तट का साइप्रस (Cypurs) द्वीप इँगलैण्ड को दे दिया गया; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि अँग्रेज़ी जहाज़ी बेड़े को टर्की के एशियाई भाग की रक्षा का भार लेना होगा।

इस निपटारे से टर्की के साम्राज्य के बहुत से प्रान्त स्वतन्त्र हो जाने के कारण तुर्कों की शक्ति तो अवश्य कम हो गई, परन्तु रूसवाले इससे कोई लाभ न उठा सके। इँगलैण्ड की "पूर्वीय नीति" का केवल यही उद्देश्य था कि टर्की को नष्ट करके कहीं रूस एशिया माइनर की ओर अपनी शक्ति न बढ़ा ले। परन्तु अब इस निपटारे से इस बात का कोई भय न रहा।

**इँगलैण्ड की "पूर्वीय नीति" में परिवर्तन**—तुर्कों का अप-नी ईसाई प्रजा के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार होता था; इस कारण टर्की का साम्राज्य बहुत दिनों तक कभी न ठहर सकता था। इँगलैण्ड ने तुर्कों के शत्रु रूसियों की शक्ति को रोकने के

आशय से कई बार टर्की का साथ दिया और उसे नष्ट हो जाने से बचाया। परन्तु धीरे धीरे इँगलैण्डवाले भी समझ गये कि टर्की के अधःपतन को रोकना असम्भव है। पिछले युरोपीय महायुद्ध में टर्की के जर्मनी का साथ देने के कारण स्वयं इँगलैण्ड ने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध किया और अन्य युरोपीय राज्यों को टर्की की शक्ति नष्ट करने में सहायता दी।

## (३) लॉर्ड पामर्स्टन का मन्त्रित्व
## (१८५५-१८६५)

**पामर्स्टन की परराष्ट्रनीति—**"पूर्वीय समस्या" के सम्बन्ध में इँगलैण्ड की नीति निर्धारित करनेवाला लार्ड पामर्स्टन ( Lord Palmerston ) अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हुआ है। सन् १८३० से १८५१ तक वह परराष्ट्र विभाग का मन्त्री ( Foriegn Secretary ) रहा और इसके बाद सन् १८५५ में वह प्रधान मन्त्री ( Prime Minister ) होकर "मन्त्री मण्डल" का नेता हो गया। उसने कई बार संकट के समय टर्की की सहायता की और उसे रूसियों के हाथों नष्ट होने से बचाया। उसका मत था कि टर्की के साम्राज्य के टूट जाने से रूस को एशिया माइनर की ओर बढ़ने का खुला मैदान मिल जायगा; और इससे एशिया में रूस की शक्ति बढ़ जाने के कारण अँग्रेजों के एशियाई साम्राज्य ( भारतवर्ष ) के लिए एक स्थायी भय का कारण प्रस्तुत हो जायगा। इसी लिये उसने "क्रीमिया के युद्ध" में टर्की का पक्ष लेकर रूसियों से युद्ध किया और उसे टर्की की कमजोरी से लाभ न उठाने दिया।

इसके अतिरिक्त पामर्स्टन ने युरोप की कई जातियों की, जो अपने देश में जातीय राज्य तथा नियमानमोदित शासन स्थापित करने के लिये आन्दोलन कर रही थीं, बहुत बड़ी सहायता की। बेल्जियमवालों के प्रति, जो डच राज्य का आधिपत्य हटा कर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे, उसकी पूर्ण सहानुभूति थी; और उसने इटलीवालों की भी, जो अपने देश की छोटी छोटी रियासतों को एक जातीय राज्य में सम्मिलित करना चाहते थे, पूर्ण सहायता की।

गृह्य नीति—परन्तु युरोप के अन्य राज्यों के जातीय आन्दोलनों में सहायता देनेवाला पामर्स्टन अपने देश के इस प्रकार के आन्दोलनों को सदा दबाने का प्रयत्न करता रहा *। उसके मन्त्रित्व काल में इँगलैण्ड के सुधारवादियों की एक न चली और पार्लिमेण्ट के सुधार का दूसरा नियम उसकी मृत्यु के कहीं दो वर्ष बाद स्वीकृत हो सका। उसका मत था कि इँगलैण्ड की पार्लिमेण्ट का जो कुछ सुधार पहले नियम के अनुसार हो चुका है, वह बहुत काफी है और जनता को इससे अधिक राजनीतिक अधिकार मिलना ठीक नहीं है।

पामर्स्टन के कार्यों की आलोचना—दस वर्ष प्रधान मन्त्री रहने के बाद सन् १८६५ में लार्ड पामर्स्टन की मृत्यु हुई। शासन कार्य में वह अपने सहकारियों की अनुमति की बहुत कम परवाह करता था; और कभी कभी रानी विक्टोरिया तक को अपनी कारंवाई का पता न लगने देता था। इसी कारण सन्

* "Conservative at home and Revolutionary abroad".

१८५१ में रानी ने उसे "परराष्ट्र विभाग के मन्त्री" के पद से हटा दिया था; परन्तु "क्रीमिया के युद्ध" के छिड़ते ही रानी को पूर्वीय समस्या के इस ज्ञाता की फिर आवश्यकता पड़ी और वह "प्रधान मन्त्री" बना दिया गया। पामर्स्टन की "पूर्वीय" नीति ने रूसियों के मन्सूबे सफल न होने दिये; और उसके युरोपीय राज्यों के जातीय आन्दोलनों का समर्थन करने के कारण इँगलैण्ड का यश देशान्तरों में खूब फैल गया। पामर्स्टन ही के मन्त्रित्व काल में "भारतवर्ष का गदर" (The Indian Mutiny, 1857) हुआ; और इसी योग्य राजनीतिज्ञ ने ब्रिटिश साम्राज्य के इस बहुमूल्य भाग को अँग्रेजों के हाथ से निकलने से बचाया।

## (४) मिस्र तथा सूडान

**मिस्र का टर्की के आधिपत्य से स्वतन्त्र होना (१८६३)—** मिस्र पहले टर्की के साम्राज्य का एक भाग था। टर्की के सुलतान की ओर से वहाँ एक वाइसराय शासन करता था। वाइसराय मुहम्मद अली (Viceroy Mohammad Ali) अपने को मिस्र का स्वतन्त्र राजा बनाने के उपाय सोचने लगा और धीरे धीरे उसने अपनी शक्ति बढ़ाना प्रारम्भ किया। सन् १८३९ में मुहम्मद अली ने सीरिया (Syria) पर अपना अधिकार जमा लिया और एक बहुत बड़ी सेना लेकर सुलतान की राजधानी कान्सटेन्टीनोप्ल (Constantinople) पर आक्रमण कर दिया। ऐसे संकट के समय में ब्रिटेन ने टर्की का साथ दिया और मुहम्मद अली को ऐसी बुरी तरह से परास्त किया कि बेचारा मिस्र देश को भाग गया और सीरिया पर फिर टर्की के सुलतान का

अधिकार स्थापित हो गया। परन्तु मिस्र में मुहम्मद अली की शक्ति बराबर बनी रही और उसने घोषणा कर दी कि मैं टर्की के सुलतान का वाइसराय नहीं हूँ, बल्कि मिस्र देश का स्वतन्त्र शासक हूँ। उसके उत्तराधिकारी इस्माइल पाशा (Ismail Pasha) ने सन् १८६३ में "खदीव" (Khedive) की उपाधि धारण कर ली, जिस नाम से मिस्र के प्राचीन राजा पुकारे जाते थे। इस प्रकार अब मिस्र देश में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गया।

**मिस्र में ब्रिटेन तथा फ्रान्स का हस्तक्षेप**—मिस्र के पास ही "लाल सागर" तथा "रूम सागर" के बीच में "स्वेज़ नहर" (Suez Canal) खुल जाने से इस देश का ब्रिटेन तथा फ्रान्स से घनिष्ट सम्बन्ध होने लगा। अब तक युरोप से एशिया जाने-वाले जहाज़ों को केप ऑफ गुड होप की राह से अफ्रिका का चक्कर लगा कर जाना पड़ता था; परन्तु इस नहर के खुल जाने से लाल सागर तथा रूम सागर होकर जहाज ले जाने का सुभीता हो गया। स्वेज़ नहर एक फ्रेंच कम्पनी ने बनाई थी; परन्तु मिस्र की सरकार ने भी उस कम्पनी के हिस्से ख़रीदे थे। इस्माइल पाशा के समय में मिस्र की सरकार का व्यय इतना बढ़ गया कि उसे फ्रान्स और ब्रिटेन से ऋण लेना पड़ा। इस्माइल पाशा को स्वेज़ कम्पनी के हिस्से भी बेच देने पड़े। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री डिसरायले (Disraeli) ने इस अवसर से लाभ उठाकर सब हिस्से खरीद लिये; परन्तु फिर भी मिस्र की सरकार फ्रान्स तथा ब्रिटेन का ऋण न चुका सकी; और सन् १८७९ में उसे यह स्वीकृत करने के लिए बाध्य होना पड़ा कि

ब्रिटेन और फ्रान्स को अपना ऋण वसूल करने के लिए मिस्र के आर्थिक विभाग की देखभाल करने का अधिकार है।

**मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य—( १८८२ )**—विदेशी जातियों के इस हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए मिस्र में अरबी पाशा ( Arabi Pasha ) नामक एक सैनिक अफसर के नेतृत्व में एक भयंकर आन्दोलन उठा। अरबी पाशा ने विदेशियों को भगाना शुरू किया। यह समाचार पाकर फ्रान्स तथा ब्रिटेन में बड़ी सनसनी फैली; परन्तु फ्रान्स ने इस सम्बन्ध में कुछ भी न किया और मिस्र के आन्दोलन को दबाने का भार पूर्णतया ब्रिटेन को ही उठाना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि अँग्रेजों ने अरबी पाशा की सेना को परास्त किया और सन् १८८२ में मिस्र की सरकार को ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate over Egypt ) स्वीकृत करना पड़ा। इसके पश्चात् "ख़दीव" बस नाम मात्र को ही मिस्र का राजा रह गया और देश का शासन वास्तव में अँग्रेजी कॉन्सल जेनरल ( Consul General ) लार्ड क्रोमर ( Lord Cromer ) के हाथ में आ गया।

**सूडान का विद्रोह**—इससे कुछ वर्ष पहले मिस्र के ख़दीव ने सूडान (Soudan) देश पर अपना अधिकार जमा लिया था। सन् १८८३ में सूडानवालों ने मिस्र सरकार के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया। इस विद्रोह का नेता एक जोशीला मुसलमान था जो अपने आप को इसलाम का नया नबी, मेहदी (Prophet Mahdi) कहता था। मिस्र सरकार पर अपना आधिपत्य होने के कारण ब्रिटेन ने जेनरल गॉर्डन (General Gordon ) को यह विद्रोह शान्त करने

के लिए भेजा। परन्तु वह प्रयत्न सफल नहो सका और गॉर्डन स्वयं युद्ध में मारा गया। इसके बाद कुछ वर्ष तक सूडान मिस्र राज्य से पृथक् रहा; परन्तु सन् १८९८ में लॉर्ड किचनर (Lord Kitchener) ने सूडानवालों को आमडरमेन (Omdurman) के युद्ध में परास्त किया; और इसके परिणाम स्वरूप सूडान में ब्रिटेन और मिस्र का संयुक्त शासन स्थापित हो गया।

**मिस्र का वर्तमान स्वतन्त्र राज्य (१९२२)**—सन् १८८२ से मिस्र पर अँग्रेजों का बराबर आधिपत्य रहा। नाम के लिए "खदीव" मिस्र का राजा होता था; परन्तु समस्त शासन कार्य का संचालन अँग्रेजी कॉन्सल जेनरल करता था। सन् १९१४ में युरोपीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने पर जब मिस्र के "खदीव" अब्बास हिल्मी (Abbas Hilmi) ने ब्रिटन के शत्रु टर्की का साथ दिया, तब ब्रिटेन ने उसे राज-सिंहासन से हटा कर उसके चचा हुसेन कमाल (Hussein Kamal) को मिस्र का सुलतान (Sultan of Egypt) बनाया; और साथ ही अपना आधिपत्य और अधिक दृढ़ करने के लिए कॉन्सल जेनरल के स्थान पर एक हाई कमिश्नर (High Commissioner) मिस्र के शासन की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया। हुसेन कमाल बस नाम मात्र का ही सुलतान था; युद्ध काल में मिस्र का शासन वास्तव में अँग्रेजों के ही हाथ में रहा। परन्तु युद्ध समाप्त होने पर सन् १९२० में ब्रिटेन ने मिस्र के सुलतान को यथेष्ट अधिकार दे दिये। इसके बाद सन् १९२२ की सन्धि के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने मिस्र से अपना सम्बन्ध बिलकुल हटा लिया। आजकल "सुलतान"

(The Sultan) मिस्र का स्वतन्त्र राजा है और उसकी प्रजा नाइल नदी की उपजाऊ घाटी में खूब फल फूल रही है।

## ( ५ ) डिस्रायले और ग्लैडस्टन

**डिस्रायले और ग्लैडस्टन**—पामर्स्टन की मृत्यु के बाद ब्रिटेन के राजनीतिक क्षेत्र में दो प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों का प्रवेश होता है—एक डिस्रायले ( Benjamin Disraeli ) और दूसरा ग्लैडस्टन ( William Ewart Gladstone )। इन दोनों के राजनीतिक सिद्धान्त एक दूसरे के विपरीत थे और इन दोनों में मन्त्री मण्डल के नेता होने के लिए खूब मुकाबला रहा। कभी एक और कभी दूसरे की विजय हुई। कितने ही वर्षों तक यही दोनों व्यक्ति राजनीतिक क्षेत्र में मुक़ाबले के नेता रहे।

**ग्लैडस्टन का पहला मन्त्रित्व ( १८६८–१८७४ )**—ग्लैडस्टन पहली बार सन् १८६८ में प्रधान मन्त्री हुआ। वह पहले कन्सरवेटिव दल में था और रॉबर्ट पील का अनुयायी था; परन्तु धीरे धीरे विचारों में परिवर्तन होने के कारण वह पक्का लिबरल (Liberal) हो गया। वह अपनी वक्तृत्व शक्ति के लिये प्रसिद्ध है और उसका लोकसभा में बड़ा प्रभाव था। उसके पहले मन्त्रित्व काल में बहुत से सुधार हुए। एजूकेशन एक्ट* (Education Act ) जिसने शिक्षा विभाग का इतना सुधार किया और बैलट एक्ट † (Ballot Act ) जिससे गुप्त रूप से वोट

* देखो पृष्ठ ८३।

† देखो पृष्ठ ९१।

देने की प्रणाली का प्रारम्भ हुआ, इसी काल में स्वीकृत हुए थे। आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता का असन्तोष शान्त करने के लिए ग्लैडस्टन ने वहाँ के प्रोटेस्टेण्ट चर्च को सहायता देना बन्द कर दिया ( Dis-establishment of the Irish Church); और देश के किसानों की शिकायतें दूर करने का भी प्रयत्न किया। परन्तु आयरलैण्ड निवासी केवल इतने से कभी सन्तुष्ट न हो सकते थे।

इसी समय युरोप में एक बड़ा प्रसिद्ध युद्ध हुआ जो "फ्रान्स तथा जर्मनी का युद्ध" (Franco-German War, 1870-71) के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप नेपोलियन तृतीय को, जो फ्रान्स का सम्राट् हो गया था, त्यागपत्र देना पड़ा; और फ्रान्स में प्रजातन्त्र राज्य ( The French Republic ) स्थापित हो गया जो अब तक चला आता है। जर्मनी में सब छोटी रियासतों ने प्रशा के राजा विलियम को अपना सम्राट् स्वीकार किया और इस प्रकार "जर्मन साम्राज्य" ( German Empire ) का प्रारम्भ हुआ, जो युरोपीय महायुद्ध के समय तक विद्यमान था। ग्लैडस्टन के नेतृत्व में इँगलैण्ड ने इस युद्ध में कोई सहायता नहीं की थी; इसलिए डिस्रायले ने उसे यह कह कर बदनाम करना शुरू किया कि उसकी शान्तिप्रिय नीति के कारण युरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में इँगलैण्ड की कोई स्थिति न रह जायगी। सन् १८७४ के चुनाव में ग्लैडस्टन के समर्थकों की संख्या बहुत कम रह गई, इसलिए उसे प्रधान मन्त्री के पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

डिस्रायले ( लॉर्ड बेकन्सफील्ड ) का मन्त्रित्व ( १८७४–

१८८०)—ग्लैडस्टन के इस पतन के बाद डिसूरायले ( Disraeli, Earl of Beaconsfield ) प्रधान मन्त्री हुआ। वह यहूदी था और उसने राजनीतिक विषयों पर अपने विचार उपन्यास रूप में प्रकाशित करके खूब यश प्राप्त कर लिया था।



बेकन्सफील्ड

कहा जाता है—"यदि लोग गलैडस्टन की ओर उसकी वक्तृत्व शक्ति के कारण आकर्षित होते थे, तो डिसूरायले की ओर लोगों के आकर्षित होने का कारण उसके महान् विचार थे।" कॉर्न लॉ के विरुद्ध आन्दोलन के समय उसने राबर्ट पील की "स्वतन्त्र

व्यापार नीति" का बड़े जोरों से विरोध किया था। उस समय वह कन्सरवेटिव दल ( Conservatives ) का नेता था; परन्तु फिर भी वह सुधार पक्ष का विरोधी न था। सन् १८६७ में "पार्लिमेण्ट के सुधार के दूसरे नियम" ( Second Reform Act ) के लिए उसी ने प्रस्ताव उपस्थित किया था।

डिस्रायली के मन्त्रित्व काल की सब से प्रसिद्ध घटना "बालकन युद्ध" अर्थात् रूस और टर्की की लड़ाई है जिसके विषय में हम "पूर्वीय समस्या" ( Eastern Question ) का विवेचन करते हुए लिख आये हैं *। डिस्रायली ने रूस पर दबाव डालकर टर्की के प्रश्न का समस्त युरोपीय राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा निपटारा कराया। बर्लिन की सन्धि ( Treaty of Berlin, 1878 ) के अनुसार टर्की के साम्राज्य के कई प्रान्त स्वतन्त्र हो जाने के कारण तुर्कों की शक्ति तो अवश्य कम हो गई, परन्तु रूसवाले इससे कोई लाभ न उठा सके। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन को साइप्रस (Cyprus) द्वीप मिल गया जिससे ब्रिटिश साम्राज्य के एशियाई भाग की रक्षा के कार्य में बड़ा सुभीता हो गया। डिस्रायली ही ने इस्माइल पाशा से स्वेज कम्पनी ( Suez Company ) के हिस्से खरीद कर मिस्र देश पर ब्रिटिश आधिपत्य ( British Protectorate over Egypt ) की नींव डाली थी †। डिस्रायली की टर्की को रूस के पंजे से बचाने की नीति का ग्लैडस्टन ने विरोध किया। इस समय ईसाई प्रान्तों के सताने-

* देखो पृष्ठ ११०।

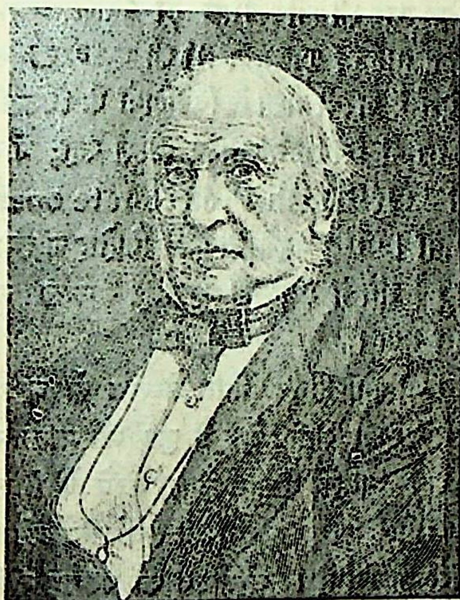
† देखो पृष्ठ ११५।

वाले मुसलमान तुर्कों के प्रति इँगलैण्ड की सहानुभूति न होने के कारण सन् १८८० के चुनाव में डिज़्रायले के कन्सरवेटिव दल की हार हुई। डिज़्रायले को त्यागपत्र देना पड़ा और इसके एक ही वर्ष बाद वह परलोक सिधारा।

**ग्लैडस्टन का पुनः प्रधान मन्त्री होना**—डिज़्रायले के पतन के बाद लिबरल दल का नेता ग्लैडस्टन पुनः शक्तिमान् होकर प्रधान मन्त्री हो गया। इस बार वह सन् १८८० से १८८५ तक प्रधान मन्त्री रहा। उसके इस दूसरे मन्त्रित्व काल में "पार्लिमेण्ट के सुधार का तीसरा नियम" (Third Reform Act) स्वीकृत हुआ। सन् १८८५ में अपनी शान्तिप्रिय परराष्ट्र नीति के कारण उसे फिर त्यागपत्र देना पड़ा; परन्तु शीघ्र ही वह पुनः शक्तिमान् होकर तीसरी बार प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार उसने "आयरलैण्ड के स्वराज्य" (Irish Home Rule Bill) का प्रस्ताव उपस्थित किया; परन्तु उसके अस्वीकृत हो जाने के कारण उसे फिर त्यागपत्र देना पड़ा। सन् १८९२ में ग्लैडस्टन चौथी बार प्रधान मन्त्री हुआ; परन्तु उसके आयरलैण्ड को स्वराज्य दिलाने के पक्षपाती होने के कारण स्वयं उसी के दल में फूट पड़ गई थी। इस प्रकार सन् १८९४ में उसका चौथा तथा अन्तिम मन्त्रित्व काल भी समाप्त हुआ।

**ग्लैडस्टन की परराष्ट्र नीति**—ग्लैडस्टन युद्ध से बहुत घबराता था। उसका मत था कि जहाँ तक हो सके, युद्ध से बचा जाय और सार्वराष्ट्रीय झगड़ों का आपस में समझौता करके निपटारा कर लिया जाय। "फ्रान्स और जर्मनी के युद्ध" (Franco German War) में वह किसी ओर से भी सम्मिलित न हुआ;

और संयुक्त अमेरिकन राज्य की उत्तरी तथा दक्षिणी रियासतों के गृह्य युद्ध (The Amrican Civil War) में भी उसने किसी पक्ष का साथ न दिया। इँगलैण्ड में एल्बमा (Albama) नामक



ग्लैडस्टन

जहाज दक्षिणी रियासतों की सहायता के लिए बना था, जिसने अमेरिका पहुँच कर उत्तरी रियासतों को बहुत हानि पहुँचाई थी। उस समय ग्लैडस्टन तुरन्त संयुक्त अमेरिकन राज्य से समझौता करने को तैयार हो गया; और एल्बमा के

कारण जिन रियासतों की हानि हुई थी, उन्हें उसके बदले में रुपया चुका दिया।

अपने दूसरे मन्त्रित्व काल में उसने दक्षिण अफ्रिका की बोअर जाति से, जो ब्रिटेन के आधिपत्य के विरुद्ध युद्ध कर रही थी, सन्धि कर ली और उसके ट्रान्सवाल प्रजातंत्र राज्य (Boer Republic of Transval) की स्वतन्त्रता स्वीकृत कर ली। मिस्र देश में अरबी पाशा के विदेशियों के विरुद्ध आन्दोलन को शान्त करने में ग्लैडस्टन अवश्य सफल रहा; और मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) स्थापित हो गया। परन्तु वह सूडान का विद्रोह न दबा सका और उसकी भेजी हुई अँग्रेजी सेना का अफसर जनरल गॉर्डन स्वयं सूडान में मारा गया।

ग्लैडस्टन की शान्तिप्रिय नीति से सब से बड़ा भय यह था कि ब्रिटेन का सार्वराष्ट्रीय क्षेत्र में कुछ भी मान न रह जायगा; और उसके सब मामलों में समझौता करने के लिए तैयार हो जाने से अन्य राष्ट्र शायद यह समझने लगेंगे कि ब्रिटेन को अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है। ग्लैडस्टन की परराष्ट्र नीति से देशवासी सन्तुष्ट न थे, इसी कारण उसे अपने पहले और दूसरे मन्त्रित्व से त्यागपत्र देना पड़ा था।

**ग्लैडस्टन तथा आयरलैण्ड की समस्या**—ग्लैडस्टन को आयरलैण्ड की समस्या ने भी खूब परेशान किया। उसने पहले मन्त्रित्व काल में आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता को सन्तुष्ट करने के लिए वहाँ के प्रोटेस्टेण्ट चर्च को सरकारी सहायता देना बन्द कर दिया था (Dis-establishment of the Irish Ch-

arch) और किसानों की भी कुछ शिकायतें दूर करने का प्रयत्न किया था। परन्तु आयरलैण्ड की जनता को सन्तुष्ट करना बहुत कठिन काम था। आयरलैण्ड के फीनियन समाज (Fenian Society) ने क्रान्तिकारी उपायों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था; और प्रसिद्ध आयरिश नेता पार्नेल (Parnell) आयरलैण्ड तथा ब्रिटेन के संयोग को तोड़ कर देश में स्वराज्य स्थापित करने के लिए आन्दोलन कर रहा था।

धीरे धीरे ग्लैडस्टन ने भी समझ लिया कि स्वराज्य के बिना आयरलैण्ड में शान्ति स्थापित करना असम्भव है। उसने दो बार आयरलैण्ड के स्वराज्य का प्रस्ताव (Irish Home Rule Bill) उपस्थित किया; परन्तु वह दोनों बार अस्वीकृत हुआ और इसी कारण उसको अपने तीसरे और चौथे मन्त्रित्व से त्यागपत्र देना पड़ा था। ग्लैडस्टन का मत ठीक था। उसके प्रस्ताव के अस्वीकृत होने के कारण आयरलैण्ड का आन्दोलन बढ़ता गया; और जैसा कि आगे चल कर बतलाया जायगा, अन्त में स्वराज्य दे देने ही से आयरलैण्ड की समस्या का निपटारा हुआ।

**ग्लैडस्टन की मृत्यु तथा लिबरल दल का शक्तिहीन होना**—सन् १८९५ में ग्लैडस्टन की मृत्यु हुई। उसके आयरलैण्ड को स्वराज्य देने के प्रस्ताव के कारण स्वयं उसके दल में फूट पड़ गई थी। अब उसकी मृत्यु के पश्चात् लिबरल दल, जिसका वह नेता था, स्पष्ट रूप से दो भागों में विभक्त हो गया। उस का एक भाग आयरलैण्ड को स्वराज्य देने का पक्षपाती होने के कारण "स्वराज्यवादी" (Home Ruler) कहलाने लगा; और दूसरा भाग जो आयरलैण्ड तथा ब्रिटेन का संयोग पूर्ववत् स्थापित रखना चाहता था,

"संयोगवादी दल" (Unionists) के नाम से प्रसिद्ध है। इस फूट के कारण लिबरल दल शक्तिहीन हो गया और सन् १९०६ तक उसकी यही हीन दशा बनी रही।

यूनियनिस्ट दल का शासन—लिबरल दल के टूटने पर देश का शासन कार्य "संयोगवादी दल" (यूनियनिस्ट दल) के हाथ में आया। इस दल का नेता लार्ड सालिसबरी (Lord Salisbury) था और आयरलैण्ड को स्वराज्य देने के समस्त विरोधी इस दल में सम्मिलित थे। महारानी विक्टोरिया के राजत्व काल के शेष भाग में मन्त्री मंडल का संचालन इसी दल के द्वारा होता था।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १८३७—महारानी विक्टोरिया का राज्याभिषेक।
,, १८३०—१८५१—पामर्स्टन, परराष्ट्र विभाग का मन्त्री।
,, १८४१—१८४६—राबर्ट पील का मन्त्रित्व।
,, १८४६—कार्न लॉ का अंत।
,, १८५४—१८५६—क्रीमिया का युद्ध।
,, १८५५—१८६५—पामर्स्टन का मन्त्रित्व।
,, १८५७—भारतवर्ष का विद्रोह।
,, १८५८—भारतवर्ष का शासन ब्रिटिश सम्राट् के हाथ में आना।
,, १८६८—१८७४—ग्लैडस्टन का पहला मन्त्रित्व।
,, १८७४-१८८०—डिसूरायले का मंत्रित्व।

सन् १८७७—विक्टोरिया का "भारतवर्ष की महारानी" की उपाधि धारण करना ।

,, १८७७-१८७८—बालकन युद्ध (टर्की और रूस का युद्ध ।)

,, १८८०-१८८५—ग्लैडस्टन का दूसरा मन्त्रित्व ।

,, १८८२—मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य ।

,, १८८६—ग्लैडस्टन का तीसरा मंत्रित्व ।

,, १८८६-१८९२—लार्ड सालिस्बरी तथा यूनियनिस्ट दल का शासन ।

,, १८९२-१८९४—ग्लैडस्टन का चौथा तथा अन्तिम मन्त्रित्व ।

,, १८९५-१९०१—लॉर्ड सालिस्बरी का पुनः प्रधान मंत्री होना ।

,, १९०१—महारानी विक्टोरिया की मृत्यु ।

,, १९२२—मिस्र की पूर्ण स्वतंत्रता ।

---

# नवाँ परिच्छेद



## ब्रिटिश साम्राज्य के स्वतन्त्र प्रदेश

**उन्नीसवीं शताब्दी में उपनिवेशों की उन्नति**—उन्नीसवीं शताब्दी वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना का काल माना जाता है। जार्ज तृतीय के राजत्व-काल में अमेरिका के उपनिवेश के स्वतन्त्र हो जाने से इँगलैण्ड को बहुत धक्का पहुँचा था; परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से नये उपनिवेश स्थापित हो जाने के कारण वह हानि पूरी हो गई। सन् १८१५ में नेपोलियन की पराजय के पश्चात् अँग्रेजों को दक्षिण अफ्रिका में केप कालोनी (Cape Colony), भारतवर्ष के दक्षिण का लंका द्वीप (Ceylon), तथा मॉरीशस (Mauritius), गाइना (Guiana) आदि प्राप्त हुए। इसके बाद कैनाडा (Canada), आस्ट्रेलिया (Australia), तथा दक्षिण अफ्रिका (South Africa) में उपनिवेशों के बनने तथा उनके पारस्परिक संघटन के द्वारा वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य के "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Self-Governing Dominions) की स्थापना हुई। उन्नीसवीं शताब्दी की इस औपनिवेशिक उन्नति के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य आजकल भूमण्डल के लगभग चौथाई भाग में फैला हुआ है।

## (१) कैनाडा तथा न्यूफाउण्डलैण्ड

**कैनाडा का दो भागों में विभक्त होना (१७९१)**—कैनाडा में पहले फ्रान्सीसियों के उपनिवेश थे; परन्तु जैसा कि हम बतला चुके हैं, सन् १७६३ में सप्तवार्षिक युद्ध के पश्चात् ये सब उपनिवेश अँग्रेजों के अधीन हो गये। "अमेरिकन संयुक्त राज्य" (United States of America) की स्थापना के बाद बहुत से अंग्रेज दक्षिण से जाकर कैनाडा में बसने लगे; और इस प्रकार धीरे धीरे वहाँ अँग्रेजों तथा फ्रान्सीसियों की जनसंख्या लगभग आधी आधी हो गई। कैनाडा के अँग्रेज अधिकतर प्रोटेस्टेण्ट थे; परन्तु वहाँ के फ्रान्सीसी कट्टर कैथोलिक थे; और इस धार्मिक मतभेद के कारण दोनों में पारस्परिक सहानुभूति न हो सकी। दोनों में प्रायः झगड़ा रहने लगा। ऐसी अवस्था में सन् १७९१ में पिट ने कैनाडा को दो प्रान्तों में विभक्त कर दिया। एक पश्चिमी कैनाडा (Upper Canada) जिसमें अधिकांश प्रोटेस्टेण्ट अँग्रेज बसे हुए थे; और दूसरा पूर्वीय कैनाडा (Lower Canada) जिसके अधिकांश निवासी कैथोलिक फ्रान्सीसी थे। दोनों प्रान्तों के लिए ब्रिटिश सम्राट् की ओर से अलग अलग गवर्नर नियुक्त होकर आते थे और दोनों में चुने हुए सदस्यों की छोटी छोटी कौंसिलें भी होती थीं।

**कैनाडा को स्वराज्य (१८४०)**—इस के कुछ वर्ष बाद कैनाडा के दोनों प्रान्तों के निवासियों में यह लहर फैली कि हम को अपना शासन स्वयं करने का अधिकार मिल जाना चाहिए। सन्

१८३७ में रानी विक्टोरिया के राज्याभिषेक के थोड़े ही दिनों बाद कैनाडावालों का आन्दोलन इतना बढ़ गया कि इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री रॉबर्ट पील ने कहा—"शीघ्र ही ब्रिटेन के समस्त उपनिवेशों में आयरलैण्ड की भाँति भयंकर अशान्ति रहने लगेगी"। इस समय लॉर्ड डरहम ( Lord Durham ) को कैनाडा की स्थिति सँभालने के लिए भेजा गया। उसकी रिपोर्ट के अनुसार सन् १८४० में कैनाडा के दोनों प्रान्त मिला दिये गये और शासन कार्य का संचालन ऐसे मन्त्रियों द्वारा होने लगा, जो अपनी नीति के लिए देश की चुनी हुई कौन्सिल के सम्मुख उत्तरदायी होते थे। इस प्रकार कैनाडा में ब्रिटेन की भाँति "सचिवतन्त्र शासन" ( Cabinet Government ) की स्थापना हो गई।

वर्तमान "कैनाडा का संयुक्त तथा स्वतंत्र राज्य" (१८६७)- धीरे धीरे कैनाडा के निवासियों में पारस्परिक सहानुभूति बढ़ती गई और कैथोलिक फ्रान्सीसी तथा प्रोटेस्टेण्ट अँग्रेज मिलकर शान्तिपूर्वक रहना सीख गये। सन् १८६७ में उत्तरी अमेरिका के अन्य ब्रिटिश उपनिवेश भी कैनाडा में मिला दिये गये और इस प्रकार वर्त्तमान "कैनाडा के संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" ( Self Governing Federal Dominion of Canada ) का प्रारम्भ हुआ। अलग अलग उपनिवेशों का स्वराज्य कायम रहा; और आजकल वे अपना गृह्य प्रबन्ध पृथक् रूप से स्वतन्त्रतापूर्वक करते हैं। इसके अतिरिक्त समस्त कैनाडा के संयुक्त रूप से शासन के लिए उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की दो कौन्सिलें हैं, जिनके सम्मुख कैनाडा के मन्त्री अपनी नीति के लिए

उत्तरदायी हैं। कैनाडा का गवर्नर जनरल तथा अलग अलग उप-निवेशों के गवर्नर ब्रिटिश सम्राट् की ओर से नियुक्त किये जाते हैं।

कैनाडा के पास ही न्यूफाउण्डलैण्ड द्वीप ( Newfoundland ) है। इसे भी स्वराज्य मिला हुआ है; परन्तु यह कैनाडा के संयुक्त राज्य में सम्मिलित नहीं है।

## ( २ ) ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड

**आस्ट्रेलिया के उपनिवेश की स्थापना**—ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड का कप्तान कुक ( Captain Cook ) ने लगभग सन् १७७० में पता लगाया था। आस्ट्रेलिया पहले बिलकुल उजाड़ देश समझा जाता था और बहुत दिनों तक वहाँ ब्रिटेन के केवल आजन्म क़ैदियों ही की बस्ती ( British Convict Settlement ) रही। परन्तु सोने की खानों का पता लगने तथा ऊन के व्यापार के फैलने से इस देश का महत्व बढ़ने लगा और सन् १८२१ में यहाँ कैदियों के अतिरिक्त अन्य अँग्रेजों को भी बसने की आज्ञा दे दी गई। इसके बाद सन् १८४० में कैदियों का यहाँ भेजना बिलकुल बन्द कर दिया गया; और अब आस्ट्रेलिया में सुन्दर उपनिवेश दिखाई देने लगे। इनमें से दो मुख्य हैं—न्यू साउथ वेल्ज ( New South Wales ) जिसकी राजधानी आजकल सिडनी (Sydney) है; और विक्टोरिया ( Victoria ) जिसका मुख्य नगर मेलबोर्न (Melbourne) है।

**वर्तमान "आस्ट्रेलिया का संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य—"** आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी धीरे धीरे स्वराज्य मिल गया;

और सन् १८५० तक यहाँ कोई ऐसा उपनिवेश न रहा जिसके निवासियों को अपना गृह्य प्रबन्ध स्वतन्त्रतापूर्वक करने का अधिकार न हो। इसके बाद सन् १९०० में ये सब उपनिवेश आपस में मिला दिये गये और इस प्रकार वर्तमान "आस्ट्रेलिया के संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" ( Self Governing Federal Dominion of Australia ) का प्रारम्भ हुआ। कैनाडा की भाँति आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है; और समस्त आस्ट्रेलिया के संयुक्त शासन का संचालन भी कैनाडा के संयुक्त राज्य की ही भाँति होता है। आस्ट्रेलिया से लगभग सौ मील की दूरी पर न्यूज़ीलैंड (New zealand) द्वीप है। इसे भी स्वराज्य मिला हुआ है, परन्तु यह आस्ट्रेलिया के संयुक्त राज्य में सम्मिलित नहीं है।

## ( ३ ) दक्षिण अफ्रिका

**दक्षिण अफ्रिका के उपनिवेशों की स्थापना**—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में अफ्रिका की केप आफ़ गुड होप से होकर पुर्तगालवालों ने युरोप से भारतवर्ष के लिए रास्ता ढूँढ निकाला था। सन् १६५१ में डच लोगों ने यहाँ केप कालोनी ( Cape Colony ) नामक उपनिवेश स्थापित किया; और उसमें बसने वाले डच लोग धीरे धीरे बोअर ( Boer ) कहलाने लगे। सन् १८१५ में वाटरलू के युद्ध के बाद केप कालोनी अँग्रेजों के अधीन हो गई। सन् १८३३ में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों की भाँति यहाँ भी दास व्यापार की मनाही कर दी गई। बोअर लोगों के पास बहुत से दास होते थे; इसलिए दास व्यापार की मनाही

हो जाने पर वे केप कालोनी छोड़ कर नेटाल ( Natal ) में जा बसे। जब नेटाल को भी अँग्रेजों ने अपने अधीन कर लिया, तब बोअर लोगों ने वहाँ भी रहना पसन्द न किया; और आगे बढ़कर उन्होंने ट्रान्सवाल ( Transval ) तथा ऑरेंज फ्री स्टेट ( Orange Free State ) नामक अपने दो अलग स्वतन्त्र उपनिवेश स्थापित कर लिये।

**प्रथम बोअर युद्ध ( १८७७--१८८१ )**—इसी समय बोअर लोगों को ट्रान्सवाल उपनिवेश में सोने की खानों का पता लगा और सोने के लालच से बहुत से विदेशी वहाँ जाकर बसने लगे। बोअरों ने इन विदेशियों ( Uitlanders ) के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया; और उनके वहाँ बसने तथा सोने की खानें खोदने में तरह तरह की बाधाएँ डालना चाहा। अँग्रेजों ने विदेशियों का पक्ष लेकर बोअरों के विरुद्ध युद्ध ठान दिया और सन् १८७७ में ट्रान्सवाल को अपने अधीन कर लिया। परन्तु शीघ्र ही ट्रान्सवाल में विद्रोह उठ खड़ा हुआ और अँग्रेजों की भेजी हुई सेना को बोअरों ने मेजूबा पहाड़ी (Majuba Hill) पर बुरी तरह से परास्त किया। ऐसी अवस्था में सन् १८८१ में अँग्रेज ट्रान्सवाल को स्वतन्त्र कर देने के लिए बाध्य हुए; और उनका बोअरों के इस उपनिवेश को अपने अधीन करने का प्रयत्न विफल रहा।

**द्वितीय बोअर युद्ध ( १८९९--१९०२ )**—धीरे धीरे सोने की खानों के कारण ट्रान्सवाल की ख्याति बढ़ती गई और विदेशी वहाँ अधिक संख्या में आकर बसने लगे। बोअरों का इन विदेशियों के प्रति वही बुरा बरताव जारी रहा; इसलिए अँग्रेजों ने दूसरी बार फिर विदेशियों का पक्ष लेकर बोअरों के विरुद्ध युद्ध

किया। पहले कुछ दिनों तक अँग्रेजों की बराबर हार होती गई; और सन् १८९९ में जेम्सन (Jameson) का ट्रान्सवाल पर आक्रमण बिलकुल विफल रहा। परन्तु लॉर्ड रॉबर्ट्स * (Lord Roberts) के अँग्रेजी सेना के सेनापति हो जाने पर अँग्रेजों की विजय होने लगी। रॉबर्ट्स ने बोअरों के दोनों उपनिवेशों (ट्रान्सवाल तथा ऑरेंज फ्री स्टेट) के मुख्य नगरों ब्लूमफॉनटेन (Bloemfontein) तथा प्रिटोरिया (Pretoria) पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद बोअरों को युद्ध जारी रखने का साहस न रहा। रॉबर्ट्स के विलायत लौट जाने पर लार्ड किचनर (Lord Kitchner) दक्षिण अफ्रिका की अँग्रेजी सेना का सेनापति हुआ; और सन् १९०२ में बोअरों को अँग्रेजों की अधीनता स्वीकृत करनी पड़ी। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप बोअरों के दोनों उपनिवेश, ट्रान्सवाल तथा ऑरेंज फ्री स्टेट, ब्रिटिश राज्य में मिला लिये गये। केप कॉलोनी तथा नेटाल में पहले ही से अँग्रेजों का राज्य था। अब इन दोनों बोअर उपनिवेशों के भी मिल जाने से समस्त दक्षिण अफ्रिका अँग्रेजों के अधीन हो गया।

**वर्तमान "दक्षिण अफ्रिका का संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (१९०९)**—कैनाडा तथा आस्ट्रेलिया की भाँति दक्षिण अफ्रिका के उपनिवेशों को भी सन् १९०६ में स्वराज्य दे दिया गया। इसके बाद सन् १९०९ में चारो उपनिवेशों को मिला दिया गया;

* यह वही रॉबर्ट्स बेडेन पॉवेल (Roberts Baden Powell) है जिसने वर्तमान "चर शिक्षा" (Scout Movement) की स्थापना की। "चर शिक्षा" का प्रारम्भ द्वितीय बोअर युद्ध ही के काल में हुआ था।

और इस प्रकार वर्तमान "दक्षिण अफ्रिका के संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (Self-Governing Federal Dominion of South Africa) का प्रारम्भ हुआ। चारो उपनिवेशों को पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है; और उन चारों के संयुक्त शासन का संचालन कैनाडा तथा आस्ट्रेलिया के संयुक्त राज्य के ढंग पर होता है।

अपने उपनिवेशों में स्वराज्य होने के कारण बोअर लोग अब बिलकुल सन्तुष्ट हैं। उनके सन्तुष्ट होने का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि लूइस बोथा (Louis Botha) ने, जो द्वितीय बोअर युद्ध में बोअर सेना का सेनापति था, बहुत प्रसन्नतापूर्वक "संयुक्त दक्षिण अफ्रिका" का प्रथम प्रधान मन्त्री होना स्वीकृत किया था।

## (४) "स्वतंत्र प्रदेशों" की शासन प्रणाली

"संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (Self-Governing Federal States)—कैनाडा, न्यूफाउण्डलैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा दक्षिण अफ्रिका ब्रिटिश साम्राज्य के "स्वतन्त्र प्रदेश" कहलाते हैं। इन सब की शासन प्रणाली बहुत कुछ एक ढंग की है। इन सब के अलग अलग उपनिवेशों को पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है और यहाँ के निवासी स्वतन्त्रतापूर्वक अपना गृह्य प्रबन्ध करते हैं। प्रत्येक उपनिवेश में एक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर होता है; परन्तु वह स्वयं शासन कार्य में अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकता। शासन कार्य वास्तव में मन्त्रियों के हाथ में होता है, जो चुने हुए सदस्यों की काउन्सिल के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं। उपनिवेशों के संयुक्त रूप से शासन के लिए समस्त

उपनिवेशों के प्रतिनधियों की पार्लिमेण्ट होती है*। यह पार्लिमेण्ट ऐसे प्रश्नों पर विचार करती है जिनसे सब उपनिवेशों का सम्बन्ध हो। संयुक्त शासन का संचालन भी मंत्रियों द्वारा होता है, जो अपनी नीति के लिये उपनिवेशों की पार्लिमेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं। इस प्रकार "स्वतन्त्र प्रदेशों" तथा उनके अलग उपनिवेशों में ब्रिटेन की भाँति "सचिव-तंत्र शासन" (Cabinet Government) स्थापित है।

**ब्रिटेन का आधिपत्य**—"स्वतन्त्र प्रदेशों" पर ब्रिटेन का आधिपत्य निम्नलिखित बातों से समझना चाहिए—

(१) "स्वतन्त्र प्रदेशों" की शासन प्रणाली ब्रिटिश पार्लिमेण्ट की निर्धारित की हुई है और बिना उसकी स्वीकृति के उस में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

(२) प्रत्येक "स्वतन्त्र प्रदेश" (Dominion) का गवर्नर जनरल तथा उसके अलग अलग उपनिवेशों के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर ब्रिटिश सम्राट् की ओर से नियुक्त कर के भेजे जाते हैं। परन्तु ये उपनिवेश स्वतन्त्र इसलिए समझे जाते हैं कि गवर्नर जनरल तथा लेफ्टिनेण्ट गवर्नर स्वयं शासन कार्य में अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकते। शासन कार्य का संचालन मन्त्रियों द्वारा होता है, जो अपनी नीति के लिए देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं।

(३) "स्वतन्त्र प्रदेश" स्वयं अन्य राष्ट्रों से युद्ध तथा

* ब्रिटिश पार्लिमेण्ट की भाँति इसके भी दो भाग होते हैं।

सन्धि नहीं कर सकते। उनकी परराष्ट्र नीति ब्रिटिश सरकार ही निर्धारित करती है।

( ४ ) ब्रिटेन की प्रिवी काउन्सिल ( Privy Council ) ही समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के लिए अन्तिम अपील की कचहरी है; और "स्वतन्त्र प्रदेशों" की अपीलें भी उसी के सम्मुख पेश होती हैं।

( ५ ) "स्वतन्त्र प्रदेशों" के समस्त नियमों के लिए गवर्नर जनरल द्वारा ब्रिटिश सम्राट् की अनुमति प्राप्त होना आवश्यक है; परन्तु ब्रिटेन की भाँति यहाँ की पार्लिमेण्ट के स्वीकृत किये हुए नियमों को भी सम्राट् प्रायः कभी अस्वीकृत नहीं करता।

( ६ ) "स्वतन्त्र प्रदेश" ब्रिटिश सम्राट् के अधीन समझे जाते हैं। वहाँ के झण्डों में ब्रिटेन के "यूनियन जैक" का सम्मिलित रहना आवश्यक है। वहाँ भी शासन कार्य का संचालन ब्रिटिश सम्राट् ही के नाम से होता है; और वहाँ के लिए भी समस्त उपाधियाँ आदि उसी प्रकार सम्राट् की ओर से दी जाती हैं, जिस प्रकार स्वयं ब्रिटिश द्वीपों में।

इम्पीरियल कान्फरेन्स ( १९२६)—ब्रिटिश साम्राज्य के समस्त भागों का पारस्परिक संघटन ठीक रखने के लिए समस्त "स्वतन्त्र प्रदेशों" तथा भारतवर्ष की सरकार के प्रतिनिधि तथा ब्रिटेन के "मन्त्री मण्डल" के प्रधान कर्मचारी इम्पीरियल कान्फरेन्स ( Imperial Conference ) में सम्मिलित होकर साम्राज्य सम्बन्धी विषयों पर विचार करते हैं। पिछली इम्पीरियल कान्फरेन्स ( १९२६ ) के निर्णय के अनुसार "स्वतन्त्र प्रदेशों" को और भी अधिक स्वतन्त्रता दे दी गई है। अब

"स्वतन्त्र प्रदेश" स्वयं अन्य राष्ट्रों से भी व्यवहार कर सकते हैं और ब्रिटेन का उन पर बस नाम मात्र ही आधिपत्य रह गया है। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य का रूप धीरे धीरे स्वतन्त्र राष्ट्रों के समूह (British Commonwealth of Nations) का सा होता जा रहा है। उनके पारस्परिक संघटन का चिह्न यही है कि सब का सम्राट् एक ही होता है।

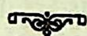
---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १७९१—कैनाडा का दो भागों में विभक्त होना।
" १८१५—केप कालोनी का अँग्रेजों के अधीन होना।
" १८४०—कैनाडा को स्वराज्य।
" १८४०—आस्ट्रेलिया में कैदियों के भेजे जाने की मनाही।
" १८६७—कैनाडा के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतंत्र राज्य" की स्थापना।
" १८७७—१८८१—प्रथम बोअर युद्ध।
" १८९९—१९०२—द्वितीय बोअर युद्ध।
" १९००—आस्ट्रेलिया के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" की स्थापना।
" १९०९—दक्षिण अफ्रिका के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" की स्थापना।
" १९२६—"स्वतन्त्र प्रदेशों" को अधिक स्वतन्त्रता।

---

## दसवाँ परिच्छेद



### आयरलैण्ड में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन

"संयोग" के पश्चात् आयरलैण्ड की दशा—हम बतला चुके हैं कि आयरलैण्ड निवासियों को सन्तुष्ट करने के हेतु सन् १८०१ में आयरलैण्ड को "संयुक्त राज्य" (United Kingdom) में सम्मिलित कर लिया गया था। परन्तु आयरलैण्ड निवासी इस "संयोग" ( Union ) से सन्तुष्ट न हो सके; क्योंकि उनकी असली कठिनाइयाँ दूर करने का अभी कोई उपाय नहीं किया गया था। आयरलैण्ड के अधिकांश निवासी कैथोलिक हैं; परन्तु देश के नियमानुसार कैथोलिक लोग राजनीतिक अधिकारों से वंचित थे, और उनमें से कोई पार्लिमेण्ट का सदस्य न हो सकता था। इसके अतिरिक्त किसानों की दशा भी बहुत असन्तोषजनक थी और वे बिलकुल भूमिपतियों के आश्रित होते थे। इन सब असुविधाओं के कारण "संयोग" के पश्चात् भी आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता का आन्दोलन बराबर जारी रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी भर आयरलैण्ड की समस्या का ब्रिटेन के राजनीतिक क्षेत्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। लॉर्ड सालिस्बरी ने एक अवसर पर कहा था—"ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ अधिकतर आयर-लैण्ड ही की समस्या में उलझे रहते हैं।" आयरलैण्ड ही के

कैथोलिकों के उद्धार के प्रश्न पर सन् १८२९ में टोरी दल में फूट शुरू हुई; आयरलैण्ड ही के आलू के अकाल के समय सन् १८४६ में कॉर्न लॉ के निषेध के कारण टोरी दल पूर्णतया शक्तिहीन हुआ; और आगे चल कर आयरलैण्ड ही के स्वराज्य के प्रश्न पर सन् १८८६ में ग्लैडस्टन के लिबरल दल की शक्ति का अन्त हुआ।

### (१) ओकोनेल तथा "नरम दल" का आन्दोलन

**ओकोनेल के सिद्धान्त**—"संयोग" से लगभग चालीस वर्ष तक आयरलैण्ड के आन्दोलन का नेता डेनियल ओकोनेल (Daniell O'Connell) था। वह कैथोलिक था और उसने वकालत में बहुत नाम पैदा किया था। वह वक्तृता देने में भी बड़ा निपुण था और विराट् सभाओं में श्रोताओं पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता था। वह "नियमानुमोदित या वैध आन्दोलन "(Constitutional Agitation) का पक्षपाती था और उसने विद्रोह आदि करने का सदा विरोध किया। उसके नेतृत्व में आयरलैण्ड में जो आन्दोलन हुआ, उसे "नरम दल" (Moderates) का आन्दोलन समझना चाहिए।

**कैथोलिकों के उद्धार का आन्दोलन**—बहुत दिनों तक ओकोनेल के आन्दोलन का प्रधान लक्ष्य यही रहा कि कैथोलिकों को राजनीतिक अधिकार मिलने चाहिएँ। इसी आशय से उसने "कैथोलिक समाज" (Catholic Association) स्थापित किया। और जैसा कि हम बतला चुके हैं ( देखो पृष्ठ ६६ ) इस समाज के आन्दोलन ने इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री वेलिंग्टन ( Duke of

Wellington) को अपनी नीति बदलने पर बाध्य किया। सन् १८२९ में ओकोनेल के कैथोलिक होने पर भी पार्लिमेण्ट के सदस्य चुने जाने के समय इतनी उत्तेजना फैली कि कैथोलिकों की सुविधाओं का नियम" (Catholic Emancipation Act) स्वीकृत हुआ और कैथोलिकों को पार्लिमेण्ट के सदस्य तथा राज्य के प्रधान कर्मचारी होने की आज्ञा मिल गई।

**"स्थापित प्रोटेस्टेण्ट चर्च" के विरुद्ध आन्दोलन**—इसके पश्चात् ओकोनेल ने आयरलैण्ड के "स्थापित प्रोटेस्टेण्ट चर्च" के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। यह स्थापित चर्च सरकारी था और इसके संचालन का व्यय आयरलैण्ड निवासियों से "धर्म कर" ( Tithe ) के रूप में वसूल किया जाता था। इस चर्च से देश के गिने चुने प्रोटेस्टेण्टों को ही लाभ होता था; और अधिकांश कैथोलिक जनता इसको घृणा की दृष्टि से देखती थी; परन्तु इसके लिए "धर्म कर" सब को देना पड़ता था। ओकोनेल का यही कहना था कि प्रोटेस्टेण्ट चर्च के संचालन का भार कैथोलिक जनता पर लादना सर्वथा अनुचित है; परन्तु इस आन्दोलन में उसे पूर्ण सफलता न हुई। केवल इतनी रिआयत हो गई कि "धर्म कर" किसानों से न लेकर केवल भूमिपतियों ही से वसूल किया जाने लगा।

**"संयोग" तोड़ने का आन्दोलन**—धीरे धीरे ओकोनेल का यह विचार दृढ़ होने लगा कि "संयुक्त राज्य" में रहने से आयरलैण्ड निवासियों की असुविधाओं का अन्त नहीं हो सकता। अब उसने "संयोग" तोड़ने तथा आयरलैण्ड की स्वतन्त्र पार्लिमेण्ट स्थापित करने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। उस

समय सर रॉबर्ट पील इँगलैण्ड का प्रधान मन्त्री था। उसने कई प्रकार से आयरलैण्ड का आन्दोलन शान्त करना चाहा; परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता न हुई। इसी समय आयरलैण्ड में एक "नवयुवक दल" (Young Ireland Party) शक्तिमान् होने लगा जो ओकोनेल के "नरम" आन्दोलन को यथेष्ट न समझता था। पील ने इस अवसर से लाभ उठा कर ओकोनेल को बन्दीगृह में भेजवा दिया; और इसके सात वर्ष बाद सन् १८४७ में यह प्रसिद्ध आयरिश नेता परलोक सिधारा।

## (२) पार्नेल तथा "गरम दल" का आन्दोलन

**ग्लैडस्टन के प्रथम मन्त्रित्व काल की अधूरी रिआयतें**—ओकोनेल की मृत्यु के बाद आयरलैण्ड के "नवयुवक दल" द्वारा देश के राजनीतिक सुधार का आन्दोलन बराबर जारी रहा। जैसा कि हम बता चुके हैं, प्रधान मन्त्री ग्लैडस्टन ने अपने प्रथम मन्त्रित्व काल में कुछ और सुविधाएँ देकर आयरलैण्ड का आन्दोलन शान्त करना चाहा। सन् १८६९ में उसने "स्थापित प्रोटेस्टेण्ट चर्च" को सरकारी सहायता देना बन्द कर दिया (Dis-establishment of the Irish Church); और इस प्रकार आयरलैण्ड की कैथोलिक जनता के सिर से प्रोटेस्टेण्ट चर्च के संचालन के लिए "धर्म कर" देने का अनुचित भार उतर गयी। इसके अतिरिक्त ग्लैडस्टन ने किसानों की शिकायतें दूर करने का भी प्रयत्न किया। परन्तु केवल इतनी ही सुविधाओं से आयरलैण्ड निवासियों का सन्तुष्ट होना असम्भव था।

**पार्नेल तथा "गरम दल"**—अब आयरलैण्ड में एक "गरम

दल" (Extremists) बनने लगा जिसका नेता पार्नेल (Parnell) था। पार्नेल का मत था कि केवल थोड़ी सी राजनीतिक सुविधाओं के लिए "नरम" आन्दोलन करने से काम नहीं चल सकता। उसके "गरम दल" का यह लक्ष्य था कि आयरलैण्ड में पूर्णतया "स्वराज्य" (Home Rule) स्थापित किया जाय। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसने बड़े ज़ोरों से आन्दोलन आरम्भ किया। वह आयरलैण्ड की ओर से लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेण्ट" का सदस्य था; और वह तथा उसके सहकारी पार्लिमेण्ट को तंग करने के आशय से आयरलैण्ड सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर विचार होने के समय तरह तरह से बाधा डालने का प्रयत्न करते थे।

**आयरिश सेक्रेटरी का वध**—इस समय आयरलैण्ड में क्रान्तिकारियों की भी कमी न थी। क्रान्तिकारियों ने "फीनियन समाज" (Fenian Society) नामक एक संस्था स्थापित कर रखी थी, जिसका उद्देश्य ही यह था कि विद्रोह तथा रक्त प्रवाह करके, जिस तरह हो सके, देश के लिए स्वराज्य प्राप्त किया जाय। सन् १८८२ में इन क्रान्तिकारियों ने लॉर्ड फ्रेडेरिक केवेण्डिश (Lord Frederick Cavendish) को, जो अभी आयरलैण्ड के शासक (Irish Secretary) नियुक्त हुए थे, फीनिक्स बाग (Phoenix Park) में मार डाला और जगह जगह बम आदि बनाने के कारखाने खोल दिये।

**ग्लैडस्टन का "स्वराज्य का प्रस्ताव"**—ऐसी अवस्था में प्रधान मन्त्री ग्लैडस्टन को भी अपनी नीति बदलनी पड़ी। उसने समझ लिया कि बिना स्वराज्य दिये आयरलैण्ड में शान्ति स्थापित

करना असम्भव है। जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, ग्लैडस्टन ने दो बार "आयरलैण्ड के स्वराज्य का प्रस्ताव" (Irish Home Rule Bill) उपस्थित किया; परन्तु दोनों बार वह अस्वीकृत हुआ। ग्लैडस्टन को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और आयरलैण्ड की अशान्ति बराबर जारी रही।

### (३) "सिनफियन दल" का क्रान्तिमय आन्दोलन

**सिनफ़ियन दल तथा पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन**—सन् १८९० में एक मुक़दमे के सम्बन्ध में बदनाम हो जाने के कारण पार्नेल शक्तिहीन हो गया; परन्तु आयरलैण्ड का आन्दोलन बन्द न हुआ। धीरे धीरे इस आन्दोलन ने भयंकर रूप धारण कर लिया। अब आयरलैण्ड निवासी यह धमकी देने लगे कि हम ब्रिटेन की सरकार से समस्त सम्बन्ध त्याग कर अपने देश में स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करेंगे। क्रान्तिकारियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती गई और देश में एक शक्तिशाली "सिनफ़ियन दल" (Sinn Fiens) स्थापित हो गया जिसके क्रान्तिमय आन्दोलन के कारण आयरलैण्ड में ब्रिटिश सम्राट् का राज्य कायम रहना असम्भव सा प्रतीत होने लगा।

**सन् १९१४ का "स्वराज्य का प्रस्ताव"**—आखिर सन् १९१४ में "आयरलैण्ड को स्वराज्य" देने का प्रस्ताव पार्लिमेण्ट में उपस्थित किया गया। इस समय एक बड़ी कठिनाई यह प्रस्तुत हो गई कि उत्तरी आयरलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट निवासियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उनको यह भय था कि आयरलैण्ड में कैथोलिकों की संख्या अधिक है; इसलिए देश में स्वराज्य हो जाने

पर उत्तरी प्रान्त के थोड़े से प्रोटेस्टेण्टों की स्थिति बहुत विकट हो जायगी। इसी समय युरोपीय महायुद्ध छिड़ गया। ऐसी आपत्ति के काल में स्वराज्य के प्रश्न पर वाद विवाद करना अनुचित समझा गया। अत: पार्लिमेण्ट ने यह निश्चित किया कि आयरलैण्ड के स्वराज्य का प्रश्न युद्ध समाप्त होने के काल तक स्थगित रहना चाहिए।

गवर्नमेण्ट आफ आयरलैण्ड एक्ट ( १९२० )—युद्ध समाप्त होने के बाद सन् १९२० में गवर्नमेण्ट आफ आयरलैण्ड एक्ट (Government of Ireland Act) द्वारा आयरलैण्ड की समस्या का निपटारा किया गया। आयरलैण्ड में कैथोलिकों की अधिक संख्या होने के भय से उत्तरी प्रान्त के प्रोटेस्टेण्ट निवासी समस्त देश में एक ही स्वराज्य सरकार स्थापित होना कभी पसन्द न कर सकते थे। इसलिए यह निर्णय किया गया कि उत्तरी तथा दक्षिणी प्रान्तों को अलग अलग स्वराज्य दिया जाय। उत्तरी भाग के लिए ५२ सदस्यों की पार्लिमेण्ट और दक्षिणी भाग के लिए १२८ सदस्यों की पार्लिमेण्ट स्थापित की गई। इन दोनों पार्लिमेण्टों को अपने अपने प्रान्त में कर आदि लगाने का पूर्ण अधिकार मिल गया; परन्तु सार्वराष्ट्रीय प्रश्नों का निर्णय तथा सेना आदि की देख भाल का अधिकार लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेण्ट' ही के हाथ में रहा। आयरलैण्ड का इँगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड के "संयुक्त राज्य" से "संयोग" नहीं तोड़ा गया; और "संयुक्त पार्लिमेण्ट" के लिए आयरलैण्ड के प्रतिनिधियों में ४६ सदस्य और बढ़ा दिये गये।

डी वेलेरा तथा वर्तमान "आयरिश स्वतन्त्र राज्य" की

स्थापना—दक्षिण आयरलैण्ड के "सिनफियन "दलवाले इस अधूरे स्वराज्य से सन्तुष्ट न हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन बराबर जारी रखा। उन्होंने "डेल आयरेन" ( Dail Eireann ) नामक एक अपनी स्वतन्त्र गवर्नमेण्ट बना ली और डी वेलेरा ( De Valera ) उसका प्रधान नियत हुआ। लगभग दो वर्ष तक दक्षिणी आयरलैण्ड में दो राज्य रहे; एक "डेल आयरेन" और दूसरा ब्रिटिश राज्य। सन् १९२२ में दोनों राज्यों में समझौता हो गया और आयरलैण्ड के शासन का निम्नलिखित प्रकार से निपटारा हुआ—

प्रोटेस्टेण्टों के उत्तरी प्रान्त के लिए सन् १९२० का प्रबन्ध जारी रहा; अर्थात् वह भाग "संयुक्त राज्य" में भी सम्मिलित रहा और उसकी पृथक् पार्लिमेण्ट भी कायम रही, जिसकी बैठक आजकल बेलफास्ट ( Belfast ) नगर में होती है। कैथोलिकों का दक्षिणी भाग अब "संयुक्त राज्य" से बिलकुल पृथक् कर दिया गया; और उसमें "आयरिश स्वतन्त्र राज्य" ( Irish Free State ) स्थापित हो गया, जिसका मुख्य नगर डब्लिन ( Dublin ) है और जिसकी पार्लिमेण्ट को वही अधिकार दे दिये गये हैं जो ब्रिटिश साम्राज्य के कैनाडा आदि "स्वतन्त्र प्रदेशों" ( Dominions ) को प्राप्त हैं। आजकल लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेण्ट" में इँगलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के प्रतिनिधियों के साथ केवल उत्तरी आयरलैण्ड के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। दक्षिणी भाग का इस "संयुक्त पार्लिमेण्ट" से अब कोई सम्बन्ध नहीं है; और इस भाग का शासन आज कल अपनी पृथक् स्वतन्त्र पार्लिमेण्ट के द्वारा होता है।

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १८०१—आयरलैंड का "संयोग"।

" १८२९—कैथोलिकों का उद्धार।

" १८६९—आयरलैंड के "स्थापित प्रोटेस्टेण्ट चर्च" की सरकारी सहायता बन्द होना।

" १८८२—"आयरिश सेक्रेटरी" का वध।

" १८८६ और १८९४—ग्लैडस्टन के आयरलैंड को स्वराज्य देने के प्रस्तावों का अस्वीकृत होना।

" १९१४—आयरलैंड को स्वराज्य देने के प्रस्ताव का स्थगित होना।

" १९२०—"गवर्नमेण्ट आफ आयरलैंड एक्ट"। (Government of Ireland Act)

" १९२२—वर्तमान "आयरिश स्वतन्त्र राज्य" (Irish Free State) की स्थापना।

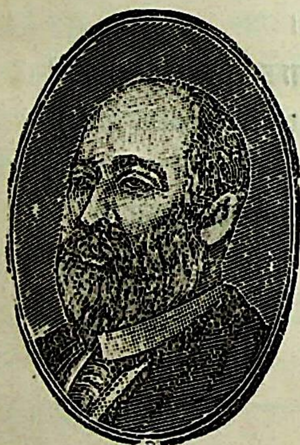
---

# ग्यारहवाँ परिच्छेद



## "शान्तिप्रिय" सम्राट् एडवर्ड सप्तम
## ( १९०१-१९१० )

**"शान्तिप्रिय" सम्राट् एडवर्ड सप्तम ( फ्रान्स तथा रूस से समझौता )**—सन् १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र "एडवर्ड सप्तम" (Edward VII) के नाम से राजा हुआ। इस समय एडवर्ड की अवस्था साठ वर्ष की थी और वह युरोपीय महाद्वीप तथा ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों में खूब यात्रा कर चुका था। उसका तथा उसकी पत्नी रानी एलेक्ज़ेण्डरा (Queen Alexandra) का युरोप के बहुत से राजवंशों से सम्बन्ध था; इस कारण लन्दन में बहुत से युरोपीय राज्यों के शासक प्रायः आते रहते थे।



एडवर्ड सप्तम

एडवर्ड सदा उनका बड़े ठाठ से स्वागत करता था। इस प्रकार उसने बहुत से राजाओं को अपना परम मित्र बना लिया था।

इस समय फ्रान्स तथा रूस से कई राजनीतिक प्रश्नों पर ब्रिटेन का झगड़ा चल रहा था। हम बतला चुके हैं कि मिस्र

देश से फ्रान्स तथा ब्रिटेन दोनों का एक साथ सम्बन्ध आरम्भ हुआ था। परन्तु धीरे धीरे ब्रिटेन ने मिस्र पर अपना आधिपत्य जमा लिया था; इस कारण फ्रान्सवाले ब्रिटेन से बहुत जलने लगे थे और दोनों देशों में युद्ध छिड़ने का भय हो रहा था। ऐसी स्थिति में एडवर्ड स्वयं पेरिस पहुँचा और अपने प्रभाव से सन् १९०३ में दोनों देशों में समझौता ( Entente Cordiale ) करा दिया। इसके अनुसार फ्रान्स ने मिस्र देश पर ब्रिटेन का आधिपत्य ( British Protectorate over Egypt ) स्वीकृत कर लिया; और इसके बदले में ब्रिटेन ने अफ्रिका के उत्तरी-पूर्वी कोने के मोरक्को ( Morocco ) देश में फ्रान्स को स्वतन्त्रता-पूर्वक हस्तक्षेप करने की आज्ञा दे दी।

अँग्रेजों के तुर्कों को सहायता देने के कारण ब्रिटेन को रूस अपना वैरी समझने लगा था। अभी रूस और जापान के युद्ध में अँग्रेजों ने जापान का साथ दिया था; इस कारण रूस और ब्रिटेन का वैर भाव और भी बढ़ गया। इसके अतिरिक्त दोनों देश एशिया में अपना अधिकार बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे थे। रूसी लोग फारस और अफगानिस्तान को बराबर दबाते चले आते थे, जिससे अँग्रेजों को भारतवर्ष की उत्तर-पश्चिमी सीमा की रक्षा के लिए बड़ा भय था। रूसियों और अंग्रेजों में युद्ध छिड़ जाने की सम्भावना थी। पर एडवर्ड सप्तम के उद्योग से सन् १९०७ में रूस से भी समझौता (Anglo-Russian Agreement) हो गया, जिससे दोनों देशों के एशियाई प्रश्नों का भली भाँति निपटारा हो गया। फारस के उत्तरी भाग पर अँग्रेजों का और दक्षिणी भाग पर ब्रिटेन का प्रभाव रहा।

इस प्रकार एडवर्ड ने कई बार युद्ध छिड़ने से बचाया; और इसी लिए वह "शान्तिप्रिय एडवर्ड" (Edward, the Peacemaker) कहलाने लगा।

**बालफोर का मन्त्रित्व**—( १९०२–१९०५ ) रानी विक्टोरिया के राजत्व काल के पिछले भाग में लिबरल दल के टूटने पर "यूनियनिस्ट दल" ( Unionists ) के नेता लार्ड सालिस्बरी ने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अपने पद से त्यागपत्र दे दिया, और इसके बाद बालफ़ोर ( Balfour ) प्रधान मन्त्री हुआ। बालफोर के "मन्त्री मण्डल" में चेम्बरलेन ( Sir Austin Chamberlain) "उपनिवेश मन्त्री" (Colonial Secretary) था जिसने ब्रिटेन की "स्वतन्त्र व्यापार" (Free Trade) नीति का विरोध किया। उसका मत था कि ब्रिटेन में विदेश का माल आकर इतना सस्ता बिकता है कि स्वदेशी माल उसका मुकाबला नहीं कर सकता। स्वदेशी व्यापार की रक्षा करने के आशय से चेम्बरलेन ने "टेरिफ़ रिफार्म" ( Tariff Reform ) का प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसके अनुसार ब्रिटेन में बाहर से आनेवाले माल पर काफी महसूल लगाया गया। परन्तु ब्रिटिश उपनिवेशों के माल पर महसूल की दर बहुत कम रखी गई ( Colonial Preference)। इसका यह आशय था कि ब्रिटिश साम्राज्य के समस्त भागों में परस्पर सहानुभूति बढ़ने लगे। चेम्बरलेन के इस प्रस्ताव का "यूनियनिस्ट दल" के कुछ लोगों ने समर्थन किया; परन्तु बहुत से लोग उसके विरोधी हो गये। इस कारण "यूनियनिस्ट दल" में फूट पड़ गई; और ऐसी अवस्था में उसके नेता बालफ़ोर ने प्रधान मन्त्री के पद से त्यागपत्र दे दिया।

**लिबरल दल का पुनः शक्तिशाली होना ( १९०५ )**— "यूनियनिस्ट दल" के टूटने पर लिबरल दल ( Liberals ) पुनः शक्तिशाली हो गया। सन् १९०५ में लिबरल दल का नेता कैम्पबेल बैनरमेन (Campbell Bannerman) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। उसके सहकारी एस्क्विथ ( Asquith ) तथा लॉयड जॉर्ज ( Llyod George ) जैसे प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। शीघ्र ही लोकसभा में उसके दल के समर्थकों की संख्या लगभग तीन चौथाई हो गई। सन १९०८ में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण बैनरमेन को त्यागपत्र देना पड़ा और उसके स्थान पर एस्क्विथ प्रधान मन्त्री हो गया। एडवर्ड सप्तम के राजत्व काल के शेष भाग में एस्क्विथ ( Asquith ) ही प्रधान मन्त्री रहा और उसने लॉयड जार्ज (Llyod George) को अपने "मन्त्री मण्डल" का कोषाध्यक्ष ( Chancellor of the Exchequer ) नियुक्त किया।

**लार्ड सभा तथा लोक सभा का संघर्ष**—कोषाध्यक्ष की हैसियत से सन् १९०९ में लॉयड जॉर्ज ने पार्लिमेण्ट की लोक सभा में एक नये ढंग का बजेट * ( Budget ) पेश किया, जिसमें बहुत धनी नागरिकों पर "विशेष कर" (Super-Tax) लगाया गया। लार्ड सभा ने इस बजेट का प्रस्ताव अस्वीकृत किया; अतः इस सम्बन्ध में पार्लिमेण्ट की दोनों सभाओं में खूब झगड़ा चला। मन्त्रियों का कहना था कि धन सम्बन्धी प्रस्तावों पर लोक सभा ही को पूर्ण अधिकार है; इसलिए लार्ड सभा को

* देश के साल भर के आय-व्यय का चिट्ठा।

बजेट के विषय में हस्तक्षेप न करना चाहिए। इस झगड़े का निपटारा करने के हेतु पार्लिमेएट विसर्जित कर दी गई और अगले वर्ष नया चुनाव हुआ। नये चुनाव में लोकसभा में लिब- रलों की संख्या फिर अधिक रही और उन्होंने यह आन्दो- लन प्रारम्भ किया कि लोक सभा के स्वीकृत किये हुए प्रस्ताव लार्ड सभा के विरोध करने पर भी "राजनियम" बन जाने चा- हिएँ। अन्त में लार्ड सभा ही को दबना पड़ा; और एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के कुछ ही महीने बाद सन् १९११ में प्रसिद्ध "पार्लि- मेएट एक्ट" (देखो पृष्ठ ९२) स्वीकृत हुआ, जिसने पार्लिमेएट की दोनों सभाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का निपटारा कर दिया। धन सम्बन्धी प्रस्तावों पर लोक सभा को पूर्ण अधिकार मिल गया; और अन्य प्रस्तावों के विषय में यह निश्चित हुआ कि जिन प्रस्ता- वों को लोक सभा तीन बार स्वीकृत कर दे, वे लार्ड सभा की अनुमति न होने पर भी राजा के हस्ताक्षर होने के बाद राज- नियम बन सकते हैं।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १९०१—एडवर्ड सप्तम का राज्याभिषेक ।
,, १९०२–१९०५—बालफ़ोर का मन्त्रित्व ।
,, १९०३—फ्रान्स और ब्रिटेन का समझौता ।
( The Entente Cordiale )
,, १९०५--१९०८—कैम्पबेल बैनरमेन का मन्त्रित्व ।
,, १९०७—फ्रान्स और रूस का समझौता ।
(The Anglo-Russian Agreement)
,, १९०८--१९१०—एस्क्विथ का मन्त्रित्व ।
,, १९०९—लार्ड सभा तथा लोक सभा का संघर्ष ।
,, १९१०—एडवर्ड सप्तम की मृत्यु ।

---

## बारहवाँ परिच्छेद

### वर्तमान् सम्राट् जार्ज पंचम तथा युरोपीय महायुद्ध

**जार्ज पंचम तथा विंडसर वंश**—सन् १९१० में एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र "जार्ज पंचम" के नाम से राजा हुआ। एडवर्ड के बड़े पुत्र एलबर्ट का बहुत दिन पहले ही देहान्त हो चुका था। जार्ज पंचम की अवस्था इस समय ४५ वर्ष की थी और उसका विवाह राजकुमारी मेरी से हो चुका था। सन् १९१७ में जॉर्ज ने अपनी समस्त विदेशी उपाधियाँ त्याग दीं और यह घोषणा की कि अब से हमारा राज-वंश "विंडसर वंश" (House of Windsor) के नाम से पुकारा जायगा।

### (१) युरोपीय महायुद्ध (१९१४—१८)
### (The Great European War)

**"त्रिविध संघ" तथा जर्मनी के विकट मन्सूबे**—जॉर्ज पंचम के राजत्व काल में युरोपीय महायुद्ध हुआ। उस युद्ध का ठीक ठीक स्वरूप समझने के लिए युरोपीय राष्ट्रों की दलबन्दी का परिचय दे देना अत्यन्त आवश्यक है। "फ्रान्स तथा प्रशा के युद्ध" (Franco-Prussian War) में प्रशा की विजय हुई थी; और उसी समय से जर्मनी की इस रियासत का सितारा चमकने

लगा था। सन् १८७१ में प्रशा के राजा ने दक्षिण जर्मनी की समस्त रियासतों पर अपना आधिपत्य जमा कर "जर्मन साम्राज्य" (The German Empire) की स्थापना की थी; और स्वयं "जर्मन सम्राट् कैसर" की उपाधि धारण की थी। उस समय कैसर



जॉर्ज पंचम

का प्रधान मन्त्री प्रिन्स बिस्मार्क (Prince Bismarck) था, जिसने जर्मनी की शक्ति बढ़ाने में कोई कसर न रखी थी। सार्व-

राष्ट्रीय क्षेत्र में जर्मनी का प्रभाव बढ़ाने के आशय से बिस्मार्क ने सन् १८८२ में जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली का "त्रिविध संघ" (Triple Alliance) स्थापित किया। बिस्मार्क को आशा थी कि यह संघ युरोप के अन्य राष्ट्रों का भली भाँति मुकाबला कर सकेगा। इसी समय से जर्मनी के बड़े विकट मन्सूबे बँधने लगे। उसने अपनी सेना बढ़ाई और बहुत बड़ा जहाजी बेड़ा तैयार किया। व्यवसाय, व्यापार, साहित्य, विज्ञान सभी बातों में जर्मनों ने खूब उन्नति की; और बहुत से जर्मन प्रोफेसरों का यह मत होने लगा कि एक दिन समस्त भूमण्डल को जर्मनी की शक्ति के सामने सिर झुकाना पड़ेगा।

**"त्रिविध मित्र संघ" की स्थापना**—"त्रिविध संघ" का समाचार पाकर युरोप के अन्य राष्ट्रों को अपनी रक्षा की चिन्ता हुई। विशेषतः फ्रान्स को जर्मनी से सदा भय लगा रहता था; इस कारण उसके लिए कुछ राष्ट्रों को अपनी ओर मिलाना अत्यन्त आवश्यक हो गया। सन् १८९३ में फ्रान्स ने रूस से मित्रता की; और इस प्रकार "त्रिविध संघ" का मुकाबला करने के लिए रूस तथा फ्रान्स का "द्विविध संघ" (Dual Alliance) स्थापित हुआ।

युरोपीय राष्ट्रों को इस प्रकार दलबन्दी करते देख कर ब्रिटेन ने सोचा कि ऐसी अवस्था में युरोपीय सार्वराष्ट्रीय क्षेत्र से पृथक् रहने में बड़ी हानि है। यही सोच कर सम्राट् एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव का उपयोग कर के ब्रिटेन का रूस तथा फ्रान्स से समझौता कराया था, जिसके विषय हम पिछले परिच्छेद में लिख आये हैं। इस समझौते के

बाद ब्रिटेन, रूस तथा फ्रान्स अपने पुराने वैर भाव का ध्यान छोड़ कर परस्पर मित्र हो गये; और इन तीनों राष्ट्रों का संघ "त्रिविध मित्र संघ" (Triple Entente) के नाम से पुकारा जाने लगा।

युरोप में युद्ध की तैयारी—इस प्रकार युरोपीय महायुद्ध के छिड़ने के कितने ही वर्ष पहले युरोपीय राष्ट्र एक दूसरे के विरुद्ध दलबन्दी कर चुके थे। युरोपीय इतिहास में सन् १८७१ (जब कि जर्मन साम्राज्य की स्थापना हुई ) से सन् १९१४ ( जब कि युरोपीय महायुद्ध आरंभ हुआ) तक का काल "सशस्त्र शान्ति" (Armed Peace) का काल कहलाता है। इस काल में युरोप में कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ; परन्तु सभी प्रधान राष्ट्र यह समझते थे कि शीघ्र ही एक बहुत बड़ा युद्ध छिड़नेवाला है, जिसकी प्रतीक्षा में सब राष्ट्र धीरे धीरे सामान इकठ्ठा करते रहे। विशेषतः जर्मनी ने युद्ध की पूरी तैयारी कर ली थी; अपनी सेना और जहाज़ी बेड़ा खूब बढ़ा लिया था; और पूर्वीय देशों को जीतने के आशय से तुर्कों से मिल कर बग़दाद रेलवे द्वारा भारतवर्ष का सीधा स्थल मार्ग निकालने का प्रयत्न किया था। युरोपीय राष्ट्रों का मनमुटाव बराबर बढ़ता गया; और अन्त में सार्वराष्ट्रीय स्थिति इतनी विकट हो गई कि युद्ध छेड़ने के लिए केवल एक बहाने की आवश्यकता बाक़ी रह गई।

युद्ध का प्रारम्भ—( १९१४ )—२८ जून १९१४ को युद्ध छेड़ने के लिए एक बहाना भी प्रस्तुत हो गया। आस्ट्रिया के युवराज फर्डिनेण्ड (Archduke Ferdinand) को बॉस्निया की राजधानी सेराजेवो (Serajevo ) नगर में किसी ने मार डाला। बॉस्निया प्रान्त पर आस्ट्रिया का अधिकार हुए अभी

थोड़े ही दिन हुए थे; और वहाँ के अधिकांश निवासी स्लव (Slav) जाति के लोग थे। बॉस्नियावाले आस्ट्रिया के आधिपत्य से निकलकर स्वतन्त्र होने का प्रयत्न कर रहे थे। सजातीय होने के कारण सर्विया ( Servia ) का स्लव राष्ट्र भी उनको कभी कभी सहायता देता रहता था। युवराज के वध का समाचार पाते ही आस्ट्रिया की सरकार ने समझा कि सर्विया ने ही बॉस्नियावालों को भड़का कर यह षड्यंत्र रचा है। आस्ट्रिया ने तुरन्त सर्विया को ४८ घण्टे की चुनौती (Ultimatum) भेज दी जिस में ऐसी कड़ी कड़ी और अपमान-जनक शर्तें थीं जिन्हें कोई स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकृत न कर सकता था। इस प्रकार सर्विया और आस्ट्रिया का युद्ध आरंम्भ हुआ। रूसवाले भी स्लव जाति के ही हैं; इसलिये सजातीयता के नाते रूस ने भी सर्विया का साथ दिया। यह देख कर जर्मनी ने आस्ट्रिया का पक्ष लेकर युद्ध क्षेत्र में प्रवेश किया और रूस के मित्र फ्रान्स के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी।

अभी तक ब्रिटेन युद्ध में सम्मिलित न हुआ था। परन्तु शीघ्र ही कई कारणों से उसका भी युद्ध-क्षेत्र से अलग रहना असम्भव हो गया। जर्मनी ने फ्रान्स पर आक्रमण करने के लिए बेल्जियम के मार्ग से अपनी सेनाएँ भेजने का विचार किया। समस्त युरोपीय राष्ट्र कई सन्धियों में यह स्वीकृत कर चुके थे कि बेल्जियम की स्वतन्त्रता पर कोई आघात न किया जायगा। परन्तु जर्मन कैसर विलियम द्वितीय के प्रधान मन्त्री ने स्पष्ट कह दिया कि ऐसी सन्धियों का हमारी दृष्टि में कागज के टुकड़े से अधिक मूल्य नहीं है। हम पहले कह आये हैं कि बेल्जियम

की रक्षा के हेतु इँगलैण्ड को कई बार युद्ध करना पड़ा था; क्योंकि यह राष्ट्र इँगलैण्ड के तट से इतना निकट है कि इस पर किसी प्रबल जाति का अधिकार होने से इँगलैण्ड के लिए एक स्थायी भय का कारण प्रस्तुत हो सकता है। इस बार भी बेल्जियम में जर्मनों की सेना के पहुँचते ही ४ अगस्त १९१४ को ब्रिटेन ने भी रणक्षेत्र में प्रवेश किया।

इस प्रकार सशस्त्र शान्ति काल की दलबन्दी के अनुसार त्रिविध संघ ( Triple Alliance ) के आस्ट्रिया और जर्मनी के विरुद्ध त्रिविध मित्र संघ ( Triple Entente ) के रूस, फ्रान्स तथा ब्रिटेन का युद्ध आरंभ हुआ। इटली ने त्रिविध संघ का साथ नहीं दिया; क्योंकि उससे केवल यह ठहरा था कि यदि कभी पहले आस्ट्रिया या जर्मनी पर आक्रमण होगा, तो वह सहायता करेगा। कुछ काल पीछे इटली ने दूसरे पक्ष अर्थात् "त्रिविध मित्र संघ" का साथ देना शुरू किया। तब से ब्रिटेन तथा उसके सहायक राष्ट्र "मित्र राष्ट्र" ( The Allies ) के नाम से प्रसिद्ध हुए।

**जर्मनों का फ्रान्स पर आक्रमण**—जर्मनों ने शीघ्र ही बेल्जियम पर अपना अधिकार जमा लिया और इसके बाद फ्रान्स पर उत्तर की ओर से आक्रमण किया। उनको आशा थी कि हम फ्रान्स की शक्ति बड़ी सुगमता से नष्ट कर सकेंगे और फिर अपने अन्य बैरियों से भुगत लेंगे। प्रारम्भ में जर्मनों के विकट मन्सूबों के पूरे होने के ढंग दिखाई देने लगे। उन की सेनाएँ फ्रान्स में बराबर बढ़ती चली गईं और फ्रान्स की राजधानी पैरिस कुल ४० मील रह गई। ऐसे संकट के समय फ्रान्स के सेनापति

फॉश (Foch) ने बड़े धैर्य से काम लिया और मार्न (Marne) नदी के किनारे कई दिनों तक घोर युद्ध किया। अन्त में जर्मन सेना को पीछे हटना पड़ा और फ्रान्स तथा अन्य "मित्र राष्ट्रों" को अपनी स्थिति सँभालने का अवसर मिल गया।

खाइयों का युद्ध—अब दोनों ओर से खाइयों का युद्ध (Trench Warfare) शुरू हुआ। "उत्तरी सागर" (North Sea) से स्विटजरलैण्ड की सीमा तक सहस्रों खाइयाँ खोदी गईं। दोनों ओर की सेनाएँ उन्हीं खाइयों में छिपी रहती थीं और अवसर मिलने पर एक दूसरी पर छापा मारती थीं। इस प्रकार का युद्ध लगभग तीन वर्ष तक चलता रहा। कभी एक पक्ष और कभी दूसरे पक्ष का दाँव लग जाता था; और यह नहीं कहा जा सकता था कि अन्त में किस ओर की विजय होगी।

युद्ध का पूर्वीय क्षेत्र (१६१५-१६)—मिस्र तथा भारतवर्ष की ओर बढ़ने के लिए मार्ग प्राप्त करने के उद्देश्य से जर्मनी ने टर्की को अपनी ओर मिला लिया था। तुर्कों का डार्डनील्स (Dardenelles) के जलडमरूमध्य पर अधिकार है; इस कारण रूस की जल सेना के लिए अन्य "मित्र राष्ट्रों" से मिलने के मार्ग बन्द हो गए। ऐसी अवस्था में फ्रान्स और ब्रिटेन के जहाज़ी बेड़ों ने डार्डनील्स पर आक्रमण किया, परन्तु उनको सफलता न हुई। इसके बाद मित्र राष्ट्रों के बेड़े ने गेलीपोली (Gallipolfi) के प्रायद्वीप में शरण लेना चाहा; परन्तु यह प्रयत्न भी विफल रहा और बहुत से सैनिक तथा मल्लाह काम आये।

मित्र राष्ट्रों को हारते देख कर यूनान के राजा कान्सटेन्टाइन (Constantine) ने, जो कैसर का बहनोई था, जर्मनी

-का साथ देना चाहा। परन्तु यूनान-निवासी अभी यह बात न भूले थे कि ब्रिटेन ही की सहायता के भरोसे हमें टर्की के आधिपत्य से स्वतन्त्रता मिली है। इस कारण देशवासियों ने एक बड़ी प्रबल राज्यक्रान्ति आरम्भ कर दी। परिणाम यह हुआ कि राजा कान्सटेण्टाइन को सिंहासन छोड़ कर भागना पड़ा और समस्त अधिकार प्रधान मन्त्री वेनेजेलस ( Venezuelus ) के हाथ में आ गया। इस से कुछ ही दिन पहले मित्र राष्ट्रों के जहाजी बेड़े ने यूनानियों के बन्दरगाह सेलोनिका ( Salonica ) पर अपना अधिकार जमा लिया था। बालकन प्रायद्वीप के राज्यों में से बल्गेरिया पहले ही जर्मनी का पक्ष ले कर युद्ध में सम्मिलित हो चुका था। अब यूनान और रोमानिया ने मित्र राष्ट्रों का पक्ष ले कर युद्धक्षेत्र में प्रवेश किया। इसी समय इटली ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार अब मित्र राष्ट्र संघ के सदस्यों की संख्या यथेष्ट हो गई।

जल-युद्ध—जर्मनों ने मित्र राष्ट्रों का समुद्री व्यापार नष्ट करने का प्रयत्न किया; परन्तु सदा की भाँति ब्रिटेन की प्रबल जल शक्ति ने वैरियों के मन्सूबे पूरे न होने दिये। युरोपीय महायुद्ध में सब से प्रसिद्ध जल युद्ध "जटलैण्ड की लड़ाई" (Battle of Jutland, 1916 ) मानी जाती है। इस युद्ध में दोनों ओर की हानि बराबर रही; परन्तु अँग्रेजों को बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि इसके बाद फिर कभी जर्मनी के जहाजी बेड़े ने "उत्तरी सागर" में आने का साहस न किया। जर्मनों को अब अपने समुद्र-तट की रक्षा की चिन्ता रहने लगी; इस कारण वे अपने जहाजी बेड़े अपने उपनिवेशों की रक्षा के लिए न भेज सके। धीरे धीरे

अफ्रिका तथा एशिया के समस्त जर्मन उपनिवेश अँग्रेजों के हाथ में आ गये और युरोप के बाहर इंच भर भूमि भी जर्मनों के अधिकार में न रह गई।

**रूस की राज्यक्रान्ति (१९१७)**—दूसरी ओर जर्मनों ने रूस पर चढ़ाई कर रखी थी। रूस में बहुत दिनों से राज्य-क्रान्ति के अंकुर प्रस्तुत थे। जनता ज़ार के निरंकुश शासन से असन्तुष्ट थी और साम्यवादियों के प्रचार ने देश के किसानों तथा मज़दूरों में बड़ी उत्तेजना फैला दी थी। जर्मनों के आक्रमण के समय क्रान्तिकारियों को अच्छा अवसर मिल गया और मार्च १९१७ में उन्होंने ज़ार निकोलस द्वितीय ( Zar Nicholas II ) को राजसिंहासन छोड़ने पर बाध्य किया। ज़ार के वंशज चुन चुनकर मार डाले गये और पूर्ण अधिकार बोलशेविक (Bolshevisks) क्रान्तिकारियों के हाथ में आ गया। रूस में प्रजातन्त्र राज्य ( The Soviet Republic ) स्थापित कर दिया गया और शीघ्र ही जर्मनी से ब्रेस्ट लिटोव्स्क ( Brest Litovsk ) में सन्धि करके रूसी रणक्षेत्र से अलग हो बैठे।

**जर्मनी के अत्याचार तथा अमेरिका का रणक्षेत्र में प्रवेश (१९१७)**—रूसियों की ओर से निश्चिन्त होकर जर्मनों ने अब अन्य मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना आरम्भ किया। अँग्रेजों के जितने जहाज़ ब्रिटिश उपनिवेशों से सामान तथा सैनिक ले कर आते थे, उन सब को जर्मनों की पन-डुब्बी नावें ( Submarines ) रास्ते ही में नष्ट कर देने का प्रयत्न करती थीं। जर्मनों ने सैंकड़ों अँग्रेज़ी जहाज़ों को समुद्र में डुबा दिया; यहाँ तक कि घायल सैनिकों तथा साधारण

यात्रियों तक के जहाज़ों को भी न छोड़ा। वैरियों के देश के जितने यात्री जर्मनी में पाये गये, वे सब क़ैद कर लिये गये और कारागार में उनके साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया गया। बड़े बड़े हवाई जहाज़ों द्वारा जर्मनों ने वैरियों के नगरों पर बम के गोले बरसाने शुरू किये। अपनी मत्तता के कारण उन्हें यह भी ध्यान न रहा कि ऐसा करने से बहुत से पवित्र गिरजाघरों का ध्वंस हो रहा है।

जर्मनों के इन अत्याचारों के कारण संसार भर में सनसनी फैल गई। युद्ध काल में भी सभ्य जातियाँ कुछ नियमों का पालन करती हैं, जो सार्वराष्ट्रीय विधान ( International Law ) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अनुसार साधारण यात्रियों को पकड़ना, युद्ध के क़ैदियों को सताना, व्यापारिक जहाज़ों को डुबाना, गिरजों को तोड़ना इत्यादि वर्जित है। परन्तु जर्मनों ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि युद्ध काल में हमें उचित तथा अनुचित का लेश मात्र भी ध्यान नहीं है। "संयुक्त अमेरिकन राज्य" के अधिष्ठाता महाशय विल्सन ( President Wilson ) ने जर्मनो को अपने अत्याचारी ढंगों को छोड़ने के लिए बहुत कुछ समझाया; परन्तु उन्होंने एक न सुनी। यह देख कर अमेरिका ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी; और इस प्रकार मित्र राष्ट्रों को रूस के स्थान पर अब एक दूसरा शक्तिशाली सहायक मिल गया।

**ब्रिटेन में एस्क्विथ का "राष्ट्रीय मन्त्री-मण्डल"**—ब्रिटेन के मन्त्री मण्डल ने युद्ध काल में बड़े धैर्य से काम लिया। प्रधान मन्त्री एस्क्विथ ( Asquith ) ने लार्ड किचनर को, जो

अपनी युद्ध-कुशलता का कई बार परिचय दे चुका था, "युद्ध सचिव" ( War Minister ) बनाया। राजनीतिक दलबन्दी का ध्यान छोड़ कर सन् १९१५ में कन्सरवेटिव दल के नेता बालफ़ोर ( Balfour ) और बोनर लॉ (Bonar Law) लिबरल नेता एस्क्विथ के मन्त्री मण्डल में सम्मिलित हो गये और इस "राष्ट्रीय मन्त्री मण्डल" (National Ministry)" ने युद्ध का संचालन किया। १८ वर्ष से ४१ वर्ष तक के सब पुरुषों को सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य किया गया; और स्त्रियों ने सहर्ष बड़े बड़े दफ्तरों में पुरुषों के स्थान पर काम करना शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश उपनिवेशों तथा भारत से लाखों सैनिक रणक्षेत्र के लिए भेजे गये। इस प्रकार समस्त ब्रिटिश साम्राज्य की पूर्ण शक्ति युद्ध में लग गई।

**लॉयड जार्ज का मन्त्रित्व तथा ब्रिटेन का पूर्ण प्रयत्न**— थोड़े ही दिनों में वैरियों ने लार्ड किचनर का जहाज़ समुद्र में डुबा दिया। इस दुर्घटना के बाद "युद्ध सचिव" के पद पर लॉयड जॉर्ज (Llyod George) नियुक्त हुआ, जिसकी योग्यता के कारण यह शीघ्र ही विदित हो गया कि युद्ध काल में ब्रिटिश जाति का उससे अच्छा कोई दूसरा नेता नहीं हो सकता। सन् १९१६ में एस्क्विथ के अपने पद से त्यागपत्र दे देने पर लायड जार्ज प्रधान मन्त्री हो गया। उसके मन्त्री मण्डल में भी लिबरल तथा कन्सरवेटिव दोनों दलों ने अपना विरोध भुला कर सहर्ष मिल कर कार्य करना स्वीकृत कर लिया। युद्ध के वास्ते सामग्री एकत्र करने के लिए नये नये विभाग स्थापित किये गये; और बहुत बड़ी संख्या में सैनिक भरती होने लगे। बड़े बड़े

हवाई जहाज तथा पनडुब्बी नावें अँग्रेजों ने भी बना डालीं। इस प्रकार ब्रिटेन ने वैरियों का मुकाबला करने के लिए जी तोड़ कर प्रयत्न आरम्भ कर दिया।

**प्रधान सेनापति मार्शल फ़ॉश**—लॉयड जॉर्ज ने मित्र राष्ट्रों को यह सुझाया कि प्रत्येक राष्ट्र के अलग अलग सेनापति होने के कारण सब राष्ट्रों की सेनाओं का संयुक्त रूप से कार्य करना असम्भव है। उसने यह सम्मति दी कि समस्त मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का एक प्रधान सेनापति होना चाहिए, जो भिन्न भिन्न रणक्षेत्रों में युद्ध के संचालन का प्रबन्ध करे और जिसकी आज्ञा समस्त मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ माना करें। इस सम्मति को सब ने पसन्द किया और फ्रान्स का मार्शल फ़ॉश (Marshal Foch) मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का प्रधान सेनापति (Generalissimo) बनाया गया। अँग्रेजी सेना के सेनापति जनरल हेग (General Haig) तथा अन्य राष्ट्रों के सेनापतियों ने सहर्ष नये प्रधान सेनापति के आज्ञानुसार कार्य करना स्वीकृत कर लिया। इस प्रकार समस्त रणक्षेत्रों में एक ही नीति के अनुसार युद्ध का संचालन होने लगा और मित्र राष्ट्रों की संयुक्त सेनाओं की शीघ्र ही विजय होने लग गई।

**मेसोपोटामिया में मित्र राष्ट्रों की विजय**—तुर्कों के विरुद्ध युद्ध का क्षेत्र अधिकतर मेसोपोटामिया (Mesopotamia) में था। सन् १९१६ में तुर्कों ने अँग्रेजी सेना को कुत-उल्-अमरा (Kut-el-Amara) के स्थान पर बुरी तरह परास्त किया था और बहुत से अँग्रेजी अफसर तथा सैनिक कैद हो गये थे। इस पराजय का बदला अगले वर्ष जनरल मॉड (General

Maude ) ने लिया; और अँग्रेजी सेना ने मेसोपोटामिया के मुख्य नगर बगदाद ( Baghdad ) पर अपना अधिकार जमा लिया। सन् १९१८ में अँग्रेज़ी सेना को और भी आगे बढ़ने के अवसर मिल गया और इराक भी तुर्कों के हाथ से निकल गया। इसी समय जनरल एलेन्बी ( General Allenby ) ने मिस्र की ओर से पैलेस्टाइन ( Palestine ) में प्रवेश किया और जेरूसलम, डमास्कस ( दमिश्क ) आदि पर अपना अधिकार जमा लिया। शीघ्र ही सीरिया ( Syria ) भी अँग्रेजों के हाथ आ गया और एशिया माइनर में तुर्कों की शक्ति का अन्त हो गया।

युद्ध का अन्त ( १९१८ )—इस पराजय के बाद तुर्कों को युद्ध बन्द करना पड़ा। इससे एक मास पहले बल्गेरिया की शक्ति का अन्त हो चुका था और वह मित्र राष्ट्रों का आश्रय ले चुका था। इसी समय इटली के आस्ट्रिया पर चढ़ाई कर देने के कारण आस्ट्रिया को भी भयभीत होकर रणक्षेत्र से हटना पड़ा।

अब जर्मनी अकेला रह गया। इससे कुछ महीने पहले जर्मन सेना अपनी रक्षा के लिए अपने प्रसिद्ध सेनापति हिंडनबर्ग की बनाई हुई खाइयों की श्रेणी (Hindenburg Line) से पीछे हट चुकी थी। अब अँग्रेजी सेना ने धावा करके वह श्रेणी तोड़ दी। ऐसी अवस्था में जर्मनों को भी निराश होकर युद्ध बन्द करना पड़ा। सन् १९१८ के ग्यारहवें महीने में ग्यारहवें दिन के ग्यारहवें घण्टे पर समस्त रणक्षेत्रों में युद्ध बन्द होने की * घोषणा

* इस घटना की स्मृति में प्रति वर्ष ११ नवम्बर को ११ बजे के

( Armistice ) कर दी गई और इस प्रकार युरोपीय महायुद्ध का अन्त हुआ।

**जर्मन कैसर का पद-त्याग**—जर्मनों को आशा थी कि हम शीघ्र ही भूमण्डल के अधिकांश भाग को अपने अधीन कर लेंगे। अब अपनी आशाओं पर इस बुरी तरह से पानी फिरता हुए देख कर जर्मनी के समस्त निवासी अपने सम्राट् कैसर विलियम के विरुद्ध हो गये। बेचारे कैसर को, जिसे कुछ ही काल पहले जर्मन जाति अवतार की तरह पूजती थी और जो विश्वविजयी होकर एक बहुत बड़े साम्राज्य के स्वामी होने के सुख-स्वप्न देख रहा था, अपने देश से भागना पड़ा। उसने अपने परिवार सहित हालैण्ड में शरण ली। आज कल वह हालैण्ड ही में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है और जर्मनी की रियासतों में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया है।

**वार्शेल्स की सन्धि ( १९१९ )**—युद्ध के पश्चात् सन्धि की शर्तें निश्चित करने के लिए मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की पेरिस नगर में कान्फ्रेन्स हुई। उसमें ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री लायड जॉर्ज ( Llyod George ), अमेरिका के संयुक्त राज्य के अधिष्ठाता विल्सन ( President Wilson ) और फ्रान्स के प्रधान मन्त्री क्लेमेन्शो ( Clemenceau ) मुख्य थे। पूरे छः महीने के वाद विवाद के उपरान्त वार्शेल्स की सन्धि ( Peace

---

समय समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में दो मिनट के लिए सब कार्य स्थगित करके लोग ईश्वर को धन्यवाद देते हैं, जिसकी कृपा से युरोप का यह भीषण काण्ड समाप्त हुआ।

of Varsielles ) हुई, जिसके अनुसार निम्नलिखित निपटारा किया गया—

( १ ) जर्मनी को एल्सेस लोरेन ( Alsace Lorraine ), जिस पर उसने सन् १८७० में अधिकार जमा लिया था, फ्रान्स को लौटा देना पड़ा। जर्मन राष्ट्र के उन प्रान्तों के विषय में, जिन में अ-जर्मन जातियाँ बसी हुई थीं, यह निश्चित हुआ कि उन्हें जन-सम्मति लेकर स्वतन्त्र कर दिया जाय। जर्मनी की सेना तथा जहाज़ी बेड़ा बहुत कम कर दिया गया और मित्र राष्ट्रों को हानि पहुँचाने के बदले जर्मनी को बहुत सा धन हरजाने के रूप में देना पड़ा। (२) आस्ट्रिया-हंगरी का साम्राज्य तोड़ कर कई भागों में विभक्त कर दिया गया। बोहीमिया और उसके आस पास के प्रान्तों को मिलाकर जेको स्लोवेकिया ( Czeco-Slovakia ) नामक एक नया राष्ट्र स्थापित किया गया। इसी तरह आस्ट्रिया के स्लव प्रान्तों को सर्बिया के साथ मिलाकर युगो-स्लविया ( Yugo-Slavia ) नामक नया राष्ट्र बनाया गया। आस्ट्रिया और हंगरी अब छोटे छोटे दो प्रजातन्त्र राज्य हो गये; और इस प्रकार मध्य युरोप का राजनीतिक चित्र बिलकुल ही नये ढंग का हो गया। ( ३ ) टर्की की शक्ति बहुत कम हो गई और तुर्कों के पास युरोप में कान्सटेन्टीनोपल नगर के अतिरिक्त कुछ भी न रहा। टर्की का बहुत सा भाग यूनानियों को दे दिया गया था; परन्तु कुछ समय पीछे तुर्कों ने मुस्तफा कमाल पाशा (Mustafa Kamal Pasha ) के नेतृत्व में यूनानियों से लड़कर अपने देश का बहुत सा भाग फिर प्राप्त कर लिया। ( ४ ) रूस में बोल्शेविकों ने प्रजातन्त राज्य स्थापित कर लिया था। रूस का

# THE WORLD
## showing British Empire

*British Possessions shaded, thus ... or the Names underlined, thus ... Malta*

ARCTIC OCEAN
Greenland
ARCTIC OCEAN
Queen Charlotte Is.
Vancouver I.
Vancouver
Dominion of Canada
Quebec
Newfoundland
Nova Scotia
New York
NORTH AMERICA
San Francisco
PACIFIC OCEAN
Bermudas
Bahamas
Turks Is.
Jamaica
West Indies
British Honduras
Panama
British Guiana
SOUTH AMERICA
Equator
Johnston I.
Tonga Is.
Kermadec Is.
Chatham Is.
Ducie I.
Pitcairn I.
Falkland Is.
South Georgia
Cape Horn
South Shetland Is.
South Orkney Is.
Graham Land
ATLANTIC OCEAN
BRITISH ISLANDS
Orkney Is.
Shetland Is.
London
Channel Is.
Gibraltar
Malta
Cyprus
EUROPE
RUSSIAN EMPIRE
ASIA
Siberia
Volga
AFRICA
Gambia
Sierra Leone
Gold Coast
Nigeria
Ascension
St. Helena
Protectorate of S.W. Africa
Tristan da Cunha
Cape Town
British South Africa
Durban
Anglo-Egyptian Sudan
Br. Somaliland
Aden
Zanzibar
Seychelles
Amirante Is.
Mauritius
Rodriguez
Chagos Is.
Kuria Muria Is.
Ceylon
INDIAN OCEAN
India
Calcutta
Straits Settlements
Keeling or Cocos Is.
CHINA
Wei-hai-wei
Hongkong
JAPAN
British North Borneo
British New Guinea
PACIFIC OCEAN
Gilbert Is.
Fiji Is.
Norfolk I.
Australia
Sydney
Melbourne
Tasmania
Wellington
New Zealand
Auckland Is.
Macquarie I.

Part of the WEST INDIES
Virgin Is.
Sombrero
Anguilla
St. Kitts
Nevis
Barbuda
Antigua
Dominica
St. Vincent
St. Lucia
Grenada
Barbados
Tobago

पश्चिमी भाग अब कई छोटे छोटे स्वतन्त्र राष्ट्रों में विभक्त कर दिया गया। रूस, जर्मनी तथा आस्ट्रिया से थोड़ा थोड़ा भाग लेकर पोलैण्ड ( Poland ) का एक पृथक् स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित किया गया और व्यापार करने के लिए उसे डेन्ज़िग (Danzig) का बन्दरगाह जर्मनी से लेकर दे दिया गया। ( ५ ) युरोप के बाहर जो भाग अब तक टर्की और जर्मनी के अधीन थे, उनका शासन फ्रान्स और ब्रिटेन के सपुर्द कर दिया गया। इसके अनुसार ब्रिटेन को पैलेस्टाइन ( Palestine ), मेसोपोटामिया ( Mesopotamia ) और जर्मन पूर्वीय अफ्रिका ( German East Africa ) का, और फ्रान्स को सीरिया ( Syria ) तथा अफ्रिका के कुछ जर्मन उपनिवेशों का शासन सौंपा गया। इस प्रकार सौंपे हुए प्रान्तों को अँग्रेजी में Mandates कहते हैं।

**सन्धि की समालोचना**—युरोपीय महायुद्ध के काल में बहुत सी राज्यक्रान्तियाँ हुईं, जिनके परिणाम स्वरूप कई राष्ट्रों में निरंकुश शासन के स्थान पर प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। रूस के ज़ार, जर्मनी के कैसर, आस्ट्रिया के सम्राट्, टर्की के सुलतान जैसे शक्तिशाली शासक राज-सिंहासन से हटा दिये गये; और युरोप में निरंकुश शासन का अन्त हो गया। वार्शल्स के निपटारे में "आत्म-निर्णय" ( Self-determination ) के सिद्धान्त का विशेष ध्यान रखा गया था; और युरोप का नया राजनीतिक चित्र बनाने में यह प्रयत्न किया गया था कि जिन जातियों की भाषा तथा सभ्यता भिन्न है, उनके अलग अलग स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित कर दिये जायँ। इसी सिद्धान्त के अनुसार आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य को, जिसमें अब तक कई भिन्न भिन्न

जातियाँ सम्मिलित थीं, तोड़ कर कई राष्ट्रों में विभक्त कर दिया गया; सर्विया और उसकी पड़ोसी स्लव जातियों को मिला कर युगो-स्लविया नामक राष्ट्र और बोहीमिया के आस पास की जातियों को मिला कर जेको-स्लोवेकिया नामक राष्ट्र बनाये गये; और पोल जाति के लिए पोलैण्ड नामक स्वाधीन राष्ट्र स्थापित कर दिया गया। परन्तु मेसोपोटामिया और सीरिया आदि का शासन ब्रिटेन और फ्रान्स को सौंप देना इस "आत्म-निर्णय" के सिद्धान्त के विरुद्ध रहा। कहने को तो ये देश भी स्वतन्त्र कर दिये गये हैं, परन्तु पाश्चात्य राजनीतिज्ञों का यह विचार है कि जो सिद्धान्त युरोप के लिए हैं, वे पूर्वीय देशों के लिए प्रयुक्त नहीं होते; और इसी लिए एशिया माइनर के इन राष्ट्रों को पूर्ण स्वतन्त्रता न देकर इनके शासन की देखभाल का भार दो युरोपीय जातियों के सपुर्द किया गया है।

**वर्तमान "राष्ट्र संघ" की स्थापना**—अनुमान किया जाता है कि युरोपीय महायुद्ध में दो करोड़ से अधिक जानें नष्ट हुईं और युद्धाग्नि में लगभग दस खरब रुपयों की आहुति दी गई। विजित और विजयी दोनों पक्षों के राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को बड़ा धक्का पहुँचा; और अभी तक युरोप इस भीषण युद्ध के धक्के से सँभल नहीं सका है। युद्ध के भयंकर परिणाम का विचार करके वार्सेल्स की सन्धि में सार्वराष्ट्रीय प्रश्नों का भविष्य में बिना युद्ध किये निपटारा करने का एक उपाय निकाला गया। मुख्य मुख्य राष्ट्रों का एक "राष्ट्र संघ" ( League of Nations ) स्थापित किया गया, जिसका यह उद्देश्य है कि भिन्न भिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों का आपस में मिल कर निप-

टारा कर लिया जाय; और जो राष्ट्र इस तरह निपटारा करने को तैयार न हों, उसे दण्ड देने के लिए उससे व्यापारिक सम्बन्ध बिलकुल त्याग दिया जाय। इस "राष्ट्र संघ" की स्थापना से आशा की जाती है कि भविष्य में युद्ध होना असम्भव हो जायगा। इसी लिए कहा जाता है कि "राष्ट्र संघ" की स्थापना की गणना संसार की इतनी बड़ी घटनाओं में होनी चाहिए जैसे ईसा मसीह द्वारा ईसाई मत का प्रचार।

आज कल इस "राष्ट्र संघ" में भूमण्डल के प्रायः सभी मुख्य मुख्य राष्ट्र सम्मिलित हैं। अभी कुछ दिन हुए, जर्मनी भी इस में सम्मिलित हो गया है। इसके सदस्य राष्ट्र मिल कर एक कार्य-कारिणी समिति ( League Council ) चुन लेते हैं, जिसमें मुख्य राष्ट्रों ( Great Powers ) के प्रतिनिधि सदा सम्मिलित रहते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को भी बारी बारी से इस समिति में कार्य करने का अवसर दिया जाता है। मनुष्य जाति के उपकार के हेतु भी "राष्ट्र संघ" बहुत से कार्य करता रहता है। उसके अधीन "सार्वराष्ट्रीय मजदूर सम्मेलन", "सार्वराष्ट्रीय शिक्षक सम्मेलन" आदि कई उपयोगी संस्थाएँ हैं, जो भूमण्डल भर के लिए सामाजिक सुधार के कार्य कर रही हैं।

## ( २ ) युद्ध के पश्चात् की राजनीतिक समस्याएँ
## ( १९१८—१९२८ )
## (The Post-War Problems)

**लॉयड जॉर्ज का पद-त्याग ( १९२२ )**—युद्ध काल में एक जातीय आपत्ति का सामना करने के लिए कन्सरवेटिव और

लिबरल दोनों दलों ने मिल कर मन्त्री मण्डल में कार्य करना स्वीकृत कर लिया था; और इसी मेल के कारण प्रधान मन्त्री लॉयड जॉर्ज (Llyod George) युद्ध का सफलतापूर्वक संचालन कर सका था। युद्ध के समाप्त होते ही कन्सरवेटिव दल-वालों ने लिबरल दल के नेता के सहकारी होना पसन्द न किया और वे सब मन्त्री मण्डल से पृथक् हो बैठे। कन्सरवेटिव दल की सहायता न रहने पर लायड जॉर्ज बड़े फेर में पड़ा, क्योंकि लोक सभा में उसके अनुयायियों की संख्या अधिक न थी। इसी समय कई राजनीतिक समस्याओं ने लायड जार्ज को परेशान कर रखा था। जर्मनी से युद्ध का हरजाना वसूल करने का कोई ढंग दिखाई न देता था; और इस विषय में फ्रान्स तथा ब्रिटेन का झगड़ा भी हो गया था। दूसरी ओर आयरलैण्ड में सिनफियन दल का क्रान्तिमय आन्दोलन भयंकर रूप धारण कर रहा था। ऐसी अवस्था में लायड जार्ज ने सन् १९२२ में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार युद्ध काल के इस प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ का मन्त्रित्व काल समाप्त हुआ।

**कन्सरवेटिव दल का शासन (बोनर लॉ और बाल्डविन)**—लायड जार्ज के पद-त्याग के बाद कन्सरवेटिव दल का नेता बोनर लॉ (Bonar Law) प्रधान मन्त्री हुआ; परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उसे शीघ्र ही त्यागपत्र देना पड़ा। उसके बाद स्टेन्ली बाल्डविन (Stanley Baldwin) कन्सरवेटिव दल का नेता बन कर प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। बाल्डविन ने फ्रान्स के प्रधान मन्त्री पुआँकारे (Poincare) से मिल कर जर्मनी से युद्ध का हरजाना वसूल करने के विषय में फ्रान्स और

ब्रिटेन का समझौता करा दिया; और यह निश्चित हुआ कि दोनों राष्ट्र मिल कर धीरे धीरे जर्मनी से अपना हरजाना वसूल कर लेंगे।

**रैम्ज़े मैक्डॉनल्ड तथा मज़दूर दल का शासन**—सन् १९२३ के पार्लिमेण्ट के चुनाव में कन्सरवेटिव दल की हार हुई और लोक सभा में मजदूर दल तथा लिबरल दल की अधिक संख्या रही। बाल्डविन को त्यागपत्र देना पड़ा और मजदूर दल ( Labour Party ) का नेता रैम्ज़े मैक्डॉनल्ड ( Ramsay Macdonald ) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। अभी थोड़े ही दिनों से मजदूर दल की गणना लोक सभा के प्रधान राजनीतिक दलों में होने लगी थी और इस दल के शासन का यह पहला अवसर था। मैक्डॉनल्ड मजदूरों के हितार्थ बहुत से सुधार करना चाहता था; परन्तु अपने दल की पृथक् संख्या काफी न होने के कारण उसे हर बार लिबरल दल की सहायता के भरोसे पर रहना पड़ता था। इस समय बेकारी की समस्या बड़ी विकट हो रही थी; इसलिए मैक्डॉनल्ड को आशा थी कि देश की पूर्ण सहानुभूति अवश्य मजदूर दल ही के प्रति होगी, जिसका लक्ष्य ही यह है कि मजदूरों की बेकारी आदि की आपत्तियों से रक्षा की जाय। मैक्डॉनल्ड ने समझा कि यदि पार्लिमेण्ट विसर्जित कर दी जाय, तो नये चुनाव में जनता मजदूर दलवालों ही को अधिक संख्या में चुनेगी; और इसके बाद हमारे दल को लिबरल दल की सहायता के भरोसे न रहना पड़ेगा। यह सोच कर सन् १९२४ में उसने राजा से कह कर पार्लिमेण्ट को विसर्जित करा दिया; परन्तु उसकी आशा पूरी न हुई। मजदूर दल के थोड़े से ही

सदस्य चुने गये और इसलिए मैक्डॉनल्ड को अपने पद से त्याग-पत्र देना पड़ा।

**बाल्डविन तथा वर्तमान कन्सरवेटिव गवर्नमेण्ट—( सन् १९२५ से )—** नये चुनाव में कन्सरवेटिव दल की संख्या अधिक रही; इसलिए सन् १९२५ में इस दल का नेता बाल्डविन (Baldwin) पुनः प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। आज कल बाल्डविन ही ब्रिटेन का प्रधान मन्त्री है और उसके मन्त्रित्व काल में अब तक दो प्रसिद्ध घटानाएँ हो चुकी हैं *। अक्तूबर सन् १९२५ में ब्रिटेन के "परराष्ट्र विभाग के मन्त्री" (Foreign Minister) सर अस्टिन चेम्बरलेन (Sir Austin Chamberlain) ने युरोप के अन्य राष्ट्रों से बात चीत कर के लोकारनो (Locarno) की सन्धि कराई जिससे युरोपीय राष्ट्रों के युद्ध काल के पारस्परिक द्वेष भाव का अन्त हुआ। जर्मनी और फ्रान्स में बड़ा गहरा वैर भाव उत्पन्न हो गया था। यह वैर भाव हटाने के लिए फ्रान्स को जर्मनी के और जर्मनी को फ्रान्स के आक्रमण से बचाने का भार ब्रिटेन ने अपने ऊपर ले लिया। दूसरी प्रसिद्ध घटना यह हुई कि कोयले की खानों में काम करनेवाले मजदूरों ने अपना वेतन बढ़वाने के लिए एक बहुत बड़ी और देशव्यापी भयंकर हड़ताल कर दी जिससे देश में बड़ी खलबली मची। ऐसी स्थिति में बाल्डविन ने बड़े धैर्य से काम लिया और धीरे धीरे मजदूरों को हड़ताल समाप्त करने

* सन् १९२६ की इम्पीरियल कान्फरेन्स भी, जिसके परिणाम स्वरूप "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Dominions) को और भी अधिक स्वतन्त्रता मिल गई है, इसी काल में हुई (देखो पृष्ठ १३७)।

के लिए विवश होना पड़ा। पार्लिमेण्ट में आजकल (मई १९२७) ट्रेड्स यूनियन बिल ( Trades Union Bill ) नामक प्रस्ताव पर विचार हो रहा है, जिसका यह आशय है कि भविष्य में ऐसी भयंकर हड़तालों का होना असम्भव हो जाय।

---

## मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १९१०—जार्ज पंचम का राज्याभिषेक।
,, १९१०—१५—एस्क्विथ (Asquith) का मन्त्रित्व।
,, १९१४—१८—युरोपीय महायुद्ध।
( The Great European War )
,, १९१६—२२—लॉयड जार्ज ( Llyod George ) का मन्त्रित्व।
,, १९१९—वार्शेल्स की सन्धि।
( Peace of Varsielles )
,, १९२२—२३—बोनर लॉ ( Bonar Law ) का मन्त्रित्व।
,, १९२३—बाल्डविन ( Baldwin ) का मन्त्रित्व।
,, ११२४—रैमूजे मैक्डॉनल्ड (Ramsay Macdonald) का मन्त्रित्व।
,, १९२५ से—बाल्डविन (Baldwin) का दूसरा मन्त्रित्व।
,, १९२५—लोकारनो ( Locarno ) की सन्धि।
,, १९२६—कोयले की खानों के मजदूरों की हड़ताल।
( The Coal Strike )

---

# MODEL QUESTIONS.

(*Hanoverian Period*)

1. State clearly (with a genealogical table) how it was that the House of Hanover came to rule over England.

2. Give a brief account of Walpole's Ministry, with special reference to his Foreign Policy.

3. The 18th century is called a period of colonisation by conquest. Illustrate this with reference to the struggle between France and England in America.

(*Hint*—Position of the English and the French in N. America in 1756—competition for colonial expansion leads to the Seven Years War—French power is overthrown in N. America; Canada passes into the hands of the English.)

4. Who were the Jacobites? Trace the progress of the Jacobite movement in the 18th century and account for its eventual failure.

(*Hint*—Revolts in Scotland and Ireland in favour of James II during the reign of William III—Jacobite Revolt of 1715 in favour of the

Old Pretender—Jacobite Revolt of 1745 in favour of the Young Pretender.

The Jacobites failed in their purpose mainly because they had alienated the sympathy of the English nation owing to their invoking foreign aid. The death of their supporter Louis XIV greatly cirppled their strength.)

5. Show clearly by means of a map the stages in the growth of the Birtish Empire in N. America marked by the following dates—1713, 1763, 1783.

(*Hint*—1713 (after the Treaty of Utrecht)—1763 (after the Peace of Paris)—1783 (after the Treaty of Varsielles.)

6. Compare the policy of the Elder Pitt in the Seven Years War with that of the Younger Pitt in the War of the French Revolution and estimate their greatness as War Ministers.

(*Hint*—The. Elder Pitt subsidised Prussia in order to keep the French so occupied in Europe as not to be able to send their best forces to N. America; while the Younger Pitt depended mainly upon forming Coalitions of European Powers to fight against France.

As a War Minister, the Elder Pitt proved superior to his son. The Elder Pitt's policy in

the Seven Years War was completely successful, while the Coalitions formed by the Younger Pitt were frequently broken by the French victories on land.)

7. What led to the loss of the American Colonies ? How far was George III responsible for this loss ?

(*Hint*—The Ministers of the period were the mere creatures of George III and so the responsibility for the failure to conciliate the colonists and the consequent loss of the colonies should be shouldered to a very large extent by the king.)

8. What was the attitude of England towards the French Revolution ? How did the French Revolution affect the English domestic and foreign affairs ?

(*Hint*—England at first sympathised with the French Revolution, but as it become bloody in its character English public opinion definitely turned against it.

The French Revolution arrested the progress of Reform in England and in foreign affairs it involved England in a long and strenuous war.)

9. Give a brief account of England's part in the overthrow of Napoleon. What territorial

arrangements were made by the Congress of Vienna ?

10. Show clearly the importance of the Birtish naval victories in the French Revolutionary and Napoleonic Wars.

(*Hint*—Show how the English victories of the Nile, the Copenhagen and the Trafalgar saved England at critical junctures and at once turned the position in her favour.)

11. Write a brief account of the Peninsular War. What causes led to the failure of Napolean's policy in the Iberian Peninsula ?

(*Hint*—Napolean's failure in the Iberian Peninsula was due to (*a*) his pre-occupation in Europe, which prevented him from sending his best forces there; (*b*) the united efforts of the Spanish nation against the intrusion of the French; (*c*) the brilliant guerilla warfare of the Spainards; and (*d*) the difficulties of communication owing to the peculiar physical configuration of Spain.)

12. What do you understand by the "Industrial Revolution" ? Point out its social and political effects.

(*Hint*—The "Industrial Revolution" brought to the fore several social problems, e. g. un;

employmet, Factory Reform, struggle between capital and labour etc. It also produced a consciousness for political rights in the country.)

13. Give a brief account of the social progress in England in the 19th century.

(*Hint*—Refer to the important social laws of the period, e. g. Factory Laws, Abolition of Slavery, Catholic Emancipation, Reform of Municipal Government etc.).

14. Explain clearly what is meant by a "Self-Governing Dominion"? What are its relations with the mother country?

(*Hint*—Note the change in the status of the Dominions as a result of the Imperial Conference of 1926.)

15. What do you know about the Union of South Africa? What are its component parts and how did each come into British hands?

(*Hint*—Cape Colony secured in 1815—Natal annexed in 1840—Orange Free State and Transval definitely annexed after the Second Boer War—Federation of South African Colonies in 1909.)

16. Give an account of the expansion of the British Empire in the 19th century and

trace the development of British Colonial policy during this period.

(*Hint*—Pay special attention to the growth of Australia and South Africa and to the annexation of the various provinces in India.

The first stage in the new Colonial policy was the grant of self-government to the colonies. Next came the federation of colonies situated close together.)

17. What were the chief abuses in the Parliamentary System at the beginning of the 19th century ? Trace the various stages in the history of Parliamentary Reform.

(*Hint*—Reform Bills of 1832, 1867, and 1884 and the Representation of People Act of 1918.)

18. What do you understand by "Cabinet Government" ? Give an account of the growth of "Cabinet Government" in England.

(*Hint*—See Text.)

19. Describe the various stages through which a Bill passes before becoming an Act. What relations subsist between the two Houses of Parliament as modified by the Parliament Act of 1911 ?

(*Hint*—See Text.)

20. Trace the events leading to the Irish

Union. Why did the Union not prove to be a lasting solution of the Irish Problem ?

(*Hint*—Pitt's promise of giving full privileges to the Catholics, who form the majority of the people of Ireland, was not carried into effect in the Irish Union Act, which therefore failed to satisfy the Irish people.)

21. Trace the various stages of the Home Rule movement in Ireland. How has the Irish Problem been settled by the Treaty of 1922 ?

(*Hint*—See Chapter 10.)

22. Give a brief account of the British connection with Egypt. Why is Great Britain so keenly interested in the Egyptian affairs ?

(*Hint*—Great Britain is particularly anxious for the defence of the Suez Canal, which adjoins the north-eastern coast of Egypt and which commands the main passage to the Asiatic possessions of the British Empire.)

23. Describe the political career of Sir Robert Peel. Why has he been called "the most Liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Liberals" ?

24. "Lord Palmerston was a Conservative at home and a Revolutionist abroad". Explain

this statement and give an account of Palmerston's part in the Eastern Question.

25. Give an account of the character and statesmanship of Disraeli.

26. Give a critical estimate of Gladstone's Irish policy. How did it affect the Party System in England ?

(*Hint*—Gladstone's Irish Home Rule Bill occasioned the break up of the Liberal Party.)

27. Explain the term "Near Eastern Question." Draw out the main lines of British policy in the Near East and point out the importance of the Treaties of Paris (1856) and Berlin (1878).

28. Why has King Edward VII been called "Edward the Peace Maker" ?

(*Hint*—Specially refer to Britain's agreements with France and Russia brought about by the personal influence of King Edward VII)

29. Why has the period from 1871 to 1914 been described as one of "Armed Peace" ? Give an outline survey of the International situation just before the outbreak of the Great European War.

30. Carefully describe the political arrangements made at the Treaty of Varsielles (1919).

What were the guiding principles in this territorial reconstruction ?

(*Hint*—The chief guiding principle in this territorial reconstruction was that of "Self-determination").

31. With what object was the "League of Nations" established ? Give an account of its composition and functions at the present time.

32. Write short notes on—

Septennial Act, South Sea Bubble, Methodists, General Wolfe, George Washington, Lord North, Burke, Continental System, The Hundred Days, Abolition of Slavery, Lord Nelson, Duke of Wellington, Catholic Emancipation Act, Penny Postage, Chartists, Francc-Prussian War, Llyod George, Sir Austin Chamberlain, Mandates, Irish Free State.

---

# परिशिष्ट

## High School Examination

### 1925

### History.

### *Section B.*

1. Why is Elizabeth considered to be one of the greatest sovereigns of England ? Mention some of the principal events in her reign.

2. Sketch the career of Oliver Cromwell.

3. Relate the causes that led to the Glorious Revolution of 1688.

What are the chief provisions of the Bill of Rights ?

4. What circumstances led to the loss of the American Colonies ?

5. Narrate the story of the struggle between Great Britain and Napoleon.

6. Write a short account of the development of the British Empire in the nineteenth century.

1926

# History.

## *Section B.*

8. How did Henry VII establish a strong monarchy in England ?

9. How did the Protestant reformation begin in England and how did Henry VIII effect a breach with the Pope of Rome ?

10. Explain the causes of the struggle between Charles I and the Parliament.

11. How did Charles II gain the throne of England and what measures were taken in his reign to restore the supremacy of the Church of England ?

12. Why did England take part in the Seven Years' War ? What were the results of the War ?

13. Describe the effect of the Napoleonic wars on England.

14. Write short notes on any *three* of the followings:—

(*a*) Pride's Purge.
(*b*) Cabal.
(*c*) Whig and Tory.
(*d*) Robert Walpole.
(*e*) Catholic emancipation.
(*f*) Gladstone.

1927

## HISTORY.

### *Section B.*

8. Write notes on *three* of the following:—

'Millenary Petition'; 'Flodden Field'; 'Cavalier Parliament'; 'Declaration of Indulgence'; 'Test Act'; 'Massacre of Glencoe'; Lord Kitchener.

9. What do you know of Mary Queen of Scots? How is she connected with the history of England?

10. State what you know of Oliver Cromwell and of his work as Lord Protector of England.

11. What did England gain by the treaties of Utrecht (1713) and Paris (1763)?

12. What were the "Reform Acts"? What changes did the Reform Act of 1832 make in the British constitution?

13. Give a short account of the progress of the Reformation in England during the reign of Henry VIII.